रुपेश

काली सिद्धि

लेखक : अशोक कुमार गौड

वेदाचार्य पं० दौलतराम गौड स्मारक ग्रन्थमाला की ४७वीं पुष्पलता

काली-सिद्धि

(काली उपासना की विविध विधियों से विभूषित)

(स्व० महामहोपाध्याय श्री पं० विद्याधर गौड आहिताग्नि के पौत्र
उत्तरप्रदेशीय सरकार द्वारा सम्मानित
स्व० श्री० पं० दौलतराम गौड वेदाचार्य के पुत्र
डॉ० अशोक कुमार गौड वेदाचार्य द्वारा सम्पादित)

प्रकाशक :
रूपेश ठाकुर प्रसाद प्रकाशन
कचौड़ीगली, वाराणसी-221001
फोन : 2392471, 2392543

प्रथम संस्करण] सन् २०१० ई० [मूल्य 200/-

भूमिका

हिन्दू धर्म में तैंतीस कोटि देवी-देवताओं का समावेश है। उनमें भगवती काली भी हैं। काली शब्द का अर्थ है, जो 'काल' की पत्नी है, वही काली है। 'काल' शब्द शिवजी के लिए कहा गया है, अत: काली ही शिव की पत्नी हैं।

भगवती काली का स्वरूप—भगवती काली के ललाट पर चन्द्रमा स्थित है। इनके बाल खुले हुए हैं, ये तीन नेत्रों से युक्त हैं। इनका स्वर अत्यधिक भयंकर है। ये अपने कानों में बालकों के शव पहने हुई हैं। इनके दोनों ओठों से रक्त की धारा निरन्तर बह रही है। इनके दाँत बाहर की ओर निकले हुए है, जिनसे ये अपनी जीभ को दबायी हुई हैं। इनके मुखारविन्द पर निरन्तर हँसी व्याप्त रहती हैं। इनके स्तन बड़े और उन्नत हैं। ये अपने गले में मुण्डमाला धारण करती हैं। ये पूर्णरूप से दिगम्बरा अर्थात् नग्न रहती हैं, ये अपने हाथों में शवों की करधनी धारण की रहती हैं। काली देवी के ऊपर वाले बायें हाथ में कृपाण है और नीचे वाले बायें हाथ में कटा हुआ सिर है। इनके दायीं ओर के हाथों में अभय और वरमुद्रा है। ये हमेशा युवती ही दिखायी देती हैं। इनके विराट् स्वरूप को देखकर दुष्ट एवं पतित लोग भयभीत हो जाते हैं। ये काली सदैव भगवान् शिव के साथ सहवास में संलग्न रहती हैं। इनका वर्ण कृष्ण वर्ण है तथा इनका स्वरूप अचिन्त्य एवं अनुभवैकगम्य है। भगवती काली उत्तर आम्नाय की देवता कही गई हैं। कलियुग में ये शीघ्र फल देनेवाली हैं।

शिवजी की पत्नी काली के विभिन्न रूप हैं। यही कारण है कि तन्त्रशास्त्र के ज्ञाता भगवती काली को ही आद्याशक्ति महामाया के नाम से पूजित करते हैं। ये आद्याशक्ति शाक्त मतावलम्बियों की इष्टदेवी के रूप में पूजित है। ये कभी सृष्टि का नाश, कभी स्थिति और कभी प्रलय करती हैं। इस अखण्ड शक्ति के आश्रित ही शिव सृष्टि का संहार करने में समर्थ हो पाते हैं, अन्यथा वह शव के तुल्य हो जाते हैं।

भगवती काली की पूजा आज से ही नहीं, अपितु प्राचीन समय से होती चली आ रही है। इनकी उपासना करना अत्यधिक कठिन है, किन्तु जब यह प्रसन्न होती हैं तो अपने साधकों की मनोवांछित कामनाओं को पूर्ण करती हैं।

भगवती काली के रूप व भेद असंख्य हैं। तत्त्वत: सभी देवियाँ, योगिनियाँ आदि भगवती की ही प्रतिरूपा हैं। फिर भी इनके आठ भेद मुख्य माने जाते हैं—१. चिन्तामणि काली, २. स्पर्शमणि काली, ३. संततिप्रदा काली, ४. सिद्धि काली, ५. दक्षिणा काली, ६. कामकला काली, ७. हंस काली, ८. गुह्य काली। कालीक्रम दीक्षा में

भगवती काली के इन्हीं आठ भेदों के मंत्र दिये जाते हैं। इनके अतिरिक्त– १. भद्र काली, २. श्मशान काली, ३. महाकाली। ये तीन भेद भी विशेषरूप से प्रसिद्ध हैं और इनकी उपासना भी विशेषरूप से की जाती है।

भगवती काली को अनादिरूपा, आद्याविद्या, वेदस्वरूपिणी और कैवल्यदात्री कहा गया है। भगवती काली अजन्मा और निराकार हैं, निराकार होते हुए भी भगवती काली साकार हैं। अदृश्य होते हुए भी भगवती काली दिखायी देती हैं। भगवती काली को श्मशान में रहनेवाली कहा गया है। श्मशान का वास्तविक अर्थ है–जहाँ मरे हुए प्राणियों के शरीर जलाये जाते हैं, वैसे भी भगवती काली का आसन शवासन है, इसलिए 'शव' को ही भगवती काली का आसन माना गया है।

भगवती काली की पूजा अर्थात् उपासना तीन प्रकार से की जाती है। यथा–सात्त्विक पूजा, राजस पूजा और तामस पूजा, किन्तु इन तीनों पूजाओं में गृहस्थ को सात्त्विक पूजा ही करनी चाहिए। काली अपनी आराधना करनेवाले मनुष्यों को भोग, मोक्ष और स्वर्ग प्रदान करती हैं। भगवती काली समस्त प्राणियों में शक्तिरूप से स्थित हैं, उनको मैं बार-बार प्रणाम करता हूँ। इन्हीं की कृपा से मैंने इस 'काली-सिद्धि' नामक पुस्तक का लेखन किया है। इस पुस्तक में उन सभी विषयों का समावेश है, जिनकी आवश्यकता चिरकाल से बनी हुई थी। मुझे आशा ही नहीं, अपितु पूर्ण विश्वास है कि इस पुस्तक का आश्रय लेकर काली भक्त नि:सन्देह लाभान्वित होंगे।

अन्त में जिन जग-जननी माता काली की असीम अनुकम्पा से यह कार्य पूर्ण कर सका हूँ, उन्हीं के चरण-कमलों में यह भेंट समर्पित कर, अपने को कृतकृत्य मानता हूँ।

भवदीय :
अशोक कुमार गौड

भारतीय कर्मकाण्ड मण्डल
म०म०पा० पं० विद्याधर गौड लेन
डी० ७/१४ सकरकंद गली, वाराणसी

देवी की उत्पत्ति का वर्णन

प्रलयकाल के समय सम्पूर्ण संसार के जलमग्न होने पर भगवान् विष्णु शेषशय्या पर योगनिद्रा से शयन कर रहे थे। उस समय भगवान् विष्णु के कर्णकीट से उत्पन्न मधु और कैटभ नामक दो अति बलवान् राक्षस ब्रह्माजी का वध करने को उद्यत हुए। भगवान् हरि के नाभिकमल में स्थित ब्रह्माजी ने उन दोनों असुरों को देखकर भगवान् विष्णु को जगाने के लिये एकाग्रचित्त से विष्णु के नेत्रकमलस्थित योगनिद्रा की स्तुति इस प्रकार से की–

हे देवि! आप ही इस संसार की उत्पत्ति, स्थिति और संहार करनेवाली हैं, आप ही महाविद्या, महामाया, महामेधा, महास्मृति, महामोहस्वरूपा हैं, दारुण कालरात्रि, महारात्रि तथा मोहरात्रि भी आप ही है। आपने ही संसार की उत्पत्ति, स्थिति व लय करनेवाले साक्षात् भगवान् विष्णु को योगनिद्रा के वशीभूत कर दिया है तथा विष्णु, शिव एवं मुझे स्वयं शरीर ग्रहण करने को बाधित किया। ऐसी महामाया शक्ति की स्तुति कौन कर सकता है? हे देवि! अपने प्रभाव से इन असुरों को मोहितकर मारने के लिये भगवान् विष्णु को निद्रा से जगाओ।

इस प्रकार ब्रह्माजी के द्वारा स्तुति करने पर वे महामाया भगवान् श्रीहरि के नेत्र, मुख, नासिका, बाहु और हृदय से बाहर निकलकर प्रत्यक्ष खड़ी हो गयीं, उनके बाहर निकलते ही भगवान् विष्णु उठे और उन्होंने देखा कि दो भयंकर राक्षस ब्रह्माजी को मारने के लिए उद्यत हो रहे हैं। ब्रह्माजी की रक्षा के लिए भगवान् स्वयं उनसे युद्ध करने लगे। युद्ध करते-करते लगभग पाँच हजार वर्ष व्यतीत हो गये, किन्तु उन राक्षसों का संहार न हो सका। उस स्थिति में महामाया ने उन दोनों राक्षसों की बुद्धि मोहित कर दी, जिससे वे अभिमानपूर्वक भगवान् विष्णु से स्वयं कहने लगे कि हम तुम्हारे युद्ध से अत्यधिक प्रसन्न हुए, तुम हमसे अपनी इच्छानुसार वर माँगो, भगवान् विष्णु कहने लगे, यदि आप दोनों मुझे वर ही देना चाहते हैं, तो आप दोनों मेरे द्वारा ही मारे जायें, यही वर मुझे दीजिए। मधु-कैटभ ने 'तथास्तु' कहकर कहा कि जिस स्थान पर पृथ्वी जल से ढँकी हुई हो वहाँ हमारा वध न करना।

उनके दिये हुए वचन के अनुसार भगवान् विष्णु ने उनके सिरों को अपनी जंघाओं पर रखकर सुदर्शन चक्र से काट डाला। इस प्रकार देवताओं के कार्यों को सिद्ध करने के लिए उन सच्चिदानन्दरूपिणी चितिशक्ति ने महाकाली रूप धारण किया, जिनके स्वरूप और ध्यान का भावार्थ इस प्रकार है–

खड्ग, चक्र, गदा, धनुष, बाण, परिघ, शूल, भुशुण्डी, कपाल तथा शङ्ख को धारण करनेवाली, समस्त आभूषणों से विभूषित, नीलमणि के तुल्य कान्तियुक्त, दशमुख, दशपाद वाली महाकाली का मैं ध्यान करता हूँ, जिनकी स्तुति भगवान् विष्णु की योगनिद्रास्थिति में ब्रह्माजी ने स्वयं की थी।

कालीअर्चन के विषय में विशेष विचार

१. काली की उपासना करनेवाले साधक को सदैव शुद्ध वस्त्र पहन करके ही इनकी पूजा एवं अर्चना करनी चाहिए।

२. भगवती काली की उपासना तीन प्रकार से होती है। यथा–सात्त्विक, राजसी एवं तामसी।

३. जो साधक काली की उपासना करना चाहते हैं, उन्हें स्त्रियों की निन्दा, अप्रिय वचन और उनसे कुटिल व्यवहार नहीं करना चाहिए।

४. कार्तिक मास के कृष्णपक्ष की अमावस्या तिथि की रात्रि में कालीपूजन करने का विधान धर्मग्रन्थों ने बताया है।

५. भगवती काली की उपासना जो तान्त्रिक विधि के द्वारा करते हैं, उन्हें पशुबलि देने का पूर्ण अधिकार है, परन्तु जो सात्त्विक पूजा करते हैं, उन्हें पशु की जगह उड़द या कोहड़े की बलि देनी चाहिए।

६. काली की उपासना करनेवाला साधक यदि पुरश्चरण के द्वारा काली की सिद्धि प्राप्त कर लेता है तो उसे इस सिद्धि को जनहित कार्यों में लगाना चाहिए।

७. जो साधक लाल रंग के कमलों से काली का हवन करते हैं, वे उच्च पद को प्राप्त करते हैं।

८. मार्जार, भेंड़, ऊँट और भैंसे की हड्डी एवं रोम और खाल के साथ जो साधक कृष्णपक्ष की अष्टमी तिथि को अर्धरात्रि में बलि देते हैं, ऐसे साधक के वशीभूत सभी जीव-जन्तु हो जाते हैं।

९. जो साधना करनेवाला व्यक्ति बिल्वपत्रों के द्वारा काली के एक हजार नामों से हवन करता है, उसे भूमि की प्राप्ति होती है। यदि वह लाल रंग के फूलों से हवन करता है तो उसे वशीकरण की सिद्धि प्राप्त होती है।

१०. जो साधक काली की उपासना करते हैं, उन्हें अश्वमेधादि यज्ञों के करने का फल नि:सन्देह प्राप्त होता है।

११. जो साधक काली के मंत्र के ज्ञाता हैं, यदि वे शव पर बैठकर एक लाख बार जप करते हैं तो उनका मंत्र पूर्णत: सिद्ध होता है और उनकी समस्त मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं।

१२. यदि साधना करनेवाला साधक रात्रि के समय श्मशान में वस्त्ररहित बैठकर और अपने केशों को खोलकर भगवती काली के मंत्र का दस हजार बार जप करता है तो उसकी सम्पूर्ण मनोकामना पूर्ण हो जाती है।

कालीपूजासामग्री

रोली, मौली २–२ रुपये की

धूपबत्ती १ पैकेट, दियासलाई

कपूर ५ रुपए का

अक्षत, रूई, केशर १ पैकेट छोटा

काला तिल व यज्ञोपवीत १ दर्जन

अबीर–बुक्का व सिन्दूर २ रुपए का

लाल पुष्पमाला, लाल पुष्प

लवंग, छोटी इलायची ५ रुपए की

ऋतुफल स्वेच्छा से, पेड़ा स्वेच्छा से

दुग्ध आधा लीटर, दही सौ ग्राम

गेहूँ २५० ग्रा., देशी घृत २५० ग्रा.

शहद १ शीशी, कलश ताँबे का १

सकोरा मिट्टी का २०, पूजन के लिए १ थाली, शक्कर १०० ग्राम

गंगाजल, चन्दन घिसा हुआ और गंगाजी की मिट्टी, आम्रपत्र, गूलर पत्र, वट पत्र, पाकर पत्र

सर्वौषधि की १ पुड़िया, नारियल जटादार १, गरी का गोला २

धान का लावा १०० ग्राम, हल्दी की गाँठ ५ या ८, करंजा, धनिया, कमलगट्टा, मजीठ।

पूजन के लिए १ कटोरी, पंचामृत के लिए १ कटोरा

माता काली की मूर्ति १, सिंहासन १, ताँबे का कलश २, मूर्ति के सभी रेशमी वस्त्र

सफेद कपड़ा १ मीटर, लाल कपड़ा १ मीटर

॥ इति कालीपूजा सामग्री ॥

कालीप्रतिष्ठासामग्री

रोली–मौली १००–१०० ग्राम

धूपबत्ती १ पैकेट, कपूर ५ रुपए का

केशर २ पैकेट, अबीर–बुक्का ४ रुपए का, सिन्दूर २ रुपए का

यज्ञोपवीत १ बण्डल, रूई १०० ग्राम

पान प्रतिदिन २०, सुपारी १ किलो

मिष्ठान्न १ किलो, बताशा २५० ग्राम

ऋतुफल १ दर्जन

इलायची छोटी १० रुपए की, मिश्री १०० ग्राम

लौंग ४ रुपए की, जावित्री ५ रुपए की, जायफल ५ नग

अतर की शीशी एक, कस्तूरी की शीशी एक, गुलाबजल की शीशी एक

गोबर, गोमूत्र

दही १०० ग्राम प्रतिदिन, दूध आधा लीटर प्रतिदिन, शक्कर २५० ग्राम प्रतिदिन, गौघृत ५०० ग्राम

पीली सरसों ५० ग्राम, कच्चा सूत १०० हाथ

फुटकर पुष्प प्रतिदिन, लाल पुष्पमाला प्रतिदिन, दूर्वा–कुशा प्रतिदिन

नारियल जटादार २५, गरी का गोला ११

चन्दन का मुट्ठा और हरसा १

लाल रंग, पीला रंग, हरा रंग, काला रंग २–२ रुपए का

पंचरत्न की पुड़िया ५, सर्वौषधि, सप्तमृत्तिका, सप्तधान्य, नवग्रह की लकड़ी, मृगचर्म और एक कम्बल, सूत की डोरी १० हाथ की, काली उड़द आधा किलो, अक्षत ५ किलो

लकड़ी की दो चौकी, लकड़ी का पाटा ३, एक बण्डल सुतली

नद्यावर्त, ऊख का रस, सुरोदक, शान्त्युदक, क्षीरोदक, शीत–पुष्पोदक, गो–शृंगोदक, फलो–दक, नवरत्नोदक, अग्निहोत्र की भस्म, मक्खन १ पाव, दूध २ किलो, दही आधा किलो, गोबर–गोमूत्र, धान का लावा २५० ग्राम

जौ का आटा आधा किलो, चावल का आटा १०० ग्राम, आँवला चूर्ण ५० ग्राम

अन्नाधिवास के लिए अन्न, घृताधिवास के लिए घृत

वरण सामग्री (ब्राह्मणों के लिए), आचार्य के लिए वरण सामग्री

देवताओं को चढ़ाने के लिए उत्तम से उत्तम वस्त्र

ध्वज–पताका और वेदियों के लिए वस्त्र, सफेद कपड़ा, लाल कपड़ा, पीला कपड़ा, हरा कपड़ा, काला कपड़ा १–१ थान, पंचरंगा चँदवा बड़ा १, छोटे चँदवे ५

शय्या–सामग्री (यजमान अपनी इच्छा से लावे), मन्दिर के लिए शय्या–सामग्री (यजमान अपनी इच्छा से लावे)

मन्दिर के लिए पूजन–सामग्री एवं पूजन के सभी बर्तन

विषयानुक्रमणिका

विषया:	पृष्ठांका:
काली-तत्त्व-विमर्श	१
संक्षिप्त काली पूजन-विधान	५
श्रुति-पुराणोक्त कालीपूजनविधानम्	
१. प्रयोगारम्भ:	१२
२. स्वस्तिवाचनम्	१३
३. सङ्कल्प:	१५
४. गणेशपूजनम्	१६
५. कलशस्थापनं पूजनं च	२४
६. पुण्याहवाचनम्	२८
७. अभिषेक:	३५
८. षोडशमातृकापूजनम्	४०
९. सप्तघृतमातृकापूजनम्	४५
१०. आयुष्यमन्त्रपाठ:	४७
११. नान्दीश्राद्धम्	४८
१२. एकतन्त्रेण वरणसङ्कल्प:	५२
१३. सर्वतोभद्रदेवतास्थापनं पूजनं च	५२
१४. कालीयन्त्रनिर्माणम्	६४
१५. नवशक्तिस्थापनम्	६४
१६. पीठपूजनम्	६४
१७. अग्न्युत्तारणम्	६५
१८. प्राणप्रतिष्ठापनम्	६६
१९. कालीपूजनम्	६८
अनुष्ठानहवनविधानम्	
१. प्रयोगारम्भ:	८१
२. एकतन्त्रेण वरणसङ्कल्प:	८१
३. अथाग्निस्थापनम्	८१
४. ग्रहवेद्यां ग्रहान्स्थापयेत्	८३
५. असङ्ख्यात-रुद्रकलश-स्थापनं पूजनं च	९३
६. कुशकण्डिकाप्रारम्भ:	९४
७. गणेशाम्बिकयोहोम:	९६
८. नवग्रहहोम:	९६
९. प्रधानहवनम्	९७
१०. वास्तुहोम:	९७
११. सर्वतोभद्रहोम:	९८
१२. योगिनीहोम:	९९
१३. क्षेत्रपालहोम:	९९
१४. पीठदेवताहोम:	१००
१५. आवरणदेवताहोम:	१०१
१६. अष्टोत्तरशतनामावल्या: हवन-विधि:	१०१
१७. अग्निपूजनम्	१०२
१८. स्विष्टकृद्धोम:	१०२
१९. कालीबलय: (प्रधानदेवता)	१०४
२०. क्षेत्रपालबलय:	१०४
२१. पूर्णाहुति:	१०६
२२. वसोर्धाराहोम:	१०८
२३. अग्ने: प्रदक्षिणम्	१०९
२४. हवनीयकुण्डभस्मधारणम्	१०९
२५. अवभृथस्नानम्	११०
२६. छायापात्रदानम्	११४
२७. श्रेयोदानम्	११४
२८. कूष्माण्डबलय:	११५
२९. तर्पणं मार्जनं च	११८
३०. अभिषेक:	११८
३१. क्षमापनम्	११९
३२. देवविसर्जनम्	१२०
३३. यजमानरक्षाबन्धनम्	१२१
३४. यजमानपत्नीरक्षाबन्धनम्	१२१
३५. यजमानतिलककरणम्	१२१
३६. यजमानस्याशीर्वादमन्त्रा:	१२१
३७. यजमानधर्मपत्नी आशीर्वाद-मन्त्रा:	१२१

विषयाः	पृष्ठांकाः
तन्त्रोक्त कालीनित्यपूजनविधिः	
१. प्रातःकालीन कृत्यम्	१२३
२. प्रातःस्मरण प्रारम्भः	१२३
३. गणेशस्मरणम्	१२३
४. शिवस्मरणम्	१२४
५. विष्णुस्मरणम्	१२४
६. सूर्यस्मरणम्	१२५
७. देवीस्मरणम्	१२६
८. ऋषिस्मरणम्	१२६
९. पुण्यश्लोकजनस्तुतिः	१२७
१०. नवग्रहस्तुतिः	१२८
११. प्राणायाम	१२९
१२. ऋष्यादिन्यासः	१२९
१३. करन्यासः	१२९
१४. षडङ्गन्यासः	१२९
१५. व्यापकन्यासः	१३०
१६. गुरुध्यानादिकर्म	१३०
१७. लघुपादुकामन्त्रः	१३१
१८. स्थूलपादुकामन्त्रः	१३१
१९. इष्टध्यानम्	१३२
२०. जपकर्म	१३३
२१. प्रातःस्तोत्रपाठम्	१३३
२२. भावनायोगः	१३४
२३. अजपाजपसङ्कल्पः	१३५
२४. प्राणायाम	१३६
२५. ऋष्यादिन्यासः	१३६
२६. करन्यासः	१३६
२७. षडङ्गन्यासः	१३७
२८. ध्यानम्	१३७
२९. पृथ्वीप्रार्थनाः	१३७
३०. दन्तधावनम्	१३७
३१. पवित्रीधारण की आवश्यकता	१३८
३२. स्नानसङ्कल्पः	१३९
३३. वरुणस्तुतिः	१४०

विषयाः	पृष्ठांकाः
३४. तीर्थआवाहनम्	१४०
३५. गङ्गास्तुतिः	१४१
३६. तान्त्रिकीसन्ध्याप्रारम्भः	१४२
३७. त्रिकालगायत्रीध्यानम्	१४३
३८. सामान्यअर्घ्यस्थापनम्	१४४
३९. द्वारदेवतापूजनम्	१४५
४०. अथपूजनारम्भः	१४६
४१. विजयाग्रहणविधिः	१४७
४२. मातृकान्यासविधिः	१५०
४३. अन्तर्मातृकान्यासः	१५१
४४. बहिर्मातृकान्यासः	१५१
४५. कलामातृकान्यासः	१५३
४६. कण्ठादिमातृकान्यासः	१५४
४७. वर्णन्यासः	१५५
४८. षोढान्यासः	१५५
४९. तत्त्वन्यासः	१५५
५०. बीजन्यासः	१५६
५१. विद्यान्यासः	१५६
५२. लघुषोढान्यासः	१५६
५३. पीठन्यासः	१५६
५४. प्राणप्रतिष्ठापनम्	१५७
५५. पात्रस्थापनविधिः	१५९
५६. श्रीपात्रस्थापनम्	१६३
५७. गुरुआदिअन्यपात्रस्थापनम्	१६४
५८. तर्पणम्	१६५
५९. तत्त्वशोधनम्	१६६
६०. विन्दु–स्वीकारः	१६६
६१. वटुकादि–पूजनम्	१६७
६२. इष्टदेवतापूजनम्	१७०
६३. दक्षिणकालिकाजपविधिः	१७७
६४. दक्षिणकालिकानित्यहवनविधिः	१७९
६५. कामाख्यापीठस्थित भगवती काली की महिमा	१८१
कालीचलमूर्तिप्रतिष्ठाविधानम् (संक्षिप्त)	१८२

१. ककरादिकालीसहस्त्रनामस्तोत्रम् २१५
२. ककरादिकालीसहस्त्रनामावली २६८
३. श्रीदक्षिणकालिकासहस्त्र-नामस्तोत्रम् २८७
४. श्रीदक्षिणकालिकासहस्त्र-नामावलिः २९९
५. कालिकाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम् ३१८
६. काल्यष्टोत्तशतनामावलिः ३२१
७. श्रीकालीशतनामस्तोत्रम् ३२३
८. श्रीकालीशतनामावलिः ३२५
९. कालीकवचम् ३२७
१०. श्रीकाली अर्गलास्तोत्रम् ३३४
११. श्रीकालीकीलकम् ३३७
१२. कर्पूरस्तोत्रम् ३४०
१३. कालीस्तोत्रम् ३४८
१४. कालिकाकवचम् ३५४
१५. भद्रकालीस्तुतिः ३६०
१६. कालीपटलम् ३६२
१७. कालीहृदयम् ३६९
१८. कालिकाष्टकम् ३७६
१९. कालीस्तवः ३८०
२०. हिमालयकृता कालीस्तुतिः ३८३
२१. वेदैःकृता कालीस्तुतिः ३८४
२२. श्रीकालीसहस्त्राक्षरी ३८५
२३. श्रीकालीबीजसहस्त्राक्षरी ३८६
२४. कालिकोपनिषत् ३८८
२५. श्रीदेव्यथर्वशीर्ष ३८९
२६. देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम् ३९२
२७. श्रीसूक्तम् ३९३
२८. देवी नीराजनम् ३९५

परिशिष्ट

१. काली ध्यान के विविध क्रम ३९६
२. भगवती दक्षिण काली व अन्य काली के विविध जप मन्त्र ४००
३. महत्त्वपूर्ण देवियों की गायत्रीमन्त्र ४०१
४. सिद्धकाली चालीसा ४०३

कालीयन्त्रम्

दक्षिणकालीयन्त्रम्

काली-तत्त्व-विमर्श

परब्रह्म परमात्मा की वह विभूति जो समस्त लोकों का संहार करने के लिये प्रादुर्भूत होती है, वह काल कहलाती है। गीता में स्वयं श्रीभगवान् कहते हैं कि **'अहमेवाक्षयः कालो'** अर्थात् मैं अविनाशी काल हूँ। अर्जुन को अपने दिव्यरूप का दर्शन कराते हुए श्रीभगवान् ने कहा–**'कालोऽस्मि लोकक्षयकृत्प्रवृद्धो लोकान्समाहर्तुमिह प्रवृत्तः'** अर्थात् मैं लोकों का नाश करने के लिये बढ़ा हुआ महाकाल हूँ।

उपर्युक्त से ज्ञात होता है कि काल की शक्ति मात्र संहार की ही है, परंतु जो काल की भी काल हैं, वे भगवती महाकाली के नाम से जानी जाती हैं–

'यस्मात्कालस्य कालस्त्वं महाकालीति गीयसे' (देवीपुराण १५।५७)।

भगवती संहार के अतिरिक्त सृष्टि और स्थिति का भी विधान करती हैं, अतः वे काल की भी काल हैं।

हिमालय के प्रश्न करने पर कि 'हे माता! आप कौन हैं?' भगवती स्वयं अपने तत्त्व का वर्णन करते हुए कहती हैं–

जानीहि मां परां शक्तिं महेश्वरकृताश्रयाम्।
शाश्वतैश्वर्यविज्ञानमूर्तिं सर्वप्रवर्तिकाम्।।
ब्रह्मविष्णुमहेशादिजननीं सर्वमुक्तिदाम्।
सृष्टिस्थितिविनाशानां विधात्रीं जगदम्बिकाम्।।
अहं सर्वान्तरस्था च संसारार्णवतारिणी।
नित्यानन्दमयी नित्या ब्रह्मरूपेश्वरीति च।।

(देवीपुराण १५।१६-१८)

इसके अनन्तर भगवती ने हिमालय को अपने दिव्य स्वरूप का दर्शन करने के लिये दिव्य दृष्टि प्रदान की, जिससे हिमालय ने उनका दर्शन किया। उस स्वरूप का वर्णन करते हुए महादेवजी कहते हैं–

शशिकोटिप्रभं चारुचन्द्रार्धकृतशेखरम्।
त्रिशूलवरहस्तं च जटामण्डितमस्तकम्।।
भयानकं घोररूपं कालानलसहस्रभम्।
पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रं च नागयज्ञोपवीतिनम्।।

द्वीपिचर्माम्बरधरं नागेन्द्रकृतभूषणम्।
एवं विलोक्य तद्रूपं विस्मितो हिमवान् पुनः।।
प्रोवाच वचनं माता रूपमन्यत्प्रदर्शय।
ततः संहृत्य तद्रूपं दर्शयामास तत्क्षणात्।।
रूपमन्यन्मुनिश्रेष्ठ विश्वरूपा सनातनी।
शरच्चन्द्रनिभं चारुमुकुटोज्ज्वलमस्तकम्।।
शङ्खचक्रगदापद्महस्तं नेत्रत्रयोज्ज्वलम्।
दिव्यमाल्याम्बरधरं दिव्यगन्धानुलेपनम्।।
योगीन्द्रवृन्दसंवन्द्यं सुचारुचरणाम्बुजम्।
सर्वतः पाणिपादं च सर्वतोऽक्षिशिरोमुखम्।।

(देवीपुराण १५।२३-२९)

इन्हीं भगवती महाकाली की आराधना करके ब्रह्माजी सृष्टि, श्रीहरि पालन और भगवान् शंकर संहार कार्य करते हैं; योगिजन इन्हीं का ध्यान करते हैं। तत्त्वार्थ का ज्ञान रखनेवाले मुनिगण इन्हें ही मूलप्रकृति कहते हैं, ये ही विश्व की जननी और स्वर्ग तथा मोक्ष प्रदान करनेवाली हैं–

यामाराध्य विरिञ्चिरस्य जगतः स्रष्टा हरिः पालकः
संहर्ता गिरिशः स्वयं समभवद्ध्येया च या योगिभिः।
यामाद्यां प्रकृतिं वदन्ति मुनयस्तत्त्वार्थविज्ञाः परां
तां देवीं प्रणमामि विश्वजननीं स्वर्गापवर्गप्रदाम्।।

(देवीपुराण १।३)

ऋग्वेद इनके तत्त्व का वर्णन करते हुए कहता है–'समस्त प्राणी जिनमें स्थित हैं और जिनसे यह सम्पूर्ण जगत् प्रकट होता है तथा जिन्हें परम तत्त्व कहा गया है, वे साक्षात् स्वयं भगवती ही हैं'–

यदन्तःस्थानि भूतानि यतः सर्वं प्रवर्तते।
यदाह तत्परं तत्त्वं साक्षाद्भगवती स्वयम्।।

(देवीपुराण १।२५)

तैत्तिरीयोपनिषद् (२।७) में परब्रह्म परमात्मा के विषय में इसी प्रकार कहा गया है कि **'यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते...'**। इससे सिद्ध होता है कि भगवती महाकाली ही परब्रह्म परमात्मा हैं।

उनके विषय में यजुर्वेद कहता है–'जो ईश्वरी समस्त यज्ञों द्वारा सम्यक् प्रकार से पूजित होती हैं, जिनके हम प्रमाण हैं, वे ही एकमात्र भगवती हैं–

या यज्ञैरखिलैः सर्वैरीश्वरेण समिज्यते।
यतः प्रमाणं हि वयं सैका भगवती स्वयम्।।

(देवीपुराण १।२६)

सामवेद उनका वर्णन करते हुए कहता है–जिनके द्वारा यह समस्त जगत् धारण किया जाता है तथा योगिजन जिनका चिन्तन करते हैं। जिनसे यह जगत् प्रकाशित है, वे अद्वितीया भगवती दुर्गा (काली) ही इस सम्पूर्ण जगत् में व्याप्त हैं–

ययेदं धार्यते विश्वं योगिभिर्या विचिन्त्यते।
ययेदं भासते विश्वं सैका दुर्गा जगन्मयी।।

(देवीपुराण १।२७)

अथर्ववेद का उनके विषय में कथन है–भगवती के कृपापात्र लोग भक्तिपूर्वक जिन देवेश्वरी का दर्शन करते हैं, उन्हीं भगवती दुर्गा को लोग परमब्रह्म कहते हैं–

यां प्रपश्यन्ति देवेशीं भक्त्यानुग्रहिणो जनाः।
तामाहुः परमं ब्रह्म दुर्गां भगवतीं पुमान्।।

(देवीपुराण १।२८)

ये भगवती स्त्री-पुरुषरूप उपाधियों से रहित, परब्रह्म परमात्मा हैं। इन्हीं की इच्छा से सर्वप्रथम सृष्टि का सृजन हुआ–

स्त्रीपुंस्त्वप्रमुखैरुपाधिनिचयैर्हीनं परं ब्रह्म यत्
त्वत्तो या प्रथमं बभूव जगतां सृष्टौ सिसृक्षा स्वयम्।

प्रलयकाल में यह जगत् सूर्य, चन्द्रमा और तारों से रहित था, उस समय भी ये भगवती ही विद्यमान थीं और इन्हीं की इच्छा से सृष्टि हुई। निर्गुण होते हुए भी इन पराम्बा ने सगुण विग्रह धारण किया, उस समय इनका स्वरूप इस प्रकार था–

भिन्नाञ्जननिभा - चारुफुल्लाम्भोज - वरानना।
चतुर्भुजा रक्तनेत्रा मुक्तकेशी दिगम्बरा।।

पीनोत्तुङ्गस्तनी भामा सिंहपृष्ठनिषेदुषी।
ततस्तु स्वेच्छया स्वीयै रजःसत्त्वतमोगुणैः।।

(देवीपुराण ३।१६-१७)

उन परमब्रह्म मूल प्रकृति परमेश्वरी का वर्णन तो स्वयं भगवान् शिव भी नहीं कर सकते, तो अन्य किसी के लिये उनके तत्त्व का विमर्श भला कैसे सम्भव है! फिर भी माँ अपने पुत्र की तोतली भाषा पर भी प्रसन्न हो जाती है, अत: माँ! आपके विश्वात्मक रूप और गुण को पूर्ण रूप से वर्णन करने में तीनों लोकों में देवता अथवा मनुष्य कोई भी सक्षम नहीं है, फिर मैं अल्पमति उसका कैसे वर्णन करूँ? आप अपने स्वाभाविक गुण (वात्सल्य)-से मुझ पर दया करें और अपनी माया से मोहित न करें–

मातः कः परिवर्णितुं तव गुणं रूपं च विश्वात्मकं
शक्तो देवि जगत्त्रये बहुगुणैर्देवोऽथवा मानुषः।
तत् किं स्वल्पमतिर्ब्रवीमि करुणां कृत्वा स्वकीयैर्गुणै-
र्नो मां मोहय मायया परमया विश्वेति तुभ्यं नमः।।

(देवीपुराण १५।४४)

।।श्रीकाल्यै नमः।।

संक्षिप्त काली पूजन-विधान

काली-पूजन-कर्ता को ब्राह्ममुहूर्त (सूर्योदय से लगभग डेढ़ घण्टे पूर्व) में शय्या त्याग कर देना चाहिये। तत्पश्चात् नित्यकर्म से निवृत्त हो मुखशुद्धि करना चाहिये। व्रत में दातौन का निषेध होने से आयुर्वेदिक विधि से बने किसी मंजन से दाँत साफ करना चाहिये। दातौन से जीभ साफ किया जा सकता है। तत्पश्चात् स्नान का उपक्रम करना चाहिये। स्नान सम्भव हो तो किसी पवित्र तीर्थ या नदी में करे। यदि यह सम्भव न हो तो कुएँ के जल से स्नान करे। यदि कूप जल भी सम्भव न हो तो उपलब्ध जल में ही निम्नलिखित प्रकार से प्रार्थना करके स्नान करना चाहिये–

'हे मातु गङ्गे! आप भगवान् विष्णु के चरण कमलों से निकली हैं, भगवान् महेश्वर ने आपको अपने सिर पर धारण किया है, आप तीनों लोकों को पवित्र करने वाली हैं। आप मेरे स्नान हेतु उपलब्ध जल में सन्निहित हो मुझे पवित्र करें, जिससे मेरा यह पूजन सम्पूर्ण हो सके।'

स्नान के बाद काली-पूजनकर्ताओं को घर में धुले वस्त्र (धोती और गमछा) धारण करना चाहिये। देवी के व्रत में लाल रंग के वस्त्र धारण करना उत्तम माना जाता है। इसके बाद घर के ईशानकोण में (पूर्वोत्तर दिशा में) गाय के गोबर से लिपी भूमि पर (यदि गोबर से लीपना सम्भव न हो तो गंगाजल छिड़ककर पवित्र की हुई भूमि पर) कुश का आसन या कम्बल बिछाकर पूर्व या उत्तर की ओर मुख करके बैठे। तत्पश्चात् भगवत्स्मरण करते हुए शिखा बाँध ले। स्त्रियों को भी जूड़ा बाँध लेना चाहिये, केश खुले नहीं रखना चाहिये। मस्तक पर भस्म, रोली अथवा लाल चन्दन का तिलक लगा लेना चाहिये। इसके बाद 'भगवान् केशव को नमस्कार है', 'भगवान् नारायण को नमस्कार है' तथा 'भगवान् माधव को नमस्कार है' कहकर तीन बार आचमन करे (हथेली में जल लेकर पी ले)। भगवान् को नमस्कार कर जल पीने से मनुष्य का अन्तःकरण पवित्र हो जाता है।

इसके बाद 'भगवान् हृषीकेश को नमस्कार है' कहकर हाथ धो लेना चाहिये। तदनन्तर प्राणायाम (अँगूठे से दाहिने नासाछिद्र को दबाकर साँस

खींचना, दोनों नासाछिद्र दबाकर साँस रोकना तत्पश्चात् दाहिने नासाछिद्र से धीरे-धीरे श्वास छोड़ना) करके भगवान् पुण्डरीकाक्ष का नाम लेकर तथा भगवान् विष्णु का ध्यानकर अपने ऊपर तथा पूजन-सामग्री पर जल छिड़के।

इसके बाद 'काली-सिद्धि' पुस्तक का चन्दन, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य से पूजन करे। तदनन्तर काली-पूजन का संकल्प करे–

संकल्प–काली-पूजनकर्ता भगवती जगदम्बा का ध्यान करके मानसिक संकल्प करते हुए कहे कि 'हे माँ! मैं आपकी प्रसन्नता के लिये यथोपलब्ध षोडशोपचार पूज़न द्वारा आपका पूजन करूँगा।'

गणेशाम्बिका पूजन–भगवान् गणेश प्रथम पूज्य और विघ्नहर्ता हैं, अतः किसी भी मांगलिक कार्य में सबसे पहले गणेश-गौरी का पूजन होता है, इससे व्रत बिना किसी विघ्न के पूरा हो जाता है।

सबसे पहले गाय के गोबर से गौरी की और एक सुपारी पर मौली लपेटकर गणेशजी की प्रतिमा बना लेनी चाहिये। तत्पश्चात् उस पर गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य चढ़ाकर पूजन करना चाहिये। प्रतिमा उपलब्ध न होने पर मानसिक ध्यान और पूजन करना चाहिये। इसके बाद भगवती काली का षोडशोपचार पूजन करना चाहिये।

षोडशोपचार काली-पूजन

ध्यान–सर्वप्रथम जगज्जननी भगवती काली के इस प्रकार के स्वरूप का ध्यान करना चाहिये–

ध्यान-मन्त्र

या कालिका रोगहरा सुवन्द्या
वश्यैः समस्तैर्व्यवहारदक्षैः।
जनैर्जनानां भयहारिणी सा
देवमाता मयि सौख्यदात्री॥१॥
या माया प्रकृतिः शक्तिश्चण्डमुण्डविमर्दिनी।
सा पूज्या सर्वदेवैश्च ह्यस्माकं वरदा भव॥२॥
विश्वेश्वरि त्वं परिपाल्य विश्वं
विश्वात्मिका धारयतीति विश्वम्।

विश्वेशवन्द्या भवती भवन्ति
विश्वाश्रया ये त्वयि भक्तिनम्राः।।३।।
देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद
प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि पाहि विश्वं
त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य।।४।।
या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धां सतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा
तां त्वां नतास्म परिपालय देवि विश्वम्।।५।।

ध्यानोपरान्त निम्नलिखित मन्त्र से 'आवाहन' करे–

आवाहन-मन्त्र

आगच्छ वरदे देवि दैत्यदर्पनिषूदिनि।
पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शङ्करप्रिये।।

'आवाहन' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'आसन' प्रदान करने हेतु पृथ्वी अथवा चौकी पर जल का निक्षेप करे–

आसन-मन्त्र

अनेकरत्नसंयुक्तं नानामणिगणान्वितम्।
मातर्स्वर्णमयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम्।।

'आसन' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'पाद्य' प्रदान हेतु यन्त्र पर जल का निक्षेप करे–

पाद्य-मन्त्र

गङ्गादि सर्वतीर्थेभ्यो मया प्रार्थनयाऽऽहृतम्।
तोयमेतत्सुखं स्पर्श पाद्यार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

'पाद्य' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'अर्घ्य' प्रदान हेतु यन्त्र पर जल का निक्षेप करे–

अर्घ्य-मन्त्र

गन्धपुष्पाक्षतैर्युक्तमर्घ्यं सम्पादितं मया।
गृहाण त्वं महादेवि प्रसन्ना भव सर्वदा।।

'अर्घ्य' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र में 'आचमनीय' प्रदान हेतु यन्त्र पर जल का निक्षेप करे–

आचमनीय-मन्त्र

आचम्यतां त्वया देवि भक्ति मे ह्यचलां कुरु।
ईप्सितं मे वरं देहि परत्र च पराङ्गतिम्।।

'आचमनीय' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से स्नानार्थ जल का निक्षेप करे–

स्नानीय-मन्त्र

जाह्नवीतोयमानीतं शुभं कर्पूरसंयुतम्।
स्नानपयानि सुरश्रेष्ठे त्वां पुत्रादिफलप्रदाम्।।

'स्नानीय-जल' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र में 'पंचामृत-स्नान' कराये–

पञ्चामृतस्नान-मन्त्र

पयोदधिघृतं क्षौद्रं सितया च समन्वितम्।
पञ्चामृतमनेनाद्य कुरु स्नानं दयानिधे।।

'पञ्चामृत-स्नान' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'वस्त्र' समर्पित करे–

वस्त्र-मन्त्र

वस्त्रं च सोमदैवत्यं लज्जायास्तु निवारणम्।
मया निवेदितं भक्त्या गृहाण परमेश्वरि।।

'वस्त्र' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से उपवस्त्र समर्पित करे–

उपवस्त्र-मन्त्र

यामाश्रित्य महामाया जगत्सम्मोहिनी सदा।
तस्यै ते परमेशानि कल्पयाम्युत्तरीयकम्।।

'उपवस्त्र' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'मधुपर्क' समर्पित करे–

मधुपर्क-मन्त्र

दधिमध्वाज्यसंयुक्तं पात्रयुग्मसमन्वितम्।
मधुपर्कं गृहाण त्वं वरदा भव शोभने।।

'मधुपर्क' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'गन्ध' समर्पित करे–

गन्ध-मन्त्र

परमानन्द - सौभाग्य - परिपूर्ण - दिगन्तरे।
गृहाण परमं गन्धं कृपया परमेश्वरि।।

'गन्ध' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'कुङ्कुम' समर्पित करे–

कुङ्कुम-मन्त्र

कुङ्कुमं कान्तिदं दिव्यं कामिनीकामसम्भवम्।
कुङ्कुमेनार्चिते देवि प्रसीद परमेश्वरि।।

'कुङ्कुम' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'आभूषण' समर्पित करे–

आभूषण-मन्त्र

स्वभावं सुन्दरीरांगर्थैं नानाशक्त्याश्रिते शिवे।
भूषणानि विचित्राणि कल्पयाम्यमरार्चिते।।

'आभूषण' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'सिन्दूर' समर्पित करे–

सिन्दूर-मन्त्र

सिन्दूरामरुणाभासं जपाकुसुमसन्निभम्।
पूजितासि महादेवि प्रसीद परमेश्वरि।।

'सिन्दूर' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'काजल' समर्पित करे–

कज्जल-मन्त्र

चक्षुभ्यां कज्जलं रम्यं सुभगे शान्तिकारिके।
कर्पूरज्योतिरुत्पन्नं गृहाण परमेश्वरि।।

'काजल' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'सौभाग्य-सूत्र' समर्पित करे–

सौभाग्य-मन्त्र

सौभाग्यसूत्रं वरदे सुवर्णमणिसंयुते।
कण्ठे बध्नामि देवेशि सौभाग्यं देहि मे सदा।।

'सौभाग्य-सूत्र' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'गन्धद्रव्य' समर्पित करे–

गन्ध-द्रव्य-मन्त्र

चन्दनागरुकर्पूरं कुङ्कुमं रोचनं तथा।
कस्तूर्यादि सुगन्धांश्च सर्वाङ्गेषु विलेपयेत्।।

'गन्ध-द्रव्य' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'अक्षत' समर्पित करे–

अक्षत-मन्त्र

रञ्जिता कुङ्कुमौघेन अक्षताश्चापि शोभनाः।
ममैषां देवि दानेन प्रसन्ना भव ईश्वरि।।

'अक्षत' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'पुष्प' समर्पित करे–

पुष्प-मन्त्र

मन्दारपारिजातादिपाटली केतकानि च।
जातीचम्पकपुष्पाणि गृहाण परमेश्वरि।।

'पुष्प' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'पुष्पमाला' समर्पित करे–

पुष्पमाला-मन्त्र

सुरभि पुष्पनिचयैर्ग्रथितः शुभमालिकाम्।
ददामि तव शोभार्थं गृहाण परमेश्वरि।।

'पुष्पमाला' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'बिल्वपत्र' समर्पित करे–

बिल्वपत्र-मन्त्र

अमृतोद्भव श्रीवृक्षो महादेवि प्रियः सदा।
बिल्वपत्रं प्रयच्छामि पवित्रं ते सुरेश्वरि।।

'बिल्वपत्र' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'धूप' दे–

धूप-मन्त्र

दशाङ्गं गुग्गुलं धूपं चन्दनागरुसंयुतम्।
समर्पितं मया भक्त्या महादेवि प्रगृह्यताम्।।

'धूप' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'दीप' प्रदर्शित करे–

दीप-मन्त्र

घृतवर्तिसमायुक्तं महातेजो महोज्ज्वलम्।
दीपं दास्यामि देवेशि सुप्रीता भव सर्वदा।।

'दीप' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'नैवेद्य' समर्पित करे–

नैवेद्य-मन्त्र

अन्नं चतुर्विधिं स्वादु रसैः षड्भि समन्वितम्।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि भक्ति मेह्यचलां कुरु।।

'नैवेद्य' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'ऋतुफल' समर्पित करे–

ऋतुफल-मन्त्र

द्राक्षाखर्जूरकदली पनसाम्रकपित्थकम्।
नारिकेलेक्षुजम्ब्वादिफलानि प्रतिगृह्यताम्।।

'ऋतुफल' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'आचमनीय जल' समर्पित करे–

आचमनीय-जल-मन्त्र

कामारिवल्लभे देवि कुर्वाचमनमम्बिके।
निरन्तरमहं वन्दे चरणौ तव चण्डिके।।

'आचमनीय-जल' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'अखण्ड ऋतु फल' समर्पित करे–

अखण्ड ऋतुफल-मन्त्र

नारिकेलं च नारंगं कलिङ्गमचिरं तथा।
ऊर्वारुकं च देवेशि फलान्येतानि गृह्यताम्।।

'अखण्ड ऋतु फल' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'ताम्बूल' समर्पित करे-

ताम्बूल-मन्त्र

एलालवङ्गकस्तूरीकर्पूरैः सुष्ठुवासिताम्।
वीटिकां मुखवासार्थमर्पयामि सुरेश्वरि।।

'ताम्बूल' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'दक्षिणा' समर्पित करे–

दक्षिणा-मन्त्र

पूजाफलसमृद्ध्यर्थं तवाग्रे सर्वमीश्वरि।
स्थापितं तेन मे प्रीता पूर्णं कुरु मनोरथान्।।

'दक्षिणा' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र से 'नीराजन' (आरती) करे–

नीराजन-मन्त्र

नीराजनं सुमङ्गल्यं कर्पूरेण समन्वितम्।
चन्द्रार्कवह्निसदृशं महादेवि नमोऽस्तु ते।।

'नीराजन' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'प्रदक्षिणा' करे–

प्रदक्षिणा-मन्त्र

नमस्ते देवि देवेशि नमस्ते ईप्सितप्रदे।
नमस्ते जगतां धात्रि नमस्ते भक्तवत्सले।।

'प्रदक्षिणा' के पश्चात् निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए नमस्कार निवेदित करे–

नमस्कार-मन्त्र

नमः सर्वहितार्थायै जगदाधारहेतवे।
साष्टाङ्गोऽयं प्रणामस्तु प्रयत्नेन मया कृता।।

'नमस्कार' के पश्चात् स्तोत्र आदि का पाठ करे। अन्त में निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करते हुए 'विसर्जन' करे–

विसर्जन-मन्त्र

इमां पूजां मया देवि यथाशक्त्युपपादिताम्।
रक्षार्थं त्वं समादाय व्रज स्थानमनुत्तमम्।।

।। इति सामान्य काली-पूजन विधानम्।।

(श्रुति-पुराणोक्त)

कालीपूजनविधानम्

आचार्य यजमान को सपत्नीक आसन पर बैठाये। उस समय यजमान की पत्नी को दाहिनी ओर बैठना चाहिए। फिर आचार्य निम्न तीन नामों का उच्चारण करते हुए यजमान से तीन बार आचमन कराये–

ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः।

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करके यजमान को कुशा की पवित्री धारण करवाके प्राणायाम कराये–

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।। (शु.य.सं. १०/६) **तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्।।** (शु.य.सं. ४/४)

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण कर यजमान के ऊपर और पूजन सामग्री की पवित्रता हेतु कुशा से जल छिड़कें–

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

आचार्य निम्न विनियोग व श्लोक का उच्चारण करके यजमान से आसन शुद्धि कर्म कराये–**ॐ पृथ्वीतिमन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता आसनपवित्रकरणे विनियोगः।**

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरु चासनम्।।

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से उसकी शिखा का बन्धन कराये–

ब्रह्मभावसहस्रस्य रुद्रभावशतस्य च।
विष्णोः संस्मरणार्थं हि शिखाबन्धं करोम्यहम्।।

यजमान घृतपूरित दीप को पृथ्वी पर अक्षत छोड़कर स्थापित कर प्रज्वलित करे और निम्न श्लोकों द्वारा उसकी प्रार्थना करे–

भो दीप! देविरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्।
यावत्कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव।।

स्वस्तिवाचनम्

हरिः ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः। देवा नो यथा सदमिद्वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे।।१।। देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानार्ठ० रातिरभि नो निवर्तताम्। देवानार्ठ० सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे।।२।। तान्पूर्वया निविदा हूमहे वयं भग मित्रमदितिन्दक्षमस्त्रिधम्। अर्यमणं वरुणर्ठ० सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्।।३।। तन्नो वातो मयोभु वातु भेषजन्तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः। तद्ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणु तन्धिष्ण्या युवम्।।४।। तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।।५।। स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।६।। पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभंयावानो विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसा गमन्निह।।७।। भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवार्ठ० सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।।८।। शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः।।९।। अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वे देवा अदितिः पञ्चजना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्।।१०।। द्यौः शान्तिरन्तरिक्षर्ठ० शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वर्ठ० शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।११।। यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः।। ॐ शान्तिः सुशान्तिः सर्वारिष्टशान्तिर्भवतु।।१२।।

आचार्य निम्न नाममन्त्रों का यजमान से उच्चारण करवाते हुए अक्षत छोड़वायें–

ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः। ॐ वाणी-हिरण्यगर्भाभ्यां नमः। ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नमः। ॐ मातापितृचरणकमलेभ्यो नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः। ॐ कुलदेवताभ्यो नमः। ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः। ॐ एतत्कर्म-प्रधानदेवताभ्यो नमः। ॐ गुरुचरणकमलेभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीसिद्धिबुद्धिसहिताय ॐ महागणाधिपतये नमः।

पौराणिकश्लोकाः

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।। १ ।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।। २ ।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।। ३ ।।
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये।। ४ ।।
अभीप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः।। ५ ।।
वक्रतुण्ड! महाकाय! कोटिसूर्यसमप्रभ!।
अविघ्नं कुरु मे देव! सर्वकार्येषु सर्वदा।। ६ ।।
सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके!।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि! नमोऽस्तु ते।। ७ ।।
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम्।
येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनं हरिः।। ८ ।।
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि।। ९ ।।
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः।।१०।।
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।११।।
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।।१२।।
स्मृते सकलकल्याणभाजनं यत्र जायते।
पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्।।१३।।
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनः।।१४।।

विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्।
वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम्।।१५।।
विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्म-विष्णु-महेश्वरान्।
सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्वकार्मार्थसिद्धये।।१६।।

संकल्पः

यजमान के दायें हाथ में आचार्य जल, अक्षत, पुष्प और उसकी सामर्थ्य के अनुसार द्रव्य रखवाकर निम्न सङ्कल्प करवायें–

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे (अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने आनन्दवने गौरीमुखे त्रिकण्टकविराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे इति काश्यामेव विशेषतः अन्यत्र तत्तद्देशवैशिष्ट्यमुच्चार्य) अमुकनाम्नि संवत्सरे, अमुकायने अमुकऋतौ, महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे, अमुकमासे, अमुकपक्षे, अमुकतिथौ, अमुकवासरे, अमुकनक्षत्रे, अमुकयोगे, अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे, अमुकराशिस्थिते सूर्ये, अमुकराशिस्थिते देवगुरौ, शेषेषु ग्रहेषु यथा-यथा राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगण-विशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः, अमुकशर्माऽहं (वर्माऽहं, गुप्तोऽहं, दासोऽहं) मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य पुत्रपौत्रधनधान्यदीर्घायुरारोग्यैश्वर्यादिवृद्धिसमृद्ध्यर्थं श्रुति-स्मृति-पुराणोक्तफलप्राप्तिपूर्वकं धर्मार्थ-काम-मोक्षचतुर्विधपुरुषार्थसिद्धिद्वारा शाश्वतब्रह्मलोकप्राप्त्यर्थं श्रीमहाकालीदेव्याः प्रीत्यर्थं यथोपचारैः कालीपूजनमहं करिष्ये।

तदङ्गविहितं गणेशपूजनपूर्वकं पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं वसोर्द्धारा-पूजनं आयुष्यमन्त्रजपं नान्दीश्राद्धमाचार्यादिवरणानि च करिष्ये।

गणेशपूजनम्

आवाहनम्

ॐ गणानां त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनां त्वां निधिपतिर्ठ० हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।। (शु.य.सं. २३/१९)

ॐ भूर्भुव स्वः सिद्धि-बुद्धिझसहिताय गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि, स्थापयामि।

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।। (शु.य.सं. २३/१८)

ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः, गौरीमावाहयामि, स्थापयामि।

प्रतिष्ठापनम्

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञर्ठ० समिमं दधातु। विश्वेम्देवास इह मादयन्तामो ३ँ प्रतिष्ठ।। (२/१३)

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

गणेशाम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्।

आसनम्

ॐ पुरुष एवेदर्ठ० सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।। (शु.य.सं. ३१/२)

अलङ्कारसमायुक्तं मुक्ता-मणि-विभूषितम्।
दिव्य सिंहासनं चारु प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आसनं समर्पयामि।

पाद्यम्

ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः। पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।। (शु.य.सं. ३१/३)

गौरीसुत! नमस्तेऽस्तु शङ्करप्रियकारक!।
भक्त्या पाद्यं मया दत्तं गृहाण प्रणतप्रिय!।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पाद्यं समर्पयामि।

आचार्य 'गणानां त्वा०' व 'ॐ अम्बे अम्बिके०' से गणेश व अम्बा का आवाहन यजमान से करवायें, तदुपरान्त 'ॐ मनो जूतिर्जु०' व 'अस्यै प्राणाः०' के द्वारा से प्रतिष्ठापन करवाके 'ॐ पुरुष०' व 'अलङ्कारसमा०' से आसन प्रदान करवाये। तदुपरान्त आचार्य 'ॐ एतावानस्य०' व 'गौरीसुत०' से यजमान द्वारा पाद्य अर्पित करवायें।

अर्घ्यम्

ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः। ततो विष्वङ् व्यक्रामत्-साशनानशने अभि।। (शु.य.सं. ३१/४)

व्रतं उद्दिश्य विघ्नेशं गन्ध-पुष्पादिसंयुतम्।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं सर्वसिद्धिप्रदायकम्।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयम्

ॐ ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः।। (शु.य.सं. ३१/५)

सर्वतीर्थसमायुक्तं सुगन्धिं निर्मलं जलम्।
आचम्यतां मया दत्तं गृहाण विघ्नेश्वर!।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आचमनीयं समर्पयामि।

स्नानम्

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्। पशूँस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये।। (शु.य.सं. ३१/६)

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, स्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।। (शु.य.सं. ३४/११)

पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः।। (शु.य.सं. २४/३)

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

फिर 'ॐ त्रिपादूर्ध्व०' व 'व्रतं उद्दिश्य०' से अर्घ्य प्रदान करवाये , पुनः 'ॐ ततो विराड०' व 'सर्वतीर्थ०' का उच्चारण कर आचमनीय जल यजमान से अर्पित करवायें। फिर 'ॐ तस्माद्यज्ञात्०' व 'मन्दाकिन्यास्तु०' से स्नान करवायें। तदुपरान्त आचार्य 'ॐ पञ्च नद्यः०' व 'पञ्चामृतम्०' से यजमान द्वारा पंचामृत-स्नान करवायें पुनः 'ॐ शुद्धवालः०' इस मन्त्र द्वारा शुद्धोदक जल से स्नान करवाये।

वस्त्रम्

ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात्सऽउश्रेयान्भवति जायमानः। तन्धीरासः कवयऽउन्नयन्ति स्वाद्ध्यो मनसा देवयन्तः।।

सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जा निवारिणे।
मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

उपवस्त्रम्

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरुथमासदत्स्वः। वासो अग्ने विश्वरूपर्ठ० संव्ययस्व विभावसो।। (शु.य.सं. ११/४०)

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।
नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

गन्धम्

ॐ त्वां गन्धर्वा अखनंस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः। त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्यत।। (शु.य.सं. १२/९८)

गन्ध कर्पूर-संयुक्तं कुङ्कुमेन सुवासितम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ! प्रीत्यर्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, गन्धं समर्पयामि।

रक्तचन्दनम्

ॐ अर्ठ० शुनाते अर्ठ० शुः पृच्यतां परुषा परुः। गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः।। (शु.य.सं. २०/२७)

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, रक्तचन्दनं समर्पयामि।

'ॐ युवा सुवासाः०' व 'सर्वभूषाधिके०' से गणेशाम्बिका के ऊपर यजमान से वस्त्र तथा 'ॐ सुजातो०' मन्त्र का आचार्य उच्चारण करते हुए उपवस्त्र यजमान से ही प्रदान करवाये। 'ॐ यज्ञोपवीतम्०' व 'नवभिस्तन्तु०' इनका उच्चारण करते हुए गणेशाम्बिका के ऊपर यज्ञोपवीत यजमान से चढ़वाये। उपरान्त 'ॐ त्वां गन्धर्वा०' व 'गन्ध कर्पूर-संयुक्तम्०' के द्वारा गन्ध, 'ॐ अर्ठ०' इस मन्त्र द्वारा गणेश व अम्बा पर रक्तचन्दन यजमान से चढ़वाये।

अक्षतान्

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजा न्विन्द्र ते हरी।। (शु.य.सं. ३/५१)

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालाम्

ॐ ओषधीः प्रति मोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः। अश्वा इव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः।। (शु.य.सं. १२/७७)

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो!।
मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि गृहाण विघ्नेश्वर!।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पुष्पमालां समर्पयामि।

दूर्वाम्

ॐ काण्डात्काण्डात् प्ररोहन्ति पुरुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्वे प्र तनु सहस्रेण शतेन च।। (शु.य.सं. १३/२०)

दूर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दूर्वां समर्पयामि।

सिन्दूरम्

ॐ सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः। घृतस्य धारा अरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः।। (शु.य.सं. १७/९५)

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।
शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सिन्दूरं समर्पयामि।

तदुपरान्त 'ॐ अक्षन्नमीम०' व 'अक्षताश्च०' से अक्षत प्रदान करवायें। 'ॐ ओषधीः०' व 'माल्यादीनि०' मन्त्र का उच्चारण करके गणेश व अम्बा पर पुष्पमाला यजमान से चढ़वाये। पुनः 'ॐ काण्डात्काण्डात्०' इस मन्त्र व 'दूर्वाङ्कुरान्०' इस श्लोक के द्वारा गणेश व अम्बा को दूर्वा प्रदान करवाये। आचार्य 'ॐ सिन्धोरिव०' इस मन्त्र व 'सिन्दूरं शोभनं रक्तम्०' इस श्लोक के द्वारा गणेश व अम्बा के ऊपर यजमान से सिन्दूर चढ़वायें।

अबीर-गुलाल

ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परि बाधमानः। हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान्पुमान्पुमार्ठ० सं परि पातु विश्वतः।। (२९/५१)

अबीरं च गुलालं च चोवा चन्दनमेव च।
अबीरेणार्चितो देव! अतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अबीरं गुलालं च समर्पयामि।

धूपम्

ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्व तं योऽस्मान्धूर्वति तं धूर्व यं वयं धूर्वामः। देवानामसि वह्नितमर्ठ० सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं देवहूतमम्।। (शु.य.सं. १/८)

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपं समर्पयामि।

दीपम्

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्योवर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।। (शु.य.सं. ३/९)

भक्त्या दीपं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
त्राहि मां निरयाद् घोराद् दीपज्योतिर्नमोऽस्तु ते।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दीपं दर्शयामि। हस्तप्रक्षालनं।

नैवेद्यम्

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्षर्ठ० शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथालोकाँ२ अकल्पयन्।। (शु.य.सं. ३१/१३)

अनेकस्वादुसंयुक्तं नानाफलसमन्वितम्।
मोदकं पायसं चैव गृहाण विघ्नेश्वर!।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं समर्पयामि। नैवेद्यान्ते आचमीनयं जलं समर्पयामि।

'ॐ अहिरिव भोगैः०' व 'अबीरं च गुलालम्०' का उच्चारण करते हुए अबीर और गुलाल यजमान से चढ़वायें। 'ॐ धूरसि०' मन्त्र व 'वनस्पति०' श्लोक का उच्चारण करके गणेशाम्बिका को यजमान से धूप दिखवायें। आचार्य 'ॐ अग्निर्ज्योति०' मन्त्र व 'भक्तया दीपम्०' श्लोक का उच्चारण करके गणेश व अम्बा को यजमान से दीप दिखवाये। यजमान के दोनों हाथों को शुद्ध जल से धुलवा दें। पुनः 'ॐ नाभ्या०' व 'अनेकस्वादु' से गणेश व अम्बा के ऊपर नैवेद्य यजमान से चढ़वाये और आचमनीय जल दे।

ताम्बूलम्

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ताम्बूलं समर्पयामि।

आचमनीयजलम्

गणाधिप! नमस्तुभ्यं गौरीसुत गजानन!।
गृहाण आचमनीयं त्वं सर्वसिद्धिप्रदायकम्।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आचमनीयजलं समर्पयामि।

ऋतुफलम्

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वर्ठ० हसः।। (शु.य.सं. १२/८९)

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ऋतुफलं समर्पयामि।

दक्षिणाम्

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

नीराजनम्

ॐ इदꣳ हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीरर्ठ० सर्वगणर्ठ० स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनि। अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मासु धत्त।।१।। (शु.य.सं. १९/४८)

आ रात्रि पार्थिवर्ठ० रजः पितुरप्रायि धामभिः। दिवः सदार्ठ०सि बृहती वितिष्ठस आ त्वेषं वर्तते तमः।।२।। (शु.य.सं. ३४/३२)

कदलीगर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितम्।
आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आर्तिक्यं समर्पयामि।

इसके उपरान्त 'पूगीफलम्०' से गणेशाऽम्बिका को एलालवंग से युक्तताम्बूल यजमान से ही अर्पित करवायें। पुनः गणाधिप! से आचमनीय जल और 'ॐ याः फलिनीर्या०' से ऋतुफल चढ़वायें। हिरण्यगर्भगर्भस्थम्०' इस का उच्चारण करके यजमान से दक्षिणा प्रदान करवायें। 'ॐ इदर्ठ०' 'आ रात्रि०' तथा 'कदलीगर्भसम्भूतम्०' का उच्चारण कर यजमान से गणेश-अम्बा की आरती करवायें।

पुष्पांजलिम्

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।। (शु.य.सं. ३१/१६) ॐ गणानां त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिर्ठ० हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।। (शु.य.सं. २३/१९) ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।। (शु.य.सं. २३/१८) ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे। स मे कामान् कामकामाय मह्यम्। कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु। कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः।। ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात्, सार्वभौमः सार्वायुषा-न्तादापरार्धात्, पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिती।। तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन् गृहे। आवीक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति।।

नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्तो गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

प्रदक्षिणाम्

ॐ ये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः। तेषार्ठ० सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।। (शु.य.सं. १६/६१)

यानि कानि च पापानि ज्ञाता-ज्ञात-कृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्ति प्रदक्षिणा पदे पदे।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि।

आचार्य 'ॐ यज्ञेन यज्ञ०' आदि मंत्रों व 'नाना सुगन्धि०' श्लोक का उच्चारण करके यजमान से पुष्पांजलि प्रदान करवायें। आचार्य 'ॐ ये तीर्थानि०' मन्त्र 'यानि कानि०' इस श्लोक द्वारा यजमान से प्रदक्षिणा करवायें।

विशेषार्घ्यम्

रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष! रक्ष त्रैलोक्यरक्षक!।
कर्ता भक्तानामभयं त्राता भव भवार्णवात्।।
द्वैमातुर कृपासिन्धो! षाण्मातुराग्रज प्रभो!।
वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद!।।
अनेन सफलार्घेण फलदोऽस्तु सदा मम।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

प्रार्थना

ॐ विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय।
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय।
गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते।।१।।
भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय।
सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय।
भक्तप्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते।।२।।
नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः।
नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः।।३।।
विश्वरूपस्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे।
भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक!।।४।।
लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।५।।
त्वां विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्दरेति
भक्तप्रियेति सुखदेति फलप्रदेति।
विद्याप्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति
तेभ्यो गणेश! वरदो भव नित्यमेव।।६।।
अनया पूजया गणेशाम्बिके प्रीयेतां न मम।

तदुपरान्त 'रक्ष रक्ष०' से 'सदा मम' तक के श्लोकों का उच्चारण करते हुए यजमान से गणेशाम्बिका को विशेषार्घ्य प्रदान करवाये। आचार्य 'ॐ विघ्नेश्वराय०' आदि पौराणिक श्लोकों का उच्चारण यजमान से करवाके गणेशजी की प्रार्थना करवायें।

कलशस्थापनं पूजनं च

ततः कुङ्कुमादिना भूमौ पद्मं कृत्वा,

ॐ मही द्यौः पृथिवी च न ऽइमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतान्नो भरीमभिः।।

(शु.य.सं. ८/३२)

इति भूमिं स्पृष्ट्वा।

ॐ ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा। यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तꣳ राजन्पारयामसि।। (शु.य.सं. १२/९६)

इति सप्तधान्यं विकिरेत्।

ॐ आ जिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्जा नि वर्तस्व सा नः सहस्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्मा विशताद्रयिः।। (शु.य.सं. ८/४२)

इति सप्तधान्योपरि कलशं स्थापयेत्।

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदन्मसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद।।

(शु.य.सं. ४/३६)

इति कलशे जलं पूरयेत्।

ॐ त्वां गन्धर्वाअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः। त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् न्यक्ष्मादमुच्यत।। (शु.य.सं. १२/९८)

इति कलशे गन्धं क्षिपेत्।

ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा। मनै नु बभ्रूणामहꣳ शतं धामानि सप्त च।। (शु.य.सं. १२/७५)

इति मन्त्रेण कलशे सर्वौषधी प्रक्षिपेत्।

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।। (शु.य.सं. १३/२०)

इति कलशे दूर्वाङ्कुरान् क्षिपेत्।

कलशस्थापनपूजन-आचार्य रोली से भूमि पर अष्टदल कमल का निर्माण कर 'ॐ मही द्यौः०' इस मन्त्र का उच्चारण कर यजमान से भूमि का स्पर्श करावे। 'ॐ ओषधयः समवदन्त०' इस मन्त्र का उच्चारणकर अष्टदल कमल पर सप्तधान्य छोड़े, फिर 'आ जिघ्र कलशं०' इस मन्त्र का उच्चारणकर सप्तधान्य के ऊपर कलश स्थापित करे। पुनः 'ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि०' इस मन्त्र द्वारा उस स्थापित कलश में जल भरे। इसके उपरान्त 'ॐ त्वां गन्धर्वा०' इस मन्त्र का उच्चारणकर चन्दन छोड़े। 'या ओषधी०' इस मन्त्र द्वारा कलश में सर्वौषधि छोड़े, 'ॐ काण्डात् काण्डात्०' इस मन्त्र द्वारा कलश में दूर्वा छोड़े।

ॐ अश्वत्थे वो निषदनं पर्णे वो वसतिष्कृता। गोभाज ऽइत्किलासथ यत्सनवथ पूरुषम्।। (शु.य.सं. १२/७०)

इति पञ्चपल्लवान्।

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।। (शु.य.सं. १०/६) **तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्।।** (शु.य.सं. ४/४)

इति मन्त्रेण कलशे पवित्रं क्षिपेत्।

ॐ स्योना पृथिवि नो भवान्नृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः।। (शु.य.सं. ३६/१३)

इति सप्तमृदः क्षिपेत्।

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वर्ठ० हसः।। (शु.य.सं. १२/८९)

इति कलशे पूगीफलं प्रक्षिपेत्।

ॐ परि वाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्नानि दाशुषे।। (शु.य.सं. ११/२५)

इति पञ्चरत्नानि।

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।। (शु.य.सं. १३/४)

इति कलशे हिरण्यं क्षिपेत्।

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरूथमाऽसदत्स्वः। वासो अग्ने विश्वरूपर्ठ० सम्व्ययस्व विभावसो।। (शु.य.सं. ११/४०)

इति युग्मवस्त्रेण कलशं वेष्टयेत्।

ॐ पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत। वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्जर्ठ० शतक्रतो।। (शु.य.सं. ३/४९)

इति कलशोपरि पूर्णपात्रं न्यसेत्।

तदुपरान्त 'अश्वत्थे वो०' इस मन्त्र का उच्चारणकर कलश में पंचपल्लव छोड़े दे। फिर 'ॐ पवित्रेस्थो०' इस मन्त्र द्वारा कुशा की बनी हुई पवित्री कलश में छोड़े, और 'स्योना पृथिवि०' इस मन्त्र का उच्चारण कर सप्तमृतिका, 'ॐ याः फलिनीर्याः०' इस मन्त्र का उच्चारण कर सुपाड़ी, 'ॐ परि वाजपतिः०' इस मन्त्र का उच्चारण कर पंचरत्न छोड़े। फिर 'ॐ हिरण्यगर्भः०' इस मन्त्र का उच्चारण कर स्थापित कलश में कुछ द्रव्य छोड़े, पुनः 'ॐ सुजातो ज्योतिषा०' इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए कलश को चारों ओर से दो वस्त्रों द्वारा यजमान से लिपटवायें। तदुपरान्त ॐ पूर्णा दर्वि परापत० इस मन्त्र का उच्चारण कर कलश के ऊपर पूर्णपात्र में अक्षत भरकर उसके ऊपर रखें।

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्वर्ठ० हसः।। (शु.य.सं. १८/८९)

इति मन्त्रेण कलशोपरि नारिकेलफलं संस्थाप्य।

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशर्ठ०स मा न आयुः प्र मोषीः।। (शु.य.सं. २१/२)

इति मन्त्रेण अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकमावाहयामि स्थापयामि। 'ॐ अपांपतये वरुणाय नमः।

इति पञ्चोपचारैर्वरुणदेवता सम्पूज्य, ततो गङ्गाद्यावाहनं कुर्यात्।

कलाकला हि देवानां दानवानां कलाकलाः।
संगृह्य निर्मितो यस्मात् कलशस्तेन कथ्यते।।१।।
कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः।।२।।
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
अर्जुनी गोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती।।३।।
कावेरी कृष्णवेणी च गङ्गा चैव महानदी।
तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा।।४।।
नदाश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथापराः।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै।।५।।
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः।।६।।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः।।७।।
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारिकाः।।८।।

इसके उपरान्त 'ॐ याः फलिनीर्या०' इस मन्त्र का उच्चारणकर उस कलश के ऊपर लाल वस्त्र लपेटकर नारिकेल रखे। फिर 'ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा०' मन्त्र और अस्मिन् कलशे० इस वाक्य का उच्चारणकर उस कलश में अंग सहित सपरिवार, सायुध, सशक्तिकः वरुण का आवाहन और स्थापन करे। पुनः 'ॐ अपांपतये वरुणाय नमः' से वरुण का पंचोपचार से पूजन करे। 'कलाकला हि देवानां' से प्रारम्भ कर 'दुरितक्षयकारिकाः' तक के आठ पौराणिक श्लोकों का क्रम से उच्चारण करे। उस कलश में गंगा आदि नदियों का आवाहन करे।

यजमानः स्वहस्ते अक्षतान् गृहीत्वा, 'ॐ मनो जूतिर्जु०' इति मन्त्रेण पठेत्। कलशे वरुणाद्यावाहितदेवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु। ॐ वरुणाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः। विष्णवाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः, इति वा। आसनार्थेऽक्षतान् समर्पयामि। पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि। आचमनं समर्पयामि। पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। स्नानाङ्गाचमनं समर्पयामि। वस्त्रं समर्पयामि। आचमनं समर्पयामि। यज्ञोपवीतं समर्पयामि। आचमनं समर्पयामि। उपवस्त्रं समर्पयामि। आचमनं समर्पयामि। गन्धं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि। पुष्पमालां समर्पयामि। नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि। धूपमाघ्रापयामि। दीपं दर्शयामि। हस्तप्रक्षालनम्। नैवेद्यं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। मध्ये पानीयम्। उत्तरापोशनं च समर्पयामि। ताम्बूलं समर्पयामि। पूगीफलं समर्पयामि। कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि। आर्तिक्यं समर्पयामि। मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि। प्रदक्षिणां समर्पयामि। नमस्कारं समर्पयामि। अनया पूजया वरुणाद्यावाहितदेवताः प्रीयन्तां न मम।

कलश-प्रार्थना प्रारम्भः

देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्।।१।।
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।।२।।
शिवः स्वयं त्वमेवाऽसि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्राविश्वेदेवाः सपैतृकाः।।३।।

इसके पश्चात् यजमान अपने दायें हाथ में अक्षत लेकर 'ॐ मनो जुर्तिजु०' से प्रारम्भकर 'विष्णवाद्यावाहितदेवताभ्यो नमः' तक के वाक्यों का उच्चारणकर कलश के ऊपर अक्षत छिड़के, फिर 'आसनार्थे अक्षतान्' से 'प्रीयन्तां न मम' तक का उच्चारणकर उपरोक्त प्रत्येक वाक्यों से वरुणाद्यावाहित देवताओं का षोडशोपचारों से पूजन करें। कलशप्रार्थना का भावार्थ– हे कलश! देवता एवं असुरों द्वारा समुद्रमंथन में भगवान् विष्णु स्वयं कुम्भ को लेकर तुम्हें निकले। उस जल में सभी तीर्थ और समस्त देवता स्थित हैं। तुम्हारे अन्दर सब प्राणी, सब प्राण, शिव, स्वयं विष्णु, ब्रह्मा, आदित्य, वसुगण, रुद्रगण, विश्वेदेव–ये सभी कार्य के फल को देनेवाले स्थित हैं।

त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वत् प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव!।
सान्निध्यं कुरु देवेश! प्रसन्नो भव सर्वदा।।४।।
नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय।
सुपाशहस्ताय झषासनाय जलाधिनाथाय नमो नमस्ते।।५।।
पाशपाणे! नमस्तुभ्यं पद्मिनीजीवनायक!।
पुण्याहवाचनं यावत् तावत्त्वं सन्निधो भव।।६।।

पुण्याहवाचनम्

अवनिकृत-जानुमण्डलः कमल-मुकुल-सदृशमञ्जलिं शिरस्या-धायाऽनन्तरं दक्षिणेन पाणिना स्वर्णपूर्णकलशं धारयित्वा आशिषः प्रार्थयेत्।

यजमान

दीर्घा नागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णुपदानि च।
तेनाऽऽयुःप्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु।।

विप्राः—अस्तु दीर्घमायुः।

ॐ त्रीणि पदा वि चक्रमे विष्णुर्गोपा अदाभ्यः। अतो धर्माणि धारयन्।।
तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु—इति यजमानः।
पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु—इति द्विजाः।
एवं द्विरपरं शिरसि भूमौ निधाय।

आपके प्रसाद से इस यज्ञ को उस जल द्वारा हम सम्पादित करते हैं। इसलिए हे देव! इसमें आप निवास करो एवं सर्वदा प्रसन्न रहो। स्फटिक की तरह कान्ति, सफेद मालाधारी रूप एवं पाश को हाथ में धारण करनेवाले शनि और जल के स्वामी आपको बारम्बार नमस्कार है। हे पाशपाणे! हे पद्मिनीजीवनायक! आपको नमस्कार है। जब तक पुण्याहवाचन कार्य हो, तब तक आप इस कलश में स्थित रहें।। १-६।।

पुण्याहवाचन—यजमान दोनों घुटनों को भूमि पर मोड़कर कमल के तुल्य अपनी अंजली को सिर पर रखे। और दाहिने हाथ में स्वर्ण आदि के जलपूर्ण कलश को अपने शिर से स्पर्श कर स्वयं आशीर्वाद प्राप्त करने हेतु ब्राह्मणों से प्रार्थना करे। यजमान 'दीर्घा नागा०' से प्रारम्भकर 'दीर्घमायुरस्तु' तक कहे। ब्राह्मण कहें-'अस्तु दीर्घमायुः।' पुनः यजमान 'त्रिणि पदा०' से 'दीर्घमायुरस्तु' तक का उच्चारण करे। फिर ब्राह्मण कहें, 'पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु'। इस क्रम द्वारा दो बार मस्तक से उस कलश का स्पर्शकर यथास्थान रखे।

यजमानः ब्राह्मणानां हस्ते—शिवा आपः सन्तु इति दद्यात्। सन्तु शिवा आपः। इति ब्राह्मणाः। एवं सर्वत्र वचनोत्तरं दद्युः।

यजमानः—**सौमनस्यमस्तु इति पुष्पम्।** विप्राः—**अस्तु सौमनस्यम्।**

यजमानः—**'अक्षतं चाऽरिष्टं चाऽस्तु' इत्यक्षतान्।** विप्राः—**अस्त्वक्षतमरिष्टं च।** यजमानः—**गन्धाः पान्तु इति गन्धम्।** विप्राः—**सुमङ्गल्यं चाऽस्तु। यजमान- अक्षताः पान्तु।** विप्राः—**आयुष्यमस्तु।** यजमानः—**पुष्पाणि पान्तु।** विप्राः—**सौश्रियमस्तु।** यजमानः—**सफलताम्बूलानि पान्तु।** विप्राः—**ऐश्वर्यमस्तु।**

यजमानः—**दक्षिणाः पान्तु।** विप्राः—**बहुदेयं चास्तु।** यजमानः—**पुनरत्राऽऽपः पान्तु।** विप्राः—**स्वर्चितमस्तु।** यजमानः—**दीर्घमायुः शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिः श्रीर्यशो विद्या विनयो वित्तं बहुपुत्रं बहुधनं चाऽऽयुष्यं चाऽस्तु।** विप्राः—**तथाऽस्तु।** यजमानः—**यं कृत्वा सर्ववेदयज्ञक्रियाकरणकर्मारम्भाः शुभाः शोभनाः प्रवर्तन्ते तमहमोङ्कारमादिं कृत्वा, ऋग्यजुः सामाऽथर्वाऽऽशीर्वचनं बहुऋषिमतं समनुज्ञातं भवद्भिरनुज्ञातः पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये।** विप्राः—**वाच्यताम्।**

करोतु स्वस्ति ते ब्रह्मा स्वस्ति चाऽपि द्विजातयः।
सरीसृपाश्च ये श्रेष्ठास्तेभ्यस्ते स्वस्ति सर्वदा।।१।।
ययातिर्नहुषश्चैव धुन्धुमारो भगीरथः।
तुभ्यं राजर्षयः सर्वे स्वस्ति कुर्वन्तु नित्यशः।।२।।
स्वस्ति तेऽस्तु द्विपादेभ्यश्चतुष्पादेभ्य एव च।
स्वस्त्यस्त्वापादकेभ्यश्च सर्वेभ्यः स्वस्ति ते सदा।।३।।

पुनः यजमान ब्राह्मणों के हाथ में 'शिवा आपः सन्तु' का उच्चारण कर जल दें। ब्राह्मण कहे-'शिवा आपः' इस क्रम द्वारा सभी स्थानों पर यजमान के कहने पर ब्राह्मण उत्तर-प्रत्युत्तर प्रदान करे। यजमान—'सौमनस्यमस्तु' कहकर ब्राह्मणों के हाथ में पुष्प दे। ब्राह्मण कहे-'अस्तु सौमनस्यम्'। यजमान—'अक्षतं चाऽरिष्टं चाऽस्तु' कहकर अक्षत दें। ब्राह्मण कहें-'अस्त्वक्षतमरिष्टं च'। पुनः यजमानः-'गन्धाः पान्तु' कहकर ब्राह्मणों के माथे पर चन्दन लगायें। ब्राह्मण कहें-'सुमंगल्यं चाऽस्तु।' यजमान 'अक्षताः पान्तु' का उच्चारण कर ब्राह्मणों के हाथ में अक्षत दे। ब्राह्मण कहे-'आयुष्यमस्तु'। यजमान ब्राह्मणों के हाथ में 'पुष्पाणि पान्तु' के द्वारा पुष्प प्रदान करे। ब्राह्मण लोग 'सौश्रियमस्तु' कहें। तदुपरान्त यजमान 'सफल-ताम्बूलानि पान्तु' का उच्चारणकर ब्राह्मणों को फल और ताम्बूल देवे। ब्राह्मण कहें—'ऐश्वर्यमस्तु'।

स्वाहा स्वधा शची चैव स्वस्ति कुर्वन्तु ते सदा।
करोतु स्वस्ति वेदादिर्नित्यं तव महामखे।।४।।
लक्ष्मीररुन्धती चैव कुरुतां स्वस्ति तेऽनघ।
असितो देवलश्चैव विश्वामित्रस्तथाऽङ्गिराः।।५।।
वसिष्ठः कश्यपश्चैव स्वस्ति कुर्वन्तु ते सदा।
धाता विधाता लोकेशो दिशश्च सदिगीश्वराः।।६।।
स्वस्ति तेऽद्य प्रयच्छन्तु कार्त्तिकेयश्च षण्मुखः।
विवस्वान् भगवान् स्वस्ति करोतु तव सर्वदा।।७।।
दिग्गजाश्चैव चत्वारः क्षितिश्च गगनं ग्रहाः।
अधस्ताद् धरणीं चाऽसौ नागो धारये हि यः।।८।।
शेषश्च पन्नगश्रेष्ठः स्वस्ति तुभ्यं प्रयच्छतु।

ॐ द्रविणोदाः पिपीषति जुहोत प्र च तिष्ठत। नेष्ट्रादृतुभिरिष्यत।।१।। सविता त्त्वा सवानार्ठ० सुवतामग्निर्गृहपतीनार्ठ० सोमो वनस्पतीनाम्। बृहस्पतिर्वाच इन्द्रो ज्यैष्ठ्याय रुद्रः पशुभ्यो मित्रः सत्यो वरुणो धर्मपतीनाम्।।२।। न तद्रक्षार्ठ० सि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमजर्ठ० ह्येतत्। यो बिभर्ति दाक्षायणर्ठ० हिरण्यः स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः।।३।। उच्चा ते जातमन्धसो दिवि सद्भूम्या ददे। उग्रर्ठ० शर्म महि श्रवः।।४।। उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे। अभि देवाँ२इयक्षते।।५।। इत्येता ऋचः पुण्याहे ब्रूयात्।। व्रत-जप-नियम-तपः-स्वाध्याय-क्रतु-शम-दम-दया-दानविशिष्टानां सर्वेषां ब्राह्मणानां मनः समाधीयताम्। इति यजमानः। समाहितमनसः स्मः इति विप्राः। प्रसीदन्तु भवन्तः इति यजमानः। प्रसन्नाः स्मः इति विप्राः।

यजमान-'दक्षिणाः पान्तु' का उच्चारण कर ब्राह्मणों को दक्षिणा दे। ब्राह्मण कहें-'बहुदेयं चाऽस्तु'। यजमान-'पुनरत्रापः पान्तु' का उच्चारण कर जल दे। ब्राह्मण कहें-'स्वर्चितमस्तु।' पुनः यजमान-'दीर्घमायु०' से 'चायुष्यं चाऽस्तु' तक कहे। ब्राह्मण कहें-'तथाऽस्तु'। यजमान-'यं कृत्वा सर्ववेद' से 'पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये' तक का उच्चारण करे। यजमान के कहने पर ब्राह्मण उत्तर में 'वाच्यताम्' और 'करोतु स्वस्ति ते ब्रह्मा' से 'अभि देवां इयक्षते' तक श्लोक का उच्चारण करें। 'ॐ द्रविणोदा०' से आरम्भ कर पाँच मन्त्रों का उच्चारण करें। तदुपरान्त पुनः यजमान-'व्रत-जप-नियम-तपः' से 'मनः समाधीयताम्' तक का उच्चारण करें। इसके उपरान्त ब्राह्मण कहें-'समाहित-मनसः स्मः'। फिर यजमान कहे-'प्रसीदन्तु भवन्तः'। ब्राह्मण कहें-'प्रसन्ना स्मः।'

ततो यजमानब्रूयात्—ॐ शान्तिरस्तु इत्यादि। 'अस्त्व'ति द्विजाः। एवं वचनं प्रतिवचनं सर्वत्र दद्युः। ॐ शान्तिरस्तु। ॐ पुष्टिरस्तु। ॐ तुष्टिरस्तु। ॐ वृद्धिरस्तु। ॐ अविघ्नमस्तु। ॐ आयुष्यमस्तु। ॐ आरोग्यमस्तु। ॐ शिवमस्तु। ॐ शिवङ्कर्माऽस्तु। ॐ कर्मसमृद्धिरस्तु। ॐ धर्मसमृद्धिरस्तु। ॐ वेदसमृद्धिरस्तु। ॐ शास्त्रसमृद्धिरस्तु। ॐ धनधान्यसमृद्धिरस्तु। ॐ इष्टसम्पदस्तु। (बहिः) ॐ अरिष्टनिरसनमस्तु। यत्पापं रोगोऽशुभमकल्याणं तत् दूरे प्रतिहतमस्तु। ॐ यच्छ्रेयस्तदस्तु। उत्तरे कर्मणि निर्विघ्नमस्तु। उत्तरोत्तरमहरहरभिवृद्धिरस्तु। उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम्। तिथिकरणमुहूर्त्तनक्षत्रग्रहलग्नसम्पदस्तु। ॐ तिथिकरणमुहूर्तनक्षत्रग्रहलग्नाधि-देवताः प्रीयन्ताम्। ॐ तिथिकरणे समुहूर्ते सनक्षत्रे सग्रहे सलग्ने साधिदैवते प्रीयेताम्। ॐ दुर्गापाञ्चाल्यौ प्रीयेताम्। ॐ अग्निपुरोगा विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्। ॐ इन्द्रपुरोगा मरुद्गणाः प्रीयन्ताम्। ॐ वसिष्ठपुरोगा ऋषिगणाः प्रीयन्ताम्। ॐ माहेश्वरीपुरोगा उमा मातरः प्रीयन्ताम्। ॐ अरुन्धती पुरोगाः एकपत्न्यः प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्मपुरोगाः सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम्। ॐ विष्णुपुरोगाः सर्वे देवाः प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम्। ॐ श्रीसरस्वत्यौ प्रीयेताम्। ॐ श्रद्धामेधे प्रीयेताम्। ॐ भगवती कात्यायनी प्रीयताम्। ॐ भगवती माहेश्वरी प्रीयताम्। ॐ भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम्। ॐ सर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वाः ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वा इष्टदेवताः प्रीयन्ताम्। (बहिः) ॐ हताश्च ब्रह्मद्विषः। ॐ हताश्च परिपन्थिनः। ॐ हताश्च विघ्नकर्त्तारः। ॐ शत्रवः पराभवं यान्तु। ॐ शाम्यन्तु घोराणि। ॐ शाम्यन्तु पापानि। ॐ शाम्यन्त्वीतयः। ॐ शाम्यन्तूपद्रवा। (अन्तः) ॐ शुभानि वर्द्धन्ताम्। ॐ शिवा आपः सन्तु। ॐ शिवा ऋतवः सन्तु। ॐ शिवा अग्नयः सन्तु। ॐ शिवा आहुतयः सन्तु। ॐ शिवा वनस्पतयः सन्तु। ॐ शिवा अतिथयः सन्तु। ॐ अहोरात्रे शिवे स्याताम्। ॐ निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न

इसके पश्चात् यजमान अपने बायें हाथ में अक्षतपात्र लेकर दायें हाथ से 'ॐ शान्तिरस्तु'–से लेकर 'पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये' तक के वाक्यों का उच्चारण कर कलश पर दो-दो दाना अक्षत चढ़ावें। इन वाक्यों के मध्य में 'ॐ अरिष्टनिरसनमस्तु' से लेकर 'तद्दूरे प्रतिहतमस्तु' तथा 'ॐ हताश्च ब्रह्मादिषु' से 'ॐ शाम्यन्तूपद्रवाः' तक का उच्चारण कर अलग-अलग कसोरे में अक्षत छोड़े। ब्राह्मण-'ॐ वाच्यताम्' इस प्रकार कहें।

ओषधयः पच्यन्तां। योगक्षेमो नः कल्पताम्। शुक्राङ्गारकबुध-बृहस्पति-शनैश्चर-राहु-केतु-सोमादित्यरूपाः सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम्। ॐ भगवान् नारायणः प्रीयताम्। ॐ भगवान् पर्जन्यः प्रीयताम्। ॐ भगवान् स्वामी महासेनः प्रीयताम्। ॐ पुरोनुवाक्यया यत्पुण्यं तदस्तु। ॐ याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु। ॐ वषट्कारेण यत्पुण्यं तदस्तु। प्रातः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु। एतत्कल्याणयुक्तं पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये, इति यजमानः। ॐ वाच्यतामि 'ति ब्राह्मणाः।

ॐ ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्च सृष्ट्युत्पादनकारकम्।
वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य कालीपूजनकर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ॐ पुण्याहम्, ॐ पुण्याहम्, ॐ पुण्याहम्। इति ब्राह्मणाः।

ॐ अस्य कर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु इति यजमानः। ॐ पुण्याहम्, ॐ पुण्याहम्, ॐ पुण्याहम्। इति ब्राह्मणाः एवं वचनं प्रतिवचनं च त्रिःपठित्वा।

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।।

इति ब्राह्मणाः।

ॐ पृथिव्यामुद्धृतायान्तु यत्कल्याणं पुरा कृतम्।
ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य कालीपूजनकर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐ कल्याणम्, ॐ कल्याणम्, ॐ कल्याणम्।

ॐ यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्म राजन्याभ्यार्ठ० शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृद्ध्यतामुप मादो नमतु।। इति ब्राह्मणाः पठेयुः।।

पुनः यजमान-'ॐ ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्च०' से 'भवन्तो ब्रुवन्तु' तक तीन बार बोले। ब्राह्मण भी तीन बार 'ॐ पुण्याहम्, पुण्याहम्, पुण्याहम्' यह कहें। 'ॐ पुनन्तु मा देवजनाः' इस मन्त्र का उच्चारण करें। इसके उपरान्त यजमान के 'पृथिव्यामुद्धृतायां तु०' से 'भवन्तो ब्रुवन्तु' पर्यन्त कहने पर सभी वरण किये हुए ब्राह्मण तीन बार 'ॐ कल्याणम्, कल्याणम्, कल्याणम्' कहें। 'ॐ यथेमां वाचम्०' इस वैदिक मन्त्र का उच्चारण ब्राह्मण करें।

सागरस्य तु या ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृता।
सम्पूर्णा सुप्रभावा च तामृद्धिं ब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य कालीपूजनकर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐ कर्म ऋध्यताम्, ॐ कर्म ऋध्यताम्, ॐ कर्म ऋध्यताम्। इति ब्राह्मणाः।

ॐ सत्रस्य ऽऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिरमृता अभूम।
दिवं पृथिव्या अध्याऽरुहामाविदाम देवान्त्स्वर्ज्योतिः।।
स्वस्तिस्तु याऽविनाशाख्या पुण्यकल्याणवृद्धिदा।
विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्तिं ब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः! मम सकुटुम्बस्यसपरिवारस्य कालीपूजनकर्मणः स्वस्तिं भवन्तो ब्रुवन्तु। इति यजमानः। ॐ आयुष्मते स्वस्ति। इति ब्राह्मणाः।

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।

ॐ समुद्रमथनाज्जाता जगदानन्दकारिका।
हरिप्रिया च माङ्गल्या तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य कालीपूजनकर्मणे श्रीरस्त्विति भवन्तो ब्रुवन्तु। ॐ अस्तु श्रीः, ॐ अस्तु श्रीः, ॐ अस्तु श्रीः।

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण।।

ॐ मृकण्डसूनोरायुर्यद् ध्रुवलोमशयोस्तथा।
आयुषा तेन संयुक्ता जीवेम शरदः शतम्।।

इति यजमानः। ॐ शतं जीवन्तु भवन्तः-इति ब्राह्मणाः।

इसके उपरान्त यजमान 'ॐ सागरस्य तु या०' से 'भवन्तो ब्रुवन्तु' तक का उच्चारण करें। ब्राह्मणगण 'ॐ कर्म ऋध्यताम्' इसका तीन बार उच्चारण करें और 'ॐ सत्रस्य ऋद्धिरस्यगन्म०' मन्त्र को पढ़े। तदुपरान्त यजमान के 'स्वस्तिस्तु या०' से 'भवन्तो ब्रुवन्तु' तक कहने पर सभी ब्राह्मण 'ॐ आयुष्मते स्वस्ति' कहकर 'ॐ स्वस्ति न इन्द्रो०' इस वैदिक मन्त्र का उच्चारण करें। फिर यजमान द्वारा 'समुद्रमथनाज्जाता०' से 'भवन्तो ब्रुवन्तु' कहने पर सभी ब्राह्मण 'ॐ अस्तु श्रीः' तीन बार कहें। पुनः 'ॐ श्रीश्च ते०' इस मन्त्र का उच्चारण करें। पुनः यजमान 'मृकण्डुसूनो०' से 'शरदः शतम्' तक का उच्चारण करे। इसके उत्तर में सभी ब्राह्मण 'शतं जीवन्तु भवन्तः' इस वाक्य का उच्चारण करें।

ॐ शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्याद् रीरिषतायुर्गन्तोः।।

शिवगौरीविवाहे या या श्री रामे नृपात्मजे।
धनदस्यगृहे या श्रीरस्माकं साऽस्तु सद्मनि।।

इति यजमानः। ॐ अस्तु श्रीः इति ब्राह्मणाः।

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीय।
पशूनार्ठ० रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा।।
प्रजापतिर्लोकपालो धाता ब्रह्मा च देवराट्।
भगवाञ्छाश्वतो नित्यं नो वै रक्षतु सर्वतः।।

इति यजमानः-ॐ भगवान् प्रजापतिः प्रीयताम्। इति ब्राह्मणाः।

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वारूपाणि परि ता बभूव। यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयर्ठ० स्याम पतयो रयीणाम्।।

आयुष्मते स्वस्तिमते यजमानाय दाशुषे।
श्रिये रत्नााशिषः सन्तु ऋत्विग्भिर्वेदपारगैः।।
इति यजमानः। आयुष्मते स्वस्ति। इति ब्राह्मणाः।
ॐ प्रति पन्थामपद्महि स्वस्तिगामनेहसम्।
येन विश्वाः परि द्विषो वृणक्ति विन्दते वसु।।

स्वस्तिवाचनसमृद्धिरस्तु।

कृतस्य स्वस्तिवाचनकर्मणः समृद्ध्यर्थं स्वस्तिवाचकेभ्यो विप्रेभ्यो इमां दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृज्ये।

तत्पश्चात् 'ॐ शतमिन्नु शरदो०' इस वैदिक मन्त्र का उच्चारण करें। पुनः यजमान 'शिव-गौरी-विवाहे०' से 'सद्मनि' तक के श्लोक का उच्चारण करे। प्रत्येक वचन में सभी ब्राह्मण 'ॐ अस्तु श्रीः' कहें और 'ॐ मनसः काममाकूतिं०' इस मन्त्र का उच्चारण करें। पुनः यजमान के द्वारा 'प्रजापतिर्लोकपालो०' से 'नो वै रक्षन्तु सर्वतः' तक का श्लोक पढ़ने पर, 'ॐ भगवान् प्रजापतिः प्रीयताम्'। इस वाक्य का उच्चारण ब्राह्मण करें और 'ॐ प्रजापते न त्वदेता०' से 'रयीणाम्' तक के वैदिक मन्त्र का उच्चारण करें। यजमान 'आयुष्मते स्वस्तिमते०' इस श्लोक का उच्चारण करें।

पुनः सभी ब्राह्मण 'ॐ आयुष्मते स्वस्ति' यह कहें। और 'प्रति पन्था०' से 'स्वस्ति-वाचनसमृद्धिरस्तु' पर्यन्त पढ़े। तदुपरान्त यजमान 'कृतस्य स्वस्तिवाचन-कर्मणः' से 'मुत्सृज्ये' तक का संकल्प वाक्य पढ़कर स्वस्तिवाचन करनेवाले ब्राह्मणों को दक्षिणा देवें।

अभिषेकः

आचार्य सहित सभी ब्राह्मण हाथ में कुशादि लेकर कलश के जल को किसी चौड़े मुख के पात्र में लेकर दूर्वा और पञ्चपल्लव द्वारा उस जल से द्वारा उत्तराभिमुख कम्बलासन पर बैठे हुए यजमान व उसके वामभाग में बैठी हुई धर्मपत्नी सहित परिवार के सदस्यों का '**ॐ देवस्य त्वा सवितुः**' इस प्रथम मन्त्र से प्रारम्भ कर '**ॐ यतो यतः समीहसे**' तक के इकतीस मन्त्रों का उच्चारण करते हुए अभिषेक करें–

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ।।१।। देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिञ्चामि ।।२।। देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभिषिञ्चामि सरस्वत्यै भैषज्येन वीर्यायान्नाद्यायाभिषिञ्चामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभि षिञ्चामि।।३।। शिरो मे श्रीर्यशो मुखं त्विषिः केशाश्चश्मश्रूणि। राजा मे प्राणो अमृतꣳ सम्राट् चक्षुर्विराट्श्रोत्रम्।।४।।

भावार्थ–हे यजमान! सविता देव की अनुज्ञा में विद्यमान मैं दोनों अश्विनीकुमारों की बाहुओं एवं पूषा के हाथों के द्वारा नियमन करनेवाली सरस्वती से नियम्य धन में प्रतिष्ठापित करता हूँ। अब तुम अमुक नाम को मैं बृहस्पति के साम्राज्य से अभिसिंचित करता हूँ।।१।। सवितादेव की अनुज्ञा में वर्तमान मैं दोनों अश्विनीकुमारों की बाहुओं, पूषा के हाथों से, सरस्वती की वाणी, प्रजापति के नियम एवं अग्नि के साम्राज्य के साथ तुमको सिंचित करता हूँ।।२।। हे यजमान! सवितादेव की अनुज्ञा में वर्तमान मैं दोनों अश्विनीकुमारों की बाहुओं तथा पूषा के हाथों से तुम्हें आसिंचित करता हूँ। मैं तुम्हें दोनों अश्विनीकुमारों के वैद्यकर्म के कारण तेज एवं ब्रह्मवर्चस् की प्राप्ति के लिये आसिंचित करता हूँ। सरस्वती के भैषज्य से मैं तुम्हें वीर्य और अन्न एवं अन्य भोग की शक्ति के लिये आसिंचित करता हूँ। (देवराज) इन्द्र के इन्द्रिय बल से बल के लिये, लक्ष्मी के लिये और यश के लिये आसिंचित करता हूँ।।३।। मेरा सिर श्रीयुक्त हो। मेरा मुख यशोकृत हो। केश और दाढ़ी दीप्ति से युक्त हो। मेरा प्राण राजा तथा अमृत स्वरूप हो। नेत्र सम्राट् हो तथा कर्ण विराट् हो।।४।।

जिह्वा मे भद्रं वाङ् महो मनो मन्युः स्वराड् भामः। मोदाः प्रमोदा अङ्गुलीरङ्गानि मित्रं मे सहः।।५।। बाहू मे बलमिन्द्रियर्ठ० हस्तौ मे कर्म वीर्यम्। आत्मा क्षत्रमुरो मम।।६।। पृष्ठीर्मे राष्ट्रमुदरमर्ठ०सौ ग्रीवाश्चश्रोणी। ऊरू अरत्नी जानुनी विशो मेऽङ्गानि सर्वतः।।७।। नाभिर्मे चित्तं विज्ञानं पायुर्मेऽपचितिर्भसत्। आनन्दनन्दावाण्डौ मे भगः सौभाग्यं पसः। जङ्घाभ्यां पद्भ्यां धर्मोऽस्मि विशि राजा प्रतिष्ठितः।।८।। प्रति क्षत्रे प्रति तिष्ठामि राष्ट्रे प्रत्यश्वेषु प्रति तिष्ठामि गोषु। प्रत्यङ्गेषु प्रति तिष्ठाम्यात्मन् प्रति प्राणेषु प्रति तिष्ठामि पुष्टे प्रति द्यावापृथिव्योः प्रति तिष्ठामि यज्ञे।।९।। त्रया देवा एकादश त्रयस्त्रिर्ठ० शाः सुराधसः। बृहस्पतिपुरोहिता देवस्य सवितुः सवे। देवा देवैरवन्तु मा।।१०।। प्रथमा द्वितीयैर्द्वितीयास्तृतीयैस्तृतीयाः सत्येन सत्यं यज्ञेन यज्ञो यजुर्भिर्यजूर्ठ०षि सामभिः सामान्यृग्भिर्ऋचः पुरोऽनु वाक्याभिः पुरोऽनुवाक्या याज्याभिर्याज्या वषट्कारैर्वषट्कारा आहुतिभिराहुतयो मे कामान्त् समर्द्धयन्तु भूः स्वाहा।।११।।

भावार्थ– मेरी जिह्वा कल्याणकारी हो, मेरी वाणी महती हो, मन मन्युपूर्ण हो। क्रोध स्वराट् हो। अंगुलियाँ मोद व अंग प्रमोद हो। शत्रु को अभिभूत करने का बल मेरा मित्र हो।।५।। मेरी भुज़ाओं में इन्द्र का बल हो, मेरे हाथों में वीरकर्म हो, मेरी आत्मा और हृदय क्षत्रियकर्म से व्यापक हो।। ६।। मेरी पीठ एक देश के सदृश सर्वाधार हो। मेरा पेट, मेरे कंधे, मेरी गर्दन, मेरा गला, मेरी कमर, मेरी जांघ, मेरी हड्डियाँ, मेरे मुष्टिप्रदेश एवं मेरी जानुएँ सर्वाङ्ग प्रजा के तुल्य होवे।। ७।। मेरी नाभि चित्त, गुदा विज्ञान, योनि पूजा, अण्डकोष, आनन्दनन्द एवं भग शिश्न में सौभाग्य हों। मैं अपनी जंघाओं व पैरों के द्वारा प्रजा में राजा होकर प्रतिष्ठित हुआ हूँ।। ८।। मैं क्षत्रिय जाति, राष्ट्र, अश्वों, गायों, अंग-प्रत्यंगों, आत्मा, प्राणों समृद्धि, द्यावापृथिवी एवं यज्ञ में प्रतिष्ठित होता हूँ।।९।। सुधनसम्पन्न तीन देव, ग्यारह व तैंतीस हैं। बृहस्पति पुरोहित वाले वे देवता सविता देव की अनुज्ञा में वर्तमान रहते हैं। द्योतमान वे देवता मुझे सम्पूर्ण दुःखों से बचाये।।१०।। प्रथम देवता द्वितीय देवों से, द्वितीय देवता तृतीय देवों से, तृतीय देवता सत्य से, सत्य यज्ञ से, यज्ञ यजुषों से, यजुष् सामों से साम ऋचाओं से, ऋचाएँ पुरोअनुवाक्यों से, पुरोअनुवाक्य आज्याओं से, आज्याएँ वषट्कारों से, वषट्कार आहुतियों से संगत होकर मेरी वृद्धि करें। आहुतियाँ मेरे सभी मनोरथों को समृद्ध बनावें। 'ॐ भूः' यह आहुति मन्त्र है।।११।।

पय: पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धा:।। पयस्वती: प्रदिश: सन्तु मह्यम्।।१२।। पञ्च नद्य: सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतस:। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।।१३।। वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद।।१४।। पुनन्तु मा पितर: सोम्यास: पुनन्तु मा पितामहा: पुनन्तु प्रपि तामहा:। पवित्रेण शतायुषा। पुनन्तु मा पितामहा: पुनन्तु प्रपितामहा:।। पवित्रेण शतायुषा विश्वमायुर्व्यश्नवै।।१५।। अग्न आयूंषि पवस आ सुवोर्जमिषं च न:। आरे बाधस्य दुच्छुनाम्।।१६।। पुनन्तु मा देवजना: पुनन्तु मनसा धिय:। पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेद: पुनीहि मा।।१७।। पवित्रेण पुनीहि मा शुक्रेण देव धीद्यत्। अग्ने क्रत्वा क्रतूँ२।। रनु।।१८।।

भावार्थ—हे अग्ने! तुम पृथ्वी में रस स्थापित करो, औषधियों में, अन्तरिक्ष में एवं द्युलोक में जल को स्थापित करो। हे अग्ने! तुम्हारी कृपा से यह सब प्रकृष्ट दिशाएँ मेरे लिये रसयुक्त हों॥१२॥ अपनी सहायक नदियों के साथ पाँच नदियाँ सरस्वती नदी में संगम करती हैं। पाँच धाराओं में बहनेवाली वह सरस्वती अपने प्रवाह प्रदेश में एक ही सरित् हो गई॥१३॥ हे शैलो! तुम सोम की गाड़ी को रोकनेवाले हो। वरणीय सोम के वहन करने के शकट में जुते बैलों को रोकनेवाले हो। तुम सोम के यज्ञ में बैठने का ही स्थान हो। हे मृगचर्म! तुम सोम के वास्तविक बैठने का स्थान हो। तुम सोम के उचित बैठने के स्थान मचिया पर प्रतिष्ठित होओ॥१४॥ सोमप्रिय पितृजन मुझे पवित्र करे। पितामह मुझे पवित्र करें। शत आयुष्यवाले पवित्र के द्वारा प्रपितामह मुझे पवित्र करें। पितामह, प्रपितामह मुझे शतायुष पवित्र से पवित्र करें। उनके द्वारा पवित्रीकृत मैं अपनी पूर्ण आयु प्राप्त करूँ॥१५॥ हे अग्ने! तुम स्वयं ही आयुष्यप्रापक कर्मों को हमसे करवाते हो, तुम हमारे लिये आयुष प्रापक बल अन्न को लाओ। दुष्ट प्रवृत्तिवाले व्यक्तियों को तुम हमसे दूर ही रखो॥१६॥ देवजन मुझे शुद्ध करें। वे मन के द्वारा मेरी बुद्धि को पवित्र करें। सर्वभूत मुझे पवित्र करें तथा उत्पन्नमात्र को जाननेवाले अग्निदेव! तुम मुझे (पूर्णत:) पवित्र करो॥१७॥ हे अग्निदेव! दीप्यमान तुम मुझे शुद्ध पवित्र के द्वारा पवित्र करो। हे अग्निदेव! तुम यज्ञों को लक्ष्य करके मुझे स्वकर्म से पवित्र बनाओ॥१८॥

यते पवित्रमर्चिष्यग्ने विततमन्तरा। ब्रह्मतेन पुनातु मा।।१९।। पवमानः सो अद्य नः पवित्रेण विचर्षणिः। यः पोता स पुनातु मा।।२०।। उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च। मां पुनीहि विश्वतः।।२१।। वैश्वदेवी पुनती देव्यागाद्यस्यामिमा बह्व्यस्तन्वो वीतपृष्ठाः। तया मदन्तः सधमादेषु वयठं० स्याम पतयो रयीणाम्।।२२।। स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया। इन्द्राय पातवे सुतः।।२३।। विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आ सुव।।२४।। धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः। सचेतसो विश्वे देवा यज्ञं प्राव्तु नः शुभे।।२५।। त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄँः पाहि श्रृणुधी गिरः। रक्षा तोकमुत त्मना।।२६।। आपो हि ष्ठा मयोभुवस्तान ऽऊर्ज्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे।।२७।। यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयते ह नः। उशतीरिव मातरः।।२८।।

भावार्थ–हे अग्ने! तुम्हारा जो पवित्र करनेवाला सामर्थ्य ज्वालाओं के अन्दर फैला हुआ है, उस अपने बृहद् पवित्र बल से तुम हमें पवित्र करो॥१९॥ सबको देखनेवाला वह पावक सोम आज अपने पवित्र बल से मुझे पवित्र करे और जो पवित्रकारी पवन है, वह भी मुझे पवित्र करे॥२०॥ हे सविता देवता! तुम अपने पवित्र तथा अनुज्ञा दोनों के द्वारा मुझे चारों ओर से पवित्र करो॥२१॥ विश्वेदेवों से सम्बन्धित और पवित्र करती हुई यह सुरा कुम्भी प्राप्त हुई है। इसमें अनेक कमनीय शरीर धाराएँ विद्यमान हैं। उस सुराकुम्भी के द्वारा देवों के साथ बैठने के स्थान यज्ञ में आनन्दमय होते हुए हम धनों के स्वामी बनें॥२२॥ हे सोम! अत्यधिक सुस्वादु एवं मद्यकारिणी धार के साथ तुम पवित्र हो। तुम इन्द्र के पीने के लिये अभिषुत हुए हो॥२३॥ हे सवितादेव! तुम हमसे सम्पूर्ण दुर्गुणों (व्यसनों) को दूर करो। जो शुभ गुण हैं, वे हमें प्रदान करो॥२४॥ न्यूनातिरिक्त स्थानों को पूर्ण करनेवाला अग्नि, इन्द्र, ब्रह्मा, बृहस्पति एवं ज्ञानयुक्त विश्वेदेव हमारे इस शुभ यज्ञ की रक्षा करें॥२५॥ हे अति युवा अग्ने! तुम हमारी प्रार्थनाओं को सुनो। हविर्दाता यजमान के मनुष्य हम ऋत्विजों की रक्षा करो। तुम यजमान और उसके पुत्र-पौत्रादिकों की भी रक्षा करो॥२६॥ जल सुख देनेवाले हो, वे हमें महारमणीय प्रकाश के लिये बल में धारण करें॥२७॥ हे जलों! तुम्हारा जो अत्यधिक सुखकर सार है, उसी का तुम हमें यहाँ भाजन बनाओ। जैसे पुत्रवत्सला माताएँ अपने पुत्र को स्तनपान कराती हैं॥२८॥

तस्मा ऽअरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः।।२९।। द्यौः शान्तिरन्तरिक्षर्ठ० शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वर्ठ० शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सा मा शान्तिरेधि।। ३०।। यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः।।३१।।

संकल्पः-कृतस्याभिषेककर्मणः समृद्ध्यर्थं दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये। इति दद्यात्। ततो द्विराचामेत् पत्नी च सकृदाचम्यदक्षिणत उपविशेत्।

भावार्थ—हे जल! हम तुम्हें उसके लिये प्रभूत मात्रा में प्राप्त करे, जिसके यज्ञगृह के लिये तुम अनुकूल होते हो। हे जल! तुम हमें पवित्र करो॥२९॥ द्यौ, आकाश, पृथ्वी, जल, औषधियाँ, वनस्पतियाँ, विश्वेदेव, शब्दब्रह्म और सब कुछ मेरे लिये शान्तिमय होवे। स्वयं शान्ति ही शान्तिमयी हो। वही सर्वशान्ति मुझमें वृद्धि करे॥३०॥ हे प्रभु! जिस-जिससे तुम उचित समझते हो, उससे हमें भयमुक्त करो। हमारी संतति को तुम सुख प्रदान करो एवं हमारे पशुओं को अभय प्रदान करो॥३१॥

संकल्प—यजमान अभिषेक की दक्षिणा प्रदान करने के उपरान्त दो बार आचमन करें, तदुपरान्त यजमान की धर्मपत्नी दायीं ओर बैठ जाय।

षोडशमातृकापूजनम्

आग्नेयकोणे प्रतिमास्वक्षत-पुञ्जेषु वा प्राक्संस्थमुदक्संस्थं वा पीठोपरि षोडशमातृकास्थापनं कुर्यात्। तद्यथा—

समीपे मातृवर्गस्य सर्वविघ्नहरं सदा।
त्रैलोक्यवन्दितं देवं गणेशं स्थापयाम्यहम्।।

गणेश—ॐ गणानां त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिर्ठ० हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।।

एह्येहि विघ्नेश्वर विघ्नशान्त्यै पाशाङ्कुशाब्जान् वरदं दधान।
शूर्पाक्षसूत्रावरमन्दमूर्ते रक्षाध्वरं नो भगवन्नमस्ते।।
ॐ गणेशाय नमः गणेशमावाहयामि स्थापयामि।।१।।

गौरी—ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुरः।। पितरञ्चप्रयन्त्स्वः।।

एह्येहि नीलोत्पलतुल्यनेत्रे श्वेताम्बरे प्रोज्ज्वलशूलहस्ते।
नागेन्द्रकन्ये भुवनेश्वरि त्वं पूजां ग्रहीतु मम देवि गौरि।।
ॐ गौर्यै नमः गौरीमावाहयामि स्थापयामि।।२।।

पद्मा—ॐ हिरण्यरूपाऽउषसो विरोक ऽउभाविन्द्राऽ उदिथः सूर्यश्च। आरोहतं वरुणमित्रगर्तन्ततश्चक्षाथामदितिन्दितिञ्चमित्रोसिवरुणोसि।।

एह्येहि पद्मे शशितुल्यनेत्रे पङ्के रुहाभे शुभचक्रहस्ते।
सुरासुरेन्द्रैरभिवन्दिते त्वं पूजां ग्रहीतुं मम यज्ञभूमौ।।
ॐ पद्मायै नमः। पद्मामावाहयामि स्थापयामि।।३।।

षोडशमातृकास्थापन—अग्निकोण में एक लकड़ी के पीढ़े पर पश्चिमदिशा से पूर्वदिशा अथवा दक्षिणदिशा से उत्तरदिशा तक सोलह स्थानों पर अक्षत की ढेरी पर गणेशजी से प्रारम्भकर तुष्टि एवं कुलदेवी पर्यन्त मातृका स्थापित कर पूजन करे। जिसका क्रम इस प्रकार से है—'समीपे मातृवर्गस्य०' से 'मावाहयामि स्था०' तक उच्चारणकर पहले अक्षतपुंज पर गणपति के लिये अक्षत छोड़े। 'ॐ आयङ्गौः' मन्त्र से 'मावाहयामि स्था०' तक का उच्चारणकर दूसरे अक्षतपुंज पर गौरी के लिये अक्षत छोड़ें। 'ॐ हिरण्यरूपा' मन्त्र से 'मावाहयामि स्था०' तक का उच्चारणकर तीसरे अक्षतपुंज पर पद्मा के लिये अक्षत छोड़े।

शची–ॐ निवेशनः सङ्गमनो वसूनां विश्वा रूपाभि चष्टे शचीभिः। देव इव सविता सत्यध र्म्मेन्द्रो न तस्थौ समरेपथीनाम्।।

एह्येहि कार्तस्वरतुल्यवर्णे गजाधिरूढे जलजाभिनेत्रे।
शक्रप्रिये प्रोज्ज्वलवज्रहस्ते पूजां ग्रहीतुं शचि देवि शीघ्रम्।।

ॐ शच्यै नमः शचीमावाहयामि स्थापयामि।।४।।

मेधा–ॐ मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः।। मेधामिन्द्रश्च-वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा।।

एह्येहि मेधे शुभभूरिवस्त्रे पीताम्बरे पुस्तकपात्रहस्ते।
बुद्धिप्रदे हंस समाधिरूढे पूजां ग्रहीतुं मखमस्मदीयम्।।

ॐ मेधायै नमः मेधामावाहयामि स्थापयामि।।५।।

सावित्री–ॐ सविता त्वासवानार्ठ० सुवतामग्निर्गृहपतीनार्ठ० सोमो वनस्पतीनाम्। बृहस्पतिर्वाचइन्द्रो ज्यैष्ठ्याय रुद्रःपशुभ्यो मित्रः सत्यो-वरुणो धर्मपतीनाम्।।

एह्येहि सावित्रि जगद्विधात्रि ब्रह्मप्रिये स्रुक्स्रुवपात्रहस्ते।
प्रतप्तजाम्बूनदतुल्यवर्णे पूजां ग्रहीतुं निजयागभूमौ।।

ॐ सावित्र्यै नमः सावित्रीमावाहयामि स्थापयामि।।६।।

विजया–ॐ विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ२उत।। अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः।

एह्येहि शस्त्रास्त्रधरे कुमारि सुरासुराणां विजयप्रदात्रि।
त्रैलोक्यवन्दे शुभरत्नभूषे गृहाण पूजां विजये नमस्ते।।

ॐ विजयायै नमः विजयामावाहयामि स्थापयामि।।७।।

'ॐ निवेशनः' मन्त्र से 'मावाहयामि स्था०' तक का उच्चारणकर चौथे अक्षतपुंज पर शची के लिये अक्षत छोड़ें। 'ॐ मेधां मे' मन्त्र से 'मावाहयामि स्था०' तक का उच्चारण कर पाँचवें अक्षतपुंज पर मेधा के लिये अक्षत छोड़ें। 'ॐ सविता त्वा' मन्त्र से 'मावाहयामि स्था०' तक का उच्चारणकर छठें अक्षतपुंज पर सावित्री के लिये अक्षत छोड़ें। 'ॐ विज्यन्धनुः' मन्त्र से 'मावाहयामि स्था०' तक का उच्चारणकर सातवें अक्षतपुंज पर विजया के लिये अक्षत छोड़े। 'ॐ बह्वीनाम्पितां' मन्त्र से 'मावाहयामि स्था०' तक का उच्चारणकर आठवें अक्षतपुंज पर जया के लिये अक्षत छोड़े।

जया–ॐ बह्वीनां पिता बहुरस्य पुत्रश्चिश्चा कृणोति समनावगत्य।। इषुधिः सङ्का पृतनाश्च सर्वाः पृष्ठे निनद्धोजयतिप्रसूतः।।

एह्येहि पद्मेरुहलोलनेत्रे जयप्रदे प्रोज्ज्वलशक्तिहस्ते।
ब्रह्मादिदेवैरभिवन्द्यमाने जये सुसिद्धिं कुरु सर्वदा मे।।

ॐ जयायै नमः जयामावाहयामि स्थापयामि।।८।।

देवसेना–ॐ इन्द्रआसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञः पुर एतु सोमः।। देवसेनानामभिभञ्जतीनाञ्जयन्तीनाम्मरुतो यन्त्वग्रम्।।

एह्येहि चापासिधरे कुमारि मयूरवाहे कमलायताक्षि।
इन्द्रादिदेवैरपि पूज्यमाने प्रयच्छसि त्वं मम देवसेने।।

ॐ देवसेनायै नमः देवसेनामावाहयामि स्थापयामि।।९।।

स्वधा–ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।। अक्षन्पितरो ऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम्।।

एह्येहि वैश्वानरवल्लभे त्वं कव्यं पितृभ्यः सततं वहन्ती।
स्वर्गाधिवासे शुभशक्तिहस्ते स्वधे तु नः पाहि मखं नमस्ते।।

ॐ स्वधायै नमः स्वधामावाहयामि स्थापयामि।।१०।।

स्वाहा–ॐ स्वाहा प्राणेभ्यः साधिपतिकेभ्यः। पृथिव्यै स्वाहा ग्नये स्वाहा ऽन्तरिक्षाय स्वाहा वायवे स्वाहा।।

एह्येहि वैश्वानरतुल्यदेहे तडित्प्रभे शक्तिधरे कुमारि।
हविर्गृहीत्वा सुरतृप्तिहेतोः स्वाहे च शीघ्रं मखमस्मदीयम्।।

ॐ स्वाहायै नमः स्वाहामावाहयामि स्थापयामि।।११।।

'ॐ इन्द्रऽआसान्नेता' मन्त्र से 'मावाहयामि स्था०' तक का उच्चारण कर नवें अक्षतपुंज पर देवसेना के लिये अक्षत छोड़े। 'ॐ पितृभ्य:' मन्त्र से 'मावाहयामि स्था०' तक का उच्चारणकर दसवें अक्षतपुंज पर स्वधा के लिये अक्षत छोड़े। 'ॐ स्वाहा प्राणेभ्य:' मन्त्र से 'मावाहयामि स्था०' तक का उच्चारणकर ग्यारहवें अक्षतपुंज पर स्वाहा के लिंये अक्षत छोड़े।

मातृ–ॐ आपो अस्मान्मातरः शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्वः पुनन्तु।। विश्वर्ठ० हि रिप्रंप्रवहन्ति देवीरुदिदाभ्यः शुचिरा पूतएमि।। दीक्षातपसोस्तनूरसि तां त्वा शिवार्ठ० शग्मामपरिदधे भद्रं वर्णं पुष्यन्।।

उपैत हे मातर आदिकर्त्र्यः सर्वस्य भूतस्य चराचरस्य।
देव्यस्त्रिलोक्यर्चितदिव्यरूपा मखं मदीयं सकलं विधत्त।।

ॐ मातृभ्यो नमः मातृः आवाहयामि स्थापयामि।।१२।।

लोकमाता–ॐ रयिश्च मे रायश्च मे पुष्टञ्च मे पुष्टिश्च मे विभुच मे पूर्णञ्च मे पूर्णतरञ्च मे कुयवञ्च मे क्षितञ्च मेऽन्नञ्च मेऽक्षुच्च मे यज्ञेनकल्पन्ताम्।।

समाह्वयेसत्कृतलोकमातरः समस्तलोकैकविधानदक्षिणाः।
सुरेन्द्रवन्द्याम्बुरुहाङ्घ्रिमञ्जुलाः कुरुध्वमेतन्मम कर्म मङ्गलम्।।

ॐ लोकमातृभ्यो नमः लोकमातृः आवाहयामि स्थापयामि।।१३।।

धृति–ॐ यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु।। यस्मान्न ऋते किं चन कर्म क्रियते तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।

एह्येति भक्ताभयदे कुमारि समस्तलोकप्रियहेतुमूर्ते।
प्रोत्फुल्लपङ्केरुहलोचनेत्रे धृते मखं पाहि शिवस्वरूपे।।

ॐ धृत्यै नमः धृतिमावाहयामि स्थापयामि।।१४।।

पुष्टि–ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।। उर्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।।

एह्येहि पुष्टे शुभरत्नभूषे रक्ताम्बरे रक्तविशालनेत्रे।
भक्तप्रिये पुष्टिकरि त्रिलोके गृहाण पूजां शुभदे नमस्ते।।

ॐ पुष्ट्यै नमः पुष्टिमावाहयामि स्थापयामि।।१५।।

'ॐ आपोऽ' मन्त्र से 'मावाहयामि स्था०' तक का उच्चारणकर बारहवें अक्षतपुंज पर मातृ के लिये अक्षत छोड़े। 'ॐ रयिश्च मे' मन्त्र से 'मावाहयामि स्था०' तक का उच्चारणकर तेरहवें अक्षतपुंज पर लोकमाता के लिये अक्षत छोड़े। 'ॐ यत्प्रज्ञानमुत' मन्त्र से 'मावाहयामि स्था०' तक का उच्चारण कर चौदहवें अक्षतपुंज पर धृति के लिये अक्षत छोड़े। 'ॐ त्र्यम्बकं' मन्त्र से 'मावाहयामि स्था०' तक का उच्चारणकर पन्द्रहवें अक्षतपुंज पर पुष्टि के लिये अक्षत छोड़े।

तुष्टि–ॐ अङ्गान्यात्मन्भिषजा तदश्विनात्मानमङ्गैः समधात् सरस्वती।।
इन्द्रस्य रूपठं० शतमानमायुश्चन्द्रेण ज्योतिरमृतन्दधानाः।।

एह्येहि तुष्टेऽखिललोकवन्द्ये त्रैलोक्यसन्तोषविधानदक्षे।
पीताम्बरे शक्तिगदाब्जहस्ते वरप्रदे पाहि मखं नमस्ते।।

ॐ तुष्ट्यै नमः तुष्टिमावाहयामि स्थापयामि।।१६।।

आत्मनः–ॐ प्राणाय स्वाहापानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा।।

उपैतमान्याः कुलदेवता मम लोकैकमाङ्गल्यविधानदीक्षिताः।
पापाचलध्वंसपरिष्ठशक्तिभृद्दम्भोलिदम्भाः करुणारुणेक्षणाः।।

ॐ आत्मनः कुलदेवतायै नमः आत्मनः कुलदेवतामावाहयामि स्था०।।१७।।

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञठं० समिमं द धातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामों ३ँ प्रतिष्ठ।।

गौर्याद्याः कुलदेवतान्तमातरो गणपतिसहिताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु।
ततः–

ॐ आयुरारोग्यमैश्वर्यं ददध्वं मातरो मम।
निर्विघ्नं सर्वकार्येषु कुरुध्वं सगणाधिपः।।

ॐ गणपत्यादिकुलदेवतान्तमातृभ्यो नमः। इति पठित्वा षोडशोपचारैः सम्पूज्य प्रार्थयेत्–

गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः।।
हृष्टिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता।
गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्याश्च षोडश।।

ॐ अङ्गान्या' मन्त्र से 'मावाहयामि स्था०' तक का उच्चारणकर सोलहवें अक्षतपुंज पर तुष्टि के लिये अक्षत छोड़े। 'ॐ प्राणाय' मन्त्र से 'मावाहयामि स्था०' तक का उच्चारणकर सत्रहवें अक्षतपुंज पर कुलदेवी के लिये अक्षत छोड़े। तदुपरान्त 'मनो जूतिर्जु०' से प्रारम्भकर 'भवन्तु' तक उच्चारणकर सभी मातृकाओं की प्राणप्रतिष्ठा करे। पुनः गौरी-पद्मा...नमः तक कहकर सोलह उपचारों से पूजन करे और 'आयुरारोग्य०' इस श्लोक से प्रार्थना करे।

सप्तघृतमातृकापूजनम्

आग्नेय्यां भित्तौ कुङ्कुमादिना बिन्दुकरणेनाऽलङ्करणं कृत्वा-ऽऽगामिमन्त्रं पठन्, घृतेन सप्तधाराः प्राक्संस्था उदक्संस्था वा कुर्यात्।

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः।।

इति मन्त्रेण वसोर्धाराः दद्यात्। 'ॐ कामधुक्षः' इत्येतावता मन्त्रेण गुडेनैकीकरणम्। प्रतिधारामेकैकदेवतामावाहयेत्।

श्रियै–**ॐ मनसः काममाकूतिं वाचःसत्यमशीय।। पशूनाठ० रूपमन्नस्य रसो यशःश्रीः श्रयतां मयि स्वाहा।।**

ॐ श्रियै नमः श्रियमावाहयामि स्थापयामि।।१।।

लक्ष्म्यै–**ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं मइषाण सर्वलोकं मइषाण।।**

ॐ लक्ष्म्यै नमः लक्ष्मीमावाहयामि स्थापयामि।।२।।

धृत्यै–ॐ भद्रङ्कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाठ० सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।।

ॐ धृत्यै नमः धृतिमावाहयामि स्थापयामि।।३।।

अग्निकोण में काष्ठ के पीढ़े पर सफेद वस्त्र विछाकर मौली से उसका बन्धन करे, फिर रोली के द्वारा क्रम से ऊपर से नीचे तक एक, दो, तीन, चार, पाँच, छः तथा सात बिन्दु बनाये। उन बिन्दुओं के ऊपरी भाग में 'श्रीः' लिखें, पुनः उसके नीचे की सात बिन्दुओं में 'ॐ वसो पवित्रमसि०' मन्त्र के द्वारा घृतधारा देवे और 'कामधुक्षः०' का उच्चारणकर गुड़ के चूरे से सातों घृतधाराओं को एक में मिला दे। तदुपरान्त उन सातों धाराओं में क्रमानुसार एक-एक मन्त्र का उच्चारण करते हुए प्रत्येक पर अक्षत छोड़कर एक-एक देवी का आवाहन करे। 'ॐ मनसः काममाकूतिं०' से 'मावाहयामि स्था०' का उच्चारणकर प्रथम धारा पर अक्षत छोड़कर श्री का, पुनः 'ॐ श्रीश्च ते०' से 'मावाहयामि स्था०' का उच्चारणकर द्वितीय धारा पर अक्षत छोड़कर लक्ष्मी का, पुनः–'ॐ भद्रं कर्णेभिः०' से 'मावाहयामि स्था०' का उच्चारण कर तृतीय धारा पर अक्षत छोड़कर धृति का आवाहन व स्थापन करे।

स्वाहायै–ॐ **प्राणाय स्वाहा ऽपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा।।**

मेधायै–ॐ **मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापतिः। मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा।।**

ॐ मेधायै नमः। मेधा०।।४।।

ॐ स्वाहायै नमः स्वाहामावाहयामि स्थापयामि।।५।।

प्रज्ञायै–ॐ **आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरम्पुरः। पितरञ्च प्रयन्त्स्वः।।**

ॐ प्रज्ञायै नमः प्रज्ञामावाहयामि स्थापयामि।।६।।

सरस्वत्यै–ॐ **पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवति। यज्ञं वष्टु धियावसुः।।**

ॐ सरस्वत्यै नमः सरस्वतीमावाहयामि स्थापयामि।।७।।

ॐ श्रीर्लक्ष्मीर्धृतिर्मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती।
माङ्गल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैता घृतमातरः।।

इति श्लोकेण वा 'ॐ वसोर्धारादेवताभ्यो नमः'

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञठ० समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामों ३ँप्रतिष्ठ।।

इति वसोर्धारादेवताः सुप्रतिष्ठिताः वरदाः भवन्तु। सम्पूज्य, प्रार्थयेत्।

यदङ्गत्वेन भो देव्यः पूजिता विधिमार्गतः।
कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन क्रतूद्भवम्।।

'ॐ मेधां मे०' से 'मावाहयामि स्था०' का उच्चारणकर चतुर्थ धारा पर अक्षत छोड़कर मेधा का आवाहन व स्थापन करे। पुनः 'ॐ प्राणाय स्वाहा०' से 'मावाहयामि स्था०' तक का उच्चारणकर पंचम धारा पर अक्षत छोड़कर स्वाहायै का, पुनः 'ॐ आयङ्गौः०' से 'मावाहयामि स्था०' तक का उच्चारण कर षष्ठ धारा पर अक्षत छोड़कर प्रज्ञा का, पुनः 'ॐ पावका नः०' से 'मावाहयामि स्था०' तक का उच्चारणकर सप्तम धारा पर अक्षत छोड़कर सरस्वती का आवाहन व स्थापन करे। उपरोक्त कर्म के पश्चात् 'ॐ श्रीर्लक्ष्मीर्धेति-मेंधा०' इस श्लोक से या वसोर्धारादेवताभ्यो नमः का उच्चारण कर आवाहन और 'मनोजूति०' इस मंत्र से प्रारम्भ कर 'वरदाः भवन्तु' इस वाक्य का उच्चारण कर प्राणप्रतिष्ठा एवं पूजन करें। इसके उपरान्त 'यदङ्गत्वेन भो०' इस श्लोक का उच्चारणकर पुनः प्रार्थना करें।

आयुष्यमन्त्रपाठः

यजमान उसकी धर्मपत्नी व पुत्र-पौत्रादि के दीर्घायु के लिए आचार्य सर्वप्रथम निम्न संकल्प करें-

देशकालौ संकीर्त्यकरिष्यमाण कालीपूजनकर्मणोऽ मङ्गल-नाशार्थमायुष्यमन्त्रजपं करिष्ये।

आचार्य व सभी ब्राह्मण निम्न मन्त्रों व पौराणिक श्लोकों का उच्चारण करें–

१. ॐ आयुष्यं वर्चस्यर्ठ० रायस्पोषमौद्भिदम्। इदर्ठ० हिरण्यं वर्चस्व-ज्जैत्रायाविशता दु माम्।। २. ॐ न तद्रक्षार्ठ० सि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रथमजर्ठ० ह्येतत्। यो बिभर्त्ति दाक्षायणः हिरण्यर्ठ० स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः।। ३. ॐ यदाबध्नन् दाक्षायणा हिरण्यर्ठ० शतानीकाय सुमनस्यमानाः। तन्म आ बध्नामि शतशारदायायुष्मान् जरदष्टिर्यथासम्।।

पौराणिक श्लोकों द्वारा आयुष्यमन्त्रपाठ

यदायुष्यं चिरं देवाः सप्तकल्पान्तजीविषु।
ददुस्तेनायुषा युक्ता जीवेम शरदः शतम् ।।१।।

भावार्थ–सात कल्पान्त जीवियों को पूर्व में देवताओं ने जिस आयु को प्रदत्त किया था। उससे युक्त होकर हम भी जीवित रहें।।१।।

दीर्घा नागा तथा नद्यः समुद्रा गिरयो दिशः।
अनन्तेनायुषा तेन जीवेम शरदः शतम्।।२।।

भावार्थ–दीर्घजीवी नाग, नदियाँ, समुद्र, पर्वत और दिशाएँ, जिस अनन्त आयु से युक्त रहते हैं, उस अनन्त आयु से युक्त होकर हम भी जीवित रहें।।२।।

सत्यानि पञ्चभूतानि विनाशरहितानि च।
अविनाश्यायुषा तद्वज्जीवेम शरदः शतम्।।३।।

भावार्थ–सत्य एवं विनाशरहित पञ्च (महा) भूत जैसी अविनाशी आयु से युक्त रहते हैं, उसी प्रकार की आयु से युक्त होकर हम भी जीवित रहें।।३।।

यजमान निम्न संकल्प करके आयुष्यमन्त्रपाठ की दक्षिणा आचार्य सहित ब्राह्मणों को प्रदान करे–

कृतैतत् आयुष्यमन्त्रपाठकर्मणः साङ्गतासिध्यर्थं विप्रेभ्यो दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये।

नान्दीश्राद्धम्

यजमानः कुशाद्यासने प्राङ्मुख उपविश्य देशकालौ संकीर्त्य- करिष्यमाण-कालीपूजनकर्माणि सांकाल्पिक नान्दीश्राद्धं करिष्ये।

यजमान—ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः। मातृ-पितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादवनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः। पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः। मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्व इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः। इत्युक्त्वा सर्वत्र पात्रे सकुशयवाक्षतजलं क्षिपेत्।

आसनदानम्—ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः। मातृपितामहीप्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः भूर्भुवः स्व इमे आसने वो नमो नमः। ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः। ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इमे आसने वो नमो नमः।

यजमान संकल्प करके पूर्वदिशा की ओर आचार्य विश्वेदेव के आसन स्थान पर कुशा उत्तराग्र रखे तथा तीन आसन दक्षिण पूर्वाग्र क्रम से मातृ, पितामही तथा प्रपितामही के निमित्त प्रथम आसन और पितृ, पितामह और प्रपितामह के लिये द्वितीय आसन एवं सपत्नीक मातामह, प्रमातामह व वृद्धप्रमातामह के लिये तीसरा आसन रखने का शास्त्रोक्त विधान है। ये आसन बहुत समीप में न हों अर्थात् एक-दूसरे से स्पर्श न करे। इन रखे हुए आसन पर विश्वेदेव के सहित अपने पूर्वज पितरों की पूजा यजमान करें। जिसका क्रम इस प्रकार से है–उत्तराग्र कुशा पर 'सत्यवसु' इससे विश्वेदेवों के लिये पाद्य-जल पाद्यप्रक्षालन के लिये प्रदान करें, उसी प्रकार दक्षिण क्रम से मातृ पितामही तथा प्रपितामही को फिर पितृ-पितामह और प्रपितामह को। इसके पश्चात् सपत्नीक मातामह, प्रमातामह तथा वृद्धप्रमातामह को दे।

गन्धादिदानम्–अत्रापः पान्तु। इमे वाससी, इमानि यज्ञोपवीतानि, एष वो गन्धः, इमे अक्षताः, इमानि पुष्पाणि, अयं धूपः, अयं दीपः, इदं नैवेद्यम्, इमानि ऋतुफलानि, इदं ताम्बूलम्, इदं पूगीफलम्। सत्यवसुसंज्ञकाविश्वेदेवा नान्दीमुखा भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। मातृपितामही-प्रपितामह्यो नान्दीमुख्यः भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहाः सम्पद्यतां वृद्धिः। पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहा सपत्नीका नान्दीमुखा भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

भोजननिष्क्रयं दानम्–ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तामान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यं अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। मातृ-पितामही-प्रपितामह्यो नान्दीमुख्यः भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मणभोजनपर्याप्तान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यं अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः। पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मण-भोजनपर्याप्तामान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यं अमृतरूपेण सम्पद्यतां वृद्धिः। मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं युग्म-ब्राह्मणभोजनपर्याप्तामान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यं अमृतरूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

गन्धादिदान–तदनन्तर 'अत्रापः पान्तुः' इस वाक्य द्वारा जल, 'इमे वाससी' के द्वारा वस्त्र, 'इमानि यज्ञोपवीतानि' द्वारा यज्ञोपवीत 'अयं वो गन्धः' के द्वारा चन्दन, 'इमे अक्षताः' के द्वारा अक्षत, 'इमानि पुष्पाणि' द्वारा पुष्प, 'अयं वो धूपः' द्वारा धूप, 'अयं वो दीपः' इसके द्वारा घृत का दीप। 'इदं नैवेद्यम्' इसके द्वारा मिष्टान्न (पेड़ा या बतासा) 'इमानि ऋतुफलानि' इसके द्वारा ऋतुफल, 'इदं ताम्बूलम्' द्वारा पान और 'इदं पूगीफलम्' द्वारा सुपारी अर्पित करें। फिर 'विश्वेदेवपूर्वक' मातृ-पितामही, प्रपितामही पितृ-पितामह-प्रपितामह तथा सपत्नीक मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामह का क्रम से उच्चारण करते हुए 'सत्यवसुसंज्ञकाः' इत्यादि वाक्यों के अन्त में 'गन्धाद्यर्चनं स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः' की योजना कर उच्चारण करें।

भोजननिष्क्रयदान–तदनन्तर विश्वेदेव पूर्वक मातृ-पितामही, प्रपितामही, पितृ-पितामह-प्रपितामह और सपत्नीक मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामह को 'सत्यवसुसंज्ञकाः' इन वाक्यों के अन्त में 'इदं युग्मब्राह्मणभोजन-पर्याप्तामान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यममृतरूपेण स्वाहा संपद्यतां वृद्धिः' को कहे।

साक्षीरयवकुशजलदानम्—ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्। मातृ-पितामही-प्रपितामह्यो नान्दीमुख्यः प्रीयन्ताम्। पितृ-पितामहा-प्रपितामहा नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्। मातामह-प्रमातामह-वृद्ध-प्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्।

आशीः प्रार्थना—ॐ गोत्रन्नो वर्धतां दातारो नोऽभिवर्धन्तां वेदाः सन्ततिरेव च। श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहु देयं च नोऽस्तु। अन्नं च नो बहु भवेद्-तिथींश्च लभेमहि। याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन। एताः सत्या आशिषः सन्तु। द्विजाः—सन्त्वेताः सत्या आशिषः।

दक्षिणादानम्—ततः सकुशयवं जलं दक्षिणां चादाय—सत्यवसुसंज्ञका विश्वेदेवा नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः कृतस्याभ्युदयिकस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षामलकयवमूलनिष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे। मातृपितापितामही-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः भूर्भुवः स्वः कृतस्याभ्युदयिकस्य० दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे। पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः कृतस्याभ्युदयिकस्य० दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे। मातामहप्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीका नान्दीमुखा भूर्भुवः स्वः कृतस्याभ्युदयिकस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं द्राक्षामलकयवमूलनिष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये।

आशीः प्रार्थना—नम्र होकर यजमान अपने पूर्वजों की प्रार्थना इस प्रकार करे-हमारे गोत्र की परम्परा सदैव बनी रहे, हमारे परिवार में देनेवालों की वृद्धि सदैव स्थिर हो तथा वेदों पर श्रद्धा अथवा सनातनधर्मीय ज्ञान का भण्डार स्थापित हो व शिक्षित सुयोग्य सन्तानों की वृद्धि हो। हमारे वंश में सनातनधर्म का आचरण करनेवालों की वृद्धि हो, हमारे परिवार में बहुत देने वाले हों तथा अन्न का भण्डार भरा रहे। अतिथियों का सम्मान सदैव हो, माँगनेवाले सदैव आते रहें किन्तु हमारा परिवार किसी के यहाँ माँगने की याचना कदापि न करें। इस प्रकार का आशीर्वाद हमें प्राप्त हो। इस पर ब्राह्मण कहें कि यही आशीर्वाद हमारे द्वारा आपको प्रदान किया गया है।

दक्षिणादान—विश्वेदेवपूर्वक मातृ-पितामही-प्रपितामही, पितृ-पितामह-प्रपितामह तथा सपत्नीक मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामह को क्रम से 'सत्यवसुसंज्ञकाः' इन वाक्यों के अन्त में 'कृतस्याभ्युदयिकस्य फलप्रतिष्ठासिध्यर्थं द्राक्षा—ऽऽमलक—यव—मूल-निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये'। ऐसा उच्चारण करके निष्क्रयभूत दक्षिणा दें।

ततः—माता पितामही चैव तथैव प्रपितामही। पिता पितामहश्चैव तथैव प्रपितामहः।। मातामहस्तत्पिता च प्रमातामहकस्तथा। एते भवन्तु मे प्रीताः प्रयच्छन्तु च मङ्गलम्।। इति पठेत्।

ॐ इडामग्ने पुरुदर्ठ० सर्ठ० सनिङ्गोः शश्वत्तमर्ठ० हवमानाय साध। स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्त्वस्मे।। ॐ उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे। अभि देवाँ२ इयक्षते।।

इत्यनेन नान्दीश्राद्धं सम्पन्नम्। सुसम्पन्नमितिब्राह्मणाः।

विसर्जनम्—ॐ वाजेवाजेऽवत वाजिनो नो धनेषु विप्रा अमृता ऋतज्ञाः। अस्य मध्वः पिबत मादयध्वं तृप्ता यात पथिभिर्देवयानैः।। अनुव्रजम्—ॐ आ मा वाजस्य प्रसवो जगम्यादेमे द्यावापृथिवी विश्वरूपे। आ मा गन्तां पितरा मातरा चा मा सोमो ऽअमृतत्त्वेन गम्यात्।।

यजमानष—मयाऽऽचरितेऽस्मिन् आभ्युदयिके श्राद्धे न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्टब्राह्मणानां वचनाच्छ्रीगणपतिप्रसादाच्च परिपूर्णोऽस्तु इति वदेत्। अस्तु परिपूर्णः इति ब्राह्मणाः।

इस कर्म के पश्चात् यजमान निम्न श्लोकों के द्वारा प्रार्थना करें। पुनः 'उपास्मै गायता नरः' और 'इडामग्ने' इन दो मन्त्रों का उच्चारण करें और यह कहें-'अनेन नान्दीश्राद्धं सम्पन्नम्'। अर्थात् इस कार्य द्वारा मैंने नान्दीश्राद्ध को पूर्ण किया है। तब उत्तर में ब्राह्मण कहें-'सुसम्पन्नम्' अर्थात् आपके द्वारा जो यह नान्दीश्राद्धकर्म सम्पन्न हुआ है, वह ठीक है। इसके पश्चात् 'वाजे वाजे' तथा 'आ मा वाजस्य' इन दो मन्त्रों का उच्चारण करें और इस वाक्य को कहें 'मयाऽऽचरिते आभ्युदयिके' अर्थात् मेरे द्वारा इस आभ्युदयिक श्राद्ध में जो कमी या अधिकता हो गयी है, उसे मेरे समीप में बैठे हुए ब्राह्मणों की वाणी से व गणपति के प्रसाद से पूर्ण हो। पुनः 'निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृज्ये' यह कहकर मुनक्का, आँवला और यव दक्षिणा के रूप में दे। देवता के प्रसाद से परिपूर्ण हो-ऐसा यजमान कहें। इसके पश्चात् ब्राह्मण कहें-आपका यह कार्य परिपूर्ण हो।

एकतन्त्रेण वरणसंकल्पः

यजमान महाकाली के पूजन-कर्म को करवाने के निमित्त एकतंत्र से आचार्य सहित सभी ब्राह्मणों का वरण निम्न संकल्प के द्वारा करें–**देशकालौ सङ्कीर्त्य–शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं (वर्माऽहं, गुप्तोऽहं) अस्मिन् कालीपूजनकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः नानानामगोत्रान् नानानामधेयान् शर्मणः आचार्यादिब्राह्मणान् युष्मानहं वृणे।**

सर्वतोभद्रदेवतास्थापनं पूजनं च

सर्वतोभद्रमण्डल के देवताओं के स्थापन एवं पूजन के लिये यजमान निम्न संकल्प करें–

देशकालौ सङ्कीर्त्य-श्रीमहाकालीपूजनकर्मणि महावेद्यां सर्वतोभद्रमण्डले (भद्रमण्डले) वा ब्रह्मादिदेवतानां स्थापनं पूजनं च करिष्ये।

एक समकोण चौकी पर श्वेत नवीन चौकोर वस्त्र बिछावें, जो चौकी से बड़ा हो, उसको सुतली से खूब मजबूती से चारों पाये में बाँध दें। तदुपरान्त उसी चौकी पर सर्वतोभद्र का निर्माण करें। अक्षत की ढेरी पर ताम्रकलश की स्थापना करें। तदुपरान्त किसी शुद्ध पात्र में काली की प्रतिमा स्थापित कर निम्न मंत्रों द्वारा सर्वतोभद्र-मण्डल के देवताओं का स्थापन एवं पूजन यजमान से कराये।

देवस्थापनविधिः

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च वि वः।।

मध्ये कर्णिकायाम्–ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।।१।।

ॐ वयर्ठ० सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि।।

उत्तरे वाप्याम्-ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः, सोममावाहयामि स्थापयामि।।२।।

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।।

ईशान्यां खण्डेन्दौ-ॐ भूर्भुवः स्वः ईशानाय नमः, ईशानमावाहयामि स्थापयामि।।३।।

आचार्य *'ॐ ब्रह्मयज्ञानं०'* से 'ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि' तक का उच्चारण करके सर्वतोभद्र के मध्यकर्णिका पर ब्रह्मा का, 'ॐ वयर्ठ सोम व्रते०' से 'सोममा० स्था०' तक का उच्चारण करके उत्तर दिशा की वापी में सोम का, 'ॐ तमीशान जगतः०' से लेकर 'ईशानमा० स्था०' तक कहकर ईशान कोणस्थित खण्डेन्दु पर ईशान का,

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ हवे हवे सुहवꣳ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः।।

पूर्वे वाप्याम्- ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।।४।।

ॐ त्वं नो अग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य। त्राता तोकस्य तनये गवामस्यनिमेषꣳ रक्षमाणस्तव व्रते।।

आग्नेयां खण्डेन्दौ- ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये नमः, अग्निमावा० स्थापयामि।।५।।

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे।।

दक्षिणे वाप्याम्- ॐ भूर्भुवः स्वः यमाय नमः, यममावाहयामि स्थापयामि।।६।।

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु।।

नैर्ऋत्यां खण्डेन्दौ- ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋतये नमः, निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि।।७।।

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशꣳस मा न आयुः प्रमोषीः।।

पश्चिमे वाप्याम्- ॐ भूर्भुवः स्वः वरुणाय नमः, वरुणमावा० स्थापयामि।।८।।

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरꣳ सहस्रिणीभिरुप याहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।।

वायव्यां खण्डेन्दौ- ॐ भूर्भुवः स्वः वायवे नमः, वायुमावाहयामि स्थापयामि।९।।

ॐ वसुभ्यस्त्वा रुद्रेभ्यस्त्वाऽऽदित्येभ्यस्त्वा सञ्जानाथां द्यावापृथिवी मित्रावरुणौ त्वा वृष्ट्यावताम्। वयन्तु व्योक्तꣳ रिहाणा मरुतां पृषतीर्गच्छ

'ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र०' से 'इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर पूर्व दिशा की वापी में इन्द्र का, 'ॐ त्वन्नोऽअग्ने०' से 'अग्निमावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर अग्निकोण के खण्डेन्दु में अग्नि का, 'ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते०' से आरम्भ कर 'यममावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त उच्चारणकर दक्षिण वापी में यम का आवाहन एवं स्थापन करे।

इसी प्रकार–'असुन्वतमयजमानमिच्छ०' से 'निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर नैर्ऋत्यकोणस्थित खण्डेन्दु पर निर्ऋति का, 'ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा०' से 'वरुणमावाहयामि स्थापयामि' तक का उच्चारणकर पश्चिम दिशा की वापी में वरुण का, 'ॐ आ नो नियुद्भिः०' से 'वायुमावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर वायव्य दिशा स्थित खण्डेन्दु में वायु का, 'ॐ वसुभ्यस्त्वा रुद्रेभ्यस्त्वा०' से 'अष्टवसून् आवाहयामि स्थापयामि'

वशा पृश्निर्भूत्वा दिवं गच्छ ततो नो वृष्टिमावह। चक्षुष्पा अग्नेऽसि चक्षुर्मे पाहि।।

वायु-सोमयोर्मध्ये भद्रे-ॐ भूर्भुवः स्वः अष्टवसुभ्यो नमः, अष्टवसुनावाहयामि स्थापयामि।।१०।।

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः।।

सोमेशानयोर्मध्ये भद्रे-ॐ भूर्भुवः स्वः एकादशरुद्रेभ्यो नमः, एकादश-रुद्रानावाहयामि स्थापयामि।।११।।

ॐ यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः। आ वो र्वाची सुमतिर्ववृत्त्यादर्ठ० होश्चिद्या वरिवोवित्तरासत्।।

ईशानेन्द्रमध्ये भद्रे-ॐ भूर्भुवः स्वः द्वादशादित्येभ्यो नमः, द्वादशादित्यानावाहयामि स्थापयामि।।१२।।

ॐ अश्विना तेजसा चक्षुः प्राणेन सरस्वती वीर्यम्। वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्।।

इन्द्राग्निमध्ये भद्रे-ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विभ्यां नमः, अश्विनौ मावाहयामि स्थापयामि।।१३।।

ॐ विश्वे देवासआ गत शृणुता मइमर्ठ०हवम्। एदं बर्हिर्निषीदत। उपयामगृहीतोऽसि विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यएष ते योनिर्विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः।।

अग्नि-यममध्ये भद्रे-ॐ भूर्भुवः स्वः सपैतृकविश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः, सपैतृक-विश्वान्देवानावाहयामि स्थापयामि।।१४।।

ॐ अभि त्यन्देवर्ठ० सवितारमोण्योः कविक्रतुमर्चामि सत्यसवर्ठ० रत्नधामभि प्रियं मतिं कविम्।। ऊर्ध्वा यस्यामतिर्भा अदिद्युतत्सवीमनि हिरण्यपाणिरमिमीत सुक्रतुः कृपा स्वः। प्रजाभ्यसत्वा प्रजास्त्वानुप्राणन्तु प्रजास्त्वमनुप्राणिहि।।

पर्यन्त कहकर वायुकोण एवं उत्तर दिशा के मध्य रक्तभद्र में अष्टवसु का, 'ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव'–'एकादशरुद्रानावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त पढ़कर उत्तर और ईशान के मध्य (रक्तवर्ण) भद्र में एकादश रुद्रों का, 'ॐ यज्ञो देवानां०'–'द्वादशादित्यानावाहयामि स्थापयामि' से ईशानकोण एवं पूर्वदिशा के मध्य भद्र में द्वादशादित्यों का, 'ॐ अश्विना तेजसा०'–'अश्विनौ आवाहयामि स्थापयामि' तक कहकर पूर्व एवं अग्निकोण के मध्य रक्त वर्ण के भद्र में अश्विनी का, 'ॐ विश्वेदेवास ऽआगत०'–'स-पैतृक-विश्वान् देवानावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर अग्निकोण एवं (यम) दक्षिण दिशा के बीच रक्तवर्ण स्थित भद्र में स-पैतृक विश्वेदेव का, 'ॐ अभि त्यं देव सविता रमोण्यो०' से लेकर 'सप्तयक्षान् आवाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त उच्चारण कर दक्षिण और नैर्ऋत्यकोण के मध्य

यम-निर्ऋतिमध्ये भद्रे-ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तयक्षेभ्यो नमः, सप्तयक्षानावाहयामि स्थापयामि।।१५।।

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये
दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।।

निर्ऋति-वरुणमध्ये भद्रे–ॐ भूर्भुवः स्वः अष्टकुलनागेभ्यो नमः, अष्टकुलनागानावाहयामि स्थापयामि।।१६।।

ॐ ऋताषाड्ृतधामाग्निर्गन्धर्वस्तस्यौषधयोऽप्सरसो-मुदो नाम। स न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट् ताभ्यः स्वाहा।।

वरुण-वायुमध्ये भद्रे-ॐ भूर्भुवः स्वः गन्धर्वाप्सरोभ्यो नमः, गन्धर्वाप्सरसः आवाहयामि स्थापयामि।।१७।।

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्त्युत्यंमहिजातन्ते अर्वन्।।

ब्रह्मसोममध्ये वाप्यां लिङ्गे वा-ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः, स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि।। १८।।

ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। संक्रन्दनोऽनिमिष एकवीरः शतर्ठ० सेना अजयत्साकमिन्द्रः।।

तदुत्तरे–ॐ भूर्भुवः स्वः वृषभाय नमः, वृषभमावाहयामि स्थापयामि।।१९।।

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वाक्षित्या उन्नयामि। समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः।।

तदुत्तरे-ॐ भूर्भुवः स्वः शूलाय नमः, शूलमावाहयामि स्थापयामि।।२०।।

रक्त भद्र पर सप्त यक्षों का, 'ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च०' से 'अष्टकुलनागानावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर नैर्ऋत्यकोण तथा वरुण (पश्चिम) दिशा स्थित भद्र पर अष्टकुलनागों का, 'ॐ ऋताषाड् ऋतधामाग्नि०' से 'गन्धर्वाऽप्सरसः आवाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त पढ़कर वरुण (पश्चिम) और वायुकोण स्थित रक्तभद्र से गन्धर्वाप्सरसः का आवाहन एवं स्थापन करे।

इसी क्रम से 'ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान०' मन्त्र से 'स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि' वाक्य पर्यन्त पढ़कर ब्रह्मा तथा उत्तर दिशा के मध्य स्थित वापी में स्कन्द का, 'ॐ आशुः शिशानो०' से लेकर 'वृषभमावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर वहीं पर, उसके आगे वृषभ का, 'ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य०' मन्त्र से 'ॐ भूः० शूलाय नमः, शूलमावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर,

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्या उन्नयामि। समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः।।

तदुत्तरे-ॐ भूर्भुवः स्वः महाकालाय नमः महाकालमावाहयामि स्थापयामि।।२१।।

ॐ शुक्रज्योतिश्च चित्रज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च ज्योतिष्माँश्च। शुक्रश्च ऋतपाश्चात्यर्ठ०हाः।।

ब्रह्मेशानमध्ये शृङ्खलायाम्-ॐ भूर्भुवः स्वः दक्षादिभ्यो नमः, दक्षादिमा-वाहयामि स्थापयामि।।२२।।

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।।

ब्रह्मेन्द्रमध्ये वाप्याम्-ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गायै नमः, दुर्गामावाहयामि स्थापयामि।।२३।।

ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पार्ठ०सुरे स्वाहा।।

तत्पूर्वे-ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।।२४।।

ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधानमः प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः। अक्षन्पितरोमीऽमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धध्वम्।।

ब्रह्माग्निमध्ये शृङ्खलायाम्-ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधायै नमः, स्वधामावाहयामि स्थापयामि।।२५।।

उसके आगे शूल का, पुनः यही मन्त्र और 'ॐ भूः० महाकालाय नमः, महाकालमावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर उसके उत्तर की ओर महाकाल का, 'ॐ शुक्रज्योतिश्च चित्रज्योतिश्च०' से 'दक्षादि-सप्तगणानावाहयामि स्थापयामि' कहकर ब्रह्मा और ईशानकोण के मध्य कृष्ण शृंखला पर दक्षादि-सप्तगण का, 'ॐ अम्बेऽम्बिके०' मन्त्र और 'दुर्गामावाहयामि स्थापयामि' उच्चारणकर ब्रह्मा तथा इन्द्र के मध्य स्थित वापी पर दुर्गा का आवाहन और स्थापन करें।

इसके पश्चात् 'ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे०' तथा 'ॐ भूः० विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि' कहकर, वहीं पर, उसके आगे विष्णु का, 'ॐ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः' से '-स्वधामावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त कहकर ब्रह्मा और अग्निकोण के मध्य कृष्ण शृंखला में स्वधा का,

ॐ परं मृत्यो अनु परेहि पन्थां यस्ते अन्य इतरो देवयानात्। चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा नः प्रजाꣳ रीरिषो मोत वीरान्।।

ब्रह्म-यममध्ये वाप्याम्-ॐ भूर्भुवः स्वः मृत्युरोगेभ्यो नमः, मृत्युरोगाना-वाहयामि स्थापयामि।।२६।।

ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसो मम आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।।

ब्रह्म-निर्ऋतिमध्ये शृङ्खलायाम्-ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः, गणपति-मावाहयामि स्थापयामि।।२७।।

ॐ अप्स्वग्ने सधिष्टव सौषधीरनु रुध्यसे। गर्भे सञ्जायसे पुनः।।

ब्रह्म-वरुणमध्ये वाप्याम्-ॐ भूर्भुवः स्वः अद्भ्यो नमः, अपः आवाहयामि स्थापयामि।।२८।।

ॐ मरुतो यस्य हि क्षये पाथा दिवो विमहसः। स सुगोपातमो जनः।।

ब्रह्म-वायुमध्ये शृङ्खलायाम्-ॐ भूर्भुवः स्वः मरुद्भ्यो नमः, मरुतः आवाहयामि स्थापयामि।।२९।।

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः।।

ब्रह्मणपादमूले-ॐ भूर्भुवः स्वः पृथिव्यै नमः, पृथ्वीमावाहयामि स्थापयामि।३०।।

'ॐ परं मृत्योऽअनु परेहि०' से 'मृत्युरोगानावाहयामि स्थापयामि' तक का उच्चारणकर ब्रह्मा और दक्षिण दिशा के मध्य वापी पर मृत्युरोग का, 'ॐ गणानां त्वा०' से लेकर 'गणपतिमावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर ब्रह्मा एवं नैर्ऋत्य कोण के मध्य शृंखला में गणपति का, 'ॐ अप्स्वग्ने सधिष्टव०' से '–अपः आवाहयामि स्थापयामि' तक कहकर ब्रह्मा और पश्चिम दिशा के मध्य स्थित वापी पर अप् का, 'ॐ मरुतो यस्य०' से 'मरुतः आवाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर ब्रह्मा और वायुकोण की मध्य शृंखला पर मरुत् देवता का आवाहन करे।

इसी प्रकार 'ॐ स्योना पृथिवी नो०' मन्त्र तथा 'ॐ भूः० पृथिव्यै नमः, पृथ्वीमावाहयामि स्थापयामि' वाक्य का उच्चारण करते हुए

ॐ पंच नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

तदुत्तरे-ॐ भूर्भुवः स्वः गङ्गादिनदीभ्यो नमः, गङ्गादिनदीः आवाहयामि स्थापयामि।।३१।।

ॐ समुद्रोऽसि नभस्वानार्द्रदानुः शंभूर्मयोभूरभि मा वाहि स्वाहा। मारुतोऽसि मरुतां गणः शंभूर्मयोभूरभि मा वाहि स्वाहावस्यूरसि दुवस्वाञ्छुम्भूर्मयो भूरभि मा वाहि स्वाहा।।

तदुत्तरे-ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तसागरेभ्यो नमः, सप्तसागरानावाहयामि स्थापयामि।।३२।।

ॐ प्र पर्वतस्य वृषभस्य पृष्ठान्नावरश्चरन्ति स्वसिच इयानाः। ता आऽववृत्रन्नधरागुदक्ता अहिम्बुध्न्यमनु रीयमाणाः। विष्णोर्विक्रमणमसि विष्णोर्विक्रान्तमसि विष्णोः क्रान्तमसि।।

कर्णिकापरिधौ-ॐ भूर्भुवः स्वः मेरवे नमः, मेरुमावाहयामि स्थापयामि।३३।।

ततः सोमादिक्रमेण–

ॐ गणानान्त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिर्ठ० हवामहे वसो मम आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।।

ब्रह्मा के पाद मूल स्थित कर्णिका के नीचे पृथ्वी का, 'ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति०'–'ॐ भूः० गङ्गादिनदीभ्यो नमः, गङ्गादिनदीः आवाहयामि स्थापयामि' से ब्रह्मा के पादमूलस्थित कर्णिका के आगे गंगा आदि नदियों का, 'ॐ समुद्रोऽसि नभस्वानार्द्रदानुः०' से '–सप्तसागरानावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर वहीं पर, ब्रह्मा के पादमूल-स्थित कर्णिका के उत्तर भाग में सप्त सागरों और 'ॐ प्र पर्वतस्य वृषभस्य०' से लेकर 'ॐ भूः० मेरवे नमः, मेरुमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त पढ़कर कर्णिका-स्थित परिधि के ऊपर मेरु का आवाहन एवं स्थापन करे।

तत्पश्चात् सर्वतोभद्रमण्डलस्थित सत्त्वपरिधि के बाहर उत्तर आदि दिशाओं के क्रम से आयुधों का आवाहन और स्थापन करे। जैसे–'ॐ गणानां त्वा०'

सत्त्वबाह्यपरिधौ-ॐ भूर्भुवः स्वः गदायै नमः, गदामावाहयामि स्थापयामि।३४।।

ॐ त्रिर्ठ० शद्धाम विराजति वाक् पतङ्गाय धीयते। प्रति वस्तोरह द्युभिः।।

ईशान्याम्-ॐ भूर्भुवः स्वः त्रिशूलाय नमः, त्रिशूलमावाहयामि स्थाप०।३५।।

ॐ महाँ२ इन्द्रो वज्रहस्तः षोडशी शर्म यच्छतु। हन्तु पाप्मानं योऽस्मान्द्वेष्टि। उपयामगृहीतोऽसि महेन्द्राय त्वैष ते योनिर्महेन्द्राय त्वा।।

पूर्वे-ॐ भूर्भुवः स्वः वज्राय नमः, वज्रमावाहयामि स्थापयामि।।३६।।

ॐ वसु च मे वसतिश्च मे कर्म च मे शक्तिश्च मेऽर्थश्च म एमश्च म इत्या च मे गतिश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।

आग्नेय्याम्-ॐ भूर्भुवः स्वः शक्तये नमः, शक्तिमावाहयामि स्थापयामि।३७।।

ॐ इड एह्यदित एहि काम्या एत। मयि वः कामधरणं भूयात्।।

दक्षिणे-ॐ भूर्भुवः स्वः दण्डाय नमः, दण्डमावाहयामि स्थापयामि।३८।।

ॐ खड्गो वैश्वदेवः श्वा कृष्णः कर्णो गर्दभस्तरक्षुस्ते रक्षसामिन्द्राय सूकरः सिर्ठ०हो मारुतः कृकलासः पिप्पका शकुंनिस्ते शरव्यायै विश्वेषां देवानां पृषतः।।

नैर्ऋत्याम्-ॐ भूर्भुवः स्वः खड्गाय नमः, खड्गमावाहयामि स्था०।३९।।

मन्त्र तथा 'ॐ भूः० गदायै नमः, गदामावाहयामि स्थापयामि' से उत्तर दिशा में गदा का, 'ॐ त्रिर्ठ० शद्धाम विराजति०' से 'भूः० त्रिशूलाय नमः, त्रिशूलमावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर ईशान कोण में त्रिशूल का, 'ॐ महाँ२ इन्द्रो वज्रहस्तः०' से 'ॐ भूः० वज्राय नमः, वज्रमावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर पूर्व दिशा में वज्र का, 'ॐ वसु च मे वसतिश्च मे०' से 'ॐ भूः० शक्तये नमः, शक्तिमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त कहकर अग्निकोण में शक्ति का, 'ॐ इड ऽएह्यदित ऽएहि०' से 'ॐ भूः० दण्डाय नमः, दण्डमावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर दक्षिण दिशा में दण्ड का, 'ॐ खड्गो वैश्वदेवः श्वा कृष्ण०'–'ॐ भूः० खड्गाय नमः, खड्गमावाहामि स्थापयामि' से नैर्ऋत्यकोण में खड्ग का,

ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमꣳ श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो. अदितये स्याम।।

पश्चिमे-ॐ भूर्भुवः स्वः पाशाय नमः, पाशमावाहयामि स्थापयामि।४०।।

ॐ अꣳ शुश्च मे रश्मिश्च मेऽदाभ्यश्च मेऽधिपतिश्च म उपाꣳ शुश्च मेऽन्तर्यामश्च म ऐन्द्रवायवश्च मे मैत्रावरुणश्च म आश्विनश्च मे प्रतिप्रस्थानश्च मे शुक्रश्च मे मन्थी च मे यज्ञेन कल्पन्ताम्।।

वायव्याम्-ॐ भूर्भुवः स्वः अङ्कुशाय नमः, अङ्कुशमावाहयामि स्था०।।४१।।

पुनः उत्तरादिक्रमेण–

ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः।।

तदबाह्ये उत्तरे रक्तपरिधौ सोमादिक्रमेण-ॐ भूर्भुवः स्वः गौतमाय नमः, गौतममावाहयामि स्थापयामि।।४२।।

ॐ अयं दक्षिणा विश्वकर्मा तस्य मनो वैश्वकर्मणं ग्रीष्मो मानसस्त्रिष्टुब् ग्रैष्मी त्रिष्टुभः स्वारꣳ स्वारादन्तर्यामोऽन्तर्यामात्पञ्चदशः पञ्चदशाद् बृहद् भरद्वाज ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया मनो गृह्णामि प्रजाभ्यः।।

ईशान्याम्-ॐ भूर्भुवः स्वः भरद्वाजाय नमः, भरद्वाजमावाहयामि स्थापयामि।।४३।।

ॐ इदमुत्तरात्स्वस्तस्य श्रोत्रꣳ सौवꣳ शरच्छौत्र्यनुष्टुप् शारद्यनुष्टुभ ऐडमैडान्मन्थी मन्थिन एकविꣳश एकविꣳशाद्वैराजं विश्वामित्र ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया श्रोत्रं गृह्णामि प्रजाभ्यः।।

'ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं०' से 'ॐ पाशाय नमः, पाशमावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर पश्चिम में पाश का, 'ॐ अꣳ शुश्च मे रश्मिश्च०'–'ॐ भूः० अङ्कुशाय नमः, अङ्कुशमावाहयामि स्थापयामि' से वायव्य कोण में अंकुश का आवाहन और स्थापन आचार्य करे।

फिर सर्वतोभद्रमंडल के बाहर उत्तर में रक्तवर्णवाली परिधि पर गौतमादि ऋषियों का आवाहन एवं स्थापन इस प्रकार करे–'ॐ आयं गौः०' से 'ॐ भूः० गौतमाय नमः, गौतममावाहयामि स्थापयामि' तक उच्चारणकर उत्तर में गौतम,

पूर्वे-ॐ भूर्भुवः स्वः विश्वामित्राय नमः, विश्वामित्रमावा० स्थापयामि।।४४।।

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्। यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्।।

आग्नेय्याम्-ॐ भूर्भुवः स्वः कश्यपाय नमः, कश्यपमावा० स्थापयामि।।४५।।

ॐ अयं पश्चाद्विश्वव्यचास्तस्य चक्षुर्वैश्वव्यचसं वर्षाश्चाक्षुष्यो जगती वार्षी जगत्या ऋक्समम‍ृक्समाच्छुक्रः शुक्रात्सप्तदशः सप्तदशाद्वैरूपं जमदग्निर्ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया चक्षुर्गृह्णामि प्रजाभ्यः।।

दक्षिणे-ॐ भूर्भुवः स्वः जमदग्नये नमः, जमदग्निमावाहयामि स्थापयामि।।४६।।

ॐ अयं पुरो भुवस्तस्य प्राणो भौवायनो वसन्तः प्राणायनो गायत्री वासन्ती गायत्र्यै गायत्रं गायत्रादुपार्ठ०शुरुपार्ठ० शोस्त्रिवृत् त्रिवृतो रथन्तरं वसिष्ठ ऋषिः प्रजापतिगृहीतया त्वया प्राणं गृह्णामि प्रजाभ्यः।।

नैर्ऋत्याम्-ॐ भूर्भुवः स्वः वसिष्ठाय नमः, वसिष्ठमावाहयामि स्थापयामि।।४७।।

ॐ अत्र पितरो मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वम्। अमीमदन्त पितरो यथाभागमावृषायिषत।।

पश्चिमे-ॐ भूर्भुवः स्वः अत्रये नमः, अत्रिमावाहयामि स्थापयामि।।४८।।

'ॐ अयं दक्षिणा विश्वकर्मा०' से 'ॐ भूः० भरद्वाजाय नमः, भरद्वाज-मावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर ईशान कोण में भरद्वाज का, 'ॐ इदमुत्तरात्स्वस्तस्य०'–'ॐ भूः० विश्वामित्राय नमः, विश्वामित्रमा-वाहयामि स्थापयामि' से पूर्वदिशा में विश्वामित्र का, 'ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः०' से '-ॐ भूः० कश्यपाय नमः, कश्यपमावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर अग्निकोण में कश्यप का, 'ॐ अयं पश्चाद् विश्वव्यचास्तस्य०'–'ॐ भूः० जमदग्नये नमः, जमदग्निमावाहयामि स्थापयामि' से दक्षिण में जमदग्नि का, 'ॐ अयं पुरो भुवस्तस्य प्राणो०'–'ॐ भू० वसिष्ठाय नमः, वसिष्ठमावाहयामि स्थापयामि' से नैर्ऋत्यकोण में वसिष्ठ का, 'ॐ अत्र पितरो मादयध्वं०' से 'ॐ भू० अत्रये नमः, अत्रिमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त पढ़कर पश्चिम में अत्रि

ॐ तं पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वा हिरण्यैः। नाकं गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठे अधि रोचने दिवः।।

वायव्याम्-ॐ भूर्भुवः स्वः अरुन्धत्यै नमः, अरुन्धतीमावाहयामि स्थापयामि।।४९।।

तद्बाह्ये कृष्णपरिधौ पूर्वादिक्रमेणऐन्द्र्यादीनां स्थापनम्–

ॐ अदित्यै रास्नाऽसीन्द्राण्या उष्णीषः। पूषाऽसि घर्माय दीष्व।।

पूर्वे-ॐ भूर्भुवः स्वः ऐन्द्र्यै नमः, ऐन्द्रीमावाहयामि स्थापयामि।।५०।।

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्श्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।।

आग्नेय्याम्-ॐ भूर्भुवः स्वः कौमार्यै नमः, कौमारीमावाहयामि स्थापयामि।।५१।।

ॐ इन्द्रायाहि धियेषितो विप्रजूतः सुतावतः। उप ब्रह्माणि वाघतः।।

दक्षिणे-ॐ भूर्भुवः स्वः ब्राह्म्यै नमः, ब्राह्मीमावाहयामि स्थापयामि।।५२।।

ॐ इन्द्रस्य क्रोडोऽदित्यै पाजस्यं दिशां जत्रवोऽदित्यै भसज्जीमूतान् हृदयौपशेनान्तरिक्षं पुरीतता नभ उदर्येण चक्रवाकौ मतस्नाभ्यां दिवं वृक्काभ्यां गिरीन्प्लाशिभिरुपलान्प्लीहा वल्मीकान्क्लोमभिर्ग्लौभिर्गुल्मा-न्हिराभिः स्रवन्तीर्ह्रदान्कुक्षिभ्यार्ठ० समुद्रमुदरेण वैश्वानरं भस्मना।।

नैर्ऋत्याम्-ॐ भूर्भुवः स्वः वाराह्यै नमः, वाराहीमावाहयामि स्थापयामि।।५३।।

और 'ॐ तं पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः०' से लेकर 'ॐ भूः अरुन्धत्यै नमः, अरुन्धतीमावाहयामि स्थापयामि' तक पढ़कर वायव्यकोण में अरुन्धती का आवाहन एवं स्थापन आचार्य करें। तदनन्तर, उसके बाहर तृतीय कृष्ण परिधि पर, पूर्व आदि दिशा के क्रम से ऐन्द्र्यादि देवियों का आवाहन और स्थापन करे। जैसे–'ॐ अदित्यै रास्ना०' से 'ॐ भूः० ऐन्द्र्यै नमः, ऐन्द्रीमावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर पूर्व में ऐन्द्री का, 'ॐ अम्बेऽम्बिके०'– 'ॐ भूः० कौमार्यै नमः, कौमारीमावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर अग्निकोण में कौमारी का, 'ॐ इन्द्रायाहि धियेषितो०' मन्त्र और 'ॐ भूः० ब्राह्म्यै नमः, ब्राह्मीमावाहयामि स्थापयामि' वाक्य का उच्चारण कर दक्षिण में ब्राह्मी का, 'ॐ इन्द्रस्य क्रोडोऽदित्यै०' से 'ॐ भूः० वाराह्यै नमः, वाराहीमावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर नैर्ऋत्यकोण में वाराही का,

ॐ अम्बेअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्श्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।।

पश्चिमे-ॐ भूर्भुवः स्वः चामुण्डायै नमः, चामुण्डामावाहयामि स्थापयामि।।५४।।

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे।।

वायव्ये-ॐ भूर्भुवः स्वः वैष्णव्यै नमः, वैष्णवीमावाहयामि स्थापयामि।।५५।।

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि।।

उत्तरे-ॐ भूर्भुवः स्वः माहेश्वर्यै नमः, माहेश्वरीमावाहयामि स्थापयामि।।५६।।

ॐ समख्ये देव्या धिया सन्दक्षिणयोरुचक्षसा। मा म आयुः प्रमोषीर्म्मो अहं तव वीरं विंदेय तव देवि सन्दृशिं।।

ईशान्याम्-ॐ भूर्भुवः स्वः वैनायक्यै नमः, वैनायकीमावाहयामि स्थापयामि।।५७।।

एवमावाह्य,

प्रतिष्ठा सर्वदेवानां मित्रावरुणनिर्मिता।
प्रतिष्ठां ते करोम्यत्र मण्डले दैवतैः सह।।

'ब्रह्माद्यावाहितदेवाः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवत' इति प्रतिष्ठाप्य, 'ब्रह्मादिदेवेभ्यो नमः' इति यथालब्धोपचारैः सम्पूजयेत्।

'ॐ अम्बे ऽअम्बिकेऽम्बालिके०' से 'ॐ भूः० चामुण्डायै नमः, चामुण्डामावाहयामि स्थापयामि' तक कहकर पश्चिम दिशा में चामुण्डा का, 'ॐ आप्यायस्व समेतु ते०'–'ॐ भू० वैष्णव्यै नमः, वैष्णवीमावाहयामि स्थापयामि' से वायव्यकोण में वैष्णवी का, 'ॐ या ते रुद्र शिवा०' से 'ॐ माहेश्वर्यै नमः, माहेश्वरीमावाहयामि स्थापयामि' पर्यन्त मन्त्र एवं वाक्य का उच्चारण कर उत्तर दिशा में माहेश्वरी तथा 'ॐ समख्ये देव्या धिया०' से लेकर 'ॐ भूः० वैनायकीमावाहयामि स्थापयामि' तक उच्चारणकर ईशान कोण में वैनायकी का आवाहन और स्थापन करे। इस प्रकार आवाहनकर 'प्रतिष्ठा सर्वदेवानां०' से 'वरदा भवत' तक कहकर प्रतिष्ठा एवं 'ब्रह्मादिदेवेभ्यो नमः' से पूजन करे।

कालीयंत्रनिर्माणम्

आचार्य कालीपूजनयन्त्र का निर्माण करने के लिए सुवर्ण की शलाका से अष्टगंध या चन्दन से सबसे पहले षट्कोण का निर्माण करें। उसके बाद बाहर की ओर तीन त्रिकोणों का निर्माण करें। फिर अष्टदल कमल का निर्माण कर उसके बाहरी भाग में भूपूर का निर्माणकर उस यन्त्र में महाकाली की पूजा करें।

नवशक्तिस्थापनम्

१. ॐ जयायै नमः, २. ॐ विजयायै नमः, ३. ॐ अजितायै नमः, ४. ॐ अपराजितायै नमः, ५. ॐ नित्यायै नमः, ६. ॐ विलासिन्यै नमः, ७. ॐ दोग्ध्र्यै नमः, ८. ॐ अघोरायै नमः, ९. ॐ मंगलायै नमः।

पीठपूजनम्

कर्णिका में–**आधारशक्तये नमः। प्रकृत्यै नमः। कूर्माय नमः। शेषाय नमः। पृथिव्यै नमः। सुधाम्बुधये नमः। मणिद्वीपाय नमः। चिन्तामणिगृहाय नमः। श्मशानाय नमः। पारिजाताय नमः।**

कर्णिका के मूल भाग में–**रत्नवेदिकायै नमः**। कर्णिका के ऊपर भाग में–**मणिपीठाय नमः**। चारों दिशाओं में–**मुनिभ्यो नमः। देवेभ्यो नमः। शिवाभ्यो नमः। शिवमुण्डेभ्यो नमः। धर्माय नमः। ज्ञानाय नमः। अवैराग्याय नमः। अनैश्वर्याय नमः। ह्रीं ज्ञानात्मने नमः।**

केशरेषु में पूर्वादि क्रम–**इच्छायै नमः। ज्ञानायै नमः। क्रियायै नमः। कामिन्यै नमः। कामदायिन्यै नमः। रत्यै नमः। रतिप्रियायै नमः। नन्दायै नमः।**

मध्यभाग में–**मनोन्मन्यै नमः**। ऊपर के भाग में–**ह्सौः सदाशिव महाप्रेत पद्मासनाय नमः**। पीठ के उत्तर भाग में–**गुरुभ्यो नमः। परंम गुरुभ्यो नमः। परापर गुरुभ्यो नमः। परमेष्टि गुरुभ्यो नमः।**

आचार्य उपरोक्त क्रम द्वारा पीठपूजन करवाने के पश्चात् यजमान से काली का ध्यान करावें तथा देवी को दोनों हाथों से पुष्पाञ्जलि समर्पित करें। पुनः आचार्य काली के मूलमंत्र का एवं निम्न श्लोक का उच्चारण यजमान से करवाते हुए उनका आवाहन करायें–

ॐ देवेशि भक्ति सुलभे परिवार समन्विते।
यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावत्त्वां सुस्थिरा भव।।

पुनः निम्न वाक्य का यजमान उच्चारण करे–**भो काली देवि! इहावह इहावह इह तिष्ठ इह तिष्ठ इह सन्निरुद्धस्व इह सन्निहिता भव।।** आचार्य समस्त पीठों की पूजा करवाने के पश्चात् निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए यजमान से पुष्पाञ्जलि प्रदान करवायें–

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।

फिर आचार्य इस पीठवाक्य का **'ॐ ह्रीं कालिका योगपीठात्मने नमः'** उच्चारण यजमान से कराये।

अग्न्युत्तारणम्

यजमान से निम्न संकल्प अग्न्युत्तारण के लिए आचार्य करायें-

देशकालौ संकीर्त्य–करिष्यमाण श्रीकालीपूजनकर्मणि न्यूनातिरिक्तदोष-परिहारार्थं अथवा अवघातादिदोषपरिहारार्थं अमुक गोत्रः अमुकशर्माऽहं (वर्माऽहं, गुप्तोऽहंः) अस्यां सुवर्णमय श्रीकालीप्रतिमायाः सान्निध्यार्थं च अग्न्युत्तारणं करिष्ये।

किसी पात्र में स्वर्ण की काली की प्रतिमा का पंचामृत से लेपनकर पान के ऊपर रखकर इन बारह वैदिक मंत्रों का उच्चारण आचार्य सहित सभी ब्राह्मण करके यजमान से दुग्धयुक्त जलधारा प्रदान करायें–

ॐ समुद्द्रस्य त्वावकयाग्ग्ने परि व्ययामसि।
पावको ऽअस्मब्भ्यर्ठ० शिवो भव।।१।।
ॐ हिमस्य त्वा जरायुणाग्ग्ने परि व्वययामसि।
पावको ऽअस्म्मब्भ्यर्ठ० शिवो भव।।२।।
ॐ उप ज्ज्मनुप वेतसेऽवतर नदीष्ष्वा।
अग्ने पित्तमपामसि मण्ण्डूकि ताभिरागहि।
सेमं नोयज्ञं पावकवर्ण्णर्ठ० शिवं कृधि।।३।।
ॐ अपामिदं न्ययनर्ठ० समुद्द्रस्य निवेशनम्।
अन्याँस्ते ऽअस्म्मत्तपन्तु हेतयः पावको
अस्मभ्यर्ठ० शिवो भव।।४।।
ॐ अग्ग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया।
आ देवान्वक्षि यक्षि च।।५।।

ॐ स नः पावक दीदिवोऽग्ने देवाँ२।। ऽइहावह।
उप यज्ञर्ठ० हविश्च्च नः।।६।।
ॐ पावकया यश्चितयन्त्या कृपा क्षामन्नुरुच ऽउषसौ न भानुना।
तूर्व्वन्न यामन्नेतशस्य नू रण ऽआ यो घृणे न ततृषाणो ऽअजरः।। ७ ।।
ॐ नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते ऽअस्त्वर्च्चिषे।
अन्याँस्ते ऽअस्म्मत्तपन्तु हेतयः पावको ऽअस्म्मब्भ्यर्ठ० शिवो भव।। ८ ।।
ॐ नृषदे व्वेडप्सुषदे बेड् व्वहिषदे व्वेड् व्वनसदे व्वेट् स्वर्व्विदे व्वेट्।। ९ ।।
ॐ ये देवा देवानां य्यज्ञिया यज्ञियानार्ठ० संवत्सरीणमुपभागमासते।
अहुतादो हविषो यज्ञे ऽअस्म्मिन्त्स्वय पिबन्तु मधुनो घृतस्य।।१०।।
ये देवा देवेष्वधि देवत्वमायन्न्ये ब्रह्मणः पुर ऽएतारो ऽअस्य।
येब्भ्यो न ऽऋते पवते धाम किञ्चन न ते दिवो न पृथिव्याऽअधिस्न्नुषु।।११।।
ॐ प्राणदा ऽअपानदा व्व्यानदा व्वर्च्चोदा व्वरिवोदाः।
अन्याँस्ते ऽअस्म्मत्तपन्तु हेतयः पावको ऽअस्म्मब्भ्यर्ठ० शिवो भव।।१२।।

प्राणप्रतिष्ठापनम्

काली की मूर्ति के सिर या हृदय का स्पर्शकर प्राणप्रतिष्ठा करें।

विनियोगः—**अस्य प्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुरुद्रा ऋषयः, ऋग्यजुः सामानि छन्दांसि, क्रियामयवपुःप्राणाख्या देवता, आं बीजं, ह्रीं शक्तिः, क्रौं कीलकं, श्रीकालीदेव्याः प्राणप्रतिष्ठायां विनियोगः।**

तदनन्तर ऋष्यादियों का क्रम से शिर, मुख, हृदय, नाभि, गुह्य और पैरों में न्यास करके यहाँ कमलाकर ने विशेष कहा है—

ॐ ब्रह्मविष्णुरुद्रऋषिभ्यो नमः-शिरसि। ऋग्यजुः सामछन्दोभ्यो नमः-मुखे। ॐ प्राणाख्यदेवतायै नमः-हृदि। ॐ आं बीजाय नमः-गुह्यस्थाने। ह्रीं शक्तये नमः-पादयोः। ॐ क्रों कीलकाय नमः सर्वाङ्गेषु।

ॐ अं कं खं गं घं ङं आं पृथिव्याप्तेजोवाय्वाका-शात्मने-आं हृदयाय नमः-हृदि। ॐ चं छं जं झं ञं इं शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने ईं-शिरसे स्वाहा-सिर। ॐ टं ठं डं ढं णं उं श्रोत्रत्वक्, चक्षु, जिह्वा, घ्राणाऽत्मने-ॐ शिखायै वषट्-शिखा। ॐ तं थं दं धं नं एं वाक्पाणि-पादपायूपस्थात्मने ऐं कवचाय हुम्-कवच। ॐ पं फं बं भं मं ॐ वचनादान-विहरणोत्सर्गानन्दाऽत्मने। ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्-नेत्र। ॐ अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं मनोबुद्ध्यहङ्कारचित्तात्मने अः अस्त्राय फट् अस्त्र।

इस प्रकार आत्मा और देवता में उपरोक्त न्यासों को करके काली की मूर्ति का स्पर्शकर जप करें, पुनः उनकी मूर्ति का हाथ से स्पर्शकर निम्न प्राणप्रतिष्ठा मंत्रों का उच्चारण करें–

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः कालीदेव्याः प्राणाः इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः काली देव्याः जीव इह स्थितः। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः काला-देव्याः सर्वेन्द्रियाणि। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः काली-देव्याः वाङ्मनश्चक्षुः। श्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणइहागत्य स्वस्तये सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

आचार्य सहित सभी ब्राह्मण निम्न ध्रुवसूक्त के मंत्रों का उच्चारण करें–

ॐ ध्रुवासिध्रुवोयं यजमानोस्मिन्नायतनेप्रजयापशुभिर्भूयात्। घृतेन द्यावा पृथिवी पूर्येथामिन्द्रस्यच्छदिरसि विश्वजनस्यछाया।। १।। ॐ आत्वाहार्ष-मन्तरभूद्ध्रुवस्तिष्ठाविचाचलिः। विशस्त्वा सर्वार्वावाञ्छन्तुमात्वद्राष्टमधि-भ्रशत्।।२।। ॐ ध्रुवासिधरुणास्तृताविश्वकर्मणा। मात्वासमुद्राऽउद्वधीन्मा-सुपर्णोव्यथमानापृथिवीन्दृठं० ह।। ३।।

फिर निम्न श्लोक का आचार्य उच्चारण करें–

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै स्वाहेति यजुरीरयेत्।।

इस प्रकार प्रणव से रोककर काली का सजीव ध्यानकर, विश्वतश्चक्षुरुत० इस मंत्र का उच्चारण करें। पुनः काली की मूर्ति के सिर पर हाथ रखकर उनका ध्यान करते हुए निम्न प्राणसूक्त का पाठ करें।

प्राणसूक्तम्–१. ॐ प्राणो रक्षति विश्वमेजत्। इर्यो भूत्वा बहुधा बहूनि। स इत्सर्वं व्यान शे। यो देवषु विभूरन्तः। आवृदूदात्क्षेत्रियध्वगद्भषा। तमित्प्राणं मनसोपशिक्षत। अग्रं देवानामिदमत्तु नो हविः। मनसश्चित्तेदम्। भूतं भव्यं च गुप्यते। तद्धि देवेष्वग्रियम्। २. आ न एतु पुरश्चरम्। सह देवैरिमठं० हवम्। मनश्श्रेयसि श्रेयसि। कर्मन् यज्ञपर्त्ति दधत्। जुषतां मे वागिदठं० हविः। विराड् देवी पुरोहिता हव्यवाडनपायिनी। यमारूपाणि बहुधा वदन्ति। पेशाँ सि देवाः परमे जनित्रे। सा नो विराडनपस्फुरन्ती। ३. वाग्देवी जुषतामिदठं० हविः। चक्षुर्देवानां ज्योतिरमृते न्यक्तम्। अस्य विज्ञानाय बहुधा निधीयते। तस्य

सुम्नमशीमहि। मानो हासीद्विचक्षणम्। आयुरिन्नः प्रतीर्यताम्। अनन्धाश्चक्षुषा वयम्। जीवा ज्योतिरशी महि। सुवर्ज्योतिरुतामृतम्। श्रोत्रेण भद्रमुत शृण्वन्ति सत्यम्। श्रोत्रेण वाचं बहुधोद्यमानाम्। श्रोत्रेण मोदश्च महश्च श्रूयते। श्रोत्रेण सर्वा दिश आ शृणोमि। येन प्राच्या उत दक्षिणा। प्रतीच्यै दिशंशृण्वन्त्युत्तरात्। तदिच्छ्रोत्रं बहुधोद्यामानम्। आरान्न नेमिः परि सर्वं बभूव। अग्रियमनपस्फुरन्ती सत्यर्ठ० सप्त च।। (तैत्तरीय ब्राह्मण २। १ पृ० २२५-२२९)

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए यजमान से काली की मूर्ति के हृदय का स्पर्श करायें-**ॐ कन्या इव वहतुमेतवा उ अञ्ज्यञ्जाना अभिचाकशीमि। यत्र सोमः सूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धारा अभि तत्पवन्ते।।**

तदुपरान्त आचार्य काली की प्रतिमा को सिंहासन पर यजमान से स्थापित करवाके उनकी प्रार्थना करवायें।

नेत्रोन्मीलनम्

काली की मूर्ति के मुख और नेत्र में स्वर्ण की शलाका के द्वारा (कांस्य पात्र में) शहद एवं घृत इन दोनों को आचार्य मिश्रित कर इस आधे वैदिक मन्त्र का उच्चारण करते हुए यजमान से चिह्न करावे-**ॐ व्वृत्रस्यासि कनीनकश्चक्षुर्दाऽअसि चक्षुर्म्मे देहि।** नेत्रोन्मीलन के अंगत्व यजमान से आचार्य गोदान करावे, पुनः भगवती काली के न्यासों को विधिवत् करवा के काली देवी के दाहिने भाग में घृत का दीप और बायें भाग में तेल का दीप स्थापित कर प्रज्ज्वलित करावें और उसकी गन्धादि से पूजा कर निम्न प्रार्थना करायें-

भो दीप देवीरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्।
यावत्कर्मसमाप्तिः स्यात्तावत्त्वं सुस्थिरो भव।।

इसके उपरान्त शंख, घण्टा बजाकर गन्ध, अक्षत एवं पुष्प से पूजनकर आचार्य कर्मपात्रासादनकृत्य यजमान से करायें।

कालीपूजनम्

ऋष्यादिन्यासः-**ॐ भृगुऋषये नमः शिरसि। त्रिवृच्छन्दसे नमः मुखे। श्मशानकालिकादेवतायै नमः हृदि। वाग्बीजाय नमः गुह्ये। ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। क्लीं कीलकाय नमः नाभौ। विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।**

करन्यासः–**ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। श्रीं मध्यमाभ्यां वषट्। क्लीं अनामिकाभ्यां हूं। कालिके कनिष्ठिकाभ्यां वषट्। ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं कालिके ऐं ह्रीं श्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।**

हृदयादि षडङ्गन्यासः–**ऐं हृदयाय नमः। ह्रीं शिरसे स्वाहा। श्रीं शिखायै वषट्। क्लीं कवचाय हुं। कालिके नेत्रत्रयाय वौषट्। ऐं श्रीं क्लीं कालिके ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं अस्त्राय फट्।**

ध्यानम्

श्मशानमध्ये कुणपाधिरूढां दिगम्बरां नीलरुचित्रिनेत्राम्।
चतुर्भुजां भीषणहासयुक्तां कालीं स्वकीये हृदि चिन्तयामि।।

ॐ कन्या इव वहतुमेतवा उ अञ्ज्यञ्जाना अभिचाकशीमि। यत्र सोमः सूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धारा अभि तत्पवन्ते।।

ॐ भगवत्यै कालीदेव्यै नमः, ध्यानं समर्पयामि।

आवाहनम्

कालिदेवि समागच्छ सर्वसम्मतप्रदायिनी!।
यावद् व्रतं समाप्येत तावत्त्वं सन्निधौ भव।।
हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म ऽआ वह।।

ॐ भगवत्यै कालीदेव्यै नमः, आवाहनं समर्पयामि।

आसनम्

प्रतप्तकार्तस्वरनिर्मितं यत् प्रौढोल्लसद्रत्नगणैः सुरम्यम्।
दैत्यौघनाशाय प्रचण्डरूपे! सनाथ्यतामासनमेत्य देवि!।।
तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।।

ॐ भगवत्यै कालीदेव्यै नमः, आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्

सुवर्णपात्रेऽतितमां पवित्रे भागीरथीवारिमयोपनीतम्।
सुरासुरैरर्चितपादयुग्मे गृहाण पाद्यं विनिवेदितं ते।।
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्।
श्रियं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्।।

ॐ भगवत्यै कालीदेव्यै नमः, पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्

दयार्द्रचित्ते मम हस्तमध्ये स्थितं पवित्रं घनसारयुक्तम्।
प्रफुल्लमल्लीकुसुमैः सुगन्धिं गृहाण कल्याणि! मदीयमर्घ्यम्।।
कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम्।।

ॐ भगवत्यै कालीदेव्यै नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयम्

समस्तदुःखौघविनाशदक्षे! सुगन्धितं फुल्लप्रशस्तपुष्पैः।
अये! गृहाणाचमनं सुवन्द्ये! निवेदनं भक्तियुतः करोमि।।
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मिनीं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणोमि।।

ॐ भगवत्यै कालीदेव्यै नमः, आचमनीयं जलं समर्पयामि।

मधुपर्कम्

दधि-मधु-घृतैर्युक्तं पात्रयुग्मं समन्वितम्।
मधुपर्कं गृहाण त्वं शुभदा भव शोभने।।

ॐ भगवत्यै कालीदेव्यै नमः, मधुपर्कं समर्पयामि।

स्नानम्

कर्पूरकाश्मीरजमिश्रितेन जलेन शुद्धेन सुशीतलेन।
स्वर्गापवर्गस्य फलप्रदाढ्ये स्नानं कुरु त्वं जगदेकधन्ये!।।
आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्त्व वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा या बाह्या अलक्ष्मीः।।

ॐ भगवत्यै कालीदेव्यै नमः, स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्

पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशे ऽभवत्सरित्।।

ॐ भगवत्यै कालीदेव्यै नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।
शुद्धोदक आचमनीयं जलं समर्पयामि।

महाभिषेकस्नानम्—काली देवी की मूर्ति के महाभिषेक स्नान के लिए आचार्य श्रीसूक्त के सोलह मन्त्रों का क्रम से उच्चारण करें।

शुद्धोदकस्नानम्

शुद्धं यत्सलिलं दिव्यं गङ्गाजलसमं स्मृतम्।
समर्पितं मया भक्त्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त ऽआश्विनाः। श्येतः श्येताक्षोऽरुणास्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा ऽअवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः।।

ॐ भगवत्यै कालीदेव्यै नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

वस्त्रम्

वस्त्रञ्च सोमदैवत्यं लज्जायास्तु निवारणम्।
मया निवेदितं भक्त्या गृहाण परमेश्वरि।।
उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।।

ॐ भगवत्यै कालीदेव्यै नमः, वस्त्रं समर्पयामि।
वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्

स्वर्णसूत्रमयं दिव्यं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वरि!।।

ॐ भगवत्यै कालीदेव्यै नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

सौभाग्यसूत्रम्

सौभाग्यसूत्रं वरदे! सुवर्णमणिसंयुते।
कंठे बध्नामि देवेशि! सौभाग्यं देहि मे सदा।।

ॐ भगवत्यै कालीदेव्यै नमः, सौभाग्यसूत्रं समर्पयामि।

उपवस्त्रम्

कञ्चुकीमुपवस्त्रं च नानारत्नैः समन्वितम्।
गृहाण त्वं मयादत्तं शङ्करप्राणवल्लभे।।
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्।।

ॐ भगवत्यै कालीदेव्यै नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।

कुङ्कुमम्

कुङ्कुमं कान्तिदं दिव्यं कामिनीकामसम्भवम्।
कुङ्कुमेनार्चिते देवि! प्रसीद परमेश्वरि।।
प्रत्यूषमार्तण्डमयूखतुल्यं सुगन्धयुक्तं मृगनाभिचूर्णैः।
माणिक्यपात्रस्थितमञ्जुकान्ति त्रयीमये! देवि! गृहाण कुङ्कुमम्।।

ॐ भगवत्यै कालीदेव्यै नमः, कुङ्कुमं समर्पयामि।

सिन्दूरम्

सिन्दूरमरुणाभासं जपाकुसुमसन्निभम्।
पूजिताऽसि मया देवि! प्रसीद परमेश्वरि!।।

ॐ सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः। घृतस्य धारा ऽअरुणो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः।।

ॐ भगवत्यै कालीदेव्यै नमः, सिन्दूरं समर्पयामि।

गन्धम्

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं च देवेशि! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।

ॐ भगवत्यै कालीदेव्यै नमः, गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षतान्

अक्षतान् निर्मलान् शुद्धान् मुक्तामणिसमन्वितान्।
गृहाणेमान् महादेवि! देहि मे निर्मलां धियम्।।
ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रिया ऽअधूषत।
अंस्तोषत स्वभानवो विप्रानविष्ठया योजान्विन्द्र तेहरी।।

ॐ भगवत्यै कालीदेव्यै नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालाम्

मन्दार-पारिजातादि-पाटाली-केतकानि च।
जाती-चम्पक-पुष्पाणि गृहाणेमानि शोभने!।।
मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।।

ॐ भगवत्यै कालीदेव्यै नमः, पुष्पमालां समर्पयामि।

बिल्वपत्राणि

अमृतोद्भवः श्रीवृक्षो महादेवप्रियः सदा।
बिल्वपत्रं प्रयच्छामि पवित्रं ते सुरेश्वरि।।

ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः। श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च।।

ॐ भगवत्यै कालीदेव्यै नमः, बिल्वपत्राणि समर्पयामि।

दूर्वाङ्कुरान्

दूर्वादले श्यामले त्वं महीरूपे हरिप्रिये।
दूर्वाभिराभिर्भवतीं पूजयामि सदा शिवे।।
ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।

ॐ भगवत्यै कालीदेव्यै नमः, दूर्वाङ्कुरान समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्याणि

अवीरं च गुलालं च हरिद्रादिसमन्वितम्।
नानापरिमलं द्रव्यं गृहाण परमेश्वरि।।

ॐ भगवत्यै कालीदेव्यै नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सौभाग्यद्रव्याणि

हरिद्रा-कुङ्कुमं चैव सिन्दूरादिसमन्वितम्।
सौभाग्यद्रव्यमेतद्वै गृहाण परमेश्वरि।।

ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यार्ठ० शूद्रो ऽअजायत।।

ॐ भगवत्यै कालीदेव्यै नमः, सौभाग्यद्रव्याणि समर्पयामि।

सुगन्धितद्रव्यम्

चन्दनागुरुकर्पूरैः संयुतं कुङ्कुमं तथा।
कस्तूर्यादिसुगन्धांश्च सर्वाङ्गेषु विलेपनम्।।
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमाऽमृतात्।।

ॐ भगवत्यै कालीदेव्यै नमः, सुगन्धितद्रव्यं समर्पयामि।

अङ्गपूजनम्

ॐ दुर्गायै नमः, पादौ पूजयामि। ॐ महाकाल्यै नमः, गुल्फौ पूजयामि। ॐ मङ्गलायै नमः, जानुद्वयं पूजयामि। ॐ कात्यायन्यै नमः, ऊरुद्वयं

पूजयामि। ॐ भद्रकाल्यै नमः, कटिं पूजयामि। ॐ कमलवासिन्यै नमः, नाभिं पूजयामि। ॐ शिवायै नमः, उदरं पूजयामि। ॐ क्षमायै नमः, हृदयं पूजयामि। ॐ कौमार्यै नमः, स्तनौ पूजयामि। ॐ उमायै नमः, हस्तौ पूजयामि। ॐ महागौर्यै नमः, दक्षिणबाहुं पूजयामि। ॐ वैष्णव्यै नमः, वामबाहुं पूजयामि। ॐ रमायै नमः, स्कन्धौ पूजयामि। ॐ स्कन्दमात्रे नमः, कण्ठं पूजयामि। ॐ महिषासुरमर्दिन्यै नमः, नेत्रे पूजयामि। ॐ सिंहवाहिन्यै नमः, मुखं पूजयामि। ॐ माहेश्वर्यै नमः, शिरः पूजयामि। ॐ कात्यायन्यै नमः, सर्वाङ्गं पूजयामि।

नवशक्तिपूजनम्

ॐ जयायै नमः। ॐ विजयायै नमः। ॐ अजितायै नमः। ॐ अपराजितायै नमः। ॐ नित्यायै नमः। ॐ विलासिन्यै नमः। ॐ दोग्ध्र्यै नमः। ॐ अघोरायै नमः। ॐ मङ्गलायै नमः।

आवरणपूजनम्

सबसे पहले पुष्पाञ्जलि अपने दायें हाथ में लेकर निम्न श्लोक का उच्चारण करें–

ॐ संविन्मये परेशानि परामृते चरुप्रिये।
अनुज्ञां दक्षिणे देहि परिवारार्च्चनाय मे।।

इसके पश्चात् निम्न वाक्य का उच्चारण करें–पूजितास्ततर्पिताः सन्तु।

पुनः निम्न क्रमानुसार आवरण पूजा प्रारम्भ करें। फिर षट्कोण केसरों में, आग्नेयादि चारों दिशाओं में और मध्य दिशा में क्रमानुसार पूजा आरम्भ करें। प्रथम आवरण की पूजा करते समय निम्न श्लोक का उच्चारण करके ध्यान करें–

तुषारस्फटिकश्याम नीलकृष्णारुणास्तथा।
वरदाभयधारिण्यः प्रधान तनवः स्त्रियः।।

ध्यान के उपरान्त–ॐ क्रां हृदयाय नमः। हृदय देवताः श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।१।। ॐ क्रीं शिरसे स्वाहा। शिरो देवताः श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।२।। ॐ क्रूं शिखायै वषट्। शिखा देवताः श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।३।। ॐ क्रैं कवचाय हुँ।

कवच देवताः श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।४।। ॐ क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। नेत्र देवताः श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।। ५।। ॐ क्रः अस्त्राय फट्। अस्त्र देवताः श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।६।।

उपरोक्त प्रकार से षडंगों की पूजा करने के पश्चात् हाथ में पुष्पांजलि लेकर निम्न श्लोक का उच्चारण करें–

ॐ अभीष्ट-सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्।।

द्वितीयावरणम्–इसके उपरान्त पूज्य एवं पूजक के मध्य पूर्व दिशा को अन्तराल मानकर उसी के अनुसार अन्य दिशाओं की कल्पना करें। फिर प्राची क्रम द्वारा षट्कोणों में काली आदि का पूजन करें और निम्न श्लोक का उच्चारण करके ध्यान करें–

ॐ सर्वाः श्यामा असिकरा मुण्डमालाविभूषिताः।
तर्जनीं वामहस्तेन धारयंत्यश्च सुस्मिताः।।

ध्यान के उपरान्त–**ॐ काल्यै नमः। काली देवताः श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।१।। ॐ कपालिन्यै नमः। कपालिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।२।। ॐ कुल्यायै नमः। कुल्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।३।। ॐ कुरुकुल्यायै नमः। कुरुकुल्या श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।४।। ॐ विरोधिन्यै नमः। विरोधिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।५।। ॐ विप्रचित्तायै। विप्रचित्ता श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।६।।**

हाथ में पुष्पांजलि लेकर निम्न श्लोक का उच्चारण करें–

ॐ अभीष्ट-सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्।।

तृतीय आवरण–तदुपरान्त यंत्र के तीनों कोणों में **'उग्रा'** आदि नौ देवियों की पूजा निम्न क्रमानुसार करें। प्रथम त्रिकोण के सम्मुख–**ॐ उग्रायै नमः। उग्रा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।१।। ॐ उग्रप्रभायै नमः। उग्रप्रभा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।२।। ॐ दीप्तायै नमः। दीप्ता श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।३।। ॐ नीलायै नमः। नीला श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।४।। ॐ घनायै नमः। घना श्रीपादुकां पूजयामि**

तर्पयामि नमः।।५।। ॐ बलाकायै नमः। बलाका श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।६।। ॐ मात्रायै नमः। मात्रा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।७।। ॐ मुद्रायै नमः। मुद्रा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।८।। ॐ मित्रायै नमः। मित्रा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।९।।

हाथ में पुष्पांजलि लेकर निम्न श्लोक का उच्चारण करें–

ॐ अभीष्ट-सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्।।

चतुर्थ आवरण–पुनः अष्टदल में पूर्वादिक्रम के अनुसार आठ शक्तियों का पूजन करें। सबसे पहले निम्न श्लोक का उच्चारण करके ध्यान करें–

दण्डं कमण्डलुं पश्चादक्षसूत्रं महाभयम्।
बिभ्रती कनकच्छाया ब्राह्मकृष्णा जिनोज्ज्वला।।१।।
शूलं परश्वधङ् क्षुद्रदुन्दुभीं नृकरोटिकाम्।
वहन्ती हिमसंकाशा ध्येया माहेश्वरी शुभा।।२।।
अंकुशं दण्डखट्वाङ्गौ पाशं च दधती करैः।
बन्धूकपुष्प-संकाशा कुमारी कामदायिनी।।३।।
चक्रं घण्टां कपालं च शंखं च दधती करैः।
तमालश्यामला ध्येया वैष्णवी विभ्रमोज्ज्वला।।४।।
मुशलं करवालं च खेटकं दधती हलम्।
करैश्चतुर्भिर्वाराही ध्येया कालघनच्छविः।।५।।
अंकुशं तोमरं विद्युत्कुलिशं बिभ्रती करैः।
इन्द्र नीलनिभेन्द्राणी ध्येया सर्वा समृद्धिदा।।६।।
शूलं कृपाणं नृशिरः कपालं दधती करैः।
मुण्डस्रङ् मण्डिता ध्येया चामुण्डा रक्तविग्रहा।।७।।
अधस्त्रजं बीजपूरं कपालं दधती करैः।
वहन्ती हेमसङ्काशा मोहलक्ष्मीस्समीरिता।।८।।

ध्यान के उपरान्त–**ॐ ब्राह्मयै नमः। ब्राह्मी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।१।। ॐ नारायण्यै नमः। नारायणी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।२।। ॐ माहेश्वर्य्यै नमः। माहेश्वरी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।३।। ॐ चामुण्डायै नमः। चामुण्डा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।४।। ॐ कौमार्यै नमः। कौमारी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि**

नमः।।५।। ॐ अपराजितायै नमः। अपराजिता श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।६।। ॐ वाराह्यै नमः। वाराही श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।७।। ॐ नारसिंह्यै नमः। नारसिंही श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।८।।

हाथ में पुष्पांजलि लेकर निम्न श्लोक का उच्चारण करें–

ॐ अभीष्ट-सिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम्।।

भैरवपूजनम्–तदुपरान्त भूपुर के अन्दर आठों दिशाओं में पूर्वादिक्रम से अष्ट भैरवों का पूजन करें। उनका ध्यान निम्न श्लोक का उच्चारण करके करें–

भीषणास्यं त्रिनयनमर्द्धचन्द्रं विभूषितम्।
स्फटिकाभं कंकणादिभूषाशतसमायुतम्।।१।।
अष्टवर्षवयस्कं च कुन्तलोल्लसितं भजे।
धारयन्तं दण्डशूले भैरव्यादिसमायुतम्।।२।।

नाममन्त्रों द्वारा अष्टभैरवों का पूजन–**ॐ ऐं ह्रीं अं असिताङ्गभैरवाय नमः। असिताङ्गभैरव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।१।। ॐ ऐं ह्रीं इं रुरुभैरवाय नमः। रुरुभैरव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।२।। ॐ ऐं ह्रीं उं चण्डभैरवाय नमः। चण्डभैरव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।३।। ॐ ऐं ह्रीं ऋं क्रोधभैरवाय नमः। क्रोधभैरव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।४।। ॐ ऐं ह्रीं लृं उन्मत्तभैरवाय नमः। उन्मत्तभैरव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।५।। ॐ ऐं ह्रीं एं कपालिभैरवाय नमः। कपालिभैरव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।६।। ॐ ऐं ह्रीं ओं भीषणभैरवाय नमः। भीषणभैरव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।७।। ॐ ऐं ह्रीं अं संहारभैरवाय नमः। संहारभैरव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।८।।**

भैरवीपूजनम्–भैरव पूजन करने के उपरान्त उन्हीं के समीप आठ भैरवियों का पूजन करें। उनका ध्यान निम्न श्लोक का उच्चारण करके करें–

भावयेच्च महादेवि चन्द्रकोटियुतप्रभाम्।
हिमकुन्देन्दुधवलां पञ्चवक्त्रां त्रिलोचनाम्।।१।।
अष्टादशभुजैर्युक्तां सर्वानन्दकरोद्यताम्।
प्रहसन्तीं विशालाक्षीं देवदेवस्य सन्मुखीम्।।२।।

ध्यान के उपरान्त–**ॐ भैरव्यै नमः। भैरवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।१।। ॐ मम महाभैरव्यै नमः। महाभैरवी श्रीपादुकां पूजयामि**

तर्पयामि नमः।।२।। ॐ सिं सिंहभैरव्यै नमः। सिंहभैरवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।३।। ॐ धूं धूम्रभैरव्यै नमः। धूम्रभैरवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।४।। ॐ भीं भीमभैरव्यै नमः। भीम-भैरवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।५।। ॐ उं उन्मत्तभैरव्यै नमः। उन्मत्तभैरवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।६।। ॐ वं वशीकरण-भैरव्यै नमः। वशीकरण भैरवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।७।। ॐ मों मोहनभैरव्यै नमः। मोहनभैरवी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।।८।।

धूपम्

दशाङ्ग-गुग्गुलं धूपं चन्दना-ऽगरु-संयुतम्।
समर्पितं मया भक्त्या महादेवि! प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्वतं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्वयं वयं धूर्वामः। देवनामसि वह्नितमर्ठ० सस्नितमं प्रपितमं जुष्टतमं देवहूतमम्।।

ॐ भगवत्यै कालीदेव्यै नमः, धूपमाघ्रापयामि।

दीपम्

आज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेशि! त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा।।

ॐ भगवत्यै कालीदेव्यै नमः, दीपं दर्शयामि।

(हाथों को शुद्ध जल से धो लें)

नैवेद्यम्

अन्नं चतुर्विधं स्वादु-रसैः षड्भिः समन्वितम्।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि! भक्तिं मे ह्यचलां कुरु।।

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ२।। अकल्पयन्।।

ॐ भगवत्यै कालीदेव्यै नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा।
ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा।
ॐ समानाय स्वाहा। ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। आचमनीयं जलं समर्पयामि।
मध्ये पानीयं समर्पयामि। उत्तरापोशनं समर्पयामि। हस्तप्रक्षालनार्थे मुखप्रक्षालनार्थे
आचमनीयं जलं समर्पयामि।

ताम्बूलम्

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लि-दलैर्युतम्।
एलादि-चूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।।

ॐ भगवत्यै कालीदेव्यै नमः, मुखवासार्थे एलालवङ्गादिभिर्युतं पुंगीफलताम्बूलं समर्पयामि।

द्रव्यदक्षिणाम्

राक्षसौघजयचण्डचरित्रे! किं ददामि निखिलं तव वस्तु।
भक्तिभावयुतदत्तसुवर्णदक्षिणां सफलयस्व तथापि।।
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्।।

ॐ भगवत्यै कालीदेव्यै नमः, द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

प्रदक्षिणाम्

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणापदे पदे।।
यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्।।

ॐ भगवत्यै कालीदेव्यै नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि।

विशेषार्घ्यः

पूजाफलसमृद्ध्यर्थं तवाग्रे परमेश्वरि!।
विशेषार्घं प्रयच्छामि पूर्णान्कुरु मनोरथान्।।

ॐ भगवत्यै कालीदेव्यै नमः, विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

आर्तिक्यम्

ॐ इदठं० हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीरठं० सर्वगणठं० स्वस्तये। आत्मसनि प्रजासानि पशुसनि लोकसन्यभसनि। अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतो अस्मामासु धत्त। आ रात्रि पार्थिवठं० रजः पितुरप्रायि धामभिः। दिव सदाठं०सि बृहती वितिष्ठस आत्त्वेषं वर्त्तते तमः।।

सुन मेरी देवी पर्वत पर रहनेवाली, कोई तेरा पार न पाया।
पान सुपारी ध्वजा नारियल, तुझको भेंट चढ़ाया।।
साड़ी, चोली तेरे अंग विराजे, केसर तिलक लगाया।
ब्रह्मा वेद पढ़े तेरे द्वारे, शङ्कर ध्यान लगावें।।
नंगे-नंगे पैरों माता, राजा दौड़ा आया, सोने का छत्र चढ़ाया।
ऊँचे-ऊँचे पर्वत पर बना देवालय नीचे शहर बसाया।।
सतयुग, त्रेता, द्वापर मध्ये, कलियुग राज सवाया।
धूप दीप नैवेद्य आरती, सुमधुर भोग लगाया।।
ध्यान भगत तेरा गुन गाया, मनोवांछित फल पाया।
भगवती तेरी विलक्षण माया, पार किसी ने ना पाया।।

ॐ भगवत्यै कालीदेव्यै नमः, आर्तिक्यं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिम्

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साद्ध्याः सन्ति देवाः।।

ॐ भगवत्यै कालीदेव्यै नमः, पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

अखण्डदीपपूजनम्

भगवती काली के दक्षिण भाग में स्थित घृत से युक्त दीपक का यजमान से गन्ध, अक्षत, पुष्प के द्वारा पूजन करवा के आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान से प्रार्थना करवायें।

भो दीप! देवीरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्।
यावत्कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत्त्वं सुस्थिरो भव।।

प्रार्थना

मनो मृगो धावति सर्वदा मुधा विचित्रसंसारमरीचिकां प्रति।
अयेऽधुना किं स्वदया सरोवरं प्रकाश्य तस्मान्न निवर्तयिष्यसि।।

अनया पूजया कालीदेव्यै प्रीयतां न मम।

।। इति कालीपूजनविधानम्।।

अनुष्ठानहवनविधानम्

यजमान अपनी पत्नी के साथ हवनकुण्ड के समीप अथवा स्थण्डिल के समीप आकर आसन पर बैठे और कुशा के द्वारा जल लेकर अपना और हवन-सामग्री का प्रोक्षण करे, तदुपरान्त ब्राह्मण स्वस्तिवाचन करें और आचार्य निम्न संकल्प करायें–

देशकालौ संकीर्त्य–अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्) कृतस्य श्रीकालीअनुष्ठानहवनकर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं तद्दशांश-हवनादिकर्म करिष्ये। तत्रादौ निर्विघ्नता-सिद्ध्यर्थं गणेशादिदेवानां लब्धोपचारैः पूजनं करिष्ये।

संकल्प के उपरान्त गणेशादिदेवताओं की यथोपचारों से पूजा करवाके पुण्याहवाचन करें, इसके उपरान्त आचार्य एवं ब्राह्मणों का यजमान निम्न संकल्प का उच्चारण करके एकतन्त्र से वरण करें–

एकतन्त्रेण वरणसंकल्पः

यजमान महाकाली के हवनकर्म को करवाने के निमित्त एकतन्त्र से निम्न संकल्प करें–

अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्) अस्मिन् काली-हवनकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः नानानामगोत्रान् नानानामधेयान् शर्मणः आचार्यादिब्राह्मणान् युष्मानहं वृणे।

अग्निस्थापनम्

आचार्य आवाहितदेवताओं का यजमान से पूजन करवाके कुण्ड में सुवर्णखण्ड छोड़वा दें और कुण्ड को एक वस्त्र से ढक दें, पुनः आचार्य यजमान को अरणी देते हुए यह वाक्य कहें–**स्मार्त्ताग्निसाधनभूते योनिरूपे इमे अरणी युवाभ्यां प्रतिगृह्यताम्। इयमधरा। इयमुत्तरा।** पुनः ब्रह्मा कहें–**इदं चात्र, इदमोवलीं इदं नेत्रम्, इमानि स्रुवादीनि पात्राणि प्रतिगृहाण।**

यजमान उपरोक्त पात्रों को ब्रह्मा से लेकर इनमें से अधर अरणी अपनी पत्नी को दें, यजमान पत्नी अधर अरणी को अपनी गोद में रखे, फिर यजमान व उसकी धर्मपत्नी इन अरणियों का पूजन करे। यजमान प्राङ्मुख होकर आसन पर बैठे, आचमन एवं प्राणायाम करे, उपरान्त ही आचार्य यजमान के दायें हाथ में जल, अक्षत एवं द्रव्य रखवाकर संकल्प करायें–

देशकालौ संकीर्त्य—सपत्नीकोऽहं अस्मिन् कालीहवनकर्मणि पंचभू-संस्कारपूर्वकं शतमङ्गलनामाग्निस्थापनं करिष्ये।

आचार्य अधरा अरणी को कंबल व मृगचर्म पर रखकर ओवली में रस्सी को लपेटकर यजमान की धर्मपत्नी उसे चलावें और यजमान ऊपर से जोर देकर मंथा को दबाये रहे। जब तक अग्नि प्रज्वलित न हो तब तक अग्निमंथन करते रहें। यदि यजमान व उसकी पत्नी थक जायें और अग्नि प्रज्वलित न हो उस अवस्था में यज्ञस्थल से ही पवित्र ब्राह्मण के द्वारा अग्निमंथनकर्म को करावें। यह क्रम तब तक होता रहेगा जब तक कि पूर्णरूप से अग्नि प्रज्वलित न हो जाय। अग्निमंथन के प्रारम्भ होते ही आचार्य सहित सभी ब्राह्मण यजुर्वेदसंहिता के तीसरे अध्याय और अन्य अग्निस्तुतिपरक मन्त्रों का उच्चारण करें।

ब्रह्मा द्वारा कुण्ड में पंचभूसंस्कार किये जाने के पश्चात् यजमान व उसकी धर्मपत्नी कुण्ड के पश्चिमभाग में पूर्वदिशा की ओर मुख कर बैठ कर कुण्ड का पूजन निम्न क्रम से करना प्रारम्भ करे। सबसे पहले कुण्ड के ऊपर वाली मेखला में अक्षतपुंज पर सुपाड़ी रखवाकर निम्न वैदिक मंत्र का आचार्य उच्चारण करें—

ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्।। समूढमस्य पाठ॰ सुरे स्वाहा।। ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णावे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।।

मध्य मेखला में—**ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्चविवः।। ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।।**

अधोमेखला में—**ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतोत इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः।। ॐ भूर्भुव स्वः रुद्राय नमः, रुद्रमावाहयामि स्थापयामि।।**

योनि में—**ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।। ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः गौरीमावाहयामि स्थापयामि।।**

कण्ठ में—**ॐ नीलग्रीवाः शितिकण्ठा दिवठ॰ रुद्रा उपश्रिताः। तेषाठ॰ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।।**

नाभि में–**ॐ नार्भिर्मे चितं विज्ञानं पायुर्मेऽपचितिर्भसत्। आनन्दनन्दावाण्डौ मे भगः सौभाग्यं पसः।। जङ्घाभ्यां पद्भ्यां धर्म्मोऽस्मि विशि राजा प्रतिष्ठितः।। ॐ नाभ्यै नमः नाभिमावाहयामि।।**

आचार्य–'**ॐ विश्वकर्मन् हविषा वर्द्धनेन् त्रातारमिन्द्रमकृणोरवद्ध्यम्। तस्मै विशः समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथासत्।। ॐ भूर्भुव स्वः विश्वकर्मणे नमः, विश्वकर्मणं आवाहयामि।।**

उपरोक्त मंत्र का उच्चारण करके कुण्ड में विश्वकर्मा का आवाहन यजमान से करावें। अग्निदेवता के प्रगट होने पर एक थाली में नारियल की जटा रूई व कपूर में प्रज्वलित अग्नि को रखकर उनका जयघोष करते हुए विशेष रूप से उस अग्नि को प्रज्वलित कर लें। फिर कुण्ड में गोहरी एवं लकड़ी के छिलकों में उस अग्नि को निम्न मंत्र का उच्चारण करके स्थापित करे–**ॐ अग्निं दूतं पुरोदधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ२।। आसादया दिह।** अग्नि को स्थापित करने के पश्चात् यजमान संक्षिप्त पुण्याहवाचन एवं गोदानपूर्वक ब्राह्मणों को दक्षिणा दें। पीतल या काँसे की थाली में द्रव्य, अक्षत छोड़े और अग्नि की रक्षा के हेतु वेदी पर लकड़ी रख दें, तथा यजमान के हाथ में अक्षत देकर निम्न श्लोकों द्वारा अग्नि का आवाहन करावें–

रक्तमाल्याम्बरधरं रक्तपद्मासनस्थितम्।
स्वाहास्वधावषट्कारैरङ्कितं मेषवाहनम्।।
शतं मंगलकं रौद्रं वह्निमावाहयाम्यहम्।
त्वं मुखं सर्वदेवानां सप्तार्चिरमितद्युते।
आगच्छ भगवन्नग्ने वेद्यामस्मिन् सन्निधो भव।।

ग्रहवेद्यां ग्रहान्स्थापयेत्

यजमान के दायें हाथ में जल, अक्षत, पुष्प व कुछ द्रव्य रखवाकर आचार्य निम्न संकल्प करावे–

देशकालौ सङ्कीर्त्य–अमुक गोत्रः अमुकशर्माऽहं (वर्माऽहं, गुप्तोऽहं) अस्मिन् सनवग्रहमखकर्मणि सुवर्णप्रतिमासु आदित्यादिनवग्रहाणामधिदेवता-प्रत्यधिदेवतापञ्चलोकपालदिक्पालानां च स्थापनं पूजनं करिष्ये।

नवग्रहस्थापनम्

आचार्य ईशानकोण की ओर पीढ़े पर सफेद वस्त्र बिछाकर नवग्रहमण्डल का निर्माणकर सूर्यादिनवग्रहदेवताओं के निम्न श्लोकों, मन्त्रों एवं वाक्यों के द्वारा उनका आवाहन व स्थापन यजमान से करायें-

जपा-कुसुम-सङ्काशं काश्यपेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं सूर्यमावाहयाम्यहम्।।

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कलिङ्गदेशोद्भव काश्यपगोत्र रक्तवर्ण भो सूर्य! इहागच्छ इह तिष्ठ सूर्याय नमः, सूर्यमावाहयामि स्थापयामि।।१।।

दधि-शङ्ख-तुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
ज्योत्स्नापतिं निशानाथं सोममावाहयाम्यहम्।।

ॐ इमं देवा असपत्नर्ठ० सुवध्वं महते क्षत्राय महते ज्यैष्ठ्याय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय। इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानार्ठ० राजा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः यमुनातीरोद्भव आत्रेयगोत्र शुक्लवर्ण भो सोम! इहागच्छ इह तिष्ठ सोमाय नमः, सोममावाहयामि स्थापयामि।।२।।

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्तेजःसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं च भौममावाहयाम्यहम्।।

ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपार्ठ० रेतार्ठ० सि जिन्वति।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अवन्तिकापुरोद्भव भरद्वाजगोत्र रक्तवर्ण भो भौम! इहागच्छ इह तिष्ठ भौमाय नमः, भौममावाहयामि स्थापयामि।।३।।

प्रियङ्गुकलिकाभासं रूपेणाऽप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं बुधमावाहयाम्यहम्।।

ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टापूर्ते सर्ठ० सृजेथामयं च। अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत।।

ॐ भूर्भुवः स्वः मगधदेशोद्भव आत्रेयगोत्र पीतवर्ण भो बुध! इहागच्छेह तिष्ठ बुधाय नमः, बुधमावाहयामि स्थापयामि।।४।।

देवानां च मुनीनां च गुरुं काञ्चनसन्निभम्।
वन्द्यभूतं त्रिलोकानां गुरुमावाहयाम्यहम्।।

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सिन्धुदेशोद्भव आङ्गिरसगोत्र पीतवर्ण भो बृहस्पते! इहागच्छ इह तिष्ठ बृहस्पतये नमः, बृहस्पतिमावाहयामि स्थापयामि।।५।।

हिम-कुन्द-मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं शुक्रमावाहयाम्यहम्।।

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानर्ठ० शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भोजकटदेशोद्भव भार्गवगोत्र शुक्लवर्ण भो शुक्र! इहागच्छ इह तिष्ठ शुक्राय नमः, शुक्रमावाहयामि स्थापयामि।।६।।

नीलाम्बुजसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं शनिमावाहयाम्यहम्।।

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्रवन्तुः नः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सौराष्ट्रदेशोद्भव काश्यपगोत्र कृष्णवर्ण भो शनैश्चर! इहागच्छ इह तिष्ठ शनैश्चराय नमः, शनिश्चरमावाहयामि स्थापयामि।।७।।

अर्द्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं राहुमावाहयाम्यहम्।।

ॐ कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा। कया शचिष्ठया वृता।।

ॐ भूर्भुवः स्वः राठिनपुरोद्भव पैठीनसगोत्र कृष्णवर्ण भो राहो! इहागच्छ इह तिष्ठ राहवे नमः, राहुमावाहयामि स्थापयामि।।८।।

पलाशधूम्रसङ्काशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं केतुमावाहयाम्यहम्।।

ॐ केतुं कृण्वन्नकेतवे पेशो मर्या अपेशसे। समुषद्भिरजायथाः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अन्तर्वेदिसमुद्भव जैमिनिगोत्र कृष्णवर्ण भो केतो! इहागच्छ इह तिष्ठ केतवे नमः, केतुमावाहयामि स्थापयामि।।९।।

अधिदेवतास्थापनम्

सूर्यादि ग्रहों के आवाहन व स्थापन के पश्चात् आचार्य दायीं ओर निम्न श्लोकों, मन्त्रों एवं वाक्यों का उच्चारण करते हुए अधिदेवताओं का स्थापन यजमान से करावे-

पञ्चवक्त्रं वृषारूढमुमेशं च त्रिलोचनम्।
आवाहयामीश्वरं तं खट्वाङ्गवरधारिणम्।।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्-मृत्योर्मुक्षीय मा ऽमृतात्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ईश्वर इहागच्छ इह तिष्ठ ईश्वराय नमः, ईश्वरमावाहयामि स्थापयामि।।१।।

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीमुमामावाहयाम्यहम्।।

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण।।

ॐ भूर्भुवः स्वः उमेहागच्छ इह तिष्ठ उमायै नमः, उमामावाहयामि स्थापयामि।।२।।

रुद्रतेजःसमुत्पन्नं देवसेनाग्रगं विभुम्।
षण्मुखं कृत्तिकासूनुं स्कन्दमावाहयाम्यहम्।।

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्देहागच्छ इह तिष्ठ स्कन्दाय नमः, स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि।।३।।

देवदेवं जगन्नाथं भक्तानुग्रहकारकम्।
चतुर्भुजं रमानाथं विष्णुमावाहयाम्यहम्।।

ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णो इहागच्छ इह तिष्ठ विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।।४।।

कृष्णाजिनाऽम्बरधरं पद्मसंस्थं चतुर्मुखम्।
वेदाधारं निरालम्बं विधिमावाहयाम्यहम्।।

ॐ आ ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।। ५।।

देवराजं गजारूढं शुनासीरं शतक्रतुम्।
वज्रहस्तं महाबाहुमिन्द्रमावाहयाम्यहम्।।

ॐ सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भिः सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान्। जहि शत्रूँर० २।। रप मृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो नः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्रेहागच्छ इह तिष्ठ इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।।६।।

धर्मराजं महावीर्यं दक्षिणादिक्पतिं प्रभुम्।
रक्तेक्षणं महाबाहुं यममावाहयाम्यहम्।।

ॐ यमाय त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः यम इहागच्छ इह तिष्ठ यमाय नमः, यममावाहयामि स्थापयामि।।७।।

अनाकारमनन्ताख्यं वर्तमानं दिने दिने।
कलाकाष्ठादिरूपेण कालमावाहयाम्यहम्।।

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्या उन्नयामि। समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कालेहागच्छ इह तिष्ठ कालाय नमः, कालमावाहयामि स्थापयामि।।८।।

धर्मराजसभासंस्थं कृता-ऽकृत-विवेकिनम्।
आवाहयेच्चित्रगुप्तं लेखनीपत्रहस्तकम्।।

ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय।।

ॐ भूर्भुवः स्वः चित्रगुप्तेहागच्छ इह तिष्ठ चित्रगुप्ताय नमः चित्रगुप्तमा-वाहयामि स्थापयामि।।९।।

प्रत्यधिदेवतास्थापनम्

आचार्य ग्रहों के बायीं ओर प्रत्यधिदेवताओं का आवाहन तथा स्थापन निम्न श्लोकों, मन्त्रों एवं वाक्यों का उच्चारण करते हुए यजमान से करायें–

रक्तमाल्याम्बरधरं रक्त-पद्मासन-स्थितम्।
वरदाभयदं देवमग्निमावाहयाम्यहम्।।

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ२।। आसादयादिह।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्ने इहागच्छ इह तिष्ठ अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि स्थापयामि।।१।।

आदिदेवसमुद्भूता जगच्छुद्धिकरा शुभाः।
औषध्याप्यायनकरा अप आवाहयाम्यहम्।।

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अप इहाऽऽगच्छत इह तिष्ठत अद्भ्यो नमः, अप आवाहयामि स्थापयामि।।२।।

शुक्लवर्णां विशालाक्षीं कूर्मपृष्ठोपरिस्थिताम्।
सर्वशस्याश्रयां देवीं धरामावाहयाम्यहम्।।

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः पृथ्वी इहागच्छ इह तिष्ठ पृथिव्यै नमः, पृथिवीमावाहयामि स्थापयामि।।३।।

खड्ग-चक्र-गदा-पद्महस्तं गरुडवाहनम्।
किरीट-कुण्डलधरं विष्णुमावाहयाम्यहम्।।

ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्यपार्ठ० सुरे स्वाहा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णो इहागच्छ इह तिष्ठ विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।।४।।

ऐरावतगजारूढं सहस्राक्षं शचीपतिम्।
वज्रहस्तं सुराधीशमिन्द्रमावाहयाम्यहम्।।

ॐ इन्द्र आसां नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा यज्ञःपुर एतु सोमः। देवसेनाना-मभिभञ्जतीनां जयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्रम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्रेहागच्छ इह तिष्ठ इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।।५।।

प्रसन्नवदनां देवीं देवराजस्य वल्लभाम्।
नानाऽलङ्कारसंयुक्तां शचीमावाहयाम्यहम्।।

ॐ अदित्यै रास्नासीन्द्राण्या उष्णीषः। पूषाऽसि घर्माय दीष्व।।

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्राणि इहागच्छेह तिष्ठ इन्द्राण्यै नमः, इन्द्राणीमावाहयामि स्थापयामि।।६।।

आवाहयाम्यहं देवदेवेशं च प्रजापतिम्।
अनेकव्रतकर्तारं सर्वेषां च पितामहम्।।

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव। यत्का-मास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयठ० स्याम पतयो रयीणाम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः प्रजापते इहागच्छेह तिष्ठ प्रजापतये नमः, प्रजापतिमा-वाहयामि स्थापयामि।।७।।

अनन्ताद्यान् महाकायान् नानामणिविराजितान्।
आवाहयाम्यहं सर्पान् फणासप्तकमण्डितान्।।

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्पा इहागच्छ इह तिष्ठ सर्पेभ्यो नमः, सर्पानावाहयामि स्थापयामि।।८।।

हंसपृष्ठसमारूढं देवतागणपूजितम्।
आवाहयाम्यहं देवं ब्रह्माणं कमलासनम्।।

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन् इहागच्छेह तिष्ठ ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माण-मावाहयामि स्थापयामि।।९।।

पंचलोकपालस्थापनम्

प्रत्यधिदेवताओं के स्थापन के पश्चात् आचार्य विनायक आदि पंचलोकपाल, वाष्तोष्पति तथा क्षेत्रपाल का आवाहन व स्थापन निम्न श्लोकों, मन्त्रों एवं वाक्यों का उच्चारण करते हुए यजमान से करायें-

लम्बोदरं महाकायं गजवक्त्रं चतुर्भुजम्।
आवाहयाम्यहं देवं गणेशं सिद्धिदायकम्।।

ॐ गणानां त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिर्ठ० हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपते इहागच्छेह तिष्ठ गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।।१।।

पत्तने नगरे ग्रामे विपिने पर्वते गृहे।
नानाजातिकुलेशानीं दुर्गामावाहयाम्यहम्।।

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः दुर्गे इहागच्छेह तिष्ठ दुर्गायै नमः, दुर्गामावाहयामि स्थापयामि।।२।।

आवाहयाम्यहं वायुं भूतानां देहधारिणम्।
सर्वाधारं महावेगं मृगवाहनमीश्वरम्।।

ॐ वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि। नियुत्वान्सोमपीतये।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वायो इहागच्छेह तिष्ठ वायवे नमः, वायुमावाहयामि स्थापयामि।।३।।

अनाकारं शब्दगुणं द्यावाभूम्यन्तरस्थितम्।
आवाहयाम्यहं देवमाकाशं सर्वगं शुभम्।।

ॐ घृतं घृतपावनः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः आकाश इहागच्छेह तिष्ठ आकाशाय नमः, आकाशमावाहयामि स्थापयामि।।४।।

देवतानां च भैषज्ये सुकुमारौ भिषग्वरौ।
आवाहयाम्यहं देवावश्विनौ पुष्टिवर्द्धनौ।।

ॐ या वां कशा मधुमत्यश्विना सूनृतावती। तया यज्ञं मिमिक्षतम्। उपयामगृहीतोऽस्यश्विभ्यां त्वैष ते योनिर्माध्वीभ्यां त्वा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अश्विनौ इहागच्छताम् इह तिष्ठताम् अश्विभ्यां नमः, अश्विनौ आवाहयामि स्थापयामि।।५।।

वास्तोष्पतिं विदिक्कार्यं भूशय्याभिरतं प्रभुम्।
आवाहयाम्यहं देवं सर्वकर्मफलप्रदम्।।

ॐ वास्तोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वावेशो ऽअनमीवो भवा नः। यत्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वास्तोष्पते इहागच्छेह तिष्ठ वास्तोष्पतये नमः, वास्तोष्पतिमावाहयामि स्थापयामि।।६।।

भूत-प्रेत-पिशाचाद्यैरावृतं शूलपाणिनम्।
आवाहये क्षेत्रपालं कर्मण्यस्मिन् सुखाय नः।।

ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुर एतारमग्नेः। ऐमेनमवृधन्नमृता अमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः क्षेत्राधिपते इहागच्छेह तिष्ठ क्षेत्राधिपतये नमः, क्षेत्राधिपतिमावाहयामि स्थापयामि।।७।।

दशदिक्पालस्थापनम्

आचार्य ग्रहमण्डल के बाहर पूर्वदिशा से प्रदक्षिण क्रम द्वारा दशदिक्पालों का आवाहन व स्थापन निम्न श्लोकों, मन्त्रों एवं वाक्यों का उच्चारण करके यजमान से करायें–

इन्द्रं सुरपतिश्रेष्ठं वज्रहस्तं महाबलम्।
आवाहये यज्ञसिद्ध्यै शतयज्ञाधिपं प्रभुम्।।

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रꣳ हवे हवे सुहवꣳ शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रꣳ स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः इन्द्र इहागच्छ इह तिष्ठ इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।।१।।

त्रिपादं सप्तहस्तं च द्विमूर्द्धानं द्विनासिकम्।
षण्नेत्रं च चतुःश्रोत्रमग्निमावाहयाम्यहम्।।

ॐ त्वं नो अग्ने तव देव पायुभिर्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य। त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेषर्ठ० रक्षमाणस्तव व्रते।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अग्ने इहागच्छेह तिष्ठ अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि स्थापयामि।।२।।

महामहिषमारूढं दण्डहस्तं महाबलम्।
यज्ञसंरक्षणार्थाय यममावाहयाम्यहम्।।

ॐ यमाय त्वाऽङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः यम इहागच्छेह तिष्ठ यमाय नमः, यममावाहयामि स्थापयामि।।३।।

सर्वप्रेताधिपं देवं निर्ऋतिं नीलविग्रहम्।
आवाहये यज्ञसिद्ध्यै नरारूढं वरप्रदम्।।

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु।।

ॐ भूर्भुवः स्वः निर्ऋते इहागच्छेह तिष्ठ निर्ऋतये नमः, निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि।।४।।

शुद्ध-स्फटिक-सङ्काशं जलेशं यादसां पतिम्।
आवाहये प्रतीचीशं वरुणं सर्वकामदम्।।

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशर्ठ० स मा न आयुः प्रमोषीः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण इहागच्छेह तिष्ठ वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि स्थापयामि।।५।।

मनोजवं महातेजं सर्वतश्चारिणं शुभम्।
यज्ञसंरक्षणार्थाय वायुमावाहयाम्यहम्।।

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वरर्ठ० सहस्त्रिणीभिरुप याहि यज्ञम्। वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः वायो इहागच्छेह तिष्ठ वायवे नमः, वायुमावाहयामि स्थापयामि।।६।।

आवाहयामि देवेशं धनदं यक्षपूजितम्।
महाबलं दिव्यदेहं नरयानगतिं विभुम्।।

ॐ कुविदङ्ग यवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूय। इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नम उक्तिं यजन्ति।।

उपयामगृहीतोऽस्य शिवभ्यां त्वा सरस्वत्यै त्वेन्द्राय त्वा सुत्राम्ब। एष ते योनिस्तेजसे त्वा वीर्याय त्वा बलाय त्वा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कुबेर इहागच्छ इह तिष्ठ कुबेराय नमः कुबेरमावाहयामि, स्थापयामि।

सर्वाधिपं महादेवं भूतानां पतिमव्ययम्।
आवाहये तमीशानं लोकानामभयप्रदम्।।

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्त्ये।।

ॐ भूर्भुवः स्वः इशानेहागच्छेह तिष्ठ ईशानाय नमः, ईशानमावाहयामि स्थापयामि।।८।।

पद्मयोनिं चतुर्मूर्तिं वेदगर्भं पितामहम्।
आवाहयामि ब्रह्माणं यज्ञसंसिद्धिहेतवे।।

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च योनिमसतश्च विवः।।

पूर्वेशानयोर्मध्ये—ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मन् इहागच्छेह तिष्ठ ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणं आवाहयामि स्थापयामि।।९।।

अनन्तं सर्वनागानामधिपं विश्वरूपिणम्।
जगतां शान्तिकर्तारं मण्डले स्थापयाम्यहम्।।

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः।।

निर्ऋति-पश्चिमयोर्मध्ये—ॐ भूर्भुवः स्वः अनन्तेहागच्छेह तिष्ठ अनन्ताय नमः, अनन्तमावाहयामि स्थापयामि।।१०।।

आचार्य निम्न श्लोक और '**ॐ मनो जूतिर्जुष०**' इस मन्त्र का उच्चारण करें—

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन्।।

असङ्ख्यात-रुद्रकलश-स्थापनं पूजनं च

आचार्य ग्रहमण्डल के ईशानकोण में पूर्व में बताई गई कलशस्थापनविधि द्वारा रुद्रकलश स्थापित कर उसमें वरुणदेवता और असङ्ख्यात रुद्र का निम्न मन्त्र द्वारा पूजन और प्रतिष्ठापन करावें—

ॐ असंख्याता सहस्राणि ये रुद्रा अधि भूम्याम्। तेषाꣳ सहस्रयोजनेऽव धन्वानि तन्मसि।।

ॐ असंख्यातरुद्रेभ्यो नमः असङ्ख्यातरुद्रानामावाहयामि स्थापयामि।

तदुपरान्त ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमं दधातु। विश्वे देवास इह मादयन्तामों ३ँप्रतिष्ठ।। (शु. य. सं. २।१३) इस मन्त्र द्वारा प्रतिष्ठापन करायें।

कुशकण्डिका

अग्नेर्दक्षिणतः ब्रह्मासनम्। अग्नेरुत्तरतः प्रणीतासनद्वयम्। ब्रह्मासने ब्रह्मोपवेशनं यावत्कर्म समाप्यते तावत्त्वं ब्रह्मा भव।। भवामिति ब्रह्मा वदेत्। ब्रह्मणानुज्ञातः प्रणीताप्रणयनम्। प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा वारिणा परिपूर्य कुशैराच्छाद्य प्रथमासने निधाय ब्रह्मणो मुखमवलोक्य द्वितीयासने निदध्यात्।। तत ईशानादि-पूर्वाग्रैः कुशैः परिस्तरणम्। आग्नेयादीशानान्तम्। ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तम्।। नैर्ऋत्याद्वायव्यान्तम्। अग्नितः प्रणीतापर्यन्तम्।।

पात्रासादनम्

पश्चादुत्तरतो वा स्यात्। पवित्रच्छेदनार्थं कुशत्रयम्। पवित्रकरणार्थं साग्रमनन्तगर्भं कुशपत्रद्वयम्। प्रोक्षणीपात्रम्। आज्यस्थाली। चरुस्थाली। सम्मार्जनकुशाः पंच। उपयमनकुशाः सप्त। समिधस्तिस्रः। स्रुक् स्रुवः। आज्यम्। पयः। तण्डुलाः। तण्डुलपूरितपूर्णपात्रम्। वृषनिष्क्रयदक्षिणा। उपकल्पनीयानि द्रव्याणि। द्वयोरुपरि त्रीणि निधाय द्वौ मूलेन प्रदक्षिणीकृत्य त्रिभिश्छिद्य। द्वौ ग्राह्यौ। त्रिस्त्याज्यः। प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीमासिच्य। सपवित्रकरेण प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणीपात्रे निधाय अनामिकांगुष्ठाभ्यां गृहीत पवित्राभ्यां त्रिरुत्पवनम्। प्रोक्षण्या सव्यहस्तकरणम्। दक्षिणहस्तेन अनामिकाङ्गुष्ठेन गृहीतपवित्रेण त्रिरुद्दिङ्गनम्। प्रणीतोदकेन प्रोक्षणीप्रोक्षणम्। प्रोक्षण्युदकेन यथासादितवस्तुसेचनम्। अग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीं निधाय। आज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापः। चरुस्थाल्यां प्रणीतोदकासेकपूर्वकं तण्डुलान्पयश्च प्रक्षिपेत्। ततो ब्रह्मा अग्नेर्दक्षिणतः (आज्यमधिश्रयति। चरुं स्वयं आज्यस्योत्तरतः श्रपयेत्। ततो विराडजायतेति आज्याधिश्रयणम् तेनैव मन्त्रेण वा पुरुषसूक्तेन स्वयं चरोरधिश्रयणमाज्यस्योत्तरतः) ज्वलदुल्मुकेनोभयोः पर्यग्निकरणम्। इतरथावृत्तिः। उदकोपस्पर्शः। अर्धाश्रिते

चरौ अधोमुखस्य स्रुवस्य प्रतपनम्। संमार्गकुशैः स्रुवस्योर्ध्व-मुखस्य सम्मार्जनम्। अग्रैरन्तरतो मूलैर्बाह्यतः स्रुवं संमृज्य तैरेव कुशैः प्रणीतोदकेन स्रुवमभ्युक्ष्य। संमार्जनकुशानामग्नौ प्रक्षेपः। स्रुवं पुनः प्रतप्य दक्षिणदेशे निधाय। आज्योद्वासनम्। चरुपूर्वेणानीयाग्नेरुत्तरतः स्थापयेत्। चरोरुद्धासनम्। अग्नेरुत्तरत एवाज्यस्य प्रदक्षिणीकृत्य आज्यस्योत्तरतश्चरुं स्थापयेत्। आज्योत्पवनम्। आज्यावेक्षणम्। अपद्रव्ये सति तन्निरसनम्। पुनः प्रोक्षण्युत्पवनम्। वामहस्ते उपयमनकुशानादाय तिष्ठन् दक्षिणहस्ते समिधोभ्याधाय प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा तूष्णीं घृताक्तसमिधास्तिस्रः अग्नौ क्षिपेत्। सपवित्रकरेण प्रोक्षण्युदकेनेशानादारभ्येशानपर्यन्तमग्नेः प्रदक्षिणं पर्युक्ष्य। पवित्रयोः प्रणीतासु निधानम्। दक्षिणजान्वाच्य कुशेन ब्रह्मणान्वारब्ध समिद्धतमेऽग्नौ (स्रुवेणाऽऽज्याहुतीर्जुहुयात्। स्रुवेणाज्यहोमः अग्नेरुत्तरभागे) मनसा। ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम। इति मनसा प्रोक्षणीपात्रे त्यागः। ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदमिन्द्राय न मम। इत्याघारौ।। ॐ अग्नये स्वाहा। इदमग्नये न मम।। ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय न मम।। इत्याज्यभागौ। इत्याज्यभागान्तं त्यागः। ततः सूर्यादिग्रहाणां अधिदेवताप्रत्यधिदेवतापंचलोकपालदशदिक्पालदेवतानां च प्रत्येकं समित्तिलचर्वाज्यद्रव्यैरष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिमष्टौ वा जुहुयात्।।

अपने दायें हाथ में जल, अक्षत् लेकर यजमान निम्न वाक्य कहें–

संकल्प–अस्मिन् भगवतीकालीअनुष्ठानहवनकर्मणि इमानि हवनीय द्रव्याणि या या यक्ष्यमाणदेवतास्ताभ्यस्ताभ्यो मया परित्यक्तं न मम।। यथादैवतानि सन्तु।।

आधारावाज्यहवनम्

कुण्डपूजन के उपरान्त निम्न क्रम से आधारावाज्यहवन यजमान से करायें–

ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम। ॐ इन्द्राय स्वाहा, इदमिन्द्राय न मम। इत्याघारौ।

ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नये न मम। ॐ सोमाय स्वाहा, इदं सोमाय न मम। इत्याज्यभागौ।

संकल्पः–इमानि हवनीयद्रव्याणि या या यक्ष्यमाणदेवतास्ताभ्यस्ताभ्यो मया परित्यक्तानि न मम।। यथा दैवतानि सन्तु।।

गणेशाम्बिकयोहोमः

निम्न दो मन्त्रों का आचार्य उच्चारण करते हुए यजमान से गणेश व अम्बा का हवन करायें–

ॐ गणानां त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिर्ठ० हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् स्वाहा।।

ॐ अम्बे अम्बिके ऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् स्वाहा।।

नवग्रहहोमः

(अधिदेवता-प्रत्यधिदेवतादिसहितहोमः)

निम्न मन्त्रों का आचार्य उच्चारण करते हुए यजमान से नवग्रह (अधिदेवता, प्रत्यधि देवता, पंचलोकपाल) की आहुति प्रदान करावें–

ॐ आ कृष्णेन रजसा० स्वाहा।। ॐ इमं देवाः० स्वाहा।। ॐ अग्निर्मूर्द्धा० स्वाहा।। ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने० स्वाहा।। ॐ बृहस्पतेऽअति० स्वाहा।। ॐ अन्नात्परिस्रुतः० स्वाहा।। ॐ शं नो देवीः० स्वाहा।। ॐ कयानश्चित्रः० स्वाहा।। ॐ केतुं कृण्वन्० स्वाहा ।।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे० स्वाहा।। ॐ श्रीश्च ते० स्वाहा।। ॐ यदक्रन्दः० स्वाहा।। ॐ विष्णो रराटमसि० स्वाहा ।। ॐ आ ब्रह्मन्ब्राह्मणो० स्वाहा।। ॐ सजोषा इन्द्र० स्वाहा।। ॐ यमाय त्वाऽङ्गिरस्वते० स्वाहा।। ॐ कार्षिरसि० स्वाहा।। ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते० स्वाहा।। ॐ अग्निन्दूतम्० स्वाहा।। ॐ आपो हि ष्ठा० स्वाहा ।। ॐ स्योना पृथिवि० स्वाहा।। ॐ इदं विष्णुः० स्वाहा।। ॐ इन्द्र आसाम्० स्वाहा।। ॐ अदित्यै रास्नासि० स्वाहा।। ॐ प्रजापते न त्वदेता० स्वाहा।। ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो० स्वाहा।। ॐ ब्रह्म जज्ञानम्० स्वाहा।। ॐ गणानां त्वा० स्वाहा।। ॐ अम्बे अम्बिके ऽम्बालिके० स्वाहा।। ॐ वायो ये ते० स्वाहा।। ॐ घृतं घृतपावानः० स्वाहा।। ॐ या वां कशा मधु० स्वाहा।। ॐ वास्तोष्पते० स्वाहा।। ॐ नहिस्पशम्० स्वाहा।। ॐ त्रातारमिन्द्रम्० स्वाहा।। ॐ त्वं नो ऽअग्ने० स्वाहा।। ॐ यमाय त्वाऽङ्गिरस्वते० स्वाहा।। ॐ असुन्वन्त-

मयजमानमिच्छ स्तेे० स्वाहा।। ॐ तत्त्वा यामि० स्वाहा।। ॐ आ नो नियुद्भिः० स्वाहा।। ॐ कुविदङ्ग यवमन्तो० स्वाहा।। ॐ तमीशानम्० स्वाहा।। ॐ अस्मे रुद्रा मेहना० स्वाहा।। ॐ स्योना पृथिवि० स्वाहा।।

प्रधानहवनम्

आचार्य भगवती काली की एक लाख आहुति निम्न दो मन्त्रों में से किसी भी एक मन्त्र के द्वारा यजमान से प्रदान करायें–

ॐ कन्या इव वहतुमेतवा उ अञ्ज्यञ्जाना अभिचाकशीमि। यत्र सोमः सूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धारा अभि तत्पवन्ते स्वाहा।। (शु.य. १७/९७)

अथवा

ॐ यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यार्ठ० शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृद्ध्यतामुप मादो नमतु स्वाहा।। (शु.य. २६/२)

आचार्य भगवती काली के वैदिक मन्त्र से आहुति दिलवाने के पश्चात् श्रीसूक्त एवं कालीसहस्त्रनामावली से भी यजमान से आहुति प्रदान करायें।

वास्तुहोमः

आचार्य शिख्यादि देवताओं के निम्न नाम मन्त्रों से अग्निकुण्ड में यजमान से आहुति प्रदान करावें–

ॐ शिखिने स्वाहा। ॐ पर्जन्याय स्वाहा। ॐ जयन्ताय स्वाहा। ॐ कुलिशायुधाय स्वाहा। ॐ सूर्याय स्वाहा। ॐ सत्याय स्वाहा। ॐ भृशाय स्वाहा। ॐ आकाशाय स्वाहा। ॐ वायवे स्वाहा। ॐ पूष्णे स्वाहा। ॐ वितथाय स्वाहा। ॐ गृहक्षताय स्वाहा। ॐ यमाय स्वाहा। ॐ गन्धर्वाय स्वाहा। ॐ भृङ्गराजाय स्वाहा। ॐ मृगाय स्वाहा। ॐ पितृभ्यः स्वाहा। ॐ दौवारिकाय स्वाहा। ॐ सुग्रीवाय स्वाहा। ॐ पुष्पदन्ताय स्वाहा। ॐ वरुणाय स्वाहा। ॐ असुराय स्वाहा। ॐ शेषाय स्वाहा। ॐ पापाय स्वाहा। ॐ रोगाय स्वाहा। ॐ अहये स्वाहा। ॐ मुख्याय स्वाहा। ॐ भल्लाटाय स्वाहा। ॐ सोमाय स्वाहा। ॐ सर्पेभ्यः स्वाहा। ॐ अदित्यै स्वाहा। ॐ दित्यै स्वाहा। ॐ अद्भ्यः स्वाहा। ॐ सावित्राय स्वाहा। ॐ जयाय स्वाहा। ॐ रुद्राय स्वाहा। ॐ अर्यम्णे स्वाहा। ॐ सवित्रे स्वाहा। ॐ विवस्वते स्वाहा। ॐ विबुधाधिपाय स्वाहा। ॐ मित्राय स्वाहा। ॐ

राजयक्ष्मणे स्वाहा। ॐ पृथ्वीधराय स्वाहा। ॐ आपवत्साय स्वाहा। ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। ॐ चरक्यै स्वाहा। ॐ विदार्यै स्वाहा। ॐ पूतनायै स्वाहा। ॐ पापराक्षस्यै स्वाहा। ॐ स्कन्दाय स्वाहा। ॐ अर्यम्णे स्वाहा। ॐ जृम्भकाय स्वाहा। ॐ पिलिपिच्छाय स्वाहा। ॐ इन्द्राय स्वाहा। ॐ अग्नये स्वाहा। ॐ यमाय स्वाहा। ॐ निर्ऋतये स्वाहा। ॐ वरुणाय स्वाहा। ॐ वायवे स्वाहा। ॐ कुबेराय स्वाहा। ॐ ईशानाय स्वाहा। ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। ॐ अनन्ताय स्वाहा।

सर्वतोभद्रहोम:

आचार्य '**ॐ ब्रह्मणे स्वाहा**' से '**ॐ वैनायक्यै स्वाहा**' तक के निम्न सत्तावन नाम मन्त्रों का उच्चारण करते हुए कुण्ड में सर्वतोभद्रदेवताओं का हवन यजमान से करायें–

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। ॐ सोमाय स्वाहा। ॐ ईशानाय स्वाहा। ॐ इन्द्राय स्वाहा। ॐ अग्नये स्वाहा। ॐ यमाय स्वाहा। ॐ निर्ऋतये स्वाहा। ॐ वरुणाय स्वाहा। ॐ वायवे स्वाहा। ॐ अष्टवसुभ्यो स्वाहा। ॐ एकादशरुद्रेभ्यः स्वाहा। ॐ द्वादशादित्येभ्यः स्वाहा। ॐ अश्विभ्यां स्वाहा। ॐ सपैतृकविश्वेभ्यो देवेभ्यः स्वाहा। ॐ सप्तयक्षेभ्यः स्वाहा। ॐ नागेभ्यः स्वाहा। ॐ गन्धर्वाप्सरोभ्यः स्वाहा। ॐ स्कन्दाय स्वाहा। ॐ नन्दीश्वराय स्वाहा। ॐ शूलाय स्वाहा। ॐ महाकालाय स्वाहा। ॐ दक्षादिभ्यः स्वाहा। ॐ दुर्गायै स्वाहा। ॐ विष्णवे स्वाहा। ॐ स्वधायै स्वाहा। ॐ मृत्युरोगेभ्य स्वाहा। ॐ गणपतये स्वाहा। ॐ अद्भ्यः स्वाहा। ॐ मरुद्भ्यः स्वाहा। ॐ पृथिव्यै स्वाहा। ॐ गङ्गादिनदीभ्यः स्वाहा। ॐ सप्तसागरेभ्यः स्वाहा। ॐ मेरवे स्वाहा। ॐ गदायै स्वाहा। ॐ त्रिशूलाय स्वाहा। ॐ वज्राय स्वाहा। ॐ शक्तये स्वाहा। ॐ दण्डाय स्वाहा। ॐ खड्गाय स्वाहा। ॐ पाशाय स्वाहा। ॐ अङ्कुशाय स्वाहा। ॐ गौतमाय स्वाहा। ॐ भरद्वाजाय स्वाहा। ॐ विश्वामित्राय स्वाहा। ॐ कश्यपाय स्वाहा। ॐ जमदग्नये स्वाहा। ॐ वसिष्ठाय स्वाहा। ॐ अत्रये स्वाहा। ॐ अरुन्धत्यै स्वाहा। ॐ ऐन्द्र्यै स्वाहा। ॐ कौमार्यै स्वाहा। ॐ ब्राह्म्यै स्वाहा। ॐ वाराह्यै स्वाहा। ॐ चामुण्डायै स्वाहा। ॐ वैष्णव्यै स्वाहा। ॐ माहेश्वर्यै स्वाहा। ॐ वैनायक्यै स्वाहा।

योगिनीहोमः

आचार्य **'ॐ गजाननायै स्वाहा'** से **'ॐ मृगलोचनायै स्वाहा'** तक के निम्न नाममंत्रों द्वारा योगिनी होम यजमान से कुण्ड में करायें–

ॐ गजाननायै स्वाहा। ॐ सिंहमुख्यै स्वाहा। ॐ गृध्रास्यायै स्वाहा। ॐ काकतुण्डिकायै स्वाहा। ॐ उष्ट्रग्रीवायै स्वाहा। ॐ हयग्रीवायै स्वाहा। ॐ वाराह्यै स्वाहा। ॐ शरभाननायै स्वाहा। ॐ उलूकिकायै स्वाहा। ॐ शिवारावायै स्वाहा। ॐ मयूरायै स्वाहा। ॐ विकटाननायै स्वाहा। ॐ अष्टवक्त्रायै स्वाहा। ॐ कोटराक्ष्यै स्वाहा। ॐ कुब्जायै स्वाहा। ॐ विकटलोचनायै स्वाहा। ॐ शुष्कोदर्यै स्वाहा। ॐ ललज्जिह्वायै स्वाहा। ॐ श्वदष्ट्रायै स्वाहा। ॐ वानराननायै स्वाहा। ॐ ऋक्षाभ्यै स्वाहा। ॐ केकराक्ष्यै स्वाहा। ॐ बृहत्तुण्डायै स्वाहा। ॐ सुराप्रियायै स्वाहा। ॐ कपालहस्तायै स्वाहा। ॐ रक्ताक्ष्यै स्वाहा। ॐ शुक्यै स्वाहा। ॐ श्येन्यै स्वाहा। ॐ कपोतिकायै स्वाहा। ॐ पाशहस्तायै स्वाहा। ॐ दण्डहस्तायै स्वाहा। ॐ प्रचण्डायै स्वाहा। ॐ चण्डविक्रमायै स्वाहा। ॐ शिशुघ्न्यै स्वाहा। ॐ पापहन्त्र्यै स्वाहा। ॐ काल्यै स्वाहा। ॐ रुधिरपायिन्यै स्वाहा। ॐ वसाधयायै स्वाहा। ॐ गर्भभक्षायै स्वाहा। ॐ शवहस्तायै स्वाहा। ॐ आन्त्रमालिन्यै स्वाहा। ॐ स्थूलकेश्यै स्वाहा। ॐ बृहत्कुक्ष्यै स्वाहा। ॐ सर्पास्यायै स्वाहा। ॐ प्रेतवाहिन्यै स्वाहा। ॐ दन्दशूकरायै स्वाहा। ॐ क्रौञ्च्यै स्वाहा। ॐ मृगशीर्षायै स्वाहा। ॐ वृषाननायै स्वाहा। ॐ व्यात्तास्यायै स्वाहा। ॐ धूम्रनिश्वासायै स्वाहा। ॐ व्योमैकचरणोर्ध्वदृशे स्वाहा। ॐ तापिन्यै स्वाहा। ॐ शोषिणीदृष्ट्यै स्वाहा। ॐ कोटर्यै स्वाहा। ॐ स्थूलनासिकायै स्वाहा। ॐ विद्युत्प्रभायै स्वाहा। ॐ बलाकास्यायै स्वाहा। ॐ मार्जायै स्वाहा। ॐ कटपूतनायै स्वाहा। ॐ अट्टाट्टहासायै स्वाहा। ॐ कामाक्ष्यै स्वाहा। ॐ मृगाक्ष्यै स्वाहा। ॐ मृगलोचनायै स्वाहा।

क्षेत्रपालहोमः

आचार्य **'ॐ अजराय स्वाहा'** से **'ॐ शुक्राय स्वाहा'** तक के निम्न नाम मंत्रों का उच्चारण करते हुए क्षेत्रपाल होम यजमान से कुण्ड में करायें–

ॐ अजराय स्वाहा। ॐ व्यापकाय स्वाहा। ॐ इन्द्रचौराय स्वाहा।

ॐ इन्द्रमूर्तये स्वाहा। ॐ उक्ष्णे स्वाहा। ॐ कूष्माण्डाय स्वाहा। ॐ वरुणाय स्वाहा। ॐ वटुकाय स्वाहा। ॐ विमुक्ताय स्वाहा। ॐ लिप्तकाय स्वाहा। ॐ नीललोकाय स्वाहा। ॐ एकदंष्ट्राय स्वाहा। ॐ ऐरावताय स्वाहा। ॐ ओषधीघ्नाय स्वाहा। ॐ बन्धनाय स्वाहा। ॐ दिव्यकरणाय स्वाहा। ॐ कम्बलाय स्वाहा। ॐ भीषणाय स्वाहा। ॐ गवयाय स्वाहा। ॐ घंटाय स्वाहा। ॐ व्यालाय स्वाहा। ॐ अंशवे स्वाहा। ॐ चन्द्रवारुणाय स्वाहा। ॐ घटाटोपाय स्वाहा। ॐ जटिलाय स्वाहा। ॐ क्रतवे स्वाहा। ॐ घण्टेश्वराय स्वाहा। ॐ विकटाय स्वाहा। ॐ मणिमाणाय स्वाहा। ॐ गणबन्धाय स्वाहा। ॐ मुण्डाय स्वाहा। ॐ वर्वूकराय स्वाहा। ॐ सुधापाय स्वाहा। ॐ वैनाय स्वाहा। ॐ पवनाय स्वाहा। ॐ ढुण्ढकरणाय स्वाहा। ॐ स्थविराय स्वाहा। ॐ दन्तुराय स्वाहा। ॐ धनदाय स्वाहा। ॐ नागकर्णाय स्वाहा। ॐ महाबलाय स्वाहा। ॐ फेत्काराय स्वाहा। ॐ वीरकाय स्वाहा। ॐ सिंहाय स्वाहा। ॐ मृगाय स्वाहा। ॐ यक्षाय स्वाहा। ॐ मेघवाहनाय स्वाहा। ॐ तीक्ष्णाय स्वाहा। ॐ अमराय स्वाहा। ॐ शुक्राय स्वाहा।

पीठदेवताहोमः

आधारशक्तये स्वाहा। प्रकृत्यै स्वाहा। कूर्माय स्वाहा। शेषाय स्वाहा। पृथिव्यै स्वाहा। सुधाम्बुधये स्वाहा। मणिद्वीपाय स्वाहा। चिन्तामणि-गृहाय स्वाहा। श्मशानाय स्वाहा। पारिजाताय स्वाहा। रत्नवेदिकायै स्वाहा। मणिपीठाय स्वाहा। मुनिभ्यो स्वाहा। देवेभ्यो स्वाहा। शिवाभ्यो स्वाहा। शिवमुण्डेभ्यो स्वाहा। धर्माय स्वाहा। ज्ञानाय स्वाहा। अवैराग्याय स्वाहा। अनैश्वर्याय स्वाहा। ह्रीं ज्ञानात्मने स्वाहा। इच्छायै स्वाहा। ज्ञानायै स्वाहा। क्रियायै स्वाहा। कामिन्यै स्वाहा। कामदायिन्यै स्वाहा। रत्यै स्वाहा। रतिप्रियायै स्वाहा। नन्दायै स्वाहा। मनोन्मन्यै स्वाहा। ह्सौः सदाशिव महाप्रेत पद्मासनाय स्वाहा। गुरुभ्यो स्वाहा। परम गुरुभ्यो स्वाहा। परापर गुरुभ्यो स्वाहा। परमेष्टि गुरुभ्यो स्वाहा। ॐ ह्रीं कालिका योग-पीठात्मने स्वाहा।

आवरणदेवताहोम:

आचार्य भगवती कालीदेवी के आवरण देवताओं का होम यजमान से विधिवत् कुण्ड में कराये।

अष्टोत्तरशतनामावल्या: हवनविधि:

ॐ काल्यै स्वाहा। ॐ कपालिन्यै स्वाहा। ॐ कान्तायै स्वाहा। ॐ कामदायै स्वाहा। ॐ कामसुन्दर्यै स्वाहा। ॐ कालरात्र्यै स्वाहा। ॐ कालिकायै स्वाहा। ॐ कालभैरवपूजितायै स्वाहा। ॐ कुरुकुल्लायै स्वाहा। ॐ कामिन्यै स्वाहा। ॐ कमनीयस्वभाविन्यै स्वाहा। ॐ कुलीन्यै स्वाहा। ॐ कुलकर्त्र्यै स्वाहा। ॐ कुलवर्त्तमप्रकाशिन्यै स्वाहा। ॐ नीलवर्णायै स्वाहा। ॐ काम्यायै स्वाहा। ॐ कामस्वरूपिण्यै स्वाहा। ॐ ककारवर्णायै स्वाहा। ॐ कामधेनुव्यै स्वाहा। ॐ करालिकायै स्वाहा। ॐ कुलकान्तायै स्वाहा। ॐ करालास्यायै स्वाहा। ॐ कामार्त्तायै स्वाहा। ॐ कलावत्यै स्वाहा। ॐ कृशोदर्यै स्वाहा। ॐ कामाख्यायै स्वाहा। ॐ कौमार्यै स्वाहा। ॐ कपालिन्यै स्वाहा। ॐ कुलजायै स्वाहा। ॐ कुलकन्यायै स्वाहा। ॐ कलहायै स्वाहा। ॐ कुलपूजितायै स्वाहा। ॐ कामेश्वर्यै स्वाहा। ॐ कामकान्तायै स्वाहा। ॐ कुञ्जरेश्वरगामिन्यै स्वाहा। ॐ कामदात्र्यै स्वाहा। ॐ कामहर्त्र्यै स्वाहा। ॐ कृष्णायै स्वाहा। ॐ कपर्दिन्यै स्वाहा। ॐ कुमुदायै स्वाहा। ॐ कृष्णदेहायै स्वाहा। ॐ कालिन्द्यै स्वाहा। ॐ कुलपूजितायै स्वाहा। ॐ काश्यप्यै स्वाहा। ॐ कृष्णमातायै स्वाहा। ॐ कुलिशाङ्गायै स्वाहा। ॐ कलायै स्वाहा। ॐ क्रींरूपायै स्वाहा। ॐ कुलगम्यायै स्वाहा। ॐ कमलायै स्वाहा। ॐ कृष्णपूजितायै स्वाहा। ॐ कृशाङ्गायै स्वाहा। ॐ किन्नर्यै स्वाहा। ॐ कर्त्र्यै स्वाहा। ॐ कलकण्ठायै स्वाहा। ॐ कार्तिक्यै स्वाहा। ॐ कम्बुकण्ठायै स्वाहा। ॐ कौलिन्यै स्वाहा। ॐ कुमुदायै स्वाहा। ॐ कामजीवन्यै स्वाहा। ॐ कुलस्त्रीयायै स्वाहा। ॐ कार्तिक्यै स्वाहा। ॐ कृत्यायै स्वाहा। ॐ कीर्त्यै स्वाहा। ॐ कुलपालिकायै स्वाहा। ॐ कामदेवकलायै स्वाहा। ॐ कल्पलतायै स्वाहा। ॐ कामाङ्गवर्धिन्यै स्वाहा। ॐ कुन्त्यै स्वाहा। ॐ कुमुदप्रीतायै स्वाहा। ॐ कदम्बकुसुमोत्सुकायै

स्वाहा। ॐ कादम्बिन्यै स्वाहा। ॐ कमलिन्यै स्वाहा। ॐ कृष्णानन्दप्रदायिन्यै स्वाहा। ॐ कुमारीपूजनरतायै स्वाहा। ॐ कुमारीगणशोभितायै स्वाहा। ॐ कुमारीरञ्जनरतायै स्वाहा। ॐ कुमारीव्रतधारिण्यै स्वाहा। ॐ कंकाल्यै स्वाहा। ॐ कमनीयायै स्वाहा। ॐ कामशास्त्रविशारदायै स्वाहा। ॐ कपालखट्वाङ्गधरायै स्वाहा। ॐ कालभैरवरूपिन्यै स्वाहा। ॐ कोटर्यै स्वाहा। ॐ कोटराक्षस्यै स्वाहा। ॐ काश्यै स्वाहा। ॐ कैलासवासिनीयै स्वाहा। ॐ कात्यायिन्यै स्वाहा। ॐ कार्यकर्यै स्वाहा। ॐ काव्यशास्त्रप्रमोदिन्यै स्वाहा। ॐ कामाकर्षणरूपायै स्वाहा। ॐ कामपीठनिवासिन्यै स्वाहा। ॐ कङ्गिन्यै स्वाहा। ॐ काकिन्यै स्वाहा। ॐ क्रीड़ायै स्वाहा। ॐ कुत्सितायै स्वाहा। ॐ कलहप्रियायै स्वाहा। ॐ कुण्डगोलोद्भवप्राणायै स्वाहा। ॐ कौशिक्यै स्वाहा। ॐ कीर्तिवर्धिन्यै स्वाहा। ॐ कुम्भस्तन्यै स्वाहा। ॐ कटाक्षायै स्वाहा। ॐ काव्यायै स्वाहा। ॐ कोकनन्दप्रियायै स्वाहा। ॐ कान्तारवासिन्यै स्वाहा। ॐ कान्त्यै स्वाहा। ॐ कठिनायै स्वाहा। ॐ कृष्णवल्लभायै स्वाहा।

अग्निपूजनम्

आचार्य निम्न वैदिक मंत्र का उच्चारण करके यजमान से अग्निदेवता का पूजन करायें–

ॐ अग्ने नयसुपथाराये ऽअस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्य-स्मजुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नम ऽउक्तिं विधेम्।।

तदुपरान्त आचार्य निम्न वाक्य का उच्चारण करके यजमान से अग्निदेवता का गन्ध, अक्षत और पुष्प से पूजन करावे–**ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा-स्वधायुताय मृडाग्नये वैश्वानराय नमः।**

स्विष्टकृद्धोमः

आचार्य बचे हुए शेष हविर्द्रव्य को प्रोक्षणीपात्र में लेकर अन्वारब्ध होकर यजमान से स्विष्टकृत् होम करायें–

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा - इदमग्नये स्विष्टकृते न मम।

यह कहकर बचे हुए हविर्द्रव्य का प्रक्षेप यजमान प्रज्वलित कुण्ड में करें।

भूरादिनवाहुतिभिर्होमः

आचार्य भूरादिनवाहुतिहोम के लिये निम्न क्रम से यजमान से होम करायें–

ॐ भूः स्वाहा – इदमग्नये न मम।
ॐ भुवः स्वाहा – इदं वायवे न मम।
ॐ स्वः स्वाहा – इदं सूर्याय न मम।

ॐ त्वन्नो ऽअग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडो ऽअव यासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाठं०सि प्र मुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा।। इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम।।

ॐ स त्वन्नोऽ अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो ऽअस्या ऽउषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुणठं० रराणो व्वोहि मृडीकठं० सुहवो न ऽएधि स्वाहा।। इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम।।

ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमया ऽअसि। अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजठं० स्वाहा।। इदमग्नये अयसे न मम।

ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्त्रं यज्ञियाः पाशा व्वितता महान्तः। तेभिर्न्नो ऽअद्य सवितोत विष्णर्व्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्क्काः स्वाहा।। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम।

ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यमठं० श्रथाय।। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा।। इदं वरुणायादित्यादितये न मम।।

ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम।

तदुपरान्त आचार्य दशदिक्पालबलि, दशदिक्पालएकतन्त्रेणबलि, गणेश-बलि, वरुणबलि, षोडशमातृकाबलि, श्रियादिसप्तघृतमातृकाबलि, नवग्रहबलि, पञ्चलोकपाल-बलि, वास्तोष्पतिबलि, एकतन्त्रेणनवग्रहबलि, वास्तुबलि, योगिनी-बलि, असङ्ख्यात-रुद्रबलि, विष्णुबलि करवाने के पश्चात् निम्न क्रम से प्रधान देवता भगवती काली की बलि निम्न क्रमानुसार करायें।

कालीबलयः

(प्रधानदेवताबलयः)

आचार्य और ब्राह्मण निम्न मन्त्र एवं निम्न वाक्य का उच्चारण करते हुए यजमान से काली को बलि प्रदान करावें-

ॐ कन्या इव वहतुमेतवा उ अञ्ज्यञ्जाना अभिचाकशीमि। यत्र सोमः सूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धारा अभि तत्पवन्ते स्वाहा।। (शु.य. १७/९७)

अथवा

ॐ यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यार्ठ० शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृद्ध्यतामुप मादो नमतु स्वाहा।। (शु.य. २६/२)

कालिकायै साङ्गायै सपरिवारायै सायुधायै सशक्तिकायै नमः। इमं सदीप दधिमाषभक्तबलिं समर्पयामि।

भो कालि! इमं बलिं गृहाण मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुःकर्त्री, क्षेमकर्त्री, शान्तिकर्त्री, पुष्टिकर्त्री, तुष्टिकर्त्री वरदा भव। अनेन बलिदानेन महाकाली प्रीयताम्।

क्षेत्रपालबलयः

यजमान के दायें हाथ में आचार्य जल, अक्षत, पुष्प एवं कुछ द्रव्य रखवाकर निम्न संकल्प करवाकर हवनकुण्ड के चारों ओर क्षेत्रपाल की बलि प्रदान करायें-

देशकालौ संकीर्त्य-अस्य कालीअनुष्ठानहोमकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं क्षेत्रपालादिप्रीत्यर्थं भूतप्रेतपिशाचादिनिवृत्यर्थं च सार्वभौतिकबलिदानं करिष्ये।

तदुपरान्त शुद्ध भूमि में सूर्यादि देवताओं की महाबलि निम्न दो वाक्यों का उच्चारण करके करें-

ॐ सर्वभूतेभ्यो नमः। ॐ क्षेत्रपालादिभ्यो नमः।

यजमान अक्षत एवं जल अपने दाहिने हाथ में लेकर निम्न श्लोकों एवं मन्त्रों का उच्चारण करें-

ॐ अधश्चैव तु ये लोका असुराश्चैव पन्नगाः।
सपत्नीपरिवाराश्च परिगृह्णन्तु मे बलिम्।।१।।

ईशानोत्तरयोर्मध्ये क्षेत्रपालो महाबलः।
भीमनामा महादंष्ट्रः स च गृह्णातु मे बलिम्।।२।।
ये केचित्विह लोकेषु आगता बलिकाङ्क्षिणः।
तेभ्यो बलिं प्रयच्छामि नमस्कृत्य पुनः पुनः।।३।।

आचार्य निम्न मन्त्र एवं वाक्यों का उच्चारण करके वैतालादि परिवार सहित, क्षेत्रपालादि समस्त परिवारभूतों के लिये यजमान द्वारा इस बलि को समर्पित करायें–

ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुरएतारमग्नेः। एमेनमवृधन्नमृता अमर्त्यं वैश्वानरङ्क्षैत्रजित्याय देवाः।।

वेतालादिपरिवारयुतक्षेत्रपालादिसर्वभूतेभ्यः साङ्गेभ्यः सपरिवारेभ्येः सा-युधेभ्यः सशक्तिकेभ्यः भूतप्रेतपिशाचराक्षस-शाकिनीडाकिनीसहितेभ्य इमं बलिं समपर्यामि।

भो! भो! क्षेत्रपालादयः अमुं बलिं गृह्णीत मम यजमानस्य आयुःकर्तारः, क्षेमकर्तारः, शान्तिकर्तारः, पुष्टिकर्तारः, तुष्टिकर्तारः, निर्विघ्नकर्तारः वरदा भवतअनेन सार्वभौतिकबलिप्रदानेन क्षेत्रपालादयः प्रीयन्ताम्।

ॐ बलिं गृहणन्त्विमं देवा आदित्या वसवस्तथा।
मरुतश्चाश्विनौ रुद्राः सुपर्णः पन्नगा ग्रहाः।।१।।
असुरा यातुधानाश्च पिशाचोरगरक्षसाः।
डाकिन्यो यक्षवेताला योगिन्यः पूतना शिवा।।२।।
जृम्भकाः सिद्धगन्धर्वा विद्याधरा नगाः।
दिक्पाला लोकपालाश्च ये च विघ्नविनायकाः।।३।।
जगतां शान्तिकर्तारो ब्रह्माद्याश्च महर्षयः।
मा विघ्नं मा च मे पापं मा सन्तु परिपन्थिनः।।
सौम्या भवन्तु तृप्ताश्च भूत-प्रेताः सुखावहाः।।४।।
भूतानि यानीह वसन्ति तानि बलिं गृहीत्वा विधिवत्प्रयुक्तम्।
अन्यत्र वासं परिकल्पयन्तु रक्षन्तु मां तानि सदैव चात्र।।५।।

शूद्र दुर्ब्राह्मण यजमान के मस्तक पर से इस बलि को घुमाकर नैर्ऋत्यकोण में पड़ने वाले चौराहे पर जाकर इस बलि को रख दे। वापस आकर अपने

हाथ और पैरों को शुद्ध जल से धो लें। तदुपरान्त यजमान के मस्तक पर निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए आचार्य जल छिड़के–

ॐ हिङ्काराय स्वाहा हिङ्कृताय स्वाहा क्रन्दते स्वाहा ऽवक्रन्दाय स्वाहा प्रोथते स्वाहा प्रप्रोथाय स्वाहा गन्धाय स्वाहा घ्राताय स्वाहा निविष्टाय स्वाहो पविष्टाय स्वाहा सन्दिताय स्वाहा वल्गते स्वाहासीनाय स्वाहा शयानाय स्वाहा स्वपते स्वाहा जाग्रते स्वाहा कूजते स्वाहा प्रबुद्धाय स्वाहा विजृम्भमाणाय स्वाहा विचृत्ताय स्वाहासठ० हानायस्वाहोपस्त्थिताय स्वाहा ऽयनाय स्वाहा प्रायणाय स्वाहा।।

आचार्य बलि की समाप्ति के पश्चात् यजमान के मस्तक पर जल छोड़े।

पूर्णाहुतिः

यजमान के दायें हाथ में जल, अक्षत और यथाशक्ति द्रव्य रखवाकर आचार्य पूर्णाहुति के लिये निम्न संकल्प करायें–

देशकालौ सङ्कीर्त्य–**अद्य पुण्य तिथौ कालीअनुष्ठानहवनकर्मणः साङ्गता-सिद्धयर्थं मृडनामाग्नौ पूर्णाहुतिं होष्ये।**

आचार्य चार या बारह बार घृत को यज्ञीयपात्र स्रुव के द्वारा स्रुचि नामक पात्र में ग्रहण कर शिष्टाचार से उस स्रुचि पर सुपारी, पान, पुष्प, रेशमीवस्त्र से वेष्टितकर पुष्पमाला से सुशोभित कर तथा सुगन्धिद्रव्य व सिन्दूर आदि द्रव्य से सजाकर स्रुचि पर रख आचार्य निम्न मन्त्र और वाक्य का उच्चारण करते हुए कर्ता से पूजन करायें–

ॐ पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत।
वस्नेवव्विक्रीणावहाऽइषमूर्ज्जठं० शतक्रतो।।

ॐ पूर्णाहुत्यै नमः

पुनः अधोमुख स्रुव को रख स्रुचि को हाथों से यथोचित्त रूप से पकड़ कर तथा खड़े होकर आचार्य एवं ब्राह्मण सभी ब्राह्मण निम्न मंत्रों का उच्चारण करें।

१. ॐ समुद्द्रादूर्म्मिर्मधुमाँ२।। उदारदुपाठं० शुना सममृतत्वमानट्। घृतस्य नाम गुह्यं यदस्ति जिह्वा देवानाममृतस्य नाभिः।। (१७।८९)

२. वयं नाम प्र ब्रवामा घृतस्यास्मिन्यज्ञे धारया मा नमोभिः। उप ब्रह्मा शृणवच्छस्यमानं चतुः शृङ्गोऽवमीद् गौर ऽएतत्।। (१७।९०)

३. चत्त्वारि शृङ्गा त्रयो ऽअस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो ऽअस्य। त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्या ँ२।। ऽआविवेश।। (१७।९१)

४. त्रिधा हितं पणिभिर्गुह्यमानं गवि देवासो घृतमन्वविन्दन्। इन्द्रऽएकठं० सूर्य एकञ्जजान वेनादेकठं० स्वधया निष्टतक्षुः।। (१७।९२)

५. एता ऽअर्षन्ति हृद्यात् समुद्राच्छतव्रजा रिपुणा नावचक्षे। घृतस्य धाराऽअभिचाकशीमि हिरण्ययो वेतसो मध्य आसाम्।। (१७।९३)

६. सम्यक्स्त्रवन्ति सरितो न धेनाऽ अन्तर्हृदा मनसा पूयमानाः। एते ऽअर्षन्त्यूर्मयो घृतस्य मृगा ऽइव क्षिपणोरीषमाणाः।। (१३।३८)

७. सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः। घृतस्य धारा ऽअरुषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्म्मिभिः पिन्व-मानः।। (१७।९५)

८. अभिप्रवन्त समनेव योषाः कल्याण्यः स्मयमानासोऽअग्निम्। घृतस्य धाराः समिधो नसन्त ता जुषाणो हर्य्यति जातवेदाः।। (१७।९६)

९. कन्या ऽइव वहतुमेतवा ऽउ ऽअञ्ज्यञ्जाना ऽअभिचाकशीमि। यत्र सोमः सूयते यत्र यज्ञो घृतस्य धारा ऽअभि तत्पवन्ते।। (१७।९७)

१०. अभ्यर्षत सुष्टुतिं गव्यमाजिमस्मासु भद्रा द्रविणानि धत्त। इमं यज्ञं नयत देवता नो घृतस्य धारा मधुमत्पवन्ते।। (१७। ९८)

११. धामन्ते विश्वं भुवनमधि श्रितमन्तः समुद्रे हृद्यन्तरायुषि। अपामनीके समिथे य ऽआभृतस्तमश्याम मधुमन्तन्त ऽऊर्म्मिम्।। (१७।९९)

१२. पुनस्त्वाऽदित्या रुद्रा वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः। घृतेन त्वं तन्वं वद्र्धयस्व सत्त्याः सन्तु यजमानस्य कामाः।। (१२।४४)

१३. सप्त ते अग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्त ऋषयः सप्त धाम प्रियाणि। सप्त होत्राः सप्तधा त्वा यजन्ति सप्त योनीरा पृणस्व घृतेन स्वाहा।। (१७।७९)

१४. मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानरमृत ऽआ जातमग्निम्।
कविर्ठ० संम्राजमतिथिं जनानामासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः।।
(३३।८)

१५. पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत। वस्नेव विक्क्रीणावहा ऽइषमूर्जर्ठ० शतक्क्रतो स्वाहा।। (३।४९)

तदुपरान्त यजमान स्रुचि में स्थित नारिकेल को अग्निकुण्ड में यथोचित् रूप से सीधा रख दें। तदनन्तर स्रुचि स्थित घृत के शेष को इस वाक्य का उच्चारण करके प्रोक्षणीपात्र में छोड़ दे–

'इदमग्नये वैश्वानराय न मम'

वसोर्धाराहोमः

आचार्य वसोर्धाराहोम के निमित्त यजमान से निम्न संकल्प करायें–

देशकालौ सङ्कीर्त्य–अमुकगोत्रः, अमुकशर्माऽहं (वर्माऽहं, गुप्तोऽहं) कृतस्य कालीअनुष्ठानहवनकर्मणः साङ्गतासिध्यर्थं वसोर्द्धारां होष्यामि।

दो स्तम्भों में धारण की हुई, उदुम्बर की सीधी मनोहरा बाहुमात्रप्रमाण की वसोर्धारा को कर्ता प्रागग्र रख, उसके ऊपर शृंखला से परिपूर्ण घृत से ताम्र आदि द्वारा नीचे यवमात्र छिद्र द्वारा आज्य को छोड़ते हुए अग्नि के ऊपर वसोर्धारा गिराये। उसके मुख में स्वर्ण जिह्वा बाँधे, स्रुचि पात्र द्वारा नाली से अग्नि में घृत की धारा छोड़े। इसी समय आचार्य सहित सभी ब्राह्मण निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए हवन करावे–

१. ॐ सप्तते अग्ने समिधः सप्तजिह्वाः सप्त ऋषयः सप्त धाम प्रियाणि। सप्त होत्राःसप्तधात्त्वा यजन्ति सप्त योनीरापृणस्व घृतेन स्वाहा।। (१७।७९)

२. शुक्रज्योतिश्च चित्रज्योतिश्च सत्यज्योतिश्च ज्योतिष्माँश्च शुक्रश्च ऋतपाश्चात्त्यर्ठ० हाः।। (१७।८०)

३. ईदृङ्चान्यादृङ्‌च सदृङ् च प्रतिसदृङ् च। मितश्च्चसमितश्च सभराः।। (१७।८१)

४. ऋतश्च सत्यश्च ध्रुवश्च धरुणश्च। धर्त्ता च विधर्त्ता च विधारयः।। (१७।८२)

५. ऋतजिच्च सत्यजिच्च सेनजिच्च सुषेणश्च। अन्तिमित्रश्च दूरे ऽअमित्रश्च गणः।। (१७।८३)

६. ईदृक्षास ऽएतादृक्षास ऽऊषणुः सदृक्षासः प्रतिसदृक्षास ऽएतन। मितासश्च सम्मितासो नो ऽअद्य सभरसो मरुतो यज्ञे ऽअस्मिन्।। (१७।८४)

७. स्वतवाँश्च प्रघासी च सान्तपन श्चगृहमेधी च। क्रीडी च शाकी चोज्जेषी।। (१७।८५)

८. इन्द्रन्दैवीर्विशो मरुतोऽनुवर्त्मानोभवन्यथेन्द्रं दैवीर्विशोमरुतोनुवर्त्मानोऽभवन्।। एवमिमं यजमानन्दैवीश्च विशो मानुषीश्चानुवर्त्मानो भवन्तु।। (१७।८६)

९. इमर्ठ० स्तनमूर्जस्वन्तं धयापां प्रपीनमग्ने सरिरस्य मद्ध्ये। उत्सं जुषस्व मधुमन्तमर्वन्त्समुद्रियर्ठ० सदनमा विशस्व।। (१७।८७)

१०. घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतं वस्य धाम। अनुष्वधमा वह मादयस्व स्वाहा कृतं वृषभ वक्षि हव्यम्।। (१७।८८)

११. वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः स्वाहा।। (१।३)

हवन के उपरान्त जो घृतादि बचा हो उसे प्रोक्षणीपात्र में इस वाक्य का उच्चारण करके छोड़ दें–'**इदमग्नये वैश्वानराय न मम**'

अग्नेः प्रदक्षिणम्

आचार्य '**ॐ अग्ने[1] नय**' मन्त्र का उच्चारण करते हुए यजमान से अग्निदेवता की प्रदक्षिणा करायें।

हवनीयकुण्डभस्मधारणम्

तत आचार्यः हवनकुण्डस्य स्थण्डिलस्य वा ईशानकोणात् श्रुवेण भस्मानीय प्रथमं स्वशरीरे ततो यजमानशरीरे च भस्मानुलेपनं कुर्यात्। 'ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः' इति ललाटे। 'ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम्' इति ग्रीवायाम्। 'यद्देवेषु त्र्यायुषम्' इति दक्षिणबाहुमूले। 'ॐ तयो ऽअस्तु त्र्यायुषम्' इति हृदि।

---

१. ॐ अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम।। (४०।१६)

संस्रवप्राशनम्। आचमनम्। पवित्राभ्यां मार्जनम्। अग्नौ पवित्रप्रतिपत्तिः। ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम्। पूर्णपात्रग्रहणानन्तरं 'ॐ द्यौस्त्वा ददातु पृथिवी त्वा प्रतिगृह्मतु' इति ब्रह्मा वदेत्। ततो ब्रह्मग्रन्थिविमोकः। पश्चादग्नेः पश्चिमतः प्रणीताविमोकः। ''ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्ते कृण्वन्तु भेषजम्'' इत्यनेन यजमानमुपयमनकुशैर्मार्जयेत्। तत उपयमनकुशानामग्नौ प्रक्षेपः।

अवभृथस्नानम्

यजमान प्रधानवेदी के ऊपर स्थापित प्रधानकलश के पास स्रुव-स्रुवादि यज्ञपात्र व पूजन सामग्री को लेकर वेदमन्त्रों व भगवान् का कीर्तन व वाद्यघोष के साथ आचार्य और ब्राह्मणों तथा बन्धु-बान्धवों व नगरवासियों के साथ नदी या तालाब के किनारे जायें। आधे मार्ग पर क्षेत्रपाल का पूजनकर क्षेत्रपाल को बलि प्रदान करें और नदी व जलाशय के किनारे जाने पर आचार्य एवं ऋत्विक् स्वस्तिवाचन का पाठ करना प्रारम्भ करें, तदुपरान्त आचार्य निम्न संकल्प यजमान से करायें-

देशकालौ सङ्कीर्त्य—अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं (वर्माऽहं, गुप्तोऽहं) मम सर्वेषां परिवाराणां तथाऽन्येषां समुपस्थितानां जनानाञ्च सर्वविधकल्याणपूर्वकं धर्मार्थ-काम-मोक्ष-चतुर्विधपुरुषार्थसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीतिपूर्वकं च कृतस्य कालीअनुष्ठान-हवनकर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च पुण्य-कालेऽस्मिन् अस्यां नद्यां जलाशय वा मांगलिकावभृथस्नानं समस्तसमुपस्थित-जनैः सहाहं करिष्ये।

संकल्प के उपरान्त नदी या जलाशय में जलमातृकाओं का पूजन निम्न क्रम से यजमान करें—**ॐ भूर्भुवः स्वः मत्स्यै नमः, मत्सीमावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः कूर्म्यै नमः, कूर्मीमावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः वाराह्यै नमः, वाराहीमावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः दर्दुर्यै नमः, दर्दुरीमावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः मकर्यै नमः, मकरी-मावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः जलूक्यै नमः, जलूकीमावाहयामि स्थापयामि। ॐ भूर्भुवः स्वः तन्तुक्यै नमः, तन्तुकी-मावाहयामि स्थापयामि।**

आवाहनम्

आगच्छ जलदेवेश जलनाथ पयस्पते।
तव पूजां करिष्यामि कुम्भेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।

आवाहन के पश्चात् निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान अर्घ्य प्रदान करे-

श्वेताभ्र शिखिराकार सर्वभूतहिते रतः।
गृहाणार्घ्यमिमं देव जलनाथ नमोऽस्तु ते।।

आचार्य सहित सभी ब्राह्मण निम्न वैदिक मन्त्रों का उच्चारण करें-

ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामस्युराचके।।१।।

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्ब्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशर्ठ० समान ऽआयुः प्रमोषीः।।२।।

ॐ त्वन्नो ऽअग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो ऽअवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो बह्नितमर्ठ० शोशुचानो विश्वा द्वेषार्ठ०सि प्रमुमुग्ध्यस्मत्।।३।।

ॐ सत्वन्नो ऽअग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो ऽअस्या ऽउषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्वनो वरुणर्ठ० रराणो व्वीहि मृडीकर्ठ० सुहवो नऽएधि।।४।।

ॐ मापो मौषधीर्हिर्ठ० सीर्द्धाम्नो धाम्ना राजँस्ततो वरुण नो मुञ्च। यदाहुरघ्न्या ऽइति वरुणओत शपामहे ततो वरुण नो मुञ्च।।५।।

ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यमर्ठ० श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो ऽअदितये स्याम।।६।।

ॐ मुञ्चन्तु मा शपथ्यादथो वरुण्यादूत। अथो यमस्य षड्वीशात् सर्वस्माद्देवकिल्विषात्।।७।।

ॐ अवभृथ निचुं पुण निचेरुरसि निचुं पुणः। अव देवैर्द्देवकृतमेनो यासिषमवमर्त्यैर्मर्त्यकृतं पुरुराब्णो देवरिषस्पाहि।।८।।

इन मन्त्रों के द्वारा प्रार्थना करवाके यजमान से स्रुवे के द्वारा निम्न श्लोक का उच्चारण कर तीन रेखाएं दिलवायें-

ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि चाकृष्याङ्कुशमुद्रया।
तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर।।

आचार्य निम्न मन्त्र द्वारा यजमान से नदी या जलाशय का पूजन करायें-

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्त्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

तदुपरान्त लाजा से जीवमाताओं को बलि निम्न क्रम से प्रदान करायें–

ॐ भूर्भुवः स्वः कुमार्यै नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः धनदायै नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः नन्दायै नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः विमलायै नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः मङ्गलायै नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः अचलायै नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः पद्मायै नमः।

हवन की समाप्ति के पश्चात् हवनकुण्ड में से समस्त हवनीय द्रव्यों को निकालकर नदी या जलाशय में छोड़ दें।

आचार्य जल में '**वडवाग्निरूपायाग्नये नमः**' इस नाममन्त्र द्वारा यजमान से षोडशोपचार या पंचोपचार से पूजन करवाकर निम्न बारह घृत की आहुति प्रदान करायें–

१. ॐ अद्भ्यः स्वाहा, इदमद्भ्यो न मम।। २. ॐ वार्भ्यः स्वाहा, इदं वार्भ्यो न मम।। ३. ॐ उदकाय स्वाहा, इदमुदकाय न मम।। ४. ॐ तिष्ठन्तीभ्यः स्वाहा, इदं तिष्ठन्तीभ्यो न मम।। ५. ॐ स्रवन्तीभ्यः स्वाहा, इदं स्रवन्तीभ्यो न मम।। ६. ॐ स्यन्दमानाभ्यः स्वाहा, इदं स्यन्दमानाभ्यो न मम।। ७. ॐ कूप्याभ्यः स्वाहा, इदं कूप्याभ्यो न मम।। ८. ॐ सूद्याभ्यः स्वाहा, इदं सूद्याभ्यो न मम।। ९. ॐ धार्याभ्यः स्वाहा, इदं धार्याभ्यो न मम।। १०. ॐ अर्णवाय स्वाहा, इदमर्णवाय न मम।। ११. ॐ समुद्राय स्वाहा, इदं समुद्राय न मम।। १२. ॐ सरिराय स्वाहा, इदं सरिराय न मम।।

तदुपरान्त आचार्य प्रधान कलश का पूजन निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए यजमान द्वारा करावें-

१. ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके।। (शु. य. सं. अ. २१ मं. सं. १)

२. ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो व्वरुणेह बोद्ध्युरुशर्ठ० स मा नऽआयुः प्र मोषीः स्वाहा ।। (शु. य. सं. अ. १८ मं. सं. ४९)

३. ॐ त्वन्नो ऽअग्ने व्वरुणस्य व्विद्वान्देवस्य हेडो ऽअव यासिसीष्ठाः।। यजिष्ठो व्वह्नितमः शोशुचानो व्विश्वा द्वेषार्ठ०सि प्र मुमुग्ध्यस्मत्।। (शु. यजु. सं. अ. २१ मं. सं. ३)

४. ॐ स त्वं नो ऽअग्ने ऽवमो भवोती नेदिष्ठो ऽअस्या उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो व्वरुणर्ठ० रराणो व्वीहि मृडीकꣳ सुहवो न ऽएधि।।

५. ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यमर्ठ० श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो ऽअदितये स्याम।।

इस प्रकार वारुण मन्त्रों से स्नान करे और प्रधानकलश के अन्दर से कुशा एवं दूर्वा के द्वारा जल निकालकर अन्य लोगों के ऊपर छोड़े, तदुपरान्त यजमान यज्ञकुण्ड से भस्म शुचि के द्वारा निकालकर अपने शरीर पर उसका लेपन करें और नदी या जलाशय में जाकर स्नान कर, नूतन वस्त्र धारण कर अपने मस्तक पर तिलक लगाये। उस समय आचार्य **ॐ हर्ठ० सः शुचि-षद्वसुरन्तरिक्षसद्धोतावेदिषदतिथिदुरोणसत्। नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत्।।** इस मन्त्र का उच्चारण करें।

आचार्य सूर्योपस्थान करवाके तीर्थ देवताओं का पूजन यजमान से करवाके निम्न वैदिक मन्त्रों का उच्चारणकर प्रार्थना करायें-

ॐ हिरण्यशृङ्गोऽयो ऽअस्य पादा मनोजवा ऽअवर ऽइन्द्र ऽआसीत्। देवा ऽइदस्य हविरद्यमायन्यो ऽअर्व्वन्तं प्रथमो ऽअद्ध्यतिष्ठत्।।१।।

ईर्म्मान्तासः सिलिकमद्ध्यमासः सर्ठ० शूरणासो दिव्यासो ऽअत्त्याः। हर्ठ० सा ऽइव ऽश्रेणिशो यतन्ते यदाक्षिषुर्दिव्य-मज्ममश्वाः।।२।।

तव शरीरं पतयिष्ण्वर्वन् तव चित्तं व्वात ऽइव दृध्रजीमान्। तव शृङ्गाणि विष्ठिता पुरुत्रारण्येषु जर्भुराणा चरन्ति।।३।।

आचार्य व ब्राह्मणों को यथाशक्ति यजमान दक्षिणा प्रदान करें फिर प्रधानकलश व पूजा सामग्री को लेकर भगवान् का कीर्तन व भजन करें। आचार्य एवं ऋत्विकों के साथ सपत्नीक यजमान हवनस्थल पर आकर हाथ व पैर धोकर मण्डप की प्रदक्षिणा कर मण्डप के पूर्वद्वार से ही अन्दर आयें। पुनः यजमान प्रधानकलश को प्रधानवेदी पर ही स्थापित करे और आचार्य कालीअनुष्ठानहवन कर्म के शेष बचे हुए कर्मों को पुनः प्रारम्भ करवायें।

गोदानसङ्कल्पः—कृतस्य कालीअनुष्ठानहवनकर्मणि साङ्गतासिद्धये तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं आचार्यादिभ्यो गोदानमहं करिष्ये।

दक्षिणादानसङ्कल्पः—कृतस्य कालीअनुष्ठानहवनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं आचार्यादिभ्यो, महर्त्विग्भ्यः, सूक्तपाठकेभ्यो, मन्त्रजापकेभ्यो, हवनकर्तृभ्यो, अन्येभ्यो देवयजनमागतेभ्यश्च दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृज्ये।

तदुपरान्त आचार्य ब्राह्मण भोजन का संकल्प, भूयसीदक्षिणा का संकल्प करे।

छायापात्रदानम्

यजमान एक कांसे के चौड़े मुख के पात्र में घृत भरकर उसमें दक्षिणा सहित सुवर्ण छोड़कर अपने मुख की छाया को देखकर ब्राह्मण को प्रदान करें। पश्चात् निम्न वैदिक मंत्र का उच्चारण आचार्य व ब्राह्मण करें–

ॐ रूपेण वो रूपमभ्यागा तुथो वो विश्ववेदा विभजतु ऋतस्य पथा प्रेत चन्द्रदक्षिणा विस्वः पश्य व्यन्तरिक्षं यत्तस्व सदस्यैः।।

छायापात्र में मुख देखने के पश्चात् यजमान निम्न संकल्प का उच्चारण कर उस चौड़े मुख के पात्र को ब्राह्मण को दें–

संकल्पः—अद्येत्याद्युच्चार्य ममैतच्छरीरावच्छिन्नसमस्तपापक्षयसर्वग्रहपीडा-शान्ति-शरीरोत्थार्तिनाशाय प्रासादवाञ्छाऽऽयुरारोग्यादि-सर्वसौभाग्यप्राप्तये सर्वसौख्यप्राप्तये च इदं स्वमुखछायावीक्षिताज्यपूरितकांस्यपात्रं स-सुवर्ण सदक्षिणाकं श्रीविष्णुदैवतममुकगोत्राय अमुकशर्मणे सुपूजिताय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे।

श्रेयोदानम्

आचार्य—सङ्कल्पः-कृतस्य कालीअनुष्ठानहवनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च यजमानाय श्रेयोदानं करिष्ये। इति सङ्कल्पः, 'शिवा आपः सन्तु' इति यजमानदक्षिणहस्ते जलं दद्यात्। 'सौमनस्यमस्तु' इति पुष्पं दद्यात्। 'अक्षतं चारिष्टं चास्तु' इति अक्षतान् दद्यात्। तत आचार्यः हस्ते जलाक्षतपूगीफलमादाय "भवन्नियोगेन मया अस्मिन् कालीअनुष्ठानहवनकर्मणि यत्कृतं आचार्यत्वं तथा च एभिर्ब्राह्मणैः सह यत्कृतं पाठ-जप-हवनादिकं च

तेनोत्पन्नं यच्छ्रेयस्तत् साक्षतेन सजलेन पूगीफलेन तुभ्यमहं सम्प्रददे।'' तेन श्रेयसा त्वं श्रेयोवान् भव, इत्युक्त्वा यजमानाय अर्पयेत्। 'भवामि' इति यजमानो ब्रूयात्।

उत्तरपूजनम्–ततः-कृतस्य कालीअनुष्ठानहोमकर्मणः साङ्गतासिध्यर्थं आवाहितदेवानामुत्तरपूजां करिष्ये।

इस प्रकार का संकल्प यजमान से करवाके गणपत्यादि देवताओं की पूजा भी आचार्य यजमान के द्वारा कराये।

कूष्माण्डबलयः

कूष्माण्डबलिदान करवाने के हेतु आचार्य यजमान को सपत्नीक आसन पर बैठाये। उस समय यजमान की पत्नी को दाहिनी ओर बैठना चाहिए। फिर आचार्य निम्न तीन नामों का उच्चारण करते हुए यजमान से तीन बार आचमन करायें–

ॐ केशवाय नमः ॐ नारायणाय नमः ॐ माधवाय नमः।

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करके यजमान को कुशा की पवित्री धारण करवाके प्राणायाम करावें–

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।। (शु.य.सं. १०/६) **तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्।।** (शु.य.सं. ४/४)

भावार्थ–सविता से उत्पन्न आपके ये दोनों वैष्णब्य (यज्ञ से संबन्धित) पवित्र है, उनको छिद्ररहित पवित्र वायु से तथा सूर्य की रश्मियों से पवित्र कर रहा हूँ। (शु.य.सं. १०/६) हे पवित्रपते! उस पवित्र (कुश) से पवित्र आपके काम को कर सकूँ। (आपके अभिलषित कर्म-यज्ञ को करने में समर्थ हो सकूँ।) (शु.य.सं. ४/४)

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण कर यजमान के ऊपर एवं सभी सामग्री की पवित्रता हेतु कुशा से जल छिड़कें–

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

भावार्थ–कोई अपवित्र हो या पवित्र, किसी भी अवस्था में क्यों न हो,

जो कमलनयन भगवान् (श्रीविष्णु) का स्मरण करता है। वह बाहर और भीतर से सर्वथा पवित्र हो जाता है।

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

आचार्य निम्न विनियोग व श्लोक का उच्चारण करके यजमान से आसन शुद्धि कर्म करायें–**ॐ पृथ्वीतिमन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता आसनपवित्रकरणे विनियोगः।**

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरु चासनम्।।

भावार्थ–हे पृथ्वि! तुम्हारे द्वारा लोक धारण किये गये हैं। तुम विष्णु के द्वारा धारण की गई हो। हे देवि! तुम मुझको धारण करो और आसन को पवित्र करो।

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करके यजमान से उसकी शिखा का बन्धन करायें–

ब्रह्मभावसहस्रस्य रुद्रभावशतस्य च।
विष्णोः संस्मरणार्थं हि शिखाबन्धं करोम्यहम्।।

भावार्थ–अनन्त ब्रह्मभाव, असंख्येय रुद्रभाव एवं सर्वत्र व्याप्त रहनेवाले विष्णु के स्वरूप का स्मरण रखने के लिए मैं अपनी शिखा में यह गाँठ लगा रहा हूँ।

यजमान घृतपूरित दीप को पृथ्वी पर अक्षत छोड़कर स्थापित कर प्रज्वलित करे और निम्न श्लोकों द्वारा उसकी प्रार्थना करे–

भो दीप! देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्।
यावत्कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव।।

भावार्थ–हे दीप! तुम देवरूप हो, कर्मसाक्षी हो, विघ्नों का विनाश करनेवाले हो (अतः) जब तक कर्म पूर्ण हो (पूर्ण न हो) तब तक तुम (यहाँ) सुस्थिर होओ (रहो)।

उपरोक्त कर्म के पश्चात् यजमान षोडशोपचार अथवा पंचोपचार से महाकाली का पूजन करे। तत्पश्चात् आचार्य निम्न संकल्प कूष्माण्डबलि के लिये यजमान से कराये–

देशकालौ सङ्कीर्त्य—मम सकुटुम्बस्यसपरिवारस्य सर्वारिष्टशांति सर्वाभीष्टसिद्धि कल्पोक्तफलावाप्तिद्वारा कालीदेवताहवनप्रीत्यर्थं कूष्माण्डबलिदानं करिष्ये। तदंगत्वेन पंचोपचारैः बलिपूजनं करिष्ये।

मूल मन्त्र से काली देवी की पंचोपचार से पूजा करके यजमान स्वयं उत्तराभिमुख होकर बैठे फिर बलिद्रव्य कूष्माण्ड को वस्त्र से ढकी हुई पीठ पर रखकर निम्न श्लोकों का उच्चारण करे—

पशुस्त्वं बलिरूपेण मम भाग्यादुपस्थितः।
प्रणमामि ततः सर्वरूपिणं बलिरूपिणम्।।१।।
चण्डिकाप्रीतिदानेन दातुरापद्-विनाशनम्।
चामुण्डाबलिरूपाय बले! तुभ्यं नमोऽस्तु ते।।२।।
यज्ञार्थं बलयः सृष्टाः स्वयमेव स्वयम्भुवा।
अतस्त्वां घातयाम्यद्य यस्माद् यज्ञे वधोऽवधः।।३।।

आचार्य शस्त्र की गन्धादि से पूजा यजमान के द्वारा करवा के उसे निम्न मंत्र से अभिमन्त्रित करें—**ऐं ह्रीं श्रीं। रसना त्वं चण्डिकायाः सुरलोकप्रसाधकः।**

यजमान अपने दायें हाथ में शस्त्र लेकर वीरासन मुद्रा में निम्न वाक्य का उच्चारण करें—**ह्रां ह्रीं खड्ग आं हुं फट्।**

निम्न वाक्य का उच्चारण करके कूष्माण्ड का छेदन करें तथा बलि की ओर न देखे—**ॐ कालिका कालि वज्रेश्वरीलौहदण्डायै नमः कोशिकि रुधिरेणाप्यायताम्**—इस वाक्य का उच्चारणकर भगवती काली को आधा भाग निवेदित कर बचे हुए आधे भाग का पाँच भाग निम्न प्रकार से करें—

ॐ पूतनायै बलिभागं निवेदयामि। ॐ चरक्यै बलिभागं निवेदयामि। ॐ पापराक्षस्यै बलिभागं निवेदयामि। ॐ विदार्यै बलिभागं निवेदयामि। ॐ क्षेत्रपालाय बलिभागं निवेदयामि।

पुनः पिसी हुई उड़द की दाल से निर्मित पशु का शस्त्र से छेदन निम्न दो वाक्यों का उच्चारण करके यजमान करें—

स्कन्दाय पश्वर्धं समर्पयामि। विशिखाय पश्वर्धं समर्पयामि।

तदुपरान्त **ॐ ह्रीं स्फुर स्फुर ॐ हुं फट् मर्द मर्द हुम्** इन वाक्यों का उच्चारण करके बलि का शेष भाग यजमान घर के बाहर फेंक दे और आचमन एवं मार्जन करके महाकाली की प्रार्थना करें।

तर्पणं मार्जनं च

आचार्य किसी बड़े पात्र में दूध और जल लेकर कुशा और दूर्वा के द्वारा **ॐ कालीं तर्पयामि**–इससे तर्पण करें तथा **ॐ कालीं मार्जयामि**–इससे मार्जन करें।

अभिषेकः

हवनस्थल पर प्रधानवेदी के उत्तर दिशा की ओर यजमान एवं उसकी धर्मपत्नी के अभिषेक के लिये भद्रासन बिछायें। उस आसन पर यजमान पूर्व की ओर मुख करके बैठे और उसकी धर्मपत्नी उसके बायें भाग में बैठे। उस समय आचार्य सहित सभी ब्राह्मण पूर्वस्थापित सभी कलशों के जल को शुद्ध ताँबे के चौड़े मुख के पात्र में थोड़ा-थोड़ा लेकर 'दूर्वा और पंचपल्लवादि' से **'ॐ देवस्य त्वा सवितुः ०'** से आरम्भ कर **'ॐ यतो यतः'** तक के इकतीस मंत्रों का क्रम से उच्चारण करते हुए आचार्य एवं ब्राह्मण अभिषेक कर्म करें।

पुराणमन्त्रैरभिषेकः

सुरास्त्वामभिषिञ्चन्तु ब्रह्म-विष्णु-महेश्वराः।
वासुदेवो जगन्नाथस्तथा सङ्कर्षणो विभुः ।।१।।
प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते।
आखण्डलोऽग्निर्भगवान् यमो वै निर्ऋतिस्तथा ।।२।।
वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा शिवः।
ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा।।३।।

भावार्थ–ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर और देवता जगन्नाथ, वासुदेव तथा विभु, संकर्षण तुम्हारा अभिषेक करें॥१॥ प्रद्युम्न, अनिरुद्ध, अखण्ड अग्नि, भगवान् यम और निर्ऋति तुम्हारे विजय के लिए हों (अर्थात् तुम्हारी विजय करें)॥२॥ वरुण, पवन, धनाध्यक्ष (कुबेर) तथा शिव एवं ब्राह्मणों के साथ सभी दिग्पाल तुम्हारी सदा रक्षा करें॥३॥

कीर्तिर्लक्ष्मीधृतिर्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः।
बुद्धिर्लज्जा वपुः शान्तिः कान्तिस्तुष्टिश्च मातरः ।।४।।
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः।
आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुध-जीव-सितार्कजा ।।५।।
ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहुः केतुश्च तर्पिताः।
देव-दानव-गन्धर्वा यक्ष-राक्षस-पन्नगाः।।६।।
ऋषयो मनवो गावो देवमातर एव च।
देवपत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाप्सरसां गणाः ।।७।।
अस्त्राणि सर्वशस्त्राणि राजानो वाहनानि च।
औषधानि च रत्नानि कालस्याऽवयवाश्च ये ।।८।।
सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु धर्मकामाऽर्थसिद्धये ।।९।।

क्षमापनम्

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वरि।।१।।
मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे।।२।।
अपराधसहस्राणि क्रियन्तेऽहर्निशं मया।
दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि।।३।।
ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि प्रसीद परमेश्वरि।।४।।

आई हुई कीर्ति, लक्ष्मी, घृति, मेधा, पुष्टि, श्रद्धा, क्रिया, मति, बुद्धि, लज्जा, वपु, शान्ति, कान्ति और तुष्टि ये माताएँ तथा देवपत्नियाँ तुम्हारा अभिषेक करें।।४१/२।। आदित्य, चन्द्रमा, भौम, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु तृप्त हुए सभी ग्रह तुम्हारा अभिषेक करें।।५१/२।। देव, दानव, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस, सर्प।।६।। ऋषि, मनु (मानव), गायें, देवमाताएँ, देवपत्नियाँ, वृक्ष, नाग, दैत्य, अप्सरागण।।७।। सभी अस्त्र, शस्त्र, राजा, वाहन, औषध, रत्न और जो काल के अवयव हैं।।८।। तथा सरित (नदियाँ), सागर (समुद्र), पर्वत, तीर्थ, बादल (जलाशय) और नद-ये धर्म, काम एवं अर्थ की सिद्धि के लिए तुम्हारा अभिषेक करें।।९।।

देवविसर्जनम्

यजमानः देशकालौ सङ्कीर्त्य–अमुक गोत्रः अमुक शर्माऽहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्) कालीहवनकर्माङ्गत्वेन देवविसर्जनं कर्म करिष्ये। इति सङ्कल्पय स्थापितदेवानग्निं च सानुनयं पुष्पाक्षतैर्विसर्जेत्।

आचार्य एवं ब्राह्मण निम्न तीन मन्त्रों व पाँच श्लोकों का उच्चारण करके देवविसर्जनकर्म करवाये–

ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्मणस्पते देवयन्तस्त्वेमहे। उप प्रयन्तु मरुतः सुदानव ऽइन्द्र प्राशूर्भवा सचा।।१।।

ॐ यज्ञ यज्ञङ्गच्छ यज्ञपतिङ्गच्छ स्वां योनिङ्गच्छ स्वाहा। एष ते यज्ञो यज्ञपते सहसूक्तवाकः सर्ववीरस्तज्जुषस्व स्वाहा।।२।।

ॐ समुद्रं गच्छ स्वाहाऽन्तरिक्षं गच्छ स्वाहा देवर्ठ० सवितारं गच्छ स्वाहा मित्रावरुणौ गच्छ स्वाहाऽहोरात्रे गच्छ स्वाहा छन्दार्ठ०सि गच्छ स्वाहा द्यावापृथिवी गच्छ स्वाहा यज्ञं गच्छ स्वाहा सोमं गच्छ स्वाहा दिव्यं नभो गच्छ स्वाहाऽग्निं वैश्वानरं गच्छ स्वाहा मनो मे हार्द्दि यच्छ दिवं ते धूमो गच्छतु स्वर्ज्योतिः पृथिवीं भस्मनापृण स्वाहा।।

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्।
इष्टकामसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च।।१।।
गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवा तत्र गच्छ हुताशन।।२।।
प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः।।३।।
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।४।।
चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च द्वाभ्यां पञ्चभिरेव च।
हूयते च पुनर्द्वाभ्यां स्मै यज्ञात्मने नमः।।५।।

यजमान कहे–अनेन यथाशक्तिकृतेन कालीहवनकर्मणा श्रीपापापहा महाविष्णुः प्रीयताम्।

यजमान निम्न वाक्य का तीन बार उच्चारण करे–

ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः।

यजमानरक्षाबन्धनम्

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण कर यजमान को रक्षाबन्धन बाँधे–

ॐ यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्यर्ठ० शतानीकाय सुमनस्य मानाः। तन्म ऽआ बध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम्।।

यजमानपत्नीरक्षाबन्धनम्

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारणकर यजमान की पत्नी को रक्षाबन्धन बाँधे–

ॐ तं पत्नीभिरनुगच्छेम देवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुत वा हिरण्यैः। नाकं गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठे ऽअधि रोचने दिवः।।

यजमानतिलककरणम्

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण कर यजमान के मस्तक पर रोली से तिलक करें–

आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः।
तिलकं ते प्रयच्छन्तु कामधर्मार्थसिद्धये।।

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण कर तिलक के मध्य में अक्षत लगावें–

येऽक्षताः क्षतहन्तारो हन्तारोऽखिलवैरिणाम्।
ताँस्ते मूर्ध्नि प्रयच्छामि तेन ते शं सदा भवेत्।।

यजमानस्याशीर्वादमन्त्राः

ॐ स्वस्ति न ऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो ऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।१।।

ॐ पुनस्त्वाऽदित्त्या रुद्रा वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः। घृतेन त्वं तन्वं वर्द्धयस्व सत्त्याः सन्तु यजमानस्य कामाः।।२।।

ॐ दीर्घायुस्त ओषधे खनिता यस्मै च त्वा खनाम्यहम्।। अथो त्वं दीर्ग्घायुर्भूत्वा शतवल्शा विरोहतात्।।३।।

यजमानधर्मपत्न्या आशीर्वादमन्त्राः

ॐ यावती द्यावापृथिवी यावच्च सप्त सिन्धवो वितस्थिरे। तावन्तमिन्द्र ते ग्रहमूर्जा गृह्णाम्यक्षितं मयि गृह्णाम्यक्षितम्।।१।।

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण।।२।।

श्रीर्वर्चस्वमायुष्यारोग्यमाविधात् पवमानं महीयते।
धान्यं धनं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः।।१।।

भावार्थ—श्री, वर्चस्व, आयुष्य, पवित्र एवं महिमायुक्त आरोग्य, धान्य, धन, पशु, बहुपुत्रलाभ, संवत्सर, दीर्घायु को आप प्राप्त करें।। १।।

आयुष्कामो यशस्कामो पुत्र-पौत्रस्तथैव च।
आरोग्यं धनकामश्च सर्वे कामा भवन्तु ते।।२।।

भावार्थ—तुम्हारी आयुष्य की कामना, धन की कामना एवं सभी इच्छाएँ पूर्ण हों।।२।।

अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणः सन्तु पौत्रिणः।
निर्धनाः सधनाः सन्तु जीवन्तु शरदां शतम्।।३।।

भावार्थ—अपुत्र पुत्रवान् हों, पुत्रवान् पौत्रवान् हों, निर्धन धनी हों तथा सौ वर्ष तक जीवित रहे।।३।।

मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।
शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव।।४।।

भावार्थ—तुम्हारे मन्त्रार्थ सफल हों, मनोरथ पूर्ण हों, शत्रुओं की बुद्धि का नाश हो एवं मित्रों का उदय हो।। ४।।

भगवती काली के हवन कर्म के समापन के पश्चात् यजमान आचार्य एवं ब्राह्मणों को संतुष्टकर अपने परिवार इष्टमित्रों के साथ भगवती काली के प्रासाद को ग्रहण करे।

।।इति।।

'तन्त्रोक्त'

कालीनित्यपूजनविधिः

प्रातःकालीनकृत्यम्

शास्त्रों के मतानुसार सूर्योदय से पूर्व रात्रि के अन्तिम प्रहर के तीसरे भाग को प्रात:काल की संज्ञा से विभूषित किया गया है। अत: कर्ता का प्रथम कर्तव्य है कि वह इसके पूर्व शयन-शय्या से उठकर या शयन-शय्या के ऊपर भी गणेशादि देवताओं का प्रात: निम्न प्रकार से स्मरण करे–

(प्रातःस्मरणप्रारम्भः)

गणेशस्मरणम्

प्रातः स्मरामि गणनाथमनाथबन्धुं सिन्दूरपूरपरिशोभितगण्डयुग्मम्।
उद्दण्डविघ्नपरिखण्डनचण्डदण्डमाखण्डलादिसुरनायकवृन्दवन्द्यम् ।।१।।
प्रातर्नमामि चतुराननवन्द्यमानमिच्छानुकूलमखिलं च वरं ददानम्।
तं तुन्दिलं द्विरसनाधिपयज्ञसूत्रं पुत्रं विलासचतुरं शिवयोः शिवाय।।२।।
प्रातर्भजाम्यभयदं खलु भक्तशोकदावानलं गणविभुं वरकुञ्जरास्यम्।।
अज्ञानकाननविनाशनहव्यवाहत्साहवर्द्धनमहं सुतमीश्वरस्य।।३।।
श्लोकत्रयमिदं पुण्यं सदा साम्राज्यदायकम्।
प्रातरुत्थाय सततं यः पठेत्प्रयतः पुमान्।।४।।

गणेशस्तुति का भावार्थ–अनाथों के सखा, सिन्दूर से सुशोभित दोनों गण्डस्थलवाले, प्रबल विघ्न का नाश करने योग्य तथा इन्द्रादिदेवों से नमस्कृत श्रीगणपति का मैं प्रात:काल स्मरण करता हूँ॥१॥ चतुरानन (ब्रह्मा) के द्वारा वन्द्य, इच्छानुकूल सम्पूर्ण वरों को देनेवाले, तुन्दिल (लंबोदर) नागराजरूप यज्ञोपवीत को धारण करनेवाले, विलास में चतुर शिव एवं शिवा के पुत्र (श्रीगणपति) को शिव (कल्याण) के लिये प्रात:काल नमस्कार कर रहा हूँ॥२॥ अभयप्रद, भक्तों के शोक के विनाश के लिये दावानल के समान, गणों के रूप में विभु (सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त), गजेन्द्र के मुख से सुशोभित अज्ञानरूपी कानन के विनाश के लिये दावानल के समान एवं उत्साह को बढ़ाने वाले ईश्वर के सुत (श्रीगणपति) का मैं भजन (स्मरण) करता हूँ॥३॥ अत्यन्त पवित्र इन तीनों श्लोकों को प्रात:काल उठकर जो पुरुष नित्य पढ़ता है, उसको सदा विद्यमान रहनेवाला साम्राज्य प्राप्त होता है॥४॥

शिवस्मरणम्

प्रातः स्मरामि भवभीतिहरं सुरेशं गङ्गाधरं वृषभवाहनमम्बिकेशम्।
खट्वाङ्गशूलवरदाभयहस्तमीशं संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम्।।१।।
प्रातर्नमामि गिरिशं गिरिजार्धदेहं सर्गस्थितिप्रलयकारणमादिदेवम्।
विश्वेश्वरं विजितविश्वमनोभिरामं संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम्।।२।।
प्रातर्भजामि शिवमेकमनन्तमाद्यं वेदान्तवेद्यमनघं पुरुषं महान्तम्।
नामादिभेदरहितं च विकारशून्यं संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम्।।३।।
प्रातः समुत्थाय शिवं विचिन्त्य श्लोकत्रयं येऽनुदिनं पठन्ति।
ते दुःखजातं बहुजन्मजातं हित्वा पदं यान्ति तदेव शम्भोः।।४।।

विष्णुस्मरणम्

प्रातः स्मरामि भवभीतिमहार्तिशान्त्यै नारायणं गरुडवाहनमब्जनाभम्।
ग्राहाभिभूतवरवारणमुक्तिहेतुं चक्रायुधं तरुणवारिजपत्रनेत्रम्।।१।।

शिवस्तुति का भावार्थ—संसार के भय को नष्ट करनेवाले हे देवेश! हे गंगाधर! हे वृषभवाहन! हे पार्वतीपति! आप अपने हाथों में खट्वाङ्ग तथा त्रिशूल लिये हुए हैं और इस संसाररूपी रोग का नाश करने के लिये अद्वितीय औषधस्वरूप, अभय तथा वरदमुद्रायुक्त हाथों वाले हैं, ऐसे भगवान् शिव का मैं प्रात:काल स्मरण करता हूँ॥१॥ (संसार की) सृष्टि, स्थिति एवं प्रलय के कारण होने से आदिदेवस्वरूप, संसाररोग के हरण करने के अद्वितीय औषधस्वरूपद्ध विश्वविजयी एवं विश्व के मन को सुन्दर लगनेवाले, गिरि (कैलास) पर विश्राम करने वाले गिरिजा के अर्धदेह (दक्षिणभाग)-रूप भगवान् विश्वेश्वर को प्रात:काल मैं नमस्कार कर रहा हूँ॥२॥ संसाररोग के हरण करने के अद्वितीय औषधस्वयप, नाम आदि भेद से रहित एवं विकारशून्य वेदान्त-वेद्य, अनघ, एक, अनन्त, सबसे आदि में स्थित महान् पुरुष शिव का प्रात: भजन कर रहा हूँ॥३॥ प्रात: उठकर शिव का स्मरण करते हुए जो लोग इन तीन श्लोकों को पढ़ते हैं, वे बहुत जन्मों से प्राप्त दु:ख-समुदाय को छोड़कर उन्हीं शम्भु के पद को प्राप्त करते हैं॥४॥

विष्णुस्तुति का भावार्थ—संसार के भयरूपी महान् दु:ख को नष्ट करनेवाले मगर से हाथी को मुक्त करानेवाले, चक्रधारी व नवीन कमलदल के तुल्य नेत्रवाले, पद्मनाभ, गरुडवाहन भगवान् श्रीहरि का मैं प्रात:काल स्मरण करता हूँ॥१॥

प्रातर्नमामि मनसा वचसा च मूर्ध्ना पादारविन्दयुगलं परमस्य पुंसः।
नारायणस्य नरकार्णवतारणस्य पारायणप्रवणविप्रपरायणस्य।।२।।
प्रातर्भजामि भजतामभयङ्करं तं प्राक्सर्वजन्मकृतपापभयापहत्यै।
यो ग्राहवक्त्रपतिताङ्घ्रिगजेन्द्रघोरशोकप्रणाशनकरो धृतशङ्खचक्रः।।३।।
श्लोकत्रयमिदं पुण्यं प्रातः प्रातः पठेन्नरः।
लोकत्रयगुरुस्तस्मै दद्यादात्मपदं हरिः।।४।।

सूर्यस्मरणम्

प्रातः स्मरामि खलु तत्सवितुर्वरेण्यं रूपं हि मण्डलमृचोऽथ तनुर्यजूंषि।
सामानि यस्य किरणां प्रभवादिहेतुं ब्रह्माहरात्मकमलक्ष्यमचिन्त्यरूपम्।।१।।
प्रातर्नमामि तरणिं तनुवाङ्मनोभिर्ब्रह्मेन्द्रपूर्वकसुरैर्विबुधैर्नुतं च।
वृष्टिप्रमोचनविनिग्रहहेतुभूतं त्रैलोक्यपालनपरं त्रिगुणात्मकं च।।२।।
प्रातर्भजामि सवितारमनन्तशक्तिं पापौघशत्रुभयरोगहरं परं च।
तं सर्वलोककलनात्मककालमूर्त्तिं गोकण्ठबन्धनविमोचनमादिदेवम्।।३।।

नरक-समुद्र से पार करनेवाले, भक्तों के आश्रय एवं विप्रों के भक्त, परमपुरुष हरि के दोनों पादारविन्दो को सिर, वाणी एवं मन से प्रात: नमस्कार कर रहा हूँ।।२।। जो ग्राह (मगर) के मुख में जिसका पैर चला गया था, उस (गज)-के घोर शोक को नाश करनेवाले हैं, उन शंख-चक्रधारी, भक्तों को अभय देनेवाले भगवान् नारायण का पूर्व में सभी जन्मों में किये गये पाप से उत्पन्न भय के विनाश के लिये मैं प्रात: भजन कर रहा हूँ।।३।। जो मनुष्य इन पवित्र तीन श्लोकों को प्रात: पढ़ता है, उसे तीनों लोकों के गुरु अपना पद देते हैं।।४।।

सूर्यस्तुति का भावार्थ—सूर्य का वह प्रशस्त रूप जिसका मण्डल ऋग्वेद, कलेवर यजुर्वेद और किरण सामवेदस्वरूप हैं। जो सृष्टि आदि के कारण हैं, चतुर्मुख ब्रह्मा और शिव के स्वरूप हैं व जिनका रूप अचिन्त्य तथा अलक्ष्य है। प्रात:काल मैं उन सूर्य का स्मरण करता हूँ।।१।। ब्रह्मा एवं इन्द्र सहित सम्पूर्ण देवताओं एवं विद्वानों से नमस्कृत एवं पूजित वृष्टि के करने एवं रोकने के हेतुभूत त्रैलोक्यपालक, त्रिगुणात्मक भगवान् सूर्य को शरीर, वाणी एवं मन से प्रात: नमस्कार कर रहा हूँ।।२।। अनन्त शक्ति (से युक्त), पापसमुदाय-भय एवं रोगों का हरण करनेवाले परमश्रेष्ठ उस सवितादेवता का प्रात: भजन कर रहा हूँ; जो सभी लोकों की गति आदि की गणना के कारण कालमूर्ति कहे जाते हैं तथा वाणी एवं कण्ठ के बन्धन को छुड़ानेवाले आदि देव हैं।।३।।

श्लोकत्रयमिदं भानोः प्रातः प्रातः पठेत्तु यः।
स सर्वव्याधिनिर्मुक्तः परं सुखमवाप्नुयात्।।४।।

देवीस्मरणम्

प्रातः स्मरामि शरदिन्दुकरोज्ज्वलाभां सद्रत्नवन्मकरकुण्डलहारभूषाम्।
दिव्यायुधोर्जितसुनीलसहस्रहस्तां रक्तोत्पलाभचरणां भवतीं परेशाम्।।१।।
प्रातर्नमामि महिषासुरचण्डमुण्डशुम्भासुरप्रमुखदैत्यविनाशदक्षाम्।
ब्रह्मेन्द्ररुद्रमुनिमोहनशीललीलां चण्डीं समस्तसुरमूर्तिमनेकरूपाम्।।२।।
प्रातर्भजामि भजतामभिलाषदात्रीं धात्रीं समस्तजगतां दुरितापहन्त्रीम्।
संसारबन्धनविमोचनहेतुभूतां मायां परां समधिगम्यपरस्य विष्णोः।।३।।
श्लोकत्रयमिदं देव्याश्चण्डिकायाः पठेन्नरः।
सर्वान् कामानवाप्नोति विष्णुलोके महीयते।।४।।

ऋषिस्मरणम्

भृगुर्वसिष्ठः क्रतुरङ्गिराश्च मनुः पुलस्त्यः पुलहश्च गौतमः।
रैभ्यो मरीचिश्च्यवनश्च दक्षः कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।१।।

जो सूर्य के (स्तवन से युक्त) इन तीनों श्लोकों को प्रतिदिन प्रातः पढ़ते हैं, वे सम्पूर्ण व्याधियोंसे मुक्त होकर परमसुख को प्राप्त करते हैं।।४।।

दुर्गास्तुति का भावार्थ—शरत् कालीन चन्द्रमा के तुल्य उज्ज्वल आभावाली, उत्तम रत्नों से जटित मकरकुण्डलों और हारों से सुशोभित, दिव्य आयुधों से दीप्त सुन्दर नीलवर्ण के सहस्रों हाथोंवाली, रक्तकमल की आभा से युक्त पैरोंवाली माँ दुर्गा का मैं प्रातःकाल स्मरण करता हूँ।।१।। महिषासुर, चण्ड व मुण्ड एवं शुम्भासुर आदि प्रमुख दैत्यों के विनाश में दक्ष, ब्रह्मा-इन्द्र-रुद्र एवं मुनियों के मन को भी मोहने की लीला करनेवाली समस्त देवताओं की मूर्ति और अनेकरूपा चण्डी को प्रातः नमस्कार कर रहा हूँ।।२।। भजन करनेवालों को अभिलषित (पदार्थ) देनेवाली, समस्त संसार की धात्री, दुरितों का हरण करनेवाली, संसारबन्धन के विमोचन की कारणभूता, परविष्णु की परामाया का सम्यक् रूप से ध्यान करते हुए प्रातः भजन कर रहा हूँ।।३।। जो नर देवि चण्डिका के इन तीन श्लोकों को पढ़ता है, वह सभी मनोरथों को प्राप्त करता है और विष्णुलोक में प्रशंसा प्राप्त करता है।।४।।

ऋषिस्तुति का भावार्थ—भृगु, वसिष्ठ, अंगिरा,. मनु, पुलस्त्य, पुलह, गौतम, रैभ्य, मरीच, च्यवन, दक्ष सभी प्रातः मेरा सुमंगल करें।।१।।

सनत्कुमारः सनकः सनन्दनः सनातनोऽप्यासुरिपिङ्गलौ च।
सप्त स्वराः सप्त रसातलानि कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।२।।
सप्तार्णवाः सप्त कुलाचलाश्च सप्तर्षयो द्वीपवनानि सप्त।
भूरादिकृत्वा भुवनानि सप्त कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।३।।
पृथ्वी सगन्धा सरसास्तथापः स्पर्शी च वायुर्ज्वलितं च तेजः।
नभः सशब्दं महता सहैव कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।४।।
इत्थं प्रभाते परमं पवित्रं पठेत्स्मरेद्वा शृणुयाच्च तद्वत्।
दुःस्वप्ननाशस्त्विह सुप्रभातं भवेच्च नित्यं भगवत्प्रसादात्।।५।।

पुण्यश्लोकजनस्तुतिः

पुण्यश्लोको नलो राजा पुण्यश्लोको युधिष्ठिरः।
पुण्यश्लोका च वैदेही पुण्यश्लोको जनार्दनः।।१।।
अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनूमांश्च विभीषणः।
कृपः परशुरामश्च सप्तैते चिरजीविनः।।२।।
सप्तैतान् संस्मरेन्नित्यं मार्कण्डेयमथाष्टमम्।
जीवेद्वर्षशतं सोऽपि सर्वव्याधिविवर्जितः।।३।।

सनत्कुमार, सनक-सनन्दन, सनातन, आसुरि, सात स्वर, सप्त रसातल सभी मेरा सुप्रभात करें।।२।। सप्त समुद्र, सप्त कुलाचल (कुल पर्वत) सप्तऋषि, सप्तद्वीप, सप्तवन, भूः आदि सप्त भुवन सभी मेरा प्रभात सुमंगल करें।।३।। गन्धयुक्त पृथ्वी, रसयुक्त जल, स्पर्शशील वायु, ज्वलनशील तेज, शब्दयुक्त आकाश महत् के साथ मेरा प्रभात सुन्दर करें।।४।। इस प्रकार परम पवित्र (स्तवन) का प्रभात में जो पठन, स्मरण या उसी प्रकार का स्मरण नित्य करता है। भगवान् की कृपा से उसका यहाँ सुप्रभात होता है और दुःस्वप्न के फल का नाश होता है।।५।।

पुण्यश्लोकजनस्तुति का भावार्थ—राजा नल पुण्यश्लोक हैं, राजा युधिष्ठिर भी पुण्यश्लोक हैं, वैदेहि पुण्यश्लोक हैं, जनार्दन भी पुण्यश्लोक हैं।।१।। अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनुमान्, विभीषण, कृपाचार्य एवं परशुराम ये सात चिरंजीवि हैं।।२।। इन सातों का तथा आठवें मार्कण्डेयजी का जो नित्य (प्रातः) स्मरण करता है, वह सभी व्याधियों से मुक्त होकर सौ वर्ष तक जीवित रहता है।।३।।

अहल्या द्रौपदी तारा कुन्ती मन्दोदरी तथा।
पञ्चकं ना (नरः) स्मरेन्नित्यं महापातकनाशनम्।।४।।
उमा उषा च वैदेही रमा गङ्गेति पञ्चकम्।
प्रातरेव पठेन्नित्यं सौभाग्यं वर्धते सदा।।५।।
सोमनाथो वैजनाथो धन्वन्तरिरथाश्विनौ।
पञ्चैतान्यः स्मरेन्नित्यं व्याधिस्तस्य न जायते।।६।।
हरं हरिं हरिश्चन्द्रं हनूमन्तं हलायुधम्।
पञ्चकं वै स्मरेन्नित्यं घोरसङ्कटनाशनम्।।७।।
रामं स्कन्दं हनूमन्तं वैनतेयं वृकोदरम्।
पञ्चैतान् संस्मरेन्नित्यं भवबाधा विनश्यति।।८।।
श्रीरामलक्ष्मणौ सीता सुग्रीवो हनुमान् कपिः।
पञ्चैतान् स्मरतो नित्यं महाबाधा प्रमुच्यते।।९।।

नवग्रहस्तुतिः

ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः कुर्वन्तु सर्वे मम सुप्रभातम्।।

अहल्या, द्रौपदी, तारा, कुन्ती और मन्दोदरी महापापियों के नाश करनेवाले इन पाँचों श्लोक का नित्य प्रातः मनुष्य स्मरण करें।।४।। उमा, उषा, वैदेही, रमा और गंगा– इन पाँचों का नित्य प्रातः स्मरण करने से सदा सौभाग्य की वृद्धि होती है।।५।। सोमनाथ, वैजनाथ, धनवन्तरि तथा दोनों अश्विनीकुमार–इन पाँचों का जो नित्य (प्रातः) स्मरण करता है, उसको व्याधि नहीं होती है।।६।। हर, हरि, हरिश्चन्द्र, हनुमान् और हलायुध घोर संकट का नाश करनेवाले–इन पाँचों का नित्य (प्रातः) स्मरण करना चाहिये।।७।। राम, स्कन्द, हनुमान्, वैनतेय (गरुड), वृकोदर (भीम)–इन पाँचों का नित्य (प्रातः) स्मरण करने से महान् बाधा विनष्ट होती है।।८।। राम, लक्ष्मण, सीता, सुग्रीव और कपि हनुमान्–इन पाँचों का नित्य स्मरण करनेवाले की महान् बाधा दूर होती है।।९।।

नवग्रहस्तुति का भावार्थ–ब्रह्मा, मुरारी, त्रिपुरान्तकारी (त्रिपुर के विनाशक भगवान् शिव), भानु, शशी, भूमिसुत (मंगल), बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु सभी मेरे प्रभात को मंगलमय करें।

प्राणायाम

कर्ता काली के मूल मन्त्र का जप करते हुए पूरक, कुम्भक और रेचन-क्रिया करे। तन्त्र-शास्त्र के अनुसार उत्तम, मध्यम एवं अधम तीन प्रकार के प्राणायाम कहे गये हैं। उत्तम श्रेणी के प्राणायाम के पूरक में सोलह, कुम्भक में चौंसठ और रेचक में बत्तीस बार मन्त्र का जप करना चाहिये। मध्यम श्रेणी के प्राणायाम में आठ बार पूरक में, बत्तीस बार कुम्भक में और सोलह बार रेचक में जप कहा गया है। अधम श्रेणी के प्राणायाम में क्रमानुसार चार, सोलह तथा आठ बार ही जप करना चाहिये। कर्ता को ऐसा कम से कम तीन बार करना चाहिये। इसके पश्चात् निम्न क्रमानुसार विनियोग सहित ऋष्यादिन्यास निम्न प्रकार से करना चाहिये।

विनियोग:—अस्य दक्षिणकालिकामन्त्रस्य महाकालभैरवऋषिः, उष्णिक् छन्दः, श्रीदक्षिणकालिका देवता, कं बीजं, ईं शक्तिः, रं कीलकं, चतुर्वर्गसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः

शिरसि—महाकालभैरव-ऋषये नमः। (दाहिने अँगूठे द्वारा)

मुखे—उष्णिक्छन्दसे नमः। (मध्यमा-अनामिका—द्वारा)

हृदये—श्रीदक्षिणकालिकादेवतायै नमः। (तर्जनी-मध्यमा-अनामिका-कनिष्ठा द्वारा)

गुह्ये—कं बीजाय नमः। (तत्त्व-मुद्रा द्वारा)

पादयोः—ईं शक्तये नमः। (मध्यमा द्वारा)

सर्वाङ्गे—रं कीलकाय नमः। (करतलद्वय द्वारा)

ऋष्यादिन्यास के उपरान्त निम्न क्रमानुसार कर्ता करन्यास, षडङ्गन्यास और व्यापक न्यास करे।

करन्यासः

क्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः, क्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा, क्रूं मध्यमाभ्यां वषट्, क्रैं अनामिकाभ्यां हूँ, क्रौं कनिष्ठाभ्यां वौषट्, क्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

षडङ्गन्यासः

क्रां हृदयाय नमः। (अनामिका-मध्यमा-तर्जनी द्वारा)

क्रीं शिरसे स्वाहा। (अनामिका-मध्यमा-तर्जनी द्वारा)

क्रूँ शिखायै वषट्। (मुट्ठी बाँधकर अँगूठे के द्वारा)

क्रैं कवचाय हुँ। (दोनों करतलों द्वारा)

क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। (तर्जनी-मध्यमा-अनामिका द्वारा)

क्रः अस्त्राय फट्। (दाहिने हाथ की तर्जनी-मध्यमा अंगुली से बाईं हथेली में जोर से मारकर)

व्यापकन्यासः

कर्ता न्यास के मूलमंत्र का उच्चारण करते हुए अयुग्म अर्थात् तीन, पाँच, सात बार मस्तक से लेकर पैर तक, फिर पैर से लेकर सिर तक व्यापकन्यास करे।

गुरुध्यानादिकर्म

कर्ता अपनी चित्तवृत्ति को गुरु, महाकाल, मन्त्र एवं देवता में स्थिर करे। अब वह यह समझे कि शरीर में स्थित ब्रह्माण्ड अर्थात् सिर के अग्रभाग में एक सहस्र दल वाले अधोमुख कमल की कर्णिका गोल हिस्से में है, जिसमें बीज है, संलग्न अर्थात् नित्य अविनाभाव-सम्बन्ध से सम्बद्ध प्राणशक्ति के सहस्रार तक जाने के मार्ग अर्थात् चित्रिणी नाड़ी से युक्त श्वेतवर्ण का बारह दल का एक दिव्य अद्भुत कमल है, जो ऊर्ध्वमुख है एवं **'ह स ख फ्रें ह सं क्ष म ल व र यूं'**–इन द्वादश अक्षरों से विभूषित है, इसी पद्म को ही शास्त्रकारों ने गुरुचक्र की संज्ञा से विभूषित किया है। कोई-कोई शास्त्रों का ज्ञाता इसे हंसपीठ भी कहता है। इस सफेद वर्ण के कमल पर सुधासागर है, जिसमें स्थित मणिद्वीप पर एक रत्नपीठ है। इस पीठ पर सोलह-सोलह अक्षरों की भुजाओं वाला एक त्रिकोण है। यह इस प्रकार से है कि पहली बायीं भुजा 'अ' से लेकर 'अः' तक, ऊपर की भुजा 'क' से लेकर 'त' तक एवं दायीं भुजा 'थ' से लेकर 'स' तक के सोलह-सोलह अक्षरों की है। इस त्रिकोण के भीतरी तीन कोणों में 'ह', 'ल' एवं 'क्ष'—ये तीन अक्षर अवस्थित हैं। त्रिकोण के मध्य भाग में नाद एवं बिन्दु हैं। इसी नाद बिन्दु पर परमहंस स्थित होकर बैठे हैं। इस हंस पर गुरुरूपी अन्तरात्मा अपने दोनों पैर रखे हैं। इस हंस का शरीर ज्ञान से व्याप्त है, आगम एवं निगमरूपी दो पंख, प्रकाश तथा विमर्श शक्तिरूपी दोनों पैर, प्रणवरूपी नेत्र एवं कामकलारूपी कण्ठ (गला) है। इस हंसपीठ पर सशक्ति गुरु का ध्यान कर्ता निम्न प्रकार से करे–

ध्यानम्

नीलाम्बरं नीलविलेपयुक्तं शंखादिभूषासहितं त्रिनेत्रम्।
वामाङ्गपीठस्थितनीलशक्तिं वन्दामि वीरं करुणानिधानम्।।
ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिम्।
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्षणम्।।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वदा साक्षिभूतम्।
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि।।

इसी प्रकार कर्ता सशक्ति गुरु का ध्यान करके मानस-पूजन करे। यह पञ्च-तत्त्वात्मिक पूजा दोनों हाथों से पाँचों मुद्राएँ दिखाकर कर्ता इस प्रकार से करे–

ॐ लं पृथिव्यात्मकं गन्धं सशक्तिकाय श्रीगुरवे समर्पयामि नमः। (गन्धमुद्रा द्वारा)

ॐ हं आकाशात्मकं पुष्पं सशक्तिकाय श्रीगुरवे सम० नमः। (पुष्पमुद्रा द्वारा)

ॐ यं वाय्वात्मकं धूपं सशक्तिकाय श्रीगुरवे सम० नमः। (धूपमुद्रा द्वारा)

ॐ रं तेजोमयं दीपं सशक्तिकाय श्रीगुरवे सम० नमः। (दीपमुद्रा द्वारा)

ॐ वं अमृतात्मकं नैवेद्यं सशक्तिकाय श्रीगुरवे सम० नमः। (तत्त्वमुद्रा द्वारा)

मुद्राओं के प्रदर्शन के पश्चात् कर्ता यथाशक्ति गुरु-पादुका मन्त्र का जप करे।

लघुपादुकामन्त्रः

ऐं ह्रीं श्रीं श्रीअमुकानन्दनाय श्रीअमुकी अम्बा श्रीपादुकां तर्पयामि पूजयामि नमः।

स्थूलपादुकामन्त्रः

ऐं ह्रीं श्रीं हं स ख फ्रें ह स क्ष म ल व र यूं स ह ख फ्रें स ह क्ष म ल व र यीं ह् सौः स्हौः अमुकानन्दनाय श्रीअमुके अम्बा श्रीपादुकां तर्पयामि पूजयामि नमः।।

उपरोक्त मन्त्र का कर्ता जप कम से कम बारह बार गुरुचक्र के द्वादश दलों पर एक-एक बार अवश्य ही करे। इस प्रकार नौ बार करने से १२×९=१०८ की संख्या पूरी करे। तदुपरान्त निम्न श्लोक का उच्चारण करके जप को कर्ता समर्पित करे।

ॐ गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणात्स्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्महेश्वर।।
ॐ इदं जपं श्रीगुरुवे समर्पयामि नमः।।

उपरोक्त मन्त्र के द्वारा गुरु के दायें हाथ में मन को एकाग्र कर कर्ता जल अर्पित करें। इसके पश्चात् गुरुस्तोत्र का पाठ कर निम्न श्लोकों का उच्चारण करते हुए गुरु को प्रणाम करे–

ॐ अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरुवे नमः।।

भावार्थ–जिन्होंने अज्ञानरूपी तिमिर से ज्योतिविहीन मेरे चक्षुओं को ज्ञानरूपी अंजन लगाकर खोल दिया है। उन गुरुदेव को नमस्कार है।

ॐ अखण्ड-मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दर्शितं येन तस्मैं श्रीगुरुवे नमः।।

भावार्थ–जिन्होंने चैतन्य एवं जड़मय संसार को चारों ओर से घेरकर व्याप्त रखनेवाले 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' के अविद्या, विद्या, आनन्द तथा तुरीय-पादों का पूर्णरूपेण ज्ञान दिया है। उन गुरुदेव को नमस्कार है।

ॐ गुरुर्ब्रह्मागुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुरेव परब्रह्म तस्मै श्रीगुरुवे नमः।।

भावार्थ–गुरु ही ब्रह्मा हैं, गुरु ही विष्णु हैं, गुरु ही महेश्वर (शिव) हैं। गुरु ही परब्रह्म हैं। ऐसे निर्द्वन्द्व गुरु को नमस्कार है।

इष्टध्यानम्

उत्तम कर्ता ब्रह्मरन्ध्र में, मध्यम कर्ता आज्ञाचक्र में और शिशिक्षु कर्ता हृदय में इष्टदेवता (भगवती काली) का ध्यान निम्न श्लोकों के द्वारा करें–

सद्यश्छिन्नशिरः कृपाणमभयं हस्तैर्वरं विभ्रतीं।
घोराभ्यां शिरसां स्रजा सुरुचिरामुन्मुक्तकेशावलिम्।।
सृक्कासृक्प्रवहां श्मशाननिलयां श्रुत्योः शवालंकृतिम्।
श्यामाङ्गीं कृतमेखलां शवकरैर्देवीं भजे कालिकाम्।।

भावार्थ–विद्युत् की ज्योति के समान रंग, सिर के बाल खुले एवं (चारों ओर) बिखरे, मस्तक पर अर्द्धचन्द्र, लाल एवं लपलपाती जीभ को बड़े-बड़े दाँतों से दबाकर उसे बाहर निकाले हुए, ओठ (ओष्ठों) से जिनके निरन्तर खून की धारा बह रही है, तीन नेत्रों से युक्त दोनों

कानों में छोटे-छोटे बच्चे के शव के गहने धारण किये हुए, जिनके चार हाथ हैं। बायें ऊपरी हाथ में खड्ग, निचले हाथ में मुण्ड एवं दाहिने ऊपरी हाथ में अभयमुद्रा एवं निचले हाथ में वरमुद्रा से सुशोभित हैं, जो गले में पचास मुण्डों की माला धारण की हुई हैं एवं कमर में शव के हाथों की कांची (करधनी) पहने हुए हैं, ऐसी नित्य (सदैव) युवती रूप में भगवती काली आनन्दपूर्वक उल्लास करती हैं।

जपकर्म

कर्ता अपने हृदय में एक क्षण तक गुरु का ध्यान कर गुरुपूजावत् इनका भी मानसिक पूजन कर वर्णमाला में कम से कम एक सौ आठ बार मूलमन्त्र का ध्यान करते हुए एकाग्रचित्त हो जप करे। इसके उपरान्त किये हुए जप को समर्पित कर देवता के निचले बायें हाथ में मन ही मन ध्यान करके निम्न प्रात:स्तोत्र का पाठ करे।

प्रातःस्तोत्रपाठम्

ॐ प्रातर्नमामि मनसा त्रिजगद्विधात्रीं कल्याणदात्रीं कमलायताक्षीम्।
कालीं कलानाथकलाभिरामां कादम्बिनीमेचककायकान्तिम्।।१।।
जगत्प्रसूते द्रुहिणो यदर्च्चाप्रसादतः पाति सुरारिहन्ता।
अन्ते भवो हन्ति भवप्रशान्त्यै तां कालिकां प्रातरहं भजामि।।२।।
शुभाशुभैः कर्मफलैरनेकजन्मानि मे सञ्चरतो महेशि।
माभूत्कदाचिदपि मे पशुभिश्च गोष्ठी दिवानिशं स्यात्कुलमार्गसेवा।।३।।

भावार्थ—तीनों लोकों की रचना करनेवाली, कल्याण को प्रदत्त करनेवाली, कमलसदृश दिव्य नेत्रोंवाली, चन्द्रकला से सुशोभित, सघन मेघ-सी श्याम वर्णवाली काली को मैं प्रात:काल हृदय से नमन करता हूँ।।१।।

(समस्त) संसार से शान्तिप्राप्ति हेतु प्रात:काल मैं उन काली का भजन करता हूँ, जिनकी पूजा के आश्रय से ब्रह्मा संसार की सृष्टि (निर्माण) करते हैं, विष्णु (इस सृष्टि) का पालन करते हैं और प्रलयकाल प्राप्त होने पर रुद्र (शिव) इसका विनाश करते हैं।।२।।

हे महेशि! शुभ-अशुभ (अच्छे-बुरे) कर्मों के फल से अनेकानेक जन्मों में भ्रमण करता हुआ मैं कभी भी अज्ञानियों (मूर्खों) का संग प्राप्त न करूँ और निरन्तर मैं कुलक्रम द्वारा आपकी सेवा करता रहूँ।।३।।

वामे प्रिया शाम्भवमार्गनिष्ठा पात्रं करे स्तोत्रमये मुखाब्जे।
ध्यानं हृदब्जे गुरुकौलसेवा स्युर्मे महाकालि तव प्रसादात्।।४।।
श्रीकालि मातः परमेश्वरि त्वां प्रातः समुत्थाय नमामि नित्यम्।
दीनोऽस्म्यनाथोऽस्मि भवातुरोऽस्मि मां पाहि संसारसमुद्रमग्नम्।।५।।
प्रातःस्तवं यः परदेवतायाः श्रीकालिकायाः शयनावसाने।
नित्यं पठेत्तस्य मुखावलोकादानन्दकन्दांकुरितं मनःस्यात्।।६।।

तदुपरान्त कर्ता निम्न श्लोक का उच्चारण करके काली देवी को प्रणाम करें–

ॐ नमामि सर्व-जननीं मुण्ड-माला-विभूषिताम्।
महाकाल-युतां घोरां कलौ जागृत्स्वरूपिणीम्।।
कालिकां दक्षिणां दिव्यां त्वां नमामि विभूतये।।

पुनः समष्टिरूपिणी चित्परा-शक्ति की व्यष्टि-रूपिणी कुण्डलिनी-शक्ति आत्मब्रह्म के रूप का निम्न श्लोकों द्वारा चिन्तन करें।

ध्यायेत् कुण्डलिनीं देवीं स्वयम्भूलिङ्गवेष्टिनीम्।
श्यामां सूक्ष्मां सृष्टिरूपां सृष्टिस्थितिलयात्मिकाम्।।
विश्वातीतां ज्ञान-रूपां चिन्तयेदूर्ध्वगामिनीम्।।

भावनायोगः

कर्ता अपने श्वास को ऊपर खींचे हुए उसे अपने हृदय में यह भावना करनी चाहिये कि तेज, शक्ति, कुण्डलिनी, मूलाधार कमल है, जिसके चार दलों पर 'व' 'श' 'ष' 'स' मातृकाएँ हैं एवं जो अधोमुख है और जिसके त्रिकोण पर अधोमुख भगवान् शिव का लिङ्ग है। स्वयम्भू लिङ्ग के रन्ध्र के भीतर जाकर

हे महाकालि! आपकी कृपा से बायीं ओर मनोनुकूला शक्ति, शिवजी के प्रदर्शित किये हुए मार्ग में श्रद्धा, हाथ में पात्र, मुखारविन्द में स्तुति, हृदय में ध्यान, गुरु एवं कौलों की सेवा, ये सब मेरे द्वारा (निरन्तर) हो।।४।।

हे कालि! हे माता! हे परमेश्वरि! प्रतिदिन मैं प्रातःकाल (शयन से) जागृत होकर आपको प्रणाम करता हूँ। मैं दीन हूँ, मैं अनाथ हूँ और इस संसार से व्याकुल (भयभीत) हूँ। संसाररूपी सागर में डूबे हुए मुझ-जैसे (अज्ञानी मनुष्य की) रक्षा कीजिये।।५।।

शयन से उठकर जो सबसे बड़ी देवी श्रीकालिका के प्रातःस्तव का पाठ करता है, उसका मुख देखने से मन में (सभी को) आनन्द प्राप्त होता है।।६।।

स्वाधिष्ठान चक्र को छेदकर, जिसके छः दलों पर 'ब, भ, म, य, र, ल' मातृकाएँ हैं। मणिपुर चक्र को छेदकर जिसके दस दलों पर 'ड' से लेकर 'फ' तक की दस मातृकाएँ हैं। अनाहत चक्र को छेदकर, जिसके द्वादश दलों पर 'क' से लेकर 'ठ' तक की बारह मातृकाएँ हैं। विशुद्ध चक्र को छेदकर, जिसके षोडश दलों पर 'अ' से लेकर 'अः' तक की सोलह मातृकाएँ हैं। आज्ञाचक्र को छेदकर, जिसके दो दलों पर 'ह' तथा 'क्ष' मातृकाएँ हैं छेदकर ब्रह्मरन्ध्र में प्रवेश कर शून्य पर भगवान् शिव से मिलती हैं, पुनः श्वास रोके हुए कुछ समय तक कर्ता ऐसी इच्छा करता रहे। तदुपरान्त कुण्डलिनी को अपने स्थान पर लाकर निम्न मन्त्र द्वारा उसे श्रद्धा से प्रणाम करे–

ॐ प्रकाशमानां प्रथमप्रयाणेऽमृतायमानामपि मध्यमायाम्।
अन्तःपदव्यामनुसञ्चरन्तीमानन्दरूपाममलां प्रपद्ये।।

उपरान्त उपरोक्त कर्म के पश्चात् कर्ता अजपा-जप के लिये निम्न सङ्कल्प करे–**ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे (अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने आनन्दवने गौरीमुखे त्रिकण्टकविराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे इति काश्यामेव विशेषतः अन्यत्र तत्तद्देशवैशिष्ट्यमुच्चार्य) अमुकनाम्नि संवत्सरे, अमुकायने अमुकऋतौ, महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे, अमुकमासे, अमुकपक्षे, अमुकतिथौ, अमुकवासरे, अमुकनक्षत्रे, अमुकयोगे, अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे, अमुकराशिस्थिते सूर्ये, अमुकराशिस्थिते देवगुरौ, शेषेषु ग्रहेषु यथा यथा राशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगण-विशेषण-विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः, अमुकशर्माऽहं (वर्माऽहं, गुप्तोऽहं, दासोऽहं) पूर्वेद्युरहोरात्राचरितमुच्छ्वासनिःश्वासात्मकं षट्शताधिकमेक-विंशति-सहस्रसंख्याकमजपा-जपमहं करिष्ये।।**

संकल्प के पश्चात् कर्ता इक्कीस हजार छः सौ अजपा-जप निम्न मन्त्रों के द्वारा भगवती काली को समर्पित करे–

ॐ मूलं मूलाधारचक्रस्थाय गणपतये अजपा-जपानां षट्-शत-संख्याकं जपं समर्पयामि नमः।

ॐ मूलं स्वाधिष्ठानचक्रस्थाय ब्रह्मणे अजपा-जपानां षट्-सहस्र-संख्याकं जपं समर्पयामि नमः।

ॐ मूलं मणिपूरचक्रस्थाय विष्णवे अजपा-जपानां षट्-सहस्त्र-संख्याकं जपं समर्पयामि नमः।

ॐ मूलं अनाहतचक्रस्थाय रुद्राय अजपा-जपानां षट्-सहस्त्र-संख्याकं जपं समर्पयामि नमः।

ॐ मूलं विशुद्धचक्रस्थाय जीवात्मने अजपा-जपानां षट्-सहस्त्र-संख्याकं जपं समर्पयामि नमः।

ॐ मूलं आज्ञाचक्रस्थाय परमात्मने अजपा-जपानां सहस्त्र-संख्याकं जपं समर्पयामि नमः।

ॐ मूलं सहस्त्रदलकमलकर्णिकामध्यस्थायै श्रीगुरुपादुकायै अजपा-जपानां सहस्त्रसंख्याकं जपं समर्पयामि नमः।

अजपा-जप समर्पित करने के पश्चात् कर्ता निम्न क्रमानुसार प्राणायाम, ऋष्यादिन्यास, करषडङ्गन्यास करे।

प्राणायाम

कर्ता 'हंसः' मन्त्र द्वारा पूर्वोक्त विधि से प्राणायाम करे।

विनियोगः—अस्य श्रीअजपागायत्रीमहामन्त्रस्य परमहंस ऋषिः, अव्यक्त गायत्री छन्दः, परमहंसो देवता, हं बीजं, सः शक्तिः, सोऽहं कीलकं, मम अजपागायत्रीप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः

ॐ हंसात्मने ऋषये नमः। (सिर में)

ॐ अव्यक्तगायत्री-छन्दसे नमः। (मुख में)

ॐ परमहंसाय देवतायै नमः। (हृदय में)

ॐ हं बीजाय नमः। (मूलाधार में)

ॐ सः शक्तये नमः। (पैरों में)

ॐ सोऽहम् कीलकाय नमः। (नाभि में)

ॐ मम मोक्षार्थे जपे विनियोगाय नमः। (हाथ जोड़कर)

करन्यासः

हसां सूर्यात्मने स्वाहा अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। हसीं सोमात्मने स्वाहा तर्जनीभ्यां स्वाहा। हसूं निरञ्जनात्मने स्वाहा मध्यमाभ्यां वषट्। हसैं निराभासात्मने स्वाहा अनामिकाभ्यां हूँ, हसौं कनिष्ठ-तनुः सूक्ष्मादेवी प्रचोदयात् स्वाहा कनिष्ठाभ्यां वौषट्, हसः अव्यक्त-बोधात्मने स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

षडङ्गन्यासः

ह्सां सूर्यात्मने स्वाहा हृदयाय नमः। ह्सीं सोमात्मने स्वाहा शिरसे स्वाहा। ह्सूं निरञ्जनात्मने स्वाहा शिखायै वषट्। ह्सैं निराभासात्मने स्वाहा कवचायं हूँ, ह्सौं कनिष्ठ-तनुः सूक्ष्मादेवी स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषट्, ह्सः अव्यक्तबोधात्मने स्वाहा अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

द्यां मूर्धानं यस्य विप्रा वदन्ति, खं वै नाभिं चन्द्र-सूर्यौ च नेत्रे।
दिग्भिः श्रोत्रे यस्य पादौ क्षितिश्च, ध्यातव्योऽसौ सर्वभूतान्तरात्मा।।

इस प्रकार कर्ता ध्यान करके अजपा-मन्त्र 'हंसः' का कम-से-कम एक सौ आठ बार जप करे। पुनः निम्न श्लोक का उच्चारण करे–

अहं काली न चान्योऽस्मि ब्रह्मैवाहं न शोकभाक्।
सच्चिदानन्दरूपोऽहं नित्यमुक्तः स्वभाववान्।।
परदेव्या हृदिस्थेन प्रेरितेन करोम्यहम्।
न मे किञ्चित् क्वचिद्वापि कृत्यमस्ति जगत्त्रये।।
प्रातः-प्रभृति सायान्तं सायान्तः प्रातरं पुनः।
यत्करोमि जगन्मातस्तदस्तु तव पूजनम्।।
त्रैलोक्यचैतन्यमये! सुरेशि! श्रीविश्वमातर्भवदाज्ञयैव।
प्रातः समुत्थाय तव प्रियार्थं संसारयात्रामनुवर्तयिष्ये।।

पृथिवी-प्रार्थना

कर्ता पृथ्वीमाता का हाथ से स्पर्शकर प्रणाम करें और उन पर पैर रखने की विवशता के लिये निम्न श्लोक का उच्चारण करे–

समुद्रवसने देवि! पर्वतस्तनमण्डले।
जगन्मातर्नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे।।

भावार्थ–हे जगज्जननि! हे समुद्ररूपी वस्त्रों को धारण करने वाली व पर्वतरूप स्तनों से युक्त हे पृथिवीदेवि! अपको नमस्कार है, आप मेरे पादस्पर्श को क्षमा करें।

दन्तधावनम्

कर्ता दातुन तोड़ने के लिए वनस्पति देवता की निम्न श्लोकों द्वारा प्रार्थना करे–

आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजाः पशुवसूनि च।
ब्रह्म प्रज्ञां च मेधां च त्वं नो देहि वनस्पते।।

कर्ता निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए दातुन करे–

ॐ क्लीं कामदेव सर्वजनप्रियाय नमः।

इसके उपरान्त मूलमन्त्र से या तीन तत्त्वों से कर्ता तीन बार आचमन क्रिया करे–

ॐ आत्मतत्त्वाय स्वाहा। ॐ विद्यातत्त्वाय स्वाहा। ॐ शिवतत्त्वाय स्वाहा।

पवित्रीधारण की आवश्यकता

स्नान, पितृकर्म, संन्ध्योपासन, पूजा, जप, होम तथा वेदाध्ययन में पवित्री धारण करना अति आवश्यक है। यथा–

स्नाने होमे जपे दाने स्वाध्याये पितृकर्मणि।
करौ सदर्भौ कुर्वीत तथा संध्याभिवादने।।

सन्ध्या, देवपूजन तथा पितृकार्य में अग्र व मूल सहित दो कुशाओं की पवित्री कर्ता को दाहिने और तीन की बायें की अनामिका अँगुली में धारण करनी चाहिये; क्योंकि एक प्रादेश का दर्भ है दो प्रादेश की कुशा तथा हाथ की कोहनी से कनिष्ठिका अँगुली की जड़ पर्यन्त का बर्हिभाग कहा जाता है। इससे लम्बा तृण ही होता है। पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख होकर कर्ता कुशा का पूजन कर मार्कण्डेयपुराण से उद्धृत निम्न श्लोक का उच्चारणकर प्रार्थना करे–

विरञ्चिना सहोत्पन्न! परमेष्ठिनिसर्गज!।
नुद सर्वाणि पापानि दर्भ! स्वस्तिकरो भव।।

तदुपरान्त **'हुँ फट्'** इस वाक्य का उच्चारण करते हुए कुशा को जड़ से ही उखाड़ना चाहिये।

विशेष–गूलर, आम, बेल, नीम, करंज, खैर, कुरैया तथा चिड़चिड़ा इन वृक्षों की दतुवन अच्छी मानी गयी है। किन्तु पलाश, नील, धव, कपास, काश, कुश और लसोढ़ा की दतुवन को शास्त्रकारों ने पूर्णतः वर्जित किया है। **दतुवन का निषेध**–संक्रान्ति, व्यतिपात, व्रत, श्राद्ध के दिन, प्रतिपदा, षष्ठी, अष्टमी, नवमी, चतुर्दशी, अमावस्या, पूर्णिमा, जन्मदिन, विवाह, व्रत, उपवास तथा रविवार के दिन दतुवन का प्रयोग कदापि नहीं करना चाहिये।

विशेष–शुद्ध कुशा–जिस कुशा का अग्रभाग नष्ट न हुआ हो, जो जली न हो, जो अशुद्ध स्थान पर न पड़ी हो, ऐसी कुशा को ग्रहण करना चाहिये। **अशुद्ध कुशा**–गृहपरिशिष्ट के अनुसार-पिण्ड के नीचे और ऊपर की ओर पड़ी हुई कुशाएँ अपवित्र हैं तथा तर्पण की ओर अपवित्र जगह में पड़ी हुई कुशाओं का उपयोग कदापि नहीं करना चाहिये। उनका त्याग कर देना ही उत्तम है।

स्नान-संकल्प

कर्ता कुशा से निर्मित पवित्री को धारण करने के पश्चात् स्नान करने हेतु निम्न सङ्कल्प करे—**ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेत-वाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंवशति-तमे कलियुगे कलिप्रथम-चरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे अविमुक्त-वाराणसीक्षेत्रे महाश्मशाने आनन्दवने गौरीमुखे त्रिकण्टकविराजिते भागीरथ्याः पश्चिमे तीरे (इति काश्यामेव विशेषतः) अमुकनाम्नि संवत्सरे, अमुकायने अमुकऋतौ, महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे, अमुकमासे, अमुकपक्षे, अमुकतिथौ, अमुकवासरे, अमुकनक्षत्रे, अमुकयोगे, अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुक-राशिस्थिते सूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा-यथाराशिस्थान-स्थितेषु सत्सु एवं ग्रह-गुण-गण-विशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुक-शर्माऽहम् (वर्माऽहम्, गुप्तोऽहम्) श्रीमद्दक्षिण-कालिकादेवीप्रीतये स्नानमहं करिष्ये।।**

तन्त्रशास्त्र के मतानुसार जिस प्रकार बाह्यपूजा से पहले मानसपूजा अति आवश्यक है, उसी प्रकार बाह्यस्नान से पूर्व मानसस्नान भी अति आवश्यक है, जिसका क्रम इस प्रकार से है—कर्ता प्राणायाम करके कुण्डलनी पर शिव से सामरस्य करे। इस सामरस्य से उत्पन्न होनेवाली अमृतधारा से अपने सम्पूर्ण शरीर को धोये। तन्त्रशास्त्र के अनुसार यह स्नान सर्वश्रेष्ठ कहा गया है। इसको करने के उपरान्त कर्ता बाह्य या वारुण स्नान करे। जिसका क्रम इस प्रकार से है—नदी, गङ्गा या जलाशय में जाये और जल में स्वाग्र त्रिकोण लिखकर अंकुश मुद्रा द्वारा अर्थात् तर्जनी अंगुली को बिलकुल टेढ़ा करके निम्न मन्त्रों द्वारा क्रमशः वरुण एवं तीर्थों का आवाहन करे—

स्नान-विधि—हमारे शास्त्रकारों ने स्नान के सात भेद बताये हैं, जैसे—मन्त्रस्नान, भौमस्नान, अग्निस्नान, वायव्यस्नान, दिव्यस्नान, वारुणस्नान और मानसिकस्नान। **मन्त्रस्नान—'ॐ आपो हि ष्ठा०'** इत्यादि मन्त्रों से जो कर्ता मार्जन करते हैं, उस मार्जन क्रिया को मन्त्रस्नान कहा गया है। **भौमस्नान**—जो कर्ता अपने शरीर के समस्त अंगों में मिट्टी लगाते हैं, उस स्नान को भौम स्नान कहा गया है। **अग्निस्नान**—जो कर्ता स्नानादि के पश्चात् अपने सम्पूर्ण शरीर में भस्म लगाते हैं, उस स्नान को अग्निस्नान कहा गया है। **वायव्यस्नान**—जो कर्ता गौ के खुर की धूल को अपने सम्पूर्ण शरीर पर लगाते हैं, उस स्नान को वायव्य स्नान कहा गया है। **दिव्यस्नान**—जो कर्ता सूर्य से निकलती हुई किरणों में वर्षा के जल द्वारा स्नान करते हैं, उस स्नान को दिव्यस्नान कहा गया है। **वारुणस्नान**—जो कर्ता गंगा, यमुना, सरस्वती आदि किसी भी नदी में अपनी नाक को दाहिने हाथ से पकड़ कर डुबकी लगा-कर स्नान करते हैं, उस स्नान को वारुणस्नान कहा गया है। **मानसिकस्नान**—जो कर्ता प्रातःकाल या किसी भी समय आत्मचिन्तन करते हैं, उनके इस चिन्तन को ही मानसिक स्नान कहा गया है। **रोगग्रस्त व वृद्धों के लिये स्नान**—जो कर्ता रोगी या वृद्ध हैं, वे केवल सिर के नीचे से ही स्नान कर सकते हैं, या अत्यधिक अस्वस्थ होने पर गीले शुद्ध वस्त्र से शरीर को पोंछ लेना भी स्नान ही कहा गया है।

वरुणस्तुतिः

अपामधिपतिस्त्वं च तीर्थेषु वसतिस्तव।
वरुणाय नमस्तुभ्यं स्नानानुज्ञां प्रयच्छ मे।।

भावार्थ—जल के आप स्वामी हैं। तीर्थों में आपका निवास है, ऐसे आप वरुणदेवता को नमस्कार है। स्नान के लिये मुझे आज्ञा प्रदान करें।

तीर्थावाहनम्

पुष्कराद्यानि तीर्थानि गङ्गाद्याः सरितस्तथा।
आगच्छन्तु पवित्राणि स्नानकाले सदा मम।।१।।

भावार्थ—हे पुष्कर आदि तीर्थ तथा गंगा आदि नदियाँ आप पवित्र हैं, अतः मेरे स्नानकाल में सदा आगमन करें।।१।।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।२।।

भावार्थ—हे गंगा! हे यमुना! हे गोदावरि! हे सरस्वति! हे नर्मदा! हे सिन्धु! हे कावेरि! इस जल में आप आयें।।२।।

चन्द्रभागे महाभागे शरणागतवत्सले।
गण्डकी-सरयूयुक्ता समासाद्य पुनीहि माम्।।३।।

भावार्थ—हे शरणागतवत्सला, महाभागा, चन्द्रभागा! गण्डकी एवं सरयू के सहित सम्यग् रूप से पधार कर मुझे पवित्र करें।।३।।

सर्वाणि यानि तीर्थानि पापमोचनहेतवः।
आयान्तु स्नानकालेऽस्मिन् क्षणं कुर्वन्तु सन्निभम्।। ४।।

भावार्थ—पापमोचन के हेतुभूत जो सम्पूर्ण तीर्थ हैं (वे) इस स्नानकाल में क्षणभर के लिये आयें और अपना सानिध्य प्रदान करे।। ४।।

कुरुक्षेत्र-गया-गङ्गा-प्रभास-पुष्कराणि च।
एतानि पुण्यतीर्थानि स्नानकाले भवन्त्विह।। ५।।

भावार्थ—कुरुक्षेत्र, गया, गंगा, प्रभास तथा पुष्कर ये पूज्य तीर्थ यहाँ स्नानकाल में आयें।।५।।

त्वं राजा सर्वतीर्थानां त्वमेव जगतः पिता।
याचितं देहि मे तीर्थं तीर्थराज नमोऽस्तु ते।। ६।।

भावार्थ—आप सभी तीर्थों के राजा हैं, आप ही संसार के पिता हैं, हे तीर्थराज! मेरे द्वारा याचित तीर्थ मुझे प्रदान करे, आपको नमस्कार है।।६।।

गंगास्तुतिः

विष्णुपादाब्जसम्भूते गङ्गे त्रिपथगामिनि।
धर्मद्रवेति विख्याते पापं मे हर जाह्नवि।।१।।

भावार्थ—हे विष्णु के चरणकमल से उत्पन्न होनेवाली त्रिपथगामिनि गंगे! हे धर्मद्रव इस रूप से प्रसिद्ध जाह्नवि! मेरे पाप का हरण कीजिये।।१।।

श्रद्धया भक्तिसम्पन्नं श्रीमातर्देवि जाह्नवि।
अमृतेनाम्बुना देवि भागीरथि पुनीहि माम्।।२।।

भावार्थ—हे श्रीमाता देवि जाह्नवि! हे भागीरथि देवि! श्रद्धा एवं भक्ति से सम्पन्न मुझको (अपने) अमृत जल से पवित्र करें।।२।।

गाङ्गं वारि मनोहारि मुरारिचरणच्युतम्।
त्रिपुरारि शिरश्चारि पापहारि पुनातु माम्।।३।।

भावार्थ—मुरारि के चरण से निकला हुआ त्रिपुरारी के सिर पर विचरण करनेवाला पापहरण करनेवाला गंगा का मनोहर जल मुझे पवित्र करे।।३।।

गङ्गे मातर्नमस्तुभ्यं गङ्गे मातर्नमो नमः।
पावनां पतितानां त्वं पावनानां च पावनी।।४।।

भावार्थ—हे गंगामाता! (आपको) नमस्कार है, हे गंगामाता! (आपको) बार बार नमस्कार है। (क्योंकि) आप पतितों को पवित्र करनेवाली हैं तथा पवित्रों को भी पवित्र करनेवाली हैं।।४।।

गङ्गा गङ्गेति यो ब्रूयाद् योजनानां शतैरपि।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति।।५।।

भावार्थ—गंगा-गंगा ऐसा जो सौ योजन (दूर) से भी उच्चारण करता है, वह समस्त पापों से मुक्त हो जाता है और विष्णुलोक को प्राप्त करता है।।५।।

नमामि गङ्गे तव पादपङ्कजं सुरासुरैर्वन्दितदिव्यरूपम्।
भुक्तिं च मुक्तिं च ददासि नित्यं भावानुसारेण सदा नराणाम्।।६।।

भावार्थ—हे गंगा! आप मनुष्यों के भाव के अनुसार सदा अक्षय-भुक्ति एवं मुक्ति देती हैं, अतः सुर एवं असुरों से वन्दित दिव्य रूप आपके पाद-पंकज को नमस्कार है।।६।।

तदुपरान्त कर्ता जल का धेनुमुद्रा द्वारा अमृतीकरण कर शान्त हो बारह बार सूर्यदेवता को अर्घ्य देकर अपने इष्टदेवता का जल में कच्छप मुद्रा से आवाहन करे। उसी जल में **'मूलं-अमुकदेवता पूजयामि नमः'** इस वाक्य का उच्चारण कर उसका पूजन करे। उस जल को द्रवमयी भगवती समझकर उसमें सिर नवाकर स्नान करे। पुनः एक सौ आठ बार जप कर देवता को जप समर्पित करे। फिर तत्त्वमुद्रा से दस बार सिर पर मूल मन्त्र से अभिषेक कर संहार मुद्रा द्वारा देवता का विसर्जन कर देवता का आवाहन करे।

तान्त्रिकी संध्याप्रारम्भः

जल में अपने आगे त्रिकोण का निर्माण कर तीर्थों का कर्ता आवाहन करे, फिर धेनुमुद्रा द्वारा 'सं वं' इन बीजमंत्रों को पढ़ते हुए उस जल को अभिमंत्रित करे। पुनः उसी जल द्वारा मूलमंत्र से तीन बार आचमन कर प्राणायाम त्रय करने के उपरान्त ऋष्यादि व्यापकन्यासों को विधिवत् करे। अपने बायें हाथ में उस जल को लेकर दायें हाथ से ढकते हुए 'हं यं रं लं वं' इन पाँच बीजमन्त्रों के जप से उसे अभिमंत्रित करे। फिर नीचे गिरते हुए जल से मूलमंत्र को पढ़कर सात बार तत्त्वमुद्रा द्वारा अपने सिर पर अभिषेक करें। तदुपरान्त अवशिष्ट जल को दायें हाथ में लेकर उसे तेजोरूप ही समझे। कर्ता श्वास के द्वारा उस तेज को अपने शरीर के अन्दर प्रवेश करवाकर स्वयं को पापरहित करे। इसके उपरान्त निःश्वास द्वारा पापों को निकालकर उक्त जल में रखे। फिर **'फट्'** मंत्र द्वारा वज्र-शिला बुद्धि से उस पापरूपी जल को फेंक दे, अब दोनों हाथों को धोकर पुनः आचमन कर जल में अपने सम्मुख त्रिकोण बनाये। धेनुमुद्रा द्वारा उस जल का अमृतीकरण करे। इतना करने के पश्चात् उस जल में अपने इष्टदेवता का ध्यान करते हुए आवाहन करे। जल द्वारा ही **'मूलं अमुकदेवतां पूजयामि नमः'** इस नाम मन्त्र द्वारा पूजन कर दोनों हाथों द्वारा तत्त्वमुद्रा प्रदर्शित करते हुए निम्न वाक्यों से एक-एक बार ही अपने सिर पर तर्पण करे–

ॐ देवांस्तर्पयामि नमः। ॐ ऋषिस्तर्पयामि नमः। ॐ पितृँस्तर्पयामि नमः। ॐ दिव्यौघगुरूँस्तर्पयामि नमः। ॐ सिद्धौघगुरूँस्तर्पयामि नमः। ॐ मानवौघगुरूँस्तर्पयामि नमः। ॐ कुलगुरुँस्तर्पयामि नमः।

कर्ता निम्न वाक्य का उच्चारण करते हुए अपने सिर पर तीन बार तर्पण करे–

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीगुरु श्रीअमुकानन्दनाथ श्रीअमुकी देव्यम्बा श्रीपादुकां तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं परमं-गुरु श्रीअमुकानन्दनाथ... श्रीपादुकां तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपरापरगुरु अमुका०...श्रीपादुकां तर्पयामि नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं श्रीपरमेष्ठिगुरु महाकालानन्दनाथ श्रीपादुकां तर्पयामि नमः।

इसके उपरान्त हृदय अथवा आज्ञाचक्र या ब्रह्मरन्ध्र में, जिस श्रेणी का कर्ता (साधक) हो। तीन बार निम्न वाक्य का उच्चारण करते हुए तीन बार ही तर्पण करे–

मूलं सायुधां सवाहनां सपरिवारां श्रीमहाकालसहितां श्रीदक्षिण-कालिकादेव्यै तर्पयामि स्वाहा।

इसके उपरान्त आदित्यदेवता (सूर्यदेवता) को ताम्र के पात्र में शुद्ध जल भरकर उसमें रक्तचन्दन, अक्षत, लालपुष्प, जवा और दूर्वा छोड़कर निम्न वाक्य का उच्चारण करते हुए अर्घ्य प्रदान करे–

१. ह्रीं हंसः मार्तण्डभैरवाय प्रकाशशक्तिसहिताय स्वाहा। इदमर्घ्यम्।

पुनः इष्टदेवता को उसी ताम्रपात्र के द्वारा निम्न वाक्यों का उच्चारण करते हुए तीन-तीन बार कर्ता अर्घ्य प्रदान करे–

२. ह्रीं ह्रीं हूँ हंसः सूर्यमण्डलस्थायै श्रीदक्षिणकालिकादेव्यै नमः।

३. मूलं उद्यदादित्यमण्डलमध्यवर्तिन्यै नित्यचैतन्योदितायै श्रीदक्षिण-कालिकादेव्यै इदमर्घ्यं स्वाहा।

त्रिकालगायत्रीध्यानम्

प्रातःकालीन ध्यानम्

ॐ श्वेतवर्णा समुद्दिष्टा कौशेयवसना तथा।
श्वेतैर्विलेपनैः पुष्पैरलङ्कारैश्च भूषिता।।
आदित्यमण्डलस्था च ब्रह्मलोकगताऽथवा।
अक्षसूत्रधरा देवी पद्मासनगता शुभा।।

मध्याह्नकालीन ध्यानम्

ॐ मध्याह्ने विष्णुरूपां च ताक्ष्यर्स्थां पीतवाससाम्।
युवतीं च यजुर्वेदां सूर्यमण्डल-संस्थिताम्।।

सायंकालीन ध्यानम्

ॐ सायाह्ने शिवरूपां च वृद्धां वृषभवाहिनीम्।
सूर्यमण्डलमध्यस्थां सामवेदसमायुताम्।।

त्रिकाल गायत्री का ध्यान करने के पश्चात् निम्न गायत्री मंत्र का कर्ता दस बार जप करे–'**ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।**' (शु.य.सं. ३६/३)

जप के पश्चात् कर्ता एकाक्षर बीजमंत्र का जो मूलमंत्र हो, उसके द्वारा एक सौ आठ बार या काली की गायत्री के द्वारा दस बार जप करे–

ॐ कालिकायै विद्महे श्मशानवासिन्यै धीमहि। तन्नो घोरे प्रचोदयात्।।

इस कर्म को करने के पश्चात् कर्ता जल से बाहर निकले। स्वच्छ या नवीन धोती एवं उत्तरीय वस्त्र धारण कर काली का पाठ करते हुए गृह में प्रवेश करे। फिर गृह में प्रवेश कर साधक (कर्ता) अपने मस्तक पर तिलक धारण करे।

अर्चनविधिः

सामान्य अर्घ्य स्थापन–पूर्व से ही किये गये शुद्ध स्थान में पूजावेदी से बाहर त्रिकोणवृत्त, चतुरस्त्रयंत्र, रक्तचन्दन को घोलकर स्वर्ण की शलाका के द्वारा यन्त्र का निर्माण करे। फिर 'फट्' मंत्र से उस यंत्र को प्रक्षालित कर उसी पर '**ह्रीं आधारशक्तिभ्यो नमः**' द्वारा उसका पूजन करे। पुनः गुरुक्रम के द्वारा गोल आधार को '**फट्**' मंत्र से प्रक्षालित कर यंत्र पर रखे। इस आधार पर 'फट्' से प्रक्षालित ताम्रपात्र को रख उसमें 'नमः' इस मंत्र से शुद्ध जल भरें। फिर अंकुश मुद्रा से निम्न श्लोकों द्वारा तीर्थों का आवाहन करें।

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।१।।
चन्द्रभागे महाभागे शरणागतवत्सले।
गण्डकी-सरयूयुक्ता समासाद्य पुनीहि माम्।।२।।
सर्वाणि यानि तीर्थानि पापमोचनहेतवः।
आयान्तु स्नानकालेऽस्मिन् क्षणं कुर्वन्तु सन्निभम्।।३।।
कुरुक्षेत्र-गया-गङ्गा-प्रभास-पुष्कराणि च।

एतानि पुण्यतीर्थानि स्नानकाले भवन्त्विह।।४।।
त्वं राजा सर्वतीर्थानां त्वमेव जगतः पिता।
याचितं देहि मे तीर्थं तीर्थराज नमोऽस्तु ते।।५।।

तदुपरान्त 'ॐ' इस प्रणव मंत्र द्वारा उसमें गन्ध, पुष्प, अक्षत छोड़ें फिर एक माला 'ॐ' का जप कर जल को अभिमंत्रित करे। इस सामान्य अर्घ्य के जल से पूजागृह के द्वार का अभ्युक्षण करते हुए द्वार-देवताओं की पूजा निम्न प्रकार से करे।

द्वारदेवतापूजनम्

गृहद्वार के ऊपरी भाग में **'ॐ गं गणपतये नमः'**, वामभाग में **'ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः'**, दक्षिणभाग में **'ॐ वं वटुकाय नमः'** पुनः नीचे की ओर **'ॐ यों योगिनीभ्यो नमः'** से प्रारम्भ करें, फिर चारो स्थानों पर क्रमशः **'ॐ गं गंगायै नमः'**, **'ॐ यं यमुनायै नमः'**, **'ॐ श्रीं लं लक्ष्म्यै नमः'** तथा **'ॐ ऐं सं सरस्वत्यै नमः'** द्वारा पूर्वादि क्रम से पूजन करें।

अथ पूजनारम्भः

सबसे पहले कर्ता **'ॐ ह्रीं विशुद्धौ सर्वपापानि शमयाशेषःविकल्पमपनय हूँ फट् स्वाहा'** इस वाक्य का उच्चारण कर अपने दोनों पैरों को स्वच्छ जल से धोकर पूजा-मण्डप में प्रवेश करके नैर्ऋत्य कोण में **'ॐ ब्रह्मणे नमः'** एवं **'ॐ वास्तुपुरुषाय नमः'** से क्रमशः चतुर्मुख ब्रह्मा और वास्तु पुरुष का पूजन करे। उस समय अपने बायें हाथ में कर्ता अक्षत, पीली सरसों और काला तिल लेकर निम्न श्लोक एवं वाक्य का उच्चारण करते हुए सभी दिशाओं की ओर विघ्नों के समापन हेतु छिड़के–

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।

भावार्थ–जो भूत (प्राणी) इस भूमि पर रहते हैं, वे भूत यहाँ से दूर चले जाएँ। जो भूत विघ्न करनेवाले हैं, वे शिव की आज्ञा से विनष्ट हो जायें।

दिशाओं की शुद्धि के पश्चात् कर्ता भूमिशोधन निम्न वाक्य का उच्चारण करते हुए सामान्यार्घ्य जल छिड़ककर करें–**'ॐ पवित्र वज्रभूमे हूँ हूँ फट् स्वाहा।'** पुनः अपने आगे त्रिकोण का निर्माण लाल चन्दन से करके उसके मध्य में मायाबीज अंकित करे, फिर इस यन्त्र के ऊपर ही **'ह्रीं आधारशक्ति-आसनाय नमः'** इस नाम मन्त्र के द्वारा पूजनकर निम्न श्लोक का उच्चारण करते हुए पृथ्वी की प्रार्थना करे–

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरु चासनम्।।

भावार्थ–हे पृथ्वि! तुम्हारे द्वारा लोक धारण किये गये हैं। तुम विष्णु के द्वारा धारण की गयी हो। हे देवि! तुम मुझको धारण करो और आसन को पवित्र करो।

तदुपरान्त **'आः सुरेखे वज्ररेखे हूँ फट् स्वाहा'** इस वाक्य का उच्चारण कर कर्ता आसन पर एक मण्डल की कल्पना अपने हृदय में करते हुए दायें हाथ में जल लेकर निम्न विनियोग का उच्चारण करे–**'ॐ मेरुपृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता आसनोपवेशने विनियोगः'**।

विनियोग के पश्चात् कर्ता आसन पर बैठे। फिर **'ऐं रः अस्त्राय फट्'** इस वाक्य से दोनों हाथों को धोकर पूर्व की भाँति तत्त्वाचमन करे–**'ॐ आत्मतत्त्वाय स्वाहा, ॐ विद्यातत्त्वाय स्वाहा, ॐ शिवतत्त्वाय स्वाहा।'**

पुनः मूलमन्त्र से तीन बार आचमन करके निम्न क्रम से नित्याचमन करे– **'ॐ काल्यै नमः, ॐ कपालिन्यै नमः'** का उच्चारण करके अंगुष्ठ-मूल के द्वारा ओष्ठ और अधर का मार्जन करे, फिर **'ॐ कुल्लायै नमः'** से हाथ, **'ॐ कुरुकुल्लायै नमः'** से तर्जनी, मध्यमा, अनामिका अंगुली द्वारा मुख; **'ॐ विरोधिन्यै नमः'** से तर्जनी, मध्यमा, अनामिका द्वारा मुख; **'ॐ विरोधिन्यै नमः, ॐ विप्रचित्तायै नमः'** से अंगुष्ठ-तर्जनी से दोनों नासापुट; **'ॐ उग्रायै नमः, ॐ उग्रप्रभायै नमः'** से अंगुष्ठ-अनामिका से दोनों नेत्रों का; **'ॐ दीप्तायै नमः, ॐ नीलायै नमः'** से तत्त्वमुद्रा से दोनों कानों का; **'ॐ घनायै नमः'** से कनिष्ठा अंगुली और अंगूठे से नाभि; **'ॐ वलाकायै नमः'** से करतल से हृदय का; **'ॐ मात्रायै नमः'** से सभी अँगुलियों से मस्तक का; **'ॐ मुद्रायै नमः, ॐ मितायै नमः'** से मध्यमा के अग्रभाग से दोनों बाहुमूल छूकर आचमन क्रिया करे।

पुनः **'ॐ मणिधरि वज्रिणि महाप्रतिसरे रक्ष रक्ष (मा) हूँ फट् स्वाहा'** इस वाक्य का उच्चारण करते हुए अपनी शिखा का बन्धन करें। फिर **'फट्'** इस मन्त्र को पढ़कर वाम पार्ष्णि से भूमि को ठोंके। तर्जनी और मध्यमा दोनों अँगुलियों को क्रमशः ऊपर उठाते हुए **'फट् फट् फट्'** कहते हुए तीन बार दोनों हाथों से ताली बजाकर विघ्नों को हटाये। मध्यमा से अंगूठे को अपने सिर के चारों ओर दस बार बजाकर दिग्बन्धन करे। तब बायें भाग में **'ॐ गुरवे नमः'** से गुरु को प्रणाम करे। फिर **'ॐ गुरुमण्डलाय नमः'** से वहीं गुरुमण्डल को प्रणामकर दाहिने भाग में **'ॐ गणपतये नमः'** से गणपति को प्रणामकर मध्य में योनिमुद्रा द्वारा इष्टदेवता को प्रणाम करे। प्रणाम ध्यान पुरस्सर ही करना चाहिये। तदनन्तर इष्टपूजन की आज्ञा इस श्लोक का उच्चारण करते हुए प्राप्त करे–

भैरवाय नमस्तुभ्यं मोक्षमार्गप्रदर्शिने।
आज्ञां मे दीयतां नाथ इष्टपूजां करोम्यहम्।।

विजयाग्रहणविधिः

अब विजया शोधन कर उसे कर्ता ग्रहण करे। यथा–मूलमन्त्र से पात्र में सम्विदा को रखे। **'फट्'** से संरक्षण कर **'हूँ'** से अवगुण्ठन करे। मूल से सामान्यार्घ्योदक से अभ्युक्षण करते हुए निम्न विनियोग का उच्चारण करे– **अस्य श्रीदक्षिणकालिकामन्त्रस्य महाकालभैरवऋषिः, उष्णिक् छन्दः,**

श्रीमद्दक्षिणकालिका देवता, ह्रीं बीजं, हू शक्तिः, क्रीं कीलकं, मम झटिति मेधावाग्विलाससिद्ध्यर्थे सम्विच्छोधने ग्रहणे च जपे विनियोगः।

पूर्व की भाँति ऋष्यादिन्यास करके कर्ता विजया का ध्यान निम्न श्लोकानुसार करे–

ॐ सिद्धाढ्यां शिवगेहिनीं करलसत् पाशांकुशां भैरवीम्।
भक्ताभीष्टवरप्रदानकुशलां संसारबन्धश्छिदाम्।।
पीयूषाम्बुधिमन्थनोद्भवरसां संविद्-विलासां पराम्।
वीराराधितपादुकां सुविजयां ध्यायेज्जगन्मोहिनीम्।।

शुक्ल (ब्राह्मण) वर्ण विजया-संशोधन श्लोक–

संविदे ब्रह्मसम्भूते ब्रह्मपुत्रि सदानघे।
भैरवाणाञ्च तृप्त्यर्थं पवित्रा भव सर्वदा।।

।। ॐ ब्रह्माण्य नमः स्वाहा ।।

रक्त (क्षत्रिय) वर्ण शोधन-श्लोक–

सिद्धिमूले प्रिये देवि हीनबोधप्रबोधिनि।
राजप्रजावशङ्करि शत्रुकण्ठ-त्रिशूलिनि।।

।। ऐं क्षत्रियायै नमः स्वाहा।।

हरित (वैश्य) वर्ण शोधन-श्लोक–

अज्ञानेन्धनदीप्ताग्ने ज्वालाग्ने ज्ञानरूपिणि।
आनन्दस्याहुतिं प्रीतिं सम्यक् ज्ञानं प्रयच्छ मे।।

।। ह्रीं वैश्यायै नमः स्वाहा।।

कृष्ण (शूद्र) वर्ण शोधन-श्लोक–

नमस्यामि नमस्यामि योगमार्गप्रबोधिनि।
त्रैलोक्यविजये मातः समाधिफलदा भव।।

।। ॐ ह्रीं शूद्रायै नमः स्वाहा।।

जिस वर्ण की विजया हो, उसी के अनुसार मन्त्र का तीन बार जप कर्ता करे। पुनः **'ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतमाकर्षयाकर्षय सिद्धिं देहि देहि सर्वं मे वशमानय स्वाहा।'** इस मन्त्ररूपी वाक्य का तीन बार जपकर विजया को अभिमन्त्रित करे। फिर विजया के ऊपर सात बार मूलमन्त्र का जप करे। इसमें इष्टदेवता का मानसिक आवाहनकर धेनु और योनि मुद्रायें दिखाये। छोटिका से दिग्बन्धन कर पूर्वोक्त रीति से तीन बार

कर्ता ताली बजाये। इष्टदेवता का मानस पूजन कर तत्वमुद्रा से गुरु और देवता का तर्पण कर विन्दु-स्वीकार इन मन्त्रों से करे–

'ऐं आत्मतत्त्वेनात्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा। क्लीं विद्यातत्त्वेन विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा। सौः शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा, ऐं क्लीं सौः सर्वतत्त्वेन सर्वतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।'

पुनः–**'ऐं वद वद वाग्वादिनि मम जिह्वाग्रे स्थिरीभव सर्वसत्ववशङ्करि स्वाहा'** मन्त्र से विजया का पान करे। फिर सम्विदा की निम्न स्तुति करते हुए प्रणाम करे–

ॐ संविद्देवि गरीयसी गुणमयी वैगुण्यविध्वंसिनी।
माया-मोह-मदान्धकार-शमनी तापत्रयोन्मूलिनी।।
वाग्देवीवदनाम्बुजैकरसिका सम्बोधिनी दीपिका।
ब्रह्म-ज्ञान-विवेक-सिद्धि-विजया विज्ञानमूर्त्यै नमः।।

उपरोक्त कर्मों को करने के पश्चात् कर्ता निम्न विजयानन्दस्तव का उच्चारण करे–

ॐ आनन्द-नन्दिनीं वन्दे सदानन्दपदद्वये।
आनन्द-कन्दलीं वन्दे स्वच्छन्दबोधरूपिणीम्।।
कलयति कवितां महतीं कुरुते तत्त्वार्थदर्शनं पुंसाम्।
अपहरति दुरतिनिलयं किं किं न करोति संविदुल्लासः।।
संविदासवयोर्मध्ये संविदैव गरीयसी।
भक्षिता भवनाशाय निर्गन्धा बोधरूपिणी।।
सुसंवित् शूलिनी देवी विजया संविदंकुरा।
वैष्णवी तुलसी तुर्या तेजोरश्मिरसेश्वरी।।
विमला श्वेत-वद्-वैला लक्ष्मीदेवी महोदरी।
समया मोहिनी चैव सिद्धमूला महेश्वरी।।
मातुलानी सिलिरूपा सिलिदात्री सरस्वती।
वाग्वादिनी सदा नित्या आनन्दपददायिनी।।
यानि चैतानि नामानि सेवयेत् सिद्धिमूलिकाम्।
स लभते परां विद्यां भुक्ति-मुक्तिं च विन्दति।।
पाण्डित्यं च कवित्वं च मन्त्र-सिद्धिं च विन्दति।

कर्ता पुष्पों का शोधन इन नाममन्त्रों का उच्चारण करते हुए करे–

'ॐ शताभिषेक हूँ फट् स्वाहा, ॐ पुष्पकेतु राजार्हते शताय सम्यक् सम्बद्धाय, ॐ पुष्पे पुष्पे महापुष्पे सुपुष्पे पुष्पसम्भवे। पुष्पचयावकीर्णे हूँ फट् स्वाहा।'

कर्ता सामान्य अर्घ्यजल से फूलों का अभ्युक्षण करे। फिर कर-शोधन इस प्रकार करे–एक रक्तपुष्प में चन्दन लगाकर उसे हथेली पर रखे। कामबीज (क्लीं) से उसे मींजकर वाग्भव (ऐं) बीज से सूंघे और निम्न श्लोक का उच्चारण करे–

हौं ते सर्वे विलयं यान्तु ये मां हिंसन्ति हिंसकाः।
मृत्युरोग-भय-क्लेशाः पतन्तु रिपुमस्तके।।

नाराचमुद्रा से ईशान कोण में उसे फेंक दे। इससे दोनों करों की शुद्धि, सूँघने से देवतातृप्ति और फेंकने से उक्त विघ्नों का दूरीकरण होता है।

मातृकान्यासविधिः

शास्त्रों के मतानुसार मातृकान्यास दो प्रकार के होते हैं–प्रथम अन्तर्मातृका और द्वितीय बहिर्मातृका। अन्तर्मातृकान्यास को करने से पहले कर्ता निम्न विनियोग का उच्चारण करे–

ॐ अस्य मातृकान्यास-मन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः मातृका सरस्वती देवता, हलो बीजानि, स्वराः शक्तयः, सर्ग कीलकं, मातृकान्यासे विनियोगः।

ऋष्यादिन्यासः—ॐ ब्रह्मणे ऋषये नमः (शिरसि)। गायत्री-छन्दसे नमः (मुखे)। श्रीमातृका सरस्वती-देवतायै नमः (हृदये)। ॐ व्यञ्जनेभ्यो बीजेभ्यो नमः (गुह्ये)। ॐ स्वरेभ्यो शक्तिभ्यो नमः (पादयोः)। ॐ सर्गाय कीलकाय नमः (सर्वाङ्गे)।

करन्यासः—अं कं खं गं घं ङं आं—अंगुष्ठाभ्यां नमः। इं चं छं जं झं ञं ईं—तर्जनीभ्यां स्वाहा। उं टं ठं डं ढं णं ऊं—मध्यमाभ्यां वषट्। एं तं थं दं धं नं ऐं—अनामिकाभ्यां हूँ। ॐ पं फं बं भं मं औं—कनिष्ठाभ्यां वौषट्। अं यं रं लं वं शं षं सं लं क्षं अः—करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्।

पुनः कर्ता षडङ्गन्यास करके निम्न श्लोक का उच्चारण करते हुए ध्यान करे–

पञ्चाशल्लिपिभिर्विभक्त-मुख-दोः-पन्मध्य-वक्षस्थलाम्।
भास्वन्मौलि-निबद्ध-चन्द्र-शकलामापीन-तुङ्गस्तनीम्।।
मुद्रामक्षगुणं सुधाढ्य-कलशं विद्यां च हस्ताम्बुजै-
र्विभ्राणां विशदप्रभां त्रिनयनां वाग्देवतामाश्रये।।

अन्तर्मातृकान्यासः

कर्ता धूम्राभ विशुद्धचक्र के सोलहों दलों में सोलहों स्वरों के आदि में '**ॐ**' और अन्त में '**नमः**' युक्त कर प्रत्येक दल में न्यास करे। जैसे– '**ॐ अं नमः**' '**ॐ आं नमः**' आदि। मूँगे के तुल्य रक्तवर्ण के अनाहतचक्र के बारहों दलों में '**क**' से लेकर '**ठ**' तक के बारहों व्यञ्जनों का उसी प्रकार एक-एक व्यञ्जन का एक-एक दल में कर्ता न्यास करे। नील-जीमूत रंग के मणिपूर-चक्र के दसों दलों में '**ड**' से '**फ**' तक दसों अक्षरों का पूर्व की भाँति न्यास करके पुनः वियत् के सदृश वर्णवाले स्वाधिष्ठान-चक्र के छः दलों में '**ब**' से '**ल**' तक के छहों वर्णों का पहले की भाँति पुनः न्यास करे। सोने के तुल्य लाल रंग के मूलाधार-चक्र के चारों दलों में '**व श ष स**' इन चारो वर्णों का पूर्व की भाँति पुनः कर्ता न्यास करे, फिर चन्द्र के तुल्य वर्णवाले आज्ञा चक्र के दोनों दलों में '**ह**' और '**क्ष**' वर्णों का पूर्व प्रकार से न्यास करे।

बहिर्मातृकान्यासः

शास्त्रों के मतानुसार बहिर्मातृकान्यास के सृष्टि, स्थिति और संहार ये तीन क्रम निम्न प्रकार से हैं।

१. सृष्टिमातृकान्यासः–निम्न मातृका मुद्राओं से कर्ता न्यास करें।

ॐ अं नमः-ललाट-अनामा, ॐ आं नमः-मुखण्डल मध्यमा, ॐ इं नमः, ॐ ई नमः–दोनों नेत्र–तर्जनी-मध्यमा-अनामा-वृद्धा, ॐ उं नमः, ॐ ऊं नमः,–दोनों कर्ण–**अङ्गुष्ठ, ॐ ऋं नमः, ॐ ॠं नमः–दोनों नासापुट कनिष्ठांगुष्ठ, ॐ लृं नमः ॐ लॄं नमः–दोनों गाल दोनों मध्यमा अंगुलियाँ, ॐ एं नमः, ॐ ऐं नमः–दोनों होठ–मध्यमा। अनामा से ॐ ओं नमः, ॐ औं नमः–दोनों दन्त-पंक्तियाँ, ॐ अं नमः, ॐ अः नमः–जिह्वा और तालु-मूल (ब्रह्मरन्ध्र) ॐ कं नमः दक्षिणबाहु-मूल, ॐ खं नमः-कूर्पर–कुहनी, ॐ गं नमः–मणिबन्ध, ॐ घं नमः-अंगुलिमूल, ॐ ङं नमः-अंगुलि अग्र-मध्यमा। इसी प्रकार मध्यमा से**

ॐ सं नमः, ॐ छं नमः, ॐ जं नमः, ॐ झं नमः, ॐ ञं नमः—वाम-बाहुमूल, कूर्पर, मणिबंध, अंगुलिमूल और अंगुल्यग्र में, ॐ टं नमः, ॐ ठं नमः, ॐ डं नमः, ॐ ढं नमः, ॐ णं नमः—दक्षिण पाद-मूल, जानु, गुल्फ और अंगुलियों के मूल और अग्रभाग में, ॐ तं नमः, ॐ थं नमः, ॐ दं नमः, ॐ धं नमः, ॐ नं नमः—वाम-पाद-मूल, जानु, गुल्फ और अंगुलियों के अग्रभाग में, दक्ष-पार्श्व में ॐ यं नमः, वाम-पार्श्व में ॐ फं नमः। ॐ वं नमः-पृष्ठ में मध्यमा, अनामिका और कनिष्ठा तीनों से, ॐ भं नमः-नाभि-तर्जनी छोड़ चारों अंगुलियों से ॐ मं नमः-पेट-पाँचों अंगुलियों से। हस्ततल से ॐ यं नमः-हृदय, ॐ रं नमः- दक्षबाहुमूल, ॐ लं नमः-ककुन्-स्थल, ॐ वं नमः-वाम बाहुमूल, ॐ शं नमः, ॐ हृदय से लेकर दाहिने हाथ तक, ॐ षं नमः-हृदय से वाम कर पर्यन्त, ॐ सं नमः-हृदय से दक्ष पादपर्यन्त, ॐ हं नमः, हृदय से वाम पादपर्यन्त, ॐ लं नमः-हृदय से नाभि-पर्यन्त, ॐ क्षं नमः-हृदय से मुखपर्यन्त।

२. स्थितिमातृकान्यासः—पूर्वोक्त ऋष्यादि-कराङ्ग-न्यास कर—मातृका सरस्वती का इस प्रकार कर्ता ध्यान करें—

सिन्दूरकान्तिममिताभरणां त्रिनेत्रां
विद्याक्ष-सूत्र-मृग-पोतवरं दधानाम्।
पार्श्वस्थितां भगवतीमपि काञ्चनाङ्गीं
ध्यायेत् कराब्ज-धृत-पुस्तक-वर्णमालाम्।।

डकार से न्यास प्रारम्भ कर क्षकार तक, फिर अकार से लेकर ठकार तक न्यास कर्ता करें।

३. संहारमातृकान्यास—पूर्वोक्त ऋष्यादि-कराङ्ग-न्यास कर संहार-मातृका सरस्वती का इसी प्रकार कर्ता ध्यान करें—

अक्षस्रजं हरिण-पोतमुदग्रटंकम्।
विद्यां करैरविरतं दधतीं त्रिनेत्राम्।।
अर्द्धेन्दु-मौलिमरुणामरविन्दवासां ।
वर्णेश्वरीं प्रणमत स्तनभारनम्राम्।।

कर्ता क्षकार से न्यास प्रारम्भ करके अकार तक विलोम रीति से न्यास करे तो संहारमातृकान्यास ही होता है।

कलामातृकान्यासः

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीकलामातृकान्यासमंत्रस्य प्रजापतिर्ऋषिर्गायत्री-छन्दः श्रीशारदा देवता पूजाङ्गत्वे विनियोगः।

न्यासः—ॐ प्रजापति-ऋषये नमः—शिरसि। ॐ गायत्रीछन्दसे नमः—मुखे। ॐ श्रीशारदादेवतायै नमः—हृदि।

अं ॐ आं अंगुष्ठाभ्यां नमः। ऋं ॐ ॠं अनामिकाभ्यां नमः। इं ॐ ईं तर्जनीभ्यां नमः। लृं ॐ लॄं कनिष्ठाभ्यां नमः। उं ॐ ऊं मध्यमाभ्यां नमः। अं ॐ अः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

कर्ता षडङ्गन्यास करने के पश्चात् निम्न श्लोक का उच्चारण करके ध्यान करें—

हस्तैः पद्मं रथाङ्गं गुणमथ हरिणं पुस्तकं वर्णमालाम्।
टङ्कं शुभ्रं कपालं दरममृतसलद्धेमकुम्भं वहन्तीम्।।
मुक्ता विद्युत्पयोद-स्फटिक-नव-जवा-बन्धुरैः पञ्चवक्त्रै-
स्त्रयक्षैर्वक्षोज-नम्रां सकल-शशि-निभां शारदां तां नमामि।।

ॐ अं निवृत्यै नमः। ॐ आं प्रतिष्ठायै नमः। ॐ इं विद्यायै नमः। ॐ ईं शान्त्यै नमः। ॐ उं इन्धिकायै नमः। ॐ ऊं दीपिकायै नमः। ॐ ऋं रेचिकायै नमः। ॐ ॠं मोचिकायै नमः। ॐ लृं परायै नमः। ॐ लॄं सूक्ष्मायै नमः। ॐ एं सूक्ष्मामृतायै नमः। ॐ ऐं ज्ञानामृतायै नमः। ॐ ओं आप्यायिन्यै नमः। ॐ औं व्यापिन्यै नमः। ॐ अं व्योम-रूपायै नमः। ॐ अः अनन्तायै नमः। ॐ कं सृष्ट्यै नमः। ॐ खं ऋद्ध्यै नमः। ॐ गं स्मृत्यै नमः। ॐ घं मेधायै नमः। ॐ ङं कान्त्यै नमः। ॐ चं लक्ष्म्यै नमः। ॐ छं द्युत्यै नमः। ॐ जं स्थिरायै नमः। ॐ झं स्थित्यै नमः। ॐ ञं सिद्ध्यै नमः। ॐ टं जरायै नमः। ॐ ठं पालिन्यै नमः। ॐ डं शान्त्यै नमः। ॐ ढं ऐश्वर्यै नमः। ॐ णं रत्यै नमः। ॐ तं कामिकायै नमः। ॐ थं वरदायै नमः। ॐ दं ह्लादिन्यै नमः। ॐ धं प्रीत्यै नमः। ॐ नं दीर्घायै नमः। ॐ पं तीक्ष्णायै नमः। ॐ फं रौद्र्यै नमः। ॐ बं भयायै नमः। ॐ भं निद्रायै नमः। ॐ मं तन्द्रायै नमः। ॐ यं क्षुधायै नमः। ॐ रं क्रोधिन्यै नमः। ॐ लं क्रियायै नमः। ॐ वं उत्कार्यै नमः। ॐ शं मृत्यवे नमः। ॐ षं पीतायै नमः। ॐ सं श्वेतायै नमः। ॐ हं अरुणायै नमः। ॐ ळं असितायै नमः। ॐ क्षं अनन्तायै नमः।

कण्ठादिमातृकान्यासः

विनियोगः—ॐ अस्य श्रीकण्ठादिमातृकान्यासस्य दक्षिणामूर्तिऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीअर्धनारीश्वरो देवता, हलो बीजानि, स्वराः शक्तयः, अव्यक्तयः कीलकानि, पूजाङ्गत्वे (जपाङ्गत्वे) विनियोगः।

दक्षिणामूर्तिऋषये नमः शिरसि, गायत्रीछन्दसे नमः मुखे, अर्धनारीश्वर-देवतायै नमः हृदये, हलो बीजेभ्यो नमः गुह्ये, स्वरेभ्य शक्तिभ्यो नमः पादयोः, अव्यक्तेभ्यः कीलकेभ्यो नमः सर्वाङ्गे।

अं कं खं गं घं ङं आं ह्सां अंगुष्ठाभ्यां नमः। इं चं छं जं झं ञं ईं ह्सीं तर्जनीभ्यां नमः। उं टं ठं डं ढं णं ऊँ ह्सूँ मध्यमाभ्यां नमः। एं तं थं दं धं नं ऐं ह्सैं अनामिकाभ्यां नमः। ओं पं फं बं भं मं औं ह्सौं कनिष्ठाभ्यां नमः। अं यं रं लं वं अः ह्सः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

इस प्रकार हृदयादि छहों अंगों में न्यास करके कर्ता निम्न श्लोक़ का उच्चारण करते हुए ध्यान करें—

बन्धूक-काञ्चन-निभं रुचिराक्षमालां
पाशांकुशौ च वरदं निजबाहुदण्डैः।
बिभ्राणमिन्दु-शकलाभरणं त्रिनेत्र-
मर्धाम्बिकेशमनिशं वपुराश्रयामि।।

उपरान्त कर्ता निम्न क्रम से श्रीकण्ठादिन्यास करें। प्रत्येक मंत्र के आदि में ह्सौः और अन्त में नमः को जोड़ देना अति आवश्यक है।

ह्सौः अं श्रीकण्ठेशपूर्णोदरीभ्यां नमः। आं श्रीअनन्तेशविरजाभ्यां नमः। इं सूक्ष्मेश-शालीभ्यां। ईं त्रिमूर्तीशलोलाक्षीभ्यां। उं अमरेशवर्तुलाक्षीभ्यां। ऊं अर्घीश-दीर्घघोणाभ्यां। ऋं भारभतीश-दीर्घमुखीभ्यां। ॠं अतिथीशगोमुखीभ्यां। लृं स्थाण्वीश-दीर्घजिह्वाभ्यां। लॄं हरेश-कुण्डोदरीभ्यां। एं झिण्टीश-ऊर्ध्वकिशीभ्यां। ऐं भौतिकेश-विकृतमुखीभ्यां। ओं सद्योजातेश-ज्वालामुखीभ्यां। औं अनुग्रहेश-उल्कामुखीभ्यां। कं क्रोधीश-महाकालीभ्यां। खं चण्डेश-सरस्वतीभ्यां। गं पञ्चान्तकेश-गौरीभ्यां। घं शिवेशत्रैलोक्यविद्याभ्यां। ङं एकरुद्रेश-मन्त्रशक्तिभ्यां। चं कूर्मेश-अष्ट-शक्तिभ्यां। छं एकनेत्रेश-भूतमातृभ्यां। जं चतुराननेश-लम्बोदरीभ्यां। झं अजेशद्राविणीभ्यां। ञं सर्वेशनागरीभ्यां। टं सोमेश-

खेचरीभ्यां। ठं लाङ्गलीश-मञ्जरीभ्यां। डं दारुकेश-कपिलीभ्यां। ढं अर्धनारीशवारिमीभ्यां। थं दण्डीश-भद्रकालीभ्यां। दं अत्रीश-योगिनीभ्यां। घं मीनेश-शंखिनीभ्यां। नं मेषेश-तर्जनीभ्यां। पं लोहितेश-कालरात्रिभ्यां। फं शिखीश-कुब्जिकाभ्यां। वं छगलण्डकपर्दिनीभ्यां। भं द्विरण्डेश-वज्रिणीभ्यां। मं महाकालेश-जयाभ्यां। यं वाणीश-सुमुखीश्वरीभ्यां। रं भुजंगेश-रेवतीभ्यां। लं पिनाकीश-माधवीभ्यां। वं खड्गीश-वारुणीभ्यां। शं वकेश-वायवीभ्यां। षं श्वेतेश-रक्षोविधारिणीभ्यां। सं भृग्वीश-सहजाभ्यां। हं नकुलीश-लक्ष्मीभ्यां लं शिवेश-व्यापिनीभ्यां। क्षं सम्वतेकेश-महामायाभ्यां नमः।

वर्णन्यासः

कर्ता वर्णन्यास तत्वमुद्रा से ही निम्न बताये गये स्थानों में करें–

ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं लृं लॄं नमः	– हृदय
ॐ एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं नमः	– दायीं भुजा
ॐ ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं नमः	– बायीं भुजा
ॐ णं तं थं दं धं नं पं फं बं भं नमः	– दायीं जंघा
ॐ मं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं नमः	– बायीं जंघा

षोढान्यासः

१. ॐ से पुटित मातृका और मातृकापुटित प्रणय मातृका।

२. लक्ष्मीबीजपुटित मातृका और मातृकापुटित लक्ष्मीबीज।

३. कामबीजपुटित मातृका और मातृकापुटित कामबीज।

४. मायाबीजपुटित मातृका और मातृकापुटित मायाबीज।

५. काली-बीज-द्वय (क्रीं क्रीं) पुटित 'ऋं ॠं लृं लॄं' और 'ऋं ॠं लृं लॄ' पुटित काली-बीज-द्वय।

६. मूलपुटित मातृका और मातृकापुटित मूल-बीज (क्रीं)।

तत्त्वन्यासः

यदि मूलमन्त्र 'क्रीं' हो, तो इसके तीन भाग करें–क, र, ईं। यदि विद्याराज्ञी हो तो आदि के साथ बीजों का प्रथम भाग (क्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं), मध्य भाग छः अक्षरों (दक्षिणे कालिके) का और तृतीय खण्ड नौ (क्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं स्वाहा) वर्णों का करें। इन खण्डों से क्रम से मस्तक से नाभिपर्यन्त उपरान्त नाभि से हृदय-पर्यन्त तथा हृदय से मस्तकपर्यन्त कर्ता न्यास करें।

बीजन्यासः

क्रीं नमः—ब्रह्मरन्ध्रे। क्रीं नमः भ्रू-युगले। क्रीं नमः—ललाटे। हूँ नमः-नाभिं। हूँ नमः-गुह्ये। ह्रीं नमः-मुखे। ह्रीं नमः-सर्वाङ्गे।

विद्यान्यासः

सिर—क्रीं नमः, मूलाधार-क्रीं नमः, हृदय—क्रीं नमः, तीनों नेत्र—क्रीं नमः, दोनों कान—क्रीं नमः, मुख—क्रीं नमः, दोनों भुजा—क्रीं नमः, पीठ—क्रीं नमः, दोनों जानु—क्रीं नमः, नाभि—क्रीं नमः।

लघुषोढान्यासः

मस्तक—ॐ नमः, मूलाधार—स्त्रीं नमः, लिंग—एं नमः, नाभि—क्रीं नमः, हृदय—ऐं नमः, कण्ठ—क्रीं नमः, भ्रूमध्य—ह्सौः नमः, दायीं भुजा—ॐ नमः, बायीं भुजा—श्रीं नमः, दक्ष पाद—ह्रीं नमः, वाम पाद—क्रं नमः, पीठ—क्रीं नमः।

पीठन्यासः

ॐ ह्रीं आधार-शक्तये नमः, पं प्रकृत्यै नमः, कं कूर्माय नमः, शं शेषाय नमः, लं पृथिव्यै नमः, ॐ सुधाटम्बुधये नमः, ॐ मणिद्वीपाय नमः, ॐ चिन्तामणिगृहाय नमः—ॐ श्मशानाय नमः, ॐ पारिजाताय नमः, ॐ रत्नवेदिकायै नमः, ॐ नानामुनिभ्यो नमः, ॐ नानादेवेभ्यो नमः, ॐ बहुमांसस्थिमोदमानशिवाभ्यो नमः, ॐ शवमुण्डेभ्यो नमः।

ॐ धर्माय नमः—दाहिना कंधा, ॐ ज्ञानाय नमः—बायाँ कंधा, ॐ वैराग्याय नमः—दायीं कमर, ॐ ऐश्वर्याय नमः—बाईं कमर, ॐ अधमाय नमः—मुख, ॐ अज्ञानाय नमः—वाम भाग, ॐ अवैराग्याय नमः—नाभि, ॐ अनैश्वर्याय नमः—दायाँ भाग।

इसके पश्चात् कर्ता सोलह दल के कमल की कर्णिका में निम्न न्यासों को करे—

ॐ आनन्दकन्दाय नमः। ॐ अनन्ताय नमः। ॐ पद्माय नमः। ॐ अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः। ॐ सोममण्डलाय षोडशकलात्मने नमः। ॐ मं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः। ॐ सं सत्वाय नमः। ॐ रं रजसे नमः। ॐ तं तमसे नमः। ॐ आं आत्मने नमः। ॐ अन्तरात्मने नमः। ॐ पं परमात्मने नमः। ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः।

उपरोक्त न्यासों को करने के पश्चात् कर्ता आठ दलों पर पूर्व से निम्न न्यासों को करे–

इं इच्छाशक्त्यै नमः, ज्ञां ज्ञानशक्त्यै नमः, कं क्रियाशक्त्यै नमः, कं कामिन्यै नमः, कां कामदायै नमः, रं रत्यै नमः, रं रतिप्रियायै नमः, आं आनन्दायै नमः। कर्णिका पर-मं मनोन्मन्यै नमः। इसके बाद ऐं परायै नमः ह्सौः अपरायै नमः। सदाशिवमहाप्रेतपद्मासनाय नमः।

प्राणप्रतिष्ठापनम्

ॐ अस्य प्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्म-विष्णु-रुद्रा ऋषयः, ऋग्यजुः-सामानि छन्दांसि, चैतन्यरूपा प्राणशक्तिः देवता, प्राणप्रतिष्ठायां विनियोगः।

ॐ ब्रह्म-विष्णु-रुद्रा ऋषिभ्यो नमः–शिर। ॐ ऋग्यजुः-सामेभ्यश्छन्देभ्यो नमः–मुख। ॐ चैतन्यरूपायै प्राणशक्त्यै देवतायै नमः–हृदय।

अं कं खं गं घं ङं आं आकाश-वायु-वह्नि-सलिल-पृथिव्यात्मने अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। इं चं छं जं झं ञं ईं शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने तर्जनीभ्यां स्वाहा। उं टं ठं डं डं ढं णं ऊं श्रोत्र-त्वक्-चक्षु-जिह्वा-घ्राणात्मने मध्यमाभ्यां वषट्। एं तं थं दं धं नं ऐं वाकपाणिपाद-पायूपस्थात्मने अनामिकाभ्यां हुं। ओं पं फं बं भं मं औं वचनादान-गति-विसर्गानन्दात्मने कनिष्ठाभ्यां वौषट्। अं यं रं लं वं शं षं सं हं लं क्षं अं मनो-बुद्ध्यहंकार-चिदात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

ध्यानम्

रक्ताब्धिपोतारुणपद्मसंस्थां पाशाङ्कुशेष्वासशराऽसिबाणान्।
शूलं कपालं दधतीं कराब्जैः रक्तां त्रिनेत्रां प्रणमामि देवीम्।।

इस प्रकार ध्यान कर प्राणशक्तिदेवी की मानसपूजा कर निम्न प्राणप्रतिष्ठा मन्त्रों से लेलिहानी मुद्रा प्रदर्शित करते हुए अर्थात् दाहिने हाथ की बिचली तीन अँगुलियों को सटाकर अँगूठे को अनामिका के मूल में लगा और कनिष्ठा को पृथक् कर हृदय पर रख अनाहतचक्र की कर्णिका में आठ दलों से युक्त कमल पर देवता का ध्यान करते हुए कर्ता अपने प्राणों में इष्टदेवता की प्रतिष्ठा करे–

आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः श्रीदक्षिणकालिकादेवता प्राणा इह प्राणाः। आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः श्रीदक्षिणकालिकादेवता

जीव इह स्थितः। आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः श्रीदक्षिणकालिकादेवता इह सर्वेन्द्रियाणि। आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं हंसः श्रीदक्षिणकालिकादेवता वाङ्-मनस्त्वक्-चक्षु-श्रोत्र-जिह्वा-घ्राण-प्राणा इहागत्य सुख चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

पुनः निम्न ध्रुवसूक्त का पाठ या जप करें–**ॐ ध्रुवा द्यौ र्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वतो इमे। ध्रुवविश्वमिदं जगद् ध्रुवो राजा विशामयम्। ध्रुव ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः। ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्।। ध्रुवं ध्रुवेण हविषाऽभि सोमं मृशामसि। अथो त इन्द्रः केवलार्विशो बलिहतस्करत्।।**

तदुपरान्त अर्चित हृदय में अंगूठे को देखकर निम्न श्लोक का उच्चारण करें-

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै स्वाहेति यजुरीरयेत्।।

अर्थात्–इसके लिए प्राणप्रतिष्ठित हों। इसके प्राण चलते रहें इस पूजा के लिए देवत्व होता रहे। स्वाहा ऐसा यजुर्वेद से कहा है यों प्रणव (ॐ) से रोककर देवता को सजीव ध्यान करे।

तदुपरान्त कर्ता पञ्चोपचार[१] या षोडशोपचार[२] से मानस-पूजन करे। इसके उपरान्त मानस-तर्पण एवं मानस-हवन कर्ता सुयोग्य गुरु के सान्निध्य में करे।

---

१. मन्त्रयोगसंहितायां तन्त्रसारे च–गन्धं पुष्पं तथा धूपं दीपं नैवेद्यमेव च। अखण्डफलमासाद्य कैवल्यं लभते ध्रुवम्।। (मन्त्रमहार्णवे)

२. आवाहनासने पाद्यमर्घ्यमाचनीयकम्। स्नाने वस्त्रोपवीते च गन्धमाल्यान्यनुक्रमात्।।
धूपं दीपं च नैवेद्यं ताम्बूलं च प्रदक्षिणा। पुष्पाञ्जलिरिति प्रोक्ता उपचारास्तु षोडश।।
(कर्मप्रदीप)

पात्रस्थापनविधिः

घट-स्थापनम्—कर्ता अपने बायें भाग में स्वर्ण, रजत, कांस्य, ताम्र अथवा मिट्टी का एक बड़ा एवं सुन्दर कलश स्थापित करे। सर्वप्रथम लालचन्दन से एक बिन्दु, त्रिकोण, षट्कोण, वृत्त और चतुरस्त्र वाले एक मण्डल का निर्माण करे। तदुपरान्त सामान्यार्घ्य जल से इसका अभ्युक्षण कर **'ह्रीं आधारशक्त्यादिभ्यो नमः'** से जल व गन्ध-पुष्पाक्षत द्वारा मण्डल की पूजा करे। आधार को जल से धोकर अभ्युक्षण कर मण्डल पर स्थापित करे। आधार पर वह्नि की दस कलाओं की निम्न क्रम से प्राणप्रतिष्ठा करे–

आं ह्रीं क्रों यं- - - -हं हंसः वह्निदशकलानां प्राण इह प्राणा। आं ह्रीं क्रों- - - -वह्निदशकलानां जीव इह स्थितः। आं ह्रीं क्रों- - - -वह्निदशकलानां सर्वेन्द्रियाणि। आं ह्रीं क्रों- - - -वह्निदशकलानां वाङ्मनश्चक्षुस्त्वक्-जिह्वा-श्रोत्र-घ्राण-प्राणाः इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

पुनः निम्न श्लोक एवं वैदिक मन्त्र का उच्चारण करे–

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च_ कश्चन।।

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञठ० समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामो ँ३ प्रतिष्ठ।।

प्राणप्रतिष्ठा के उपरान्त कर्ता दस कलाओं की गन्ध एवं अक्षत से निम्न क्रमानुसार पूजा करे–

ॐ यं धूम्रार्चिषे नमः। ॐ रं उष्णायै नमः। ॐ लं ज्वलिन्यै नमः। ॐ वं ज्वालिन्यै नमः। ॐ शं विस्फुलिंग्यै नमः। ॐ षं सुश्रियै नमः। ॐ सं स्वरूपायै नमः। ॐ हं कपिलायै नमः। ॐ लं हव्यवहायै नमः। ॐ क्षं कव्यवहायै नमः। ॐ मं रं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने नमः।

पुनः कर्ता **'अस्त्राय फट्'** से घड़े को धोकर उसे लाल सिंदूर, लाल पुष्प या लाल पुष्पमाला से सुशोभित करे। फिर **'ॐ देवीरूपकलशाय नमः'** से गन्ध, पुष्प और अक्षत से पूजन कर **'ॐ देवतात्मककलशं स्थापयामि नमः'**, कहकर आधार पर घड़ा स्थापित करे। सामान्यार्घ्य जल से मूलमन्त्र से अभ्युक्षण कर सूर्य की बारह कलाओं की प्राणप्रतिष्ठा निम्न प्रकार से करे–
आं ह्रीं क्रों यं- - - -हं हंसः तपिन्यादीनां सूर्य-द्वादशकलानां प्राणा इह प्राणाः। तदुपरान्त इनकी अलग-अलग निम्न क्रम से पूजा करे–

'ॐ कं भं तपिन्यै नमः। खं वं तापिन्यै नमः। गं फं धूम्रायै नमः। घं पं मरीच्यै नमः। ङं नं ज्वालिन्यै नमः। चं तं रुच्यै नमः। छं दं सुषुम्नायै नमः। जं थं भोगदायै नमः। झं तं विश्वायै नमः। ञं णं बोधिन्यै नमः। टं ठं धारिण्यै नमः। ठं डं क्षमायै नमः।' फिर **'ॐ अं अर्कमण्डलाय द्वादशकलात्मने नमः'**। से पूजन करे।

फिर निम्न प्राणप्रतिष्ठा करे–

आं ह्रीं क्रों यं----हं हंसः अमृतादीनां चन्द्रषोडशकला प्राणा इह प्राणाः इत्यादि। पुनः इन सोलहों की अलग-अलग निम्न क्रमानुसार कर्ता पूजा करे–

'अं अमृतायै नमः। आं मानदायै नमः। इं पूषायै नमः। ईं तुष्ट्यै नमः। उं पुष्ट्यै नमः। ऊं रत्यै नमः। ऋं धृत्यै नमः। ॠं शशिन्यै नमः। ऌं चन्द्रिकायै नमः। ॡं कान्त्यै नमः। एं ज्योत्स्नायै नमः। ऐं श्रियै नमः। ओं प्रीत्यै नमः। औं अंगदायै नमः। अं पूर्णायै नमः। अः पूर्णामृतायै नमः।' 'उं चं चन्द्रमण्डलाय षोडशकलात्मने नमः' द्वारा पूजा करे। पुनः कर्ता द्रव्य में त्रिकोण, षट्कोण, वृत्त, चतुरस्र मण्डल की भावनाकर चतुरस्र की दक्षिणरेखा पर **'ॐ उड्डीयानपीठाय नमः'**, पश्चिमरेखा पर **'ॐ जालन्धरपीठाय नमः'**, उत्तररेखा पर **'ॐ पूर्णगिरिम्पीठाय नमः'**, पूर्वरेखा पर **'ॐ कामरूपपीठाय नमः'**, का उच्चारण करते हुए गन्ध, अक्षत एवं पुष्प से पूजनकर षट्कोणों पर उसी क्रम से हृदय, शिर, शिखा, कवच, नेत्र-त्रय और अस्त्र इन षडङ्ग देवताओं की पूजा निम्न क्रमानुसार करे–

'ॐ क्रां हृदयाय नमः हृदयदेवतायै नमः। ॐ क्रीं शिरसे स्वाहा शिरोदेवतायै नमः। ॐ क्रूं शिखायै वषट् शिखादेवतायै नमः। ॐ क्रैं कवचाय हूँ कवचदेवतायै नमः। ॐ क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रत्रयदेवतायै नमः। ॐ क्रः अस्त्राय फट् अस्त्रदेवतायै नमः।' पुनः त्रिकोण की तीनों भुजाओं पर अकारादि सोलह स्वरों, ककारादि सोलह वर्णों एवं थकारादि सकारान्त सोलह वर्णों के आदि में प्रणव और अन्त में **'नमः'** का समावेश करते हुए कर्ता पूजन करे। फिर तीनों कोणों में **'ॐ हं नमः, ॐ लं नमः** और **ॐ क्षं नमः'** द्वारा पूजन करे। **'यं'** वीज के दस बार जप से दोषों का भस्मीकरण, **'वं'** वीज के दस बार जप से द्रव्य के दोषों का संशोषण, **'रं'** वीज के दस बार जप से द्रव्य के दोषों का भस्मीकरण, **'वं'** वीज के दस

बार जप से द्रव्य का अमृतीकरण कर **'हूँ'** मन्त्र का उच्चारण करके अवगुण्ठन करे। तदुपरान्त **'फट्'** मन्त्र से रक्षण, मूलमन्त्र से अभिवीक्षण कर मत्स्यमुद्रा प्रदर्शित करते हुए कर्ता आच्छादन करे। **'ॐ नमः'** से गन्ध, पुष्प और अक्षत प्रदत्त कर, फिर अंकुशमुद्रा से पहले बताये गये मन्त्रों से तीर्थों का आवाहन कर प्रणव की इक्यावन कलाओं की पूजा निम्न क्रम से कर्ता करे–

प्रणवपञ्चावयव भवकला पूजनम्–**'अकारभवसृष्ट्यादिदशकला इहागच्छत इह तिष्ठत'** से आवाहन कर निम्न मन्त्र का कर्ता उच्चारण करे–

ॐ हर्ठ० सः शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत्। नृषद्वरसदृत सद् व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत्।।

(शु.य.सं. १२/१४)

पुनः **आं ह्रीं क्रों यं----हं हंसः प्रणवाकारभवसृष्ट्यादिदशकलानां प्राणा इह प्राणाः।।** इसके द्वारा कर्ता प्राणप्रतिष्ठा करे। पुनः निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करते हुए कर्ता पूजन करे–**'ॐ कं सृष्ट्यै नमः। खं ऋद्ध्यै नमः। गं स्मृत्यै नमः। घं मेधायै नमः। ङं कान्त्यै नमः। चं लक्ष्म्यै नमः। छं द्युत्यै नमः। जं स्थिरायै नमः। झं स्थित्यै नमः। ञं सिद्ध्यै नमः'**। इसी प्रकार 'उकारभवजरादिदशकला' का आवाहन कर निम्न मन्त्र का उच्चारण कर्ता करे–

ॐ प्र तद्विष्णुः स्तवते वीर्येण मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः। यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा।। (शु.य.सं. ५/२०)

जरादि दस कलाओं की प्राणप्रतिष्ठा कर पूर्वोक्त विधि से पूजन करे–फिर

'ॐ टं जरायै नमः। ठं पालिन्यै नमः। डं शान्त्यै नमः। ढं ऐश्वर्य्यै नमः। णं रत्यै नमः। तं कामिकायै नमः। थं वरदायै नमः। दं ह्लादिन्यै नमः। धं प्रीत्यै नमः। नं दीर्घायै नमः।' पूर्ववत् मकार भवतीक्ष्णादि दस कलाओं का आवाहन कर निम्न मन्त्र का उच्चारण कर्ता करे–

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्-मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात्।। (शु.य.सं. ३/६०)

पुनः कर्ता उक्त प्राणप्रतिष्ठामन्त्र से तीक्ष्णादि दस कलाओं की प्राण-प्रतिष्ठा कर दसों का पूजन निम्न क्रमानुसार करे–

'ॐ पं तीक्ष्णायै नमः। फं रौद्र्यै नमः। बं भयायै नमः। भं निद्रायै

नमः। मं तन्द्रायै नमः। यं क्षुधायै नमः। रं क्रोधिन्यै नमः। लं क्रियायै नमः। वं उत्कार्यै नमः। शं मृत्यवे नमः।' इसी प्रकार प्रणवविन्दुभवपीतादि पञ्च कलाओं का आवाहन कर ब्रह्मगायत्री का उच्चारण करते हुए कर्ता प्राणप्रतिष्ठामन्त्र से प्राणप्रतिष्ठा कर निम्न क्रम से पूजन करे–

'ॐ षं पीतायै नमः। सं श्वेतायै नमः। हं अरुणायै नमः। लं असितायै नमः। क्षं अनन्तायै नमः।' नादजा वृत्यादि षोडश कलाओं का आवाहन कर निम्न मन्त्र का उच्चारण कर्ता करे–

ॐ विष्णुर्योनिं कल्पयतु। त्वष्टा रूपाणि पिंशतु, आ सिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते। गर्भं धेहि सिनिवालि गर्भं धेहि सरस्वति। गर्भं ते अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजा।।

फिर प्राणप्रतिष्ठा करने के उपरान्त कर्ता निम्न क्रम से पूजन करे–

'ॐ अं निवृत्यै नमः। आं प्रतिष्ठायै नमः। इं विद्यायै नमः। ईं शान्त्यै नमः। उं इन्धिकायै नमः। ऊं दीपिकायै नमः। ऋं रेचिकायै नमः। ॠं मोचिकायै नमः। ऌं परायै नमः। ॡं सूक्ष्मायै नमः। एं सूक्ष्मामृतायै नमः। ऐं ज्ञानामृतायै नमः। आं आप्यायिन्यै नमः। औं व्यापिन्यै नमः। अं व्योमरूपायै नमः। अं अनन्तायै नमः।' पुनः निवृत्यादि पाँच कलाओं का पूर्व की भाँति आवाहन और प्राणप्रतिष्ठा करके निम्न क्रम से कर्ता पूजन करे–

'ॐ निवृत्यै नमः। ॐ प्रतिष्ठायै नमः। ॐ विद्यायै नमः। ॐ शान्त्यै नमः। ॐ शान्त्यतीतायै नमः।'

श्रीआनन्दभैरव एवं भैरवी का पूजन करने के पश्चात् घड़े में स्थित द्रव्य में श्रीआनन्दभैरव का ध्यान निम्न श्लोकों का उच्चारण करते हुए कर्ता करे–

सूर्यकोटिप्रतीकाशं चन्द्रकोटिसुशीतलं।
अष्टादशभुजं देवं पञ्चवक्त्रं त्रिलोचनम्।।
अमृतार्णवमध्यस्थं ब्रह्मपद्मोपरिस्थितम्।
वृषारूढं नीलकण्ठं सर्वाभरणभूषितम्।।
कपालखट्वाङ्गधरं घण्टा-डमरु-वादिनम्।
पाशांकुशधरं देवं गदा-मुशल-धारिणम्।।
खड्ग-खेटक-पट्टीशं मुद्गरं शूल-दण्डकम्।
विचित्र-खेटकं मुण्डं वरदाभयपाणिकम्।।
लोहितं देव-देवेशं भावयेत् साधकोत्तमः।

ध्यान करने के पश्चात् **'हसक्षमलवरयूं आनन्दभैरवाय वषट् श्रीमदानन्दभैरवं पूजयामि नमः'** मन्त्र से तीन बार गंध, अक्षत एवं पुष्प से उनका पूजन करके श्रीआनन्दभैरवी का ध्यान निम्न श्लोकों द्वारा कर्ता करे–

भावयेत्तु सुरादेवीं चन्द्रकोटिसमप्रभाम्।
हिमकुन्देन्दुधवलां पञ्चवक्त्रां त्रिलोचनाम्।।
अष्टादशभुजैर्युक्तां सर्वानन्दकरोद्यताम्।
प्रहसन्तीं विशालाक्षीं देवदेवस्य संमुखीम्।।

ध्यान करने के उपरान्त **'ॐ सहक्षमलवरयीं आनन्दभैरव्यै वौषट् श्रीमदानन्द-भैरवीं पूजयामि नमः'** इस वाक्य का उच्चारण करते हुए गन्ध, अक्षत एवं पुष्प से उनकी तीन बार पूजा करे।

श्रीपात्रस्थापनम्

देवताप्रतीक मूर्त्ति, यन्त्र, कुण्डली, लिंग अथवा घट इत्यादि और अपने मध्य में **'हूँ'**–गर्भ त्रिकोण, षट्कोण, वृत्त एवं चतुरस्र मण्डल का निर्माण लालचन्दन से करके चारों रेखाओं पर चारों पीठों का पूजन कर, षट्कोणों पर षडङ्गदेवता का पूजन कर, त्रिकोणों में मूलमन्त्र के तीन खण्डों सहित आत्मतत्त्व, विद्यातत्त्व और शिवतत्त्व का पूजन कर्ता करे। फिर मध्य में **'हूँ आधारशक्त्यादिभ्यो नमः'** से पूजन कर, **'फट्'** से आधार को धोकर मंडल पर उसे कर्ता रखे। अग्नि की दस कलाओं की पहले बतायी गयी विधि से प्राणप्रतिष्ठा कर, एकत्र पूजन कर, कपालादि पात्र को 'फट्' मन्त्र से सामान्यार्घ्य जल से धोकर **'ॐ क्रीं श्रीदक्षिणकालिकादेव्यै पात्रं स्थापयामि नमः'** से आधार पर पात्र को **'श्रीदक्षिणकालिकादेव्यै पात्राय नमः'** से पात्र का पूजन कर कर्ता उसे स्थापित करे। फिर बताई गयी विधि के द्वारा सूर्य की द्वादश कलाओं की प्राणप्रतिष्ठा व पूजन कर **'ह्रीं'** वीज वा विलोम मातृकावर्णों से, श्रीपात्र का तीन भाग संशोधित तीर्थ से और शेष भाग शुद्ध जल से भरे। इस द्रव्य में सोम की सोलह कलाओं की प्राणप्रतिष्ठा एवं पूजन कर इसमें लालचन्दन, लालपुष्प, बिल्वपत्र, दूर्वा, अक्षत, कर्पूर और यदि सम्भव हो सके तो स्वयम्भू पुष्प भी छोड़े। तब **'ह ल क्ष'** मण्डित और **'ह्सौं'** बीजगर्भ अकथादि त्रिकोण की भावना द्रव्य में कर इस मण्डल की पूजाकर **'हूँ'** मन्त्र से अवगुण्ठनमुद्रा से अवगुण्ठन कर **'फट्'** मन्त्र के द्वारा रक्षण कर **'क्रों'** से अंकुशमुद्रा

द्वारा चन्द्रमण्डल से सोमतीर्थ का आवाहन कर शोधित दूसरे, तीसरे, चौथे कुलतत्त्वों को द्रव्य में छोड़ते हुए श्रीपात्र का स्पर्श कर निम्न श्लोकों का उच्चारण कर्ता करे–

ब्रह्माण्डरससम्भूतमशेषरससम्भवम् ।
आपूरितं महापात्रं पीयूषरसमावह।।१।।
अखण्डैकरसानन्दकरे परसुधात्मनि।
स्वच्छन्दस्फुरणार्थाय निधेहि कुलरूपिणि।।२।।
अकुलस्थामृताकारे शुद्धज्ञानकले परे।
अमृतत्वं निधेह्यस्मिन् वस्तुनि क्लिन्नरूपिणि।।३।।
तद्रूपेणैककरणं कृत्वा ह्येतत्स्वरूपिणि।
भूत्वा कुलामृताकारं मयि चित्स्फुरणं कुरु।।४।।
अहन्ता पात्रभरितमिदन्ता परमामृतम्।
पराहन्तामये वह्नौ होमस्वीकारलक्षणम्।।५।।

कर्ता **'ऐं मुलूं प्लूं ग्लूं स्लूं न्लूं अमृते अमृतोद्भवे अमृतेश्वरि अमृतवर्षिणि महत्प्रकाशस्वरूपे अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा'**–इस मन्त्र का तीन बार जप कर अमृतीकरण करे। इसके पश्चात् **'ऐं वद वद वाग्वादिनि ऐं; क्लीं क्लिन्ने क्लेदिनि क्लेदय क्लेदय महाक्षोभं कुरु कुरु क्लीं; सौः महामोक्षं कुरु कुरु ह्सौः स्हौः।'** इस दीपिनी मन्त्र से पात्र को दीप्त करे। कर्ता पात्र में पञ्चरत्नों की पूजा निम्न क्रम से करे–

'ग्लूं गगनरत्नेभ्यो नमः। ख्लूं खगरत्नेभ्यो नमः। प्लूं पातालरत्नेभ्यो नमः। म्लूं मर्त्येरत्नेभ्यो नमः। व्लूं नागरत्नेभ्यो नमः।' फिर पूर्वोक्त विधि से कर्ता आनन्द-भैरव का ध्यानसहित पूजन कर इष्टदेवता का पात्रद्रव्य में आवाहन कर तालत्रय से दिगबन्धन कर धेनु, योनि, शंख, गालिनी मुद्रायें प्रदर्शित कर मत्स्यमुद्रा से उसे विधिवत् आच्छादित कर संक्षेप में इष्टदेवता का पूजन कर पात्र पर दस बार मूलमन्त्र का जप करे। इस प्रकार पात्र को देवता स्वरूप विचारते हुए श्रीपात्र की पूजा गन्ध, पुष्प, अक्षत से करके उसे धूप एवं दीप दिखाये।

गुरु आदि अन्य पात्रस्थापनम्

कर्ता अपने दायें भाग में शुद्ध जल से भरा हुआ एक पात्र रखे, फिर उसमें विशेषार्घ्यविन्दु डाल दे। इसे प्रोक्षणी पात्र की संज्ञा से विभूषित किया

गया है। इसके द्वारा ही समस्त प्रोक्षणकर्म करे। घट के समीप एक गुरुपात्र, इसके दायें दो भोगपात्र और इसी क्रम से तीन शक्ति, चार योगिनी, पाँच वीर, छः बलि, सात पाद्य, आठ आचमनीय आदि आठ पात्र स्थापित करे। स्थापनविधि का क्रम इस प्रकार से है– सर्वप्रथम कर्ता त्रिकोण, वृत्त, चतुरस्र मण्डल लालचन्दन से लिखे फिर **'ॐ आधारशक्तये नमः'** से गन्ध, पुष्प, अक्षत से पूजन कर 'फट्' मन्त्र के द्वारा आधार को जल से धोकर मण्डल पर रखे। पुनः **'ॐ वह्निदशकलाभ्यो नमः'** से आधार पर पूजन कर फिर पात्र को **'फट्'** से धोकर वामावर्त क्रम वाले **'आचमनीयपात्रं स्थापयामि'** और दक्षिणावर्तक्रमवाले **'ॐ गुरुपात्रं स्थापयामि'** का उच्चारण कर आधार पर पात्र स्थापित कर गन्ध एवं अक्षत के द्वारा **'अमुकपात्राय नमः'** इस नाम मन्त्र के द्वारा पूजन कर पात्र में **'ॐ सूर्यद्वादशकलाभ्यो नमः'** से पूजन कर **'नमः'** से घटस्थ कारण से पात्र को भर अन्यान्य तत्त्व प्रदान करे। पुनः कर्ता **'हूँ'** मन्त्र से अवगुण्ठन, **'फट्'** मन्त्र से रक्षण एवं तीर्थों का आवाहन कर **'यं'** मन्त्र से धेनुमुद्रा द्वारा अमृतीकरण कर, योनिमुद्रा प्रदर्शित करते हुए **'वं'** मन्त्र से धेनुमुद्रा से अमृतीकरण कर, योनिमुद्रा प्रदर्शित कर मत्स्यमुद्रा से आच्छादित कर **'ॐ'** मन्त्र से गन्ध, पुष्प प्रदान कर मूलमन्त्र का दस बार जप कर श्रीपात्र का एक बिन्दु उसमें डाल दें। करक्षालन पात्र अपने पीछे की ओर रखे।

तर्पणम्

कर्ता पात्रस्थापन कर श्रीपात्र के अमृत से देव, ऋषि और पितृतर्पण कर दोनों हाथों से तत्त्वमुद्रा द्वारा आनन्दभैरव एवं आनन्दभैरवी का तर्पण निम्न क्रमानुसार करे–**'ॐ हसक्षमलवरयूं आनन्दभैरवाय वषट् आनन्दभैरवं तर्पयामि नमः; ॐ सहक्ष-मलवरयीं आनन्दभैरव्यै वौषट् आनन्दभैरवीं तर्पयामि स्वाहा।'** आनन्दभैरव एवं आनन्दभैरवी का तर्पण भैरवपात्र के अमृतरूपी जल से ही करे। यदि किसी कारणवश भैरवपात्र स्थापित न किया गया हो तो विशेषार्घ्यामृत से ही करे। फिर विशेषार्घ्य से दिव्यौघ, सिद्धौघ, मानवौघ और कुलगुरुओं का एक-एक बार तर्पण कर गुरुपात्र से गुरु का तीन बार तर्पण कर्ता करे। फिर श्रीपात्र से एक-एक बार परमगुरु, परापरगुरु और परमेष्ठिगुरु का तर्पण निम्न क्रमानुसार कर्ता करे–

ॐ अमुकानन्दनाथ परमगुरुं तर्पयामि नमः। ॐ अमुकानन्दनाथ परापरगुरुं

तर्पयामि नमः। ॐ श्रीमहाकालनन्दनाथ परमेष्ठिगुरुं तर्पयामि नमः। पुनः श्रीपात्र के द्वारा '**मूलं साङ्गां सायुधां सवाहनां सपरिवारां श्रीमहाकालसहितां श्रीमद्दक्षिणकालिकां तर्पयामि स्वाहा।**' इस वाक्य का उच्चारण करते हुए कर्ता तीन बार तर्पण करे।

तत्त्वशोधनम्

कर्ता विशेषार्घ्य का दोनों हाथों से स्पर्श कर निम्न सात मन्त्रों का उच्चारण करते हुए सम्पूर्ण शरीर का स्पर्श करे–

१. ॐ प्राणापानसमानोदानव्याना मे शुद्ध्यन्तां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा प्रकृतभूयास स्वाहा, २. ॐ पृथिव्यप्तेजो वाय्वाकाशानि मे शुद्ध्यन्तां०, ३. ॐ प्रकृत्य-हंकारबुद्धिमनः श्रोत्राणि मे शुद्ध्यन्तां०, ४. ॐ त्वक्चक्षुः जिह्वा घ्राणवचांसि मे शुद्ध्यन्तां०, ५. ॐ शब्दस्पर्शरूपरसगन्धा मे शुद्ध्यन्तां०, ६. पाणिपादपायूपस्थ शब्दा मे शुद्ध्यन्तां०, ७. वायुतेजः-भूसलिलम्यात्मानो मे शुद्ध्यन्तां०।

तदुपरान्त कर्ता अपनी दायीं हथेली पर श्रीपात्रामृत से अधोमुख त्रिकोण का निर्माण कर माष-प्रमाण शुद्धिखण्ड उसके तीनों कोनों पर एवं एक खण्ड मध्य में स्थापित करे। बायें अंगूठे, मध्यमा तथा अनामिका अंगुली से अग्रकोण का शुद्धिखण्ड '**ॐ क्री ह्रीं श्रीं आत्मतत्त्वेन स्थूलदेहं शोधयामि स्वाहा**' इस मन्त्र से, ऊपर के वामकोण का खण्ड '**ॐ क्रीं ह्रीं श्रीं विद्यातत्त्वेन सूक्ष्मदेहं शोधयामि स्वाहा**' से, दक्षकोण का खण्ड '**ॐ क्रीं ह्रीं श्रीं शिवतत्त्वेन परदेहं शोधयामि स्वाहा**' से और मध्य खण्ड को '**ॐ क्रीं ह्रीं श्रीं सर्वतत्त्वेन तत्त्वत्रयाश्रितजीवं शोधयामि स्वाहा**' से क्रमानुसार ग्रहण करे।

विन्दुस्वीकारम्

तत्पश्चात् कर्ता तत्त्वमुद्रा द्वारा द्वितीय तत्त्व को ग्रहण कर श्री पात्रस्थित अमृत-विन्दु का एक-एक बार निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए स्वीकार करे–

ॐ आर्द्रं ज्वलति ज्योतिरहमस्मि ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माहमस्मि अहमस्मि ब्रह्माहमस्मि योऽहमस्मि सोऽहमस्मि ब्रह्माहमस्मि अहमेवाहं मां जुहोमि स्वाहा।।१।।

ॐ त्वमेव प्रत्यक्षं सैवासि त्वामेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि ऋतं वदिष्यामि

सत्यं वदिष्यामि तन्मामवतु तद्वक्तारमवतु अवतु मां अवतु वक्तारं स्वाहा।।२।।

ॐ यश्छन्दसामृषभो विश्वरूपश्छन्देभ्योऽध्यमृतान् सम्बभूव, समेन्द्रो मेधया स्पृणोतु, अमृतस्य देवधारणो भूयासं शरीरं मे विचर्षणम्, जिह्वा मे मधुमत्तमा, कर्णाभ्यां भूरि विश्रूयम्, ब्रह्मणः काशोऽसि मेधयापहितः श्रवं मे गोपाय स्वाहा।।३।।

वटुकादि-पूजनम्

कर्ता लालचन्दन द्वारा त्रिकोणमण्डल का निर्माण कर **'ॐ मण्डलाय नमः'** इस नाम मन्त्र के द्वारा गन्ध एवं अक्षत से पूजनकर पूर्व दिशा में आधारसहित वटुक का, दक्षिण में योगिनियों का, पश्चिम में क्षेत्रपाल का और उत्तर में गणपति का बलिपात्र स्थापित करे। तदुपरान्त–

प्रथम–भैरवपात्रामृत द्वारा वटुकभैरव का कर्ता तर्पण कर बायें हाथ से तत्त्वमुद्रा द्वारा एवं दाँये हाथ से निम्न वाक्य का उच्चारण करते हुए उनकी पूजा करे–**'ॐ वटुकभैरवं तर्पयामि पूजयामि नमः'** पुनः निम्न वाक्य का उच्चारण करते हुए श्रीपात्रामृत से बायें हाथ की तत्त्वमुद्रा द्वारा बलि का उत्सर्ग करे–

ॐ एह्येहि देवीपुत्र वटुकनाथ कपिलजटाभारभासुर त्रिनेत्र ज्वालामुख सर्वविघ्नान्नाशय नाशय सर्वोपचारसहितं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा एष बलिः वां वटुकाय नमः।

द्वितीय–'ॐ योगिनीस्तर्पयामि पूजयामि नमः' इस वाक्य का उच्चारण करते हुए योगिनियों का तर्पण-पूजन कर निम्न वाक्यों का उच्चारण करते हुए कर्ता दायें हाथ की तत्त्वमुद्रा से बलि का उत्सर्ग करे–

ॐ ऊर्ध्वं ब्रह्माण्डतो वा दिवि गगनतले भूतले निष्कले वा सलिल-पवनयोर्यत्र कुत्र स्थिता वा। क्षेत्रे पीठोपपीठादिषु च कृतपदा धूपदीपादिकेन प्रीत्या देव्यः सदा नः शुभबलिविधिना पान्तु वीरेन्द्रवन्द्याः, यां योगिनीभ्यः स्वाहा सर्वयोगिनीभ्यो हुँ फट् स्वाहा एष बलिः सर्वयोगिनीभ्यो नमः।।

तृतीय–'ॐ क्षां क्षेत्रपालं तर्पयामि पूजयामि नमः' इस वाक्य का उच्चारण करने के पश्चात् निम्न श्लोक का उच्चारण कर्ता करे–

ॐ त्रिशूलं डमरुं चैव कपालं शङ्खमेव च।
दधानं कृष्णवर्णां तं भजेऽहं क्षेत्रपालकम्।।

फिर कर्ता निम्न वाक्यों का उच्चारण करते हुए बलि का उत्सर्ग करे–

क्षां क्षीं क्षूं क्षैं, क्षौं क्षः स्थानक्षेत्रपाल धूपदीपादिसहितं बलिं गृह्य गृह्य स्वाहा एष बलिः क्षां क्षेत्रपालाय नमः।

चतुर्थ–'ॐ गणपति तर्पयामि पूजयामि नमः' इस वाक्य का उच्चारण करते हुए गणपति का तर्पण एवं पूजन कर्ता करे। फिर निम्न वाक्यों का उच्चारण करते हुए गणपति की बलि का उत्सर्ग करे। **'गां गीं गं गैं गौं गः गणपते वर वरद सर्वजनं मे वशमानय बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा एष बलिः गं गणपतये नमः'।**

पञ्चम–'ॐ क्ष्रीं सर्वविघ्नकृदभ्यः सर्वेभ्यो भूतेभ्यो हुं फट् सर्वभूतं तर्पयामि पूजयामि नमः' इस वाक्य का उच्चारण करते हुए तर्पण एवं पूजन कर्ता करे। फिर निम्न वाक्यों का उच्चारण करते हुए बलि का उत्सर्ग करे– **क्ष्रीं सर्वविघ्नकृद्भ्यः सर्वेभ्यो भूतेभ्यो हुं फट् एष बलिः सर्वभूतेभ्यो नमः।**

षष्ठम्–'ॐ सर्वपथिकदेवतांस्तर्पयामि पूजयामि नमः' इस वाक्य का उच्चारण करते हुए कर्ता तर्पण एवं पूजन करे। फिर निम्न वाक्यौं का उच्चारण करते हुए बलि का उत्सर्ग करे–**एष बलिः सर्वपथिकदेवताभ्यो नमः।**

सप्तम–कर्ता निम्न वाक्य का उच्चारण करते हुए महाकालभैरव के लिए बलि का उत्सर्ग करे–**'हूं महाकालश्मशानाधिप इमं बलिं गृह्ण गृह्ण गृह्णापय गृह्णापय विघ्ननिवारणं कुरु कुरु सर्वसिद्धिं प्रयच्छ स्वाहा एष बलिः श्रीमहाकाल-भैरवाय नमः।'**

अष्टम–उपरोक्त बलियों को प्रदान करने के पश्चात् कर्ता अपनी इष्टदेवी दक्षिण काली के लिए निम्न वाक्य का उच्चारण करते हुए बलि का उत्सर्ग करे। **'ॐ ह्रीं श्रीं दक्षिणायै कालिकायै स्वाहा एष बलिर्नमः।'**

तदुपरान्त कर्ता **'एष वलिः शिवारूपजगदम्बायै श्रीदक्षिणकालिकायै नमः स्वाहा।'** इस नाम मन्त्र से रात्रि के पहले प्रहर में श्मशान में या नदी के तट अथवा निर्जन स्थानों में एक मनुष्य के पूर्ण आहार प्रमाण शिवावलि का निष्काम भाव से उत्सर्ग करे।

इसके उपरान्त कर्ता यन्त्रराज पर ॐ मण्डूकः कालाग्नि रुद्र, ह्रीं आधारशक्ति, मूलप्रकृति, कूर्म, शेष, पृथ्वी, सुधाम्बुधि, मणिद्वीप, चिन्तामणिगृह, श्मशानाष्टक, पारिजात, उसके नीचे रत्नवेदी, उस पर मणिपीठ, मणिपीठ के चारों ओर मुनिगण, देवगण, शिवगण, शवमुण्ड, फिर मणिपीठ के आग्नेय

कोण में धर्म, नैर्ऋत में ज्ञान, वायव्य में वैराग्य एवं ईशानकोण में ऐश्वर्य, पूर्व में अधर्म, दक्षिण में अज्ञान, पश्चिम में अवैराग्य और उत्तर में अनैश्वर्य, सम्वितत्रूपी कमलनाल, सर्वतत्त्वात्मक पद्म, प्रकृतिरूप पंखुड़ियाँ, विकारमय केशर, पञ्चाशद्वर्णवीजाढ्य कर्णिका, अग्निमण्डल, सूर्यमण्डल, चन्द्रमण्डल, सत्त्वगुण, रजोगुण, तमोगुण, आत्मा, अन्तरात्मा, परमात्मा, ह्रीं ज्ञानात्मा, दलों पर स्वाग्र दलक्रम से इच्छाशक्ति, ज्ञानशक्ति, क्रियाशक्ति, कामिनीशक्ति, कामदायिनी शक्ति, रतिशक्ति, रतिप्रियाशक्ति एवं नन्दाशक्ति, मध्य में उन्मनीशक्ति तथा इन सबके ऊपर 'हंसौः सदाशिवमहाप्रेतपद्मासन' इन पीठदेवताओं में शक्तियों का शक्तिपात्रामृत से और अन्य का विशेषार्घ्यामृत से एक-एक बार बायें हाथ से कर्ता तर्पण करे। फिर निम्न वाक्य का उच्चारण कर अपने दाहिने हाथ से गन्ध, पुष्प, अक्षत से पूजन करे–

'ॐ मण्डूकं तर्पयामि पूजयामि नमः'।

इष्टदेवतापूजनम्

कर्ता मूलमन्त्र के द्वारा यन्त्र के ऊपर तीन बार विशेषार्घ्य के बिन्दु प्रदान कर देवता की उपस्थिति का अनुभव निम्न श्लोकों का उच्चारण करते हुए करे–

ॐ देवेशि भक्तिसुलभे परिवारसमन्विते।
यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावत्त्वं सुस्थिरा भव।।
दुष्पारे घोरसंसारे सागरे पतितं सदा।
त्रायस्व वरदे देवि नमस्ते चित्परात्मिके।।
ये देवा याश्च देव्यश्च चलितायां चलन्ति हि।
आवाहयामि तान् सर्वान् कालिके परमेश्वरि।।
प्राणान् रक्ष यशो रक्ष रक्ष दारान् सुतान् धनम्।
सर्वरक्षाकरी यस्मात् त्वं हि देवि जगन्मये।।
प्रविश्य तिष्ठ यज्ञेऽस्मिन् यावत्पूजां करोम्यहम्।
सर्वानन्दकरे देवि सर्वसिद्धिं प्रयच्छ मे।।
तिष्ठात्र कालिके मातः सर्वकल्याणहेतवे।
पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शङ्करप्रिये।।

उपरोक्त श्लोकों का उच्चारण करने के पश्चात् कर्ता निम्न वाक्य का उच्चारण करते हुए तीन बार पुष्पाञ्जलि प्रदत्त करे–**ॐ शताभिषेकशमनय हुँ फट् स्वाहा।** फिर खड्गादि मुद्राएँ प्रदर्शित करे। इसके उपरान्त ही निम्न वाक्यों का उच्चारण कर देवता के षडङ्गों की भावना करे–**क्रां हृदयाय नमः। क्रीं शिरसे स्वाहा। क्रूं शिखायै वषट्। क्रैं कवचाय हूँ। क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। क्रः अस्त्राय फट्।** इसके उपरान्त अपनी अञ्जली को कर्ता अर्घ्य के तुल्य बनाकर परमीकरणमुद्रा द्वारा **'इह परमीकृता भव'** इस नाम मन्त्र से परमीकरण कर पाँच पुष्पाञ्जलि प्रदत्त करते हुए तीन बार तर्पण करे। फिर निम्न क्रमानुसार षोडशोपचारों से अपनी इष्टदेवी की पूजा करे।

ध्यानम्

श्मशानमध्ये कुणपाधिरूढां दिगम्बरां नीलरुचिस्त्रिनेत्राम्।
चतुर्भुजां भीषणहासयुक्तां कालीं स्वकीये हृदि चिन्तयामि।।

ॐ भगवत्यै श्रीदक्षिणकालिकायै नमः, ध्यानं समर्पयामि।

आवाहनम्

कालीदेवि! समागच्छ सर्वसम्पत् प्रदायिनि!।
यावद् व्रतं समाप्येत तावत्त्वं सन्निधौ भव।।

ॐ भगवत्यै श्रीदक्षिणकालिकायै नमः, आवाहनं समर्पयामि।

आसनम्

प्रतप्तकार्तस्वरनिर्मितं यत् प्रौढोल्लसद्रत्नगणैः सुरम्यम्।
दैत्यौघनाशाय प्रचण्डरूपे! सनाथ्यतामासनमेत्य देवि!।।

ॐ भगवत्यै श्रीदक्षिणकालिकायै नमः, आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

पाद्यम्

सुवर्णपात्रेऽतितमां पवित्रे भागीरथीवारिमयोपनीतम्।
सुरासुरैरर्चितपादयुग्मे गृहाण पाद्यं विनिवेदितं ते।।

ॐ भगवत्यै श्रीदक्षिणकालिकायै नमः, पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्यम्

दयार्द्रचित्ते मम हस्तमध्ये स्थितं पवित्रं घनसारयुक्तम्।
प्रफुल्लमल्लीकुसुमैः सुगन्धि गृहाण कल्याणि! मदीयमर्घ्यम्।।

ॐ भगवत्यै श्रीदक्षिणकालिकायै नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।

आचमनीयम्

समस्तदुःखौघविनाशदक्षे! सुगन्धितं फुल्लप्रशस्तपुष्पैः।
अये! गृहाणाचमनं सुवन्द्ये! निवेदनं भक्तियुतः करोमि।।

ॐ भगवत्यै श्रीदक्षिणकालिकायै नमः, आचमनीयं जलं समर्पयामि।

मधुपर्कम्

दधि-मधु-घृतैर्युक्तं पात्रयुग्मं समन्वितम्।
मधुपर्कं गृहाण त्वं शुभदा भव शोभने।।

ॐ भगवत्यै श्रीदक्षिणकालिकायै नमः, मधुपर्कं समर्पयामि।

स्नानम्

कर्पूरकाश्मीरजमिश्रितेन जलेन शुद्धेन सुशीतलेन।
स्वर्गापवर्गस्य फलप्रदाढ्ये स्नानं कुरु त्वं जगदेकधन्ये!।।

ॐ भगवत्यै श्रीदक्षिणकालिकायै नमः, स्नानीयं जलं समर्पयामि।

पञ्चामृतस्नानम्

पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भगवत्यै श्रीदक्षिणकालिकायै नमः, पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि। पंचामृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। आचमनीयं जलं समर्पयामि।

शुद्धोदकस्नानम्

शुद्धं यत्सलिलं दिव्यं गङ्गाजलसमं स्मृतम्।
समर्पितं मया भक्त्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भगवत्यै श्रीदक्षिणकालिकायै नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

वस्त्रम्

वस्त्रञ्च सोमदैवत्यं लज्जायास्तु निवारणम्।
मया निवेदितं भक्त्या गृहाण परमेश्वरि।।

ॐ भगवत्यै श्रीदक्षिणकालिकायै नमः, वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

यज्ञोपवीतम्

स्वर्णसूत्रमयं दिव्यं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वरि!।।

ॐ भगवत्यै श्रीदक्षिणकालिकायै नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।

सौभाग्यसूत्रम्

सौभाग्यसूत्रं वरदे! सुवर्णमणिसंयुते।
कंठे बध्नामि देवेशि! सौभाग्यं देहि मे सदा।।

ॐ भगवत्यै श्रीदक्षिणकालिकायै नमः, सौभाग्यसूत्रं समर्पयामि।

उपवस्त्रम्

कञ्चुकीमुपवस्त्रं च नानारत्नैः समन्वितम्।
गृहाण त्वं मया दत्तं शङ्करप्राणवल्लभे।।

ॐ भगवत्यै श्रीदक्षिणकालिकायै नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।

कुङ्कुमम्

कुङ्कुमं कान्तिदं दिव्यं कामिनीकामसम्भवम्।
कुङ्कुमेनार्चिते देवि! प्रसीद परमेश्वरि।।

ॐ भगवत्यै श्रीदक्षिणकालिकायै नमः, कुङ्कुमं समर्पयामि।

सिन्दूरम्

सिन्दूरमरुणाभासं जपाकुसुमसन्निभम्।
पूजिताऽसि मया देवि! प्रसीद परमेश्वरि!।।

ॐ भगवत्यै श्रीदक्षिणकालिकायै नमः, सिन्दूरं समर्पयामि।

गन्धम्

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।
विलेपनं च देवेशि! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भगवत्यै श्रीदक्षिणकालिकायै नमः, गन्धानुलेपनं समर्पयामि।

अक्षतान्

अक्षतान् निर्मलान् शुद्धान् मुक्ता-मणिसमन्वितान्।
गृहाणेमान् महादेवि! देहि मे निर्मलां धियम्।।

ॐ भगवत्यै श्रीदक्षिणकालिकायै नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पमालाम्

मन्दार-पारिजातादि-पाटाली-केतकानि च।
जाती-चम्पक-पुष्पाणि गृहाणेमानि शोभने!।।

ॐ भगवत्यै श्रीदक्षिणकालिकायै नमः, पुष्पमालां समर्पयामि।

बिल्वपत्राणि

अमृतोद्भवः श्रीवृक्षो महादेवप्रियः सदा।
बिल्वपत्रं प्रयच्छामि पवित्रं ते सुरेश्वरि।।

ॐ भगवत्यै श्रीदक्षिणकालिकायै नमः, बिल्वपत्राणि समर्पयामि।

दूर्वाङ्कुरान्

दूर्वादले श्यामले त्वं महीरूपे हरिप्रिये।
दूर्वाभिराभिर्भवतीं पूजयामि सदा शिवे।।

ॐ भगवत्यै श्रीदक्षिणकालिकायै नमः, दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

नानापरिमलद्रव्याणि

अबीरं च गुलालं च हरिद्रादिसमन्वितम्।
नानापरिमलं द्रव्यं गृहाण परमेश्वरि।।

ॐ भगवत्यै श्रीदक्षिणकालिकायै नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सौभाग्यद्रव्याणि

हरिद्रा-कुङ्कुमं चैव सिन्दूरादिसमन्वितम्।
सौभाग्यद्रव्यमेतद्वै गृहाण परमेश्वरि।।

ॐ भगवत्यै श्रीदक्षिणकालिकायै नमः, सौभाग्यद्रव्याणि समर्पयामि।

सुगन्धितद्रव्यम्

चन्दनागुरुकर्पूरैः संयुतं कुङ्कुमं तथा।
कस्तूर्यादिसुगन्धांश्च सर्वाङ्गेषु विलेपनम्।।

ॐ भगवत्यै श्रीदक्षिणकालिकायै नमः, सुगन्धितद्रव्यं समर्पयामि।

नवशक्तिपूजनम्

ॐ जयायै नमः। ॐ विजयायै नमः। ॐ अजितायै नमः। ॐ अपराजितायै नमः। ॐ नित्यायै नमः। ॐ विलासिन्यै नमः। ॐ दोग्ध्र्यै नमः। ॐ अघोरायै नमः। ॐ मङ्गलायै नमः।

इसके उपरान्त दक्षिणकालिका की आवरण पूजा करे। तदुपरान्त महाकालभैरव की पञ्चोपचार से पूजा कर तर्पण करे और उसके पश्चात् दक्षिणकालिका के पूजन के कृत्य को निम्न प्रकार से करे।

धूपम्

दशाङ्ग-गुग्गुलं धूपं चन्दना-ऽगरु-संयुतम्।
समर्पितं मया भक्त्या महादेवि! प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भगवत्यै श्रीदक्षिणकालिकायै नमः, धूपमाघ्रापयामि।

दीपम्

आज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेशि! त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

ॐ भगवत्यै श्रीदक्षिणकालिकायै नमः, दीपं दर्शयामि।

(हाथों को शुद्ध जल से धो लें)

नैवेद्यम्

अन्नं चतुर्विधं स्वादुरसैः षड्भिः समन्वितम्।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि! भक्तिं मे ह्यचलां कुरु।।

ॐ भगवत्यै श्रीदक्षिणकालिकायै नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा।

ॐ समानाय स्वाहा। ॐ ब्रह्मणे स्वाहा। आचमनीयं जलं समर्पयामि।
मध्ये पानीयं समर्पयामि। उत्तरापोशनं समर्पयामि। हस्तप्रक्षालनार्थे मुखप्रक्षालनार्थे
आचमनीयं जलं समर्पयामि।

ताम्बूलम्

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम्।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भगवत्यै श्रीदक्षिणकालिकायै नमः, मुखवासार्थे एलालवङ्गादिभिर्युतं
पुंगीफल–ताम्बूलं समर्पयामि।

द्रव्यदक्षिणाम्

राक्षसौघजयचण्डचरित्रे! किं ददामि निखिलं तव वस्तु।
भक्तिभावयुतदत्तसुवर्णदक्षिणां सफलयस्व तथापि।।

ॐ भगवत्यै श्रीदक्षिणकालिकायै नमः, द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

प्रदक्षिणाम्

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणा पदे पदे।।

ॐ भगवत्यै श्रीदक्षिणकालिकायै नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि।

विशेषार्घ्यः

पूजाफलसमृद्ध्यर्थं तवाग्रे परमेश्वरि!।
विशेषार्घं प्रयच्छामि पूर्णान् कुरु मनोरथान्।।

ॐ भगवत्यै श्रीदक्षिणकालिकायै नमः, विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

आर्तिक्यम्

सुवर्णपात्रस्थितचन्द्रखण्डैर्नीराजनां भक्तियुतः करोमि।
कारुण्यपूर्णे! जगदेकवन्द्ये! विधेहि दृष्ट्यां सफलां सुपूज्ये!।।

आरती

सुन मेरी देवी पर्वत पर रहनेवाली, कोई तेरा पार न पाया।
पान सुपारी ध्वजा नारियल, तुझको भेंट चढ़ाया।।
साड़ी, चोली तेरे अंग विराजे, केसर तिलक लगाया।
ब्रह्मा वेद पढ़ें तेरे द्वारे, शङ्कर ध्यान लगावें।।

नंगे-नंगे पैरों माता, राजा दौड़ा आया, सोने का छत्र चढ़ाया।
ऊँचे-ऊँचे पर्वत पर बना देवालय नीचे शहर बसाया।।
सतयुग, त्रेता, द्वापर मध्ये, कलियुग राज सवाया।
धूप दीप नैवेद्य आरती, सुमधुर भोग लगाया।।
ध्यान भगत तेरा गुन गाया, मनोवांछित फल पाया।
भगवती तेरी विलक्षण माया, पार किसी ने ना पाया।।

ॐ भगवत्यै श्रीदक्षिणकालिकायै नमः, आर्तिक्यं समर्पयामि।

पुष्पाञ्जलिः

त्रयीमये कल्मषपुञ्जहन्त्रि! प्रचण्डरूपे सुरसार्थपूज्ये!।
बद्धाञ्जलिस्तावकपादयुग्मे पुष्पाञ्जलिं देवि! समर्पयामि।।

ॐ भगवत्यै श्रीदक्षिणकालिकायै नमः, पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

प्रार्थना

मनो मृगो धावति सर्वदा मुधा विचित्रसंसारमरीचिकां प्रति।
अयेऽधुना किं स्वदया सरोवरं प्रकाश्य तस्मान्न निवर्तयिष्यसि।।

।। अनया पूजया श्रीदक्षिणकालिकादेव्यै प्रीयतां न मम समर्पयामि।।

दक्षिणकालिकाजपविधिः

जप प्रारम्भ करने से पूर्व कर्ता को प्राणायाम तथा षडङ्गन्यास करना चाहिए। जिसका क्रम इस प्रकार से है–**'क्रीं'** वीज का सोलह बार उच्चारण कर पूरक, चौंसठ बार पढ़कर कुम्भक, एवं बत्तीस बार उच्चारण करके रेचक करना चाहिए। इसके उपरान्त **'क्रां हृदयाय नमः। क्रीं शिरसे स्वाहा। क्रूं शिखायै वषट्। क्रैं कवचाय हुम्। क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। क्रः अस्त्राय फट्।'** तक के नाम मन्त्रों का उच्चारण करके हृदयादिन्यास करें। इसके पश्चात् निम्न श्लोक व वाक्य का उच्चारण करते हुए माला को दायें हाथ में लेवे–

ॐ माले माले महामाले सर्वतत्त्वस्वरूपिणी।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव।।

'ॐ ह्रीं मालायै नमः' तदुपरान्त जपकर्ता माला को हृदय स्थान पर लाकर मध्य भाग से दक्षिणकाली के मन्त्र द्वारा माला के एक-एक दाने को स्पर्श करते हुए सुमेरु का उल्लंघन न कर अपने गुरु का हृदय में ध्यान करते हुए देवी का जप करे। यह जप रुद्राक्ष माला या स्फटिक की माला जिसमें एक सौ आठ दाने हों, उससे भी किया जा सकता है। जप करने के पश्चात् निम्न श्लोक का उच्चारण करते हुए माला को सिर पर रखे–

ॐ त्वं माले सर्वभूतानां सर्वलोकप्रिया मता।
शिवं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च सर्वदा।।

इसके उपरान्त जपकर्ता **'ह्रीं सिद्ध्यै नमः'** इस नाम मन्त्र से उस माला का पूजन करे। इसके पूर्व बताई गई विधि से प्राणायाम एवं न्यास करे। फिर 'क्रीं' वीज का सोलह बार जप करते हुए पूरक, चौंसठ बार जप करते हुए कुम्भक एवं बत्तीस बार जप करते हुए रेचक प्राणायाम करके **'क्रां हृदयाय नमः। क्रीं शिरसे स्वाहा। क्रूं शिखायै वषट्। क्रैं कवचाय हूं। क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। क्रः अस्त्राय फट्'** मन्त्र पढ़कर न्यासादि कर्म करें। फिर गन्ध, पुष्प, अक्षत से देवी का पूजन कर पुष्पचन्दन एवं अक्षत से युक्त शंखोदक से देवी का निम्न श्लोकों के द्वारा ध्यान करते

हुए उनके बायें हाथ में जप समर्पित करे–

ॐ गुह्यातिगुह्य-गोप्त्री त्वं गृहाणाऽस्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान् महेश्वरि!।।

इसके उपरान्त जपकर्ता माला को सिर से उतारकर निम्न श्लोक का उच्चारण करते हुए माला का पूजन करे और उसे ऐसे स्थान पर रखे कि उस माला का स्पर्श अंन्य व्यक्ति न कर सके।

ॐ त्वं माले सर्वदेवानां सर्वसिद्धिप्रदा मता।
तेन सत्येन मे सिद्धिं देहि मातर्नमोऽस्तु ते।।

इसके उपरान्त दक्षिणकालिका देवी को आठ बार पुष्पाञ्जलि समर्पित कर उनके स्तोत्रों एवं कवचादि का विधिवत् पाठ करें।

दक्षिणकालिकानित्यहवनविधिः

कर्ता दक्षिणकालिका के हवनकर्म के लिए सबसे पहले अपने दायें भाग में एक हाथ लम्बा और एक हाथ चौड़ा, चार अंगुल जिसकी ऊँचाई हो, पवित्र मिट्टी से निर्मित स्थण्डिल का निर्माण करे। फिर उसे दक्षिणकाली के मूलमंत्र द्वारा अभिमंत्रित करके **'फट्'** मंत्र से कुशा के द्वारा उसका प्रोक्षण करके उसके आगे लाल चंदन से एक त्रिकोण बनाये। तदुपरान्त अग्निदेवता के मूलमंत्र के द्वारा **'फट्'** वाक्य का उच्चारण करके अस्त्र मुद्रा से रक्षण कर **'हूँ फट् कव्या देवेभ्यो नमः'** से अग्नि की एक चिनगी नैर्ऋत्य कोण में रख कर पुनः मूलमंत्र से स्थण्डिल पर अग्नि का स्थापन कर–**'ॐ भूः स्वाहा, ॐ भुवः स्वाहा, ॐ स्वः स्वाहा, ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा'** इन व्याहृतियों से हवन कर वह्नि के षडङ्गों की एक-एक आहुति विधिवत् अग्नि में प्रदान करे–

ॐ सहस्रार्चिषे हृदयाय नमः स्वाहा। ॐ स्वस्तिपूर्णाय शिरसे स्वाहा। ॐ उत्तिष्ठपुरुषाय शिखायै वषट् स्वाहा। ॐ धूमव्यापिने कवचाय हुँ स्वाहा। ॐ सप्तजिह्वाय नेत्रत्रयाय वौषट् स्वाहा। ॐ धनुर्द्धराय अस्त्राय फट् स्वाहा।

उपरोक्त हवन के पश्चात् निम्न वाक्य का उच्चारण करते हुए अग्नि में क्रम से तीन बार कर्ता आहुति प्रदान करे–

ॐ वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा।

अब कर्ता अग्नि में देवता का ध्यान करके एक फूल लेकर कच्छप मुद्रा से ग्रहण करे और निम्न वाक्य का उच्चारण करे–

ॐ क्रीं दक्षिणकालिके देवि इहागच्छ इहागच्छ। इह तिष्ठ।

पुनः कर्ता कालिका देवी को वैदिक, पौराणिक या तान्त्रिक मंत्र से एक पुष्पाञ्जलि समर्पित करें। इसके उपरान्त पंचोपचारों से या षोडशोपचारों से उनकी पूजा करके देवताओं के षडङ्गों की एक-एक आहुति निम्न क्रम से प्रदान करे–

ॐ क्रां हृदयाय स्वाहा। ॐ क्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ क्रूं शिखायै वषट् स्वाहा। ॐ क्रैं कवचाय हुँ स्वाहा। ॐ क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् स्वाहा। ॐ

क्रः अस्त्राय फट् स्वाहा।

कर्ता निम्न मंत्र का कम-से-कम पच्चीस बार उच्चारण करके प्रत्येक मन्त्र की आवृत्ति के साथ एक-एक आहुति अग्नि में प्रदान करे–

'ॐ क्रीं श्रीं दक्षिणकालिकायै स्वाहा'।

निम्न मंत्ररूपी वाक्य का उच्चारण करते हुए कर्ता तीन बार अग्नि में घृत की आहुति प्रदान करे–**ॐ क्रीं सांगायै सायुधायै सवाहनायै सपरिवारायै श्रीदक्षिणकालिकायै स्वाहा।**

पुनः कर्ता निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए सोलह आहुति अग्नि में प्रदान करे–

ॐ क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणकालिके क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।

तदुपरान्त कर्ता पान, सुपाड़ी, घी और अक्षत सभी को एक में मिलाकर–**'क्रीं वौषट्'** इस नाम मंत्र से अग्नि में पूर्णाहुति करे।

हवनकर्म के पश्चात् कर्ता–**'श्रीदक्षिणे कालिके पूजितासि प्रसीद क्षमस्व'** का उच्चारण करके विशेषार्घ्य अग्नि में छोड़े। फिर संहार मुद्रा से तेजोरूप देवता को अपने पास वापस ले आये। पुनः अग्नि का विसर्जन निम्न मंत्र का उच्चारण करके कर्ता करे–

ॐ भो भो वह्नि महाशक्ते सर्वकर्मप्रसाधक।
कर्मान्तरेऽपि सम्प्राप्ते सान्निध्यं कुरु सादरम्।।

हवन की समाप्ति के पश्चात् कर्ता स्थण्डिल में से स्रुवे द्वारा भस्म निकाल कर अपने मस्तक पर तिलक मूल मन्त्र के द्वारा ही करे। इसके पश्चात् पुष्पाञ्जलि स्तोत्रादि का पाठ करे।

कामाख्यापीठस्थित भगवतीकाली की महिमा

देवीतीर्थों में कामरूपतीर्थ का अत्यन्त माहात्म्य है। मृत्युलोक में इससे उत्तम कोई तीर्थ नहीं है। यहाँ भगवती स्वयं दस महाविद्याओं के रूप में विराजमान हैं। कामाख्यापीठ तन्त्रात्मक सिद्धपीठ है। इस पीठ का स्मरण करते हुए भगवती काली की निम्नलिखित स्तुति का पाठ करने का विशेष महत्त्व है–

कामाख्या कालिका देवी स्वयमाद्या सनातनी।
तस्याः पार्श्वे स्थिताश्चान्या नव विद्या महामते।। १ ।।
सर्वविद्यात्मिका काली कामाख्यारूपिणी यतः।
ततस्तां तत्र सम्पूज्य पूजयित्वेष्टदेवताम्।
इष्टमन्त्रं जपेद्भक्त्या सिद्धमन्त्रो भवेत्तदा।। २ ।।
ध्यायतां परमेशानीं कामाख्यां कालिकां पराम्।
रक्तवस्त्रपरीधानां घोरनेत्रत्रयोज्ज्वलाम्।। ३ ।।
चतुर्भुजां भीमदंष्ट्रां युगान्तजलदद्युतिम्।
मणिसिंहासने न्यस्तां सिंहप्रेताम्बुजस्थिताम्।। ४ ।।
हरिः सिंहः शवः शम्भुर्ब्रह्मा कमलरूपधृक्।
ललज्जिह्वां महाघोरां किरीटकनकोज्ज्वलाम्।। ५ ।।
अनर्घ्यमणिमाणिक्यघटितैर्भूषणोत्तमैः।
अलंकृतां जगद्धात्रीं सृष्टिस्थित्यन्तकारिणीम्।। ६ ।।
वामे तारा भगवती दक्षिणे भुवनेश्वरी।
अग्नौ तु षोडशीविद्या नैर्ऋत्यां भैरवी स्वयम्।। ७ ।।
वायव्यां छिन्नमस्ता च पृष्ठतो बगलामुखी।
ऐशान्यां सुन्दरी विद्या चोद्ध्र्वमातङ्गनायिका।। ८ ।।
याम्यां धूमावती विद्या महापीठस्य नारद।
अधस्ताद्भगवान्रुद्रो भस्माचलमयः स्वयम्।। ९ ।।
ब्रह्मविष्णुमुखाश्चान्ये देवाः शक्तिसमन्विताः।
सदा संनिहितास्तत्र पीठे लोके सुदुर्लभे।।१०।।
तत्र सम्पूजयेद्देवीं परिवारसमन्विताम्।
विविधैरुपचारैश्च यथाविभवविस्तरैः।।११।।
इच्छन्देव्याः परां प्रीतिं सद्भक्त्या प्रयतो नरः।
न पुनर्जननाशङ्का विद्यते मुनिसत्तम।।१२।।

(संक्षिप्त)

कालीचलमूर्तिप्रतिष्ठाविधानम्

ज्योतिषी के द्वारा दिये गये शुभमुहूर्त्त में भूमिपूजन करने के उपरान्त यजमान प्रायश्चित्तादिकर्म करे। तदुपरान्त आचार्य यजमान को सपत्नीक आसन पर बैठायें। उस समय यजमान की पत्नी को दाहिनी ओर बैठना चाहिए। फिर आचार्य निम्न तीन नामों का उच्चारण करते हुए यजमान से तीन बार आचमन करायें–

ॐ केशवाय नमः ॐ नारायणाय नमः ॐ माधवाय नमः।

आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करके यजमान को कुशा की पवित्री धारण करवाकर प्राणायाम करायें–

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्।।

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान के ऊपर और प्रतिष्ठा सामग्री की पवित्रता हेतु कुशा से जल छिड़कें–

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

आचार्य निम्न विनियोग व श्लोक का उच्चारण करके यजमान से आसन शुद्धि कर्म करायें–

ॐ पृथ्वीतिमन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता आसनपवित्र-करणे विनियोगः।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरु चासनम्।।

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करवा के यजमान से उसकी शिखा का बन्धन करायें–

ब्रह्मभावसहस्रस्य रुद्रभावशतस्य च।
विष्णोः संस्मरणार्थं हि शिखाबन्धं करोम्यहम्।।

यजमान घृतपूरित दीप को पृथ्वी पर अक्षत छोड़कर स्थापित कर प्रज्वलित करे और आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करवाते हुए यजमान से प्रार्थना करायें–

भो दीप! देवीरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्।
यावत्कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव।।

पुनः यजमान के दाहिने हाथ में अक्षत एवं पुष्प देकर आचार्य सहित सभी ब्राह्मण स्वस्तिवाचन करें। फिर भगवती काली की चलप्रतिष्ठा के निमित्त निम्न सङ्कल्प यजमान से आचार्य करायें–

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशति-तमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारते वर्षे आर्यावर्तैक-देशे, अमुकक्षेत्रे अमुकनद्याः अमुके तीरे विक्रमशके बौद्धावतारे अमुक-नाम्नि संवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे मासे अमुक-पक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुक-राशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथास्थानस्थितेषु सत्सु एवं गुणगणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रोऽमुकशर्माहं (वर्माऽहं, गुप्तोऽहं, दासोऽहं) सर्वापच्छांतिपूर्वक-दीर्घायुष्य-पुत्र-पौत्राद्यनवच्छिन्न-संततिवृद्धिस्थिरलक्ष्मी-कीर्तिलाभ-शत्रु-पराजय-सर्व-पापनिरसनसकलावाप्ति-सकलसुखप्राप्तिपूर्वकं जन्मकुण्डल्यां वर्षकुण्डल्यां गोचरे च अनिष्टग्रहशान्त्यर्थं देव-दनुज-मनुजकृत-सकल-कृत्यदोषोप-शमनार्थं-धर्मार्थ-काममोक्षप्राप्तिद्वारा श्रीकालीदेवीप्रीत्यर्थं काली-चलप्रतिष्ठाख्यं कर्म करिष्ये।

तदङ्गविहितं गणेशपूजनपूर्वकं पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं वसोर्द्धारापूजनं आयुष्यमन्त्रजपं नान्दीश्राद्धमाचार्यादिवरणानि च करिष्ये।

गणेशपूजन से नान्दीश्राद्ध तक के सभी वैदिक कर्मों को आचार्य इस पुस्तक में दी गयी, कालीपूजा के द्वारा करवायें। इसके उपरान्त यजमान एकतन्त्र से वरण करे।

एकतन्त्रेण वरणसंकल्पः

यजमान कालीचलप्रतिष्ठा कर्म को करवाने के निमित्त एकतन्त्र से आचार्य सहित सभी ब्राह्मणों का वरण निम्न संकल्प के द्वारा करें-

देशकालौ सङ्कीर्त्य–**शुभपुण्यतिथौ अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं (वर्माऽहं, गुप्तोऽहं दासोऽहं) अस्मिन् कालीचलप्रतिष्ठाकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः नानानाम-गोत्रान् नानानामधेयान् शर्मणः आचार्यादिब्राह्मणान् युष्मानहं वृणे।**

यजमानरक्षाबन्धनमन्त्राः

ॐ यदाबन्धन् दाक्षायणा हिरण्यर्ठ० शतानीकाय सुमनस्य मानाः। तन्मऽआबध्नामि शतशारदायायुष्माञ्जरदष्टिर्यथासम्।।

यजमानतिलककरणम्

ॐ स्वस्ति न ऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्वेवेदाः। स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।

आचार्य यजमान से मधुपर्क कर्म करायें, इसके पश्चात् यजमान ब्राह्मणों की प्रार्थना करें।

ब्राह्मणप्रार्थना:

ब्राह्मणाः सन्तु शास्तारः पापात्पान्तु समाहिताः।
वेदानां चैव दातारः पातारः सर्वदेहिनाम्।।१।।
जपयज्ञैस्तथा होमैर्दानैश्च विविधैः पुनः।
देवानां च ऋषीणां च तृप्त्यर्थं याजकाः स्मृताः।।२।।
येषां देहे स्थिता वेदाः पावयन्ति जगत्त्रयम्।
रक्षन्तु सततं ते मां जपयज्ञे व्यवस्थिताः।।३।।

ब्राह्मण लोग शासन करनेवाले हों, समाहित हो करके पाप से रक्षा करें और वेदों के ज्ञाता हों तथा सभी लोगों के रक्षक हों॥१॥ जप-यज्ञ-होम-विविध प्रकार के दान देवताओं और ऋषियों के तृप्ति के लिये याजक होते हैं (ऐसा कहा गया है)॥२॥ जिनके गृह (घर) में वेद स्थित है, वे तीनों लोकों को पवित्र करते हैं। जप-यज्ञ में व्यवस्थित होकर वे मेरी निरन्तर रक्षा करें॥३॥

ब्राह्मणा जङ्गमं तीर्थं त्रिषु लोकेषु विश्रुतम्।
तेषां वाक्योदकेनैव शुद्ध्यन्ति मलिना जनाः।। ४ ।।
पावनाः सर्ववर्णानां ब्राह्मणा ब्रह्मरूपिणः।
सर्वकर्मरता नित्यं वेदशास्त्रार्थकोविदाः।। ५ ।।
श्रोत्रियाः सत्यवाचश्च देवध्यानरताः सदा।
यद्वाक्यामृतसंसिक्ता ऋद्धिं यान्ति नरद्रुमाः।। ६ ।।
अङ्गीकुर्वन्तु कर्मैतत्कल्पद्रुमसमाशिषः।
यथोक्तनियमैर्युक्ता मन्त्रार्थे स्थिरबुद्धयः।। ७ ।।
यत्कृपालोचनात्सर्वा ऋद्धयो वृद्धिमाप्नुयुः।
प्रतिष्ठायां च मे पूज्याः सन्तु ते नियमान्विताः।। ८ ।।
उपवीती बद्धशिखो धीरो मौनी दृढव्रतः।
धौतवासाः पञ्चकच्छो द्विराचामः कृताह्निक।। ९ ।।
नैकवस्त्रो नान्तराले न द्वीपे नार्द्रवाससा।
न कुर्यात्कस्यचित्पीडां कण्ड्वालभनवर्जितः।।१०।।

ब्राह्मण चलते-फिरते तीर्थ हैं, ऐसा तीनों लोकों में प्रसिद्ध है। उनके वाक्योदक से अपवित्रजन शुद्ध होते हैं।।४।। ब्रह्मरूपी ब्राह्मण सभी वर्णों को पवित्र करनेवाले हैं, वेद और शास्त्र के अर्थ को जाननेवाले वे विद्वान् नित्य सभी कर्मों में लगे रहते हैं।।५।। श्रोत्रिय (वेद-विद्वान्) सत्य बोलने वाले और सदा देव (परमात्मा) के ध्यान में लीन रहने वाले होते हैं। जिनके वाक्यरूपी अमृत से संस्कृत होकर मनुष्य ऋद्धि (सम्पत्ति) को प्राप्त करते हैं।।६।। कल्पद्रुम के समान आशीर्वाद देने वाले, मन्त्रार्थ स्थिर बुद्धि वाले यथोक्त नियमों से युक्त होकर (हे ब्राह्मण देवता आपलोग) इस कर्म को स्वीकार करें।।७।। जिनके कृपापूर्ण अवलोकन से सभी ऋद्धियाँ वृद्धि को प्राप्त करती हैं, वे नियम से युक्त मेरी प्रतिष्ठा (यज्ञ) में आकर प्राप्त करें।।८।। उपवीती, बद्धशिखा, धीर, मौनी, दृढ़व्रत, धौतवास, पञ्चकच्छ, दो बार आचमन किये हुए नित्यकर्म किये हुए।।९।। न एक वस्त्र हो, न अन्तराल हो, न ही द्वीप हो, न गीला वस्त्र धारण किये हो, किसी अङ्ग की पीड़ा न करे तथा खुजली और स्पर्शादि न करे।।१०।।

अवैधं नाभ्यधः स्पर्शं कर्मकाले न कारयेत्।
न पदा पादमाक्रम्य न चैव हि तथा करौ।।११।।
जपकाले न भाषेत नान्यान्य पेक्षयेद्बुधः।
न कम्पयेच्छिरो ग्रीवां दन्तान्नैव प्रकाशयेत्।।१२।।
निरर्थकं न संलापो नाङ्गानां चालनं मुधा।
आचार्यकथने स्थेयान्न प्रतिग्रहमाचरेत्।।१३।।
हविष्याशी मिताहारी लोभदम्भविवर्जितः।
अत्वरः सकलान् मन्त्रान् जपे होमे प्रयोजयेत्।।१४।।
दूरतः सन्त्यजेत्सर्वं मादकद्रव्यसेवनम्।
न यज्ञमण्डपे हस्तपादप्रक्षालनं क्वचित्।।१५।।
नान्यं प्रतिनिधिं कुर्यान्न पर्युषितभुग्भवेत्।
वर्तमाने जपादौ च लघुशङ्कादिकं त्यजेत्।।१६।।
पवित्रपाणिस्तिलको ताम्बूलपरिवर्जनम्।
मञ्चखट्वादिशयन-प्रातराहारवर्जनम् ।।१७।।

कर्म के समय नाभि के नीचे (अंगों का) अवैध स्पर्श न करे (करावें), न पैर पर पैर चढ़ावे, न हाथ पर हाथ चढ़ाये।।११।। जप करते समय विद्वान् न (किसी से) वार्तालाप करे और न ही किसी की अपेक्षा करे। न शिर को कँपकपाये, न ही गर्दन को। अपने दाँतों को भी न दिखावें।।१२।। निरर्थक वार्ता (बातचीत) न करें, न ही व्यर्थ अपने शरीर के अंगों चलाये। आचार्य के कहने में रहे, प्रतिग्रह न ले।।१३।। हव्यान्न भोजन करे, थोड़ा खावे, लोभ तथा दम्भ से रहित हो, जप और होम में बिना शीघ्रता से सम्पूर्ण मन्त्रों का प्रयोग करें।।१४।। सभी मादक द्रव्यों का दूर से ही सेवन छोड़ दे। यज्ञ (प्रतिष्ठा) मण्डप में कभी भी हाथ-पैर न धोये।।१५।। दूसरे को अपना प्रतिनिधि न बनाये तथा बासी भोजन कदापि न करे। जप आदि के वर्तमान रहने पर लघुशंका आदि को छोड़ दे।।१६।। पवित्र-पाणि और तिलकयुक्त होना चाहिये, ताम्बूल को छोड़ देना चाहिये, मंच, खटिया आदि पर शयन तथा प्रातःकाल का जलपान छोड़ दे।।१७।।

परस्परमनिन्दां च न क्षौरं नातिभोजनम्।
मृगीमुद्रामुपाश्रित्य यथार्थं हुतमाचरेत्।।१८।।
अक्रोधनाः शौचपराः सततं ब्रह्मचारिणः।
देवध्यानरता नित्यं प्रसन्नमनसः सदा।।१९।।
('यूयं वै ब्राह्मणा सृष्टा मित्रत्वेनानुगृह्णता।
सौख्येनैवेहभवताभवत्पूतो नरः स्वयम्।।
भवतां प्रीतियोगेन स्वयं प्रीतः पितामहः।')
अदुष्टभाषणा सन्तु मा सन्तु परनिन्दकाः।
ममापि नियमा ह्येते भवन्तु भवतामपि।।२०।।
ऋत्विजश्च यथा पूर्वं शक्रादीनां मखेऽभवन्।
यूयं तथा मे भवत ऋत्विजोऽर्हणसत्तमाः।।२१।।
अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोभ्यर्थिता मया।
सुप्रसन्नैः प्रकर्तव्यं कर्मेदं विधिपूर्वकम्।।२२।।

ब्राह्मणा ब्रूयुः

वयं नियमसंयुक्तास्तव कर्तव्यतत्पराः।
कार्यं तव करिष्यामो विधिपूर्वं न संशयः।।२३।।

परस्पर निन्दा न करें, न क्षौर करायें, न अत्यधिक भोजन करें, मृगीमुद्रा बना करके यथार्थरूप से हवन करें।।१८।। क्रोध न करे, शौच परायण हो, निरन्तर ब्रह्मचारी हो, प्रतिदिन देवता में ध्यान लगाये, प्रसन्न मन से रहे।।१९।। (हे ब्राह्मण देवता! आपलोग चतुर्मुख ब्रह्माजी के द्वारा बनाये गये हैं, आपलोगों की मित्रता से, अनुग्रह करने से, साथ रहने से, यहाँ मनुष्य स्वयं पवित्र हो जाता है। आपलोगों की प्रीति के योग से स्वयं ब्रह्माजी प्रसन्न होते हैं) आप लोग दुष्ट भाषण न करे, न दूसरे की निन्दा करे, ये नियम मेरे लिये और आपके लिये अर्थात् दोनों के लिये ही है।।२०।। जैसे इन्द्र आदि के मख (यज्ञ) में पूर्व में ऋत्विक् थे, वैसे ही आप मेरे यहाँ हे परमपूज्य! ऋत्विक् होइये।।२१।। इस याग (प्रतिष्ठा) की निष्पत्ति (सिद्धि) में मेरे द्वारा आपलोग पूजित हैं, अतः परम प्रसन्न होकर आप लोगों के द्वारा यह कार्य, यह कर्मविधि करने योग्य है।।२२।। **ब्राह्मण बोलें**—हम लोग नियमयुक्त होकर आपके कर्तव्य (कार्य) में तत्पर होकर विधिपूर्वक आपके इस कार्य को करेंगे, इसमें सन्देह नहीं है।।२३।।

कर्तव्या नो क्रियाशंका वेदाज्ञा हि गरीयसी।
वेदिका नहि वेदाज्ञां लंघयन्ति कदाचन।।२४।।
त्वदधीनं त्वया कार्यं निःशंकं श्रद्धान्वितम्।
वयं सर्वं करिष्यामस्तवकार्यं न संशयः।।२५।।

यजमान ब्रूयात्

धन्योऽहं कृतकृत्योऽहं सौभाग्योऽहं धरातले।
प्रसादाद्भवतां विप्राः पवित्रोऽहं कृतोऽधुना।।२६।।
शक्त्या सर्वं करिष्यामि वचनाद्भवतां ततः।
आशीर्वादस्य सिद्धान्तं पूर्णं सर्वं भविष्यति।।२७।।
यथाविहितं कर्म कुरुत। यथाज्ञानं कारवामः।

वेद की आज्ञा गरीयसी (बड़ी) है। अत: इस क्रिया में शंका नहीं करनी चाहिये, क्योंकि वैदिक लोग वेद की आज्ञा का कभी उल्लंघन नहीं करते हैं।।२४।। आपके अधीन कार्य श्रद्धा से युक्त होकर आपको नि:शंक करना चाहिये। हम सब आपके कार्य को करेंगे। इसमें संशय नहीं है।।२५।। यजमान कथन–इस धरातल पर मैं धन्य हूँ और कृतकृत्य हूँ तथा सौभाग्यशाली भी हूँ, इसलिए हे विप्रो! आपलोगों के प्रसाद से मैं इस समय पवित्र कर दिया गया हूँ।।२६।। उसके बाद आपलोगों के वचन से मैं अपने सत्य के अनुसार समस्त कार्य करूँगा और अन्य लोगों के आशीर्वाद से सब पूर्ण होगा।।२७।।

विधि के अनुसार आपलोग (कालीचलप्रतिष्ठा) कर्म करें, ज्ञान के अनुसार हमलोग भी कर्म करते हैं।

ब्राह्मण प्रार्थना के उपरान्त सर्वप्रथम पक्ष में कुण्डमण्डप का निर्माण-कर या छायामण्डप बनाकर निम्न दो मंत्रों का उच्चारण करते हुए आचार्य उदुम्बर के पत्ते एवं दूर्वा के जलों से उस मण्डप का प्रोक्षण करें–

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे।।

ॐ शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शं न इन्द्रावरुणा रातहव्या। शमिन्द्रासोमा सुविताय शं योः शं न इन्द्रापूषणा वाजसेतौ।

आचार्य निम्न पौराणिक श्लोकों का उच्चारण करते हुए यजमान से प्रादेशान्तकर्म करवायें–

यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु।।१।।
अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।२।।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतोदिशम्।
सर्वेषामविरोधेन प्रतिष्ठाकर्म समारभे।।३।।
भूतानि राक्षसा वापि येऽत्र तिष्ठन्ति केचन।
ते सर्वेऽप्यपगच्छन्तु शान्तिकर्म करोम्यहम्।।४।।

भावार्थ–जो भूत इस स्थान का आश्रय लेकर सर्वदा रहता है। वह इस स्थान को छोड़कर वह जहाँ चाहे वहाँ चला जाय॥१॥ जो भूत (प्राणी) इस भूमि पर रहते हैं, वे भूत यहाँ से दूर चले जाएँ। जो भूत विघ्न करने वाले हैं, वे शिव की आज्ञा से विनष्ट हो जायँ॥२॥ सभी दिशाओं से भूत एवं पिशाच भाग जाएँ। सबके अनुरोध से (यहाँ) मैं प्रतिष्ठाकर्म आरम्भ कर रहा हूँ॥३॥ यहाँ जो कोई भूत अथवा पिशाच रहते हैं, वे सभी यहाँ से दूर चले जायें। (क्योंकि यहाँ मैं) शान्तिकर्म करने जा रहा हूँ॥४॥

प्रादेशान्त कर्म की समाप्ति के अनन्तर आचार्य निम्न क्रमानुसार

पञ्चगव्य बनायें–सर्वप्रथम आचार्य गायत्री[१]मन्त्र पढ़कर गोमूत्र '[२]गन्धद्वाराम्' इस मन्त्र से गोबर, 'आप्यायस्व[३]' इस मन्त्र से दूध 'दधि[४] क्राव्णो' इस मन्त्र से दधि 'घृतं मिमिक्षे[५]' इस मंत्र से घृत 'आपो हि ष्ठा:[६]' इस मन्त्र से कुशोदक एक पात्र में लेकर 'प्रणव' का उच्चारण करते हुए यज्ञीयकाष्ठ से मिलाये और प्रणव मन्त्र द्वारा ही उसे अभिमन्त्रित करे।

तदुपरान्त आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए पञ्चगव्य को दिशाओं में भूमि में और अन्तरिक्ष में छिड़कें–

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे।।

मण्डपपूजनम्

मण्डप में प्रवेश करने के पश्चात् यजमान एवं उसकी धर्मपत्नी से मण्डपपूजन के लिए आचार्य निम्न संकल्प करावें–

सङ्कल्पः–देशकालौ सङ्कीर्त्य–अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं (वर्माऽहं, गुप्तोऽहं, दासोऽहं) सपत्नीकोऽहं कालीचलप्रतिष्ठाङ्ग भूतं मण्डपदेवानां स्थापनं पूजनं करिष्ये।

संकल्प के उपरान्त निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए आचार्य एवं ब्राह्मण मण्डप-पूजन यजमान से करावें–

प्रथम–**ब्रह्मा–ॐ. ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।।**

---

१. ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।। (शु. ३०/२)

२. गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। इश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम्।। (ऋ० परि० ११ म० ९)

३. आप्यायस्व समेतु ते विश्वत: सोम वृष्णयम्। भवा वाजस्य संगथे। (शु० १२। १२)

४. दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्र ण आयूंषि तारिषत्।। (शु० २३। ३२)

५. घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम। अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहा कृतं वृषभ वक्षि हव्यम्। (शु० १७। ८८)

६. आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे। (शु० ११। ५०)

ॐ ऊद्ध्र्व ऽऊषुण ऽऊतये तिष्ठा देवो न सविता।। ऊद्ध्र्वो व्वाजस्य सनिता यदञ्जिभिर्व्वाघद्भिर्व्विह्वयामहे।।ॐ आयङ्गौः पृश्निरक्रमोदसदन्मातरं पुरः।। पितरञ्च प्रयन्त्स्वः।। ॐ यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु।। शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः।।

द्वितीय–विष्णु–ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पार्ठ०सुरे स्वाहा।।ॐ ऊद्ध्र्व ऽऊषु ण०।। ॐ आयङ्गौः०।। ॐ यतो यतः०।।

तृतीय–रुद्र–ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः।। ॐ ऊद्ध्र्व ऽऊषु ण०।। ॐ आयङ्गौः०।। ॐ यतो यतः०।।

चतुर्थ–इन्द्र–ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रर्ठ० हवे हवे सुहवर्ठ० शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रर्ठ० स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः।। ॐ ऊद्ध्र्व ऽऊषु ण०।। ॐ आयङ्गौः०।। ॐ यतो यतः०।।

पञ्चम्–सूर्य–ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्।। ॐ ऊद्ध्र्व ऽऊषु ण०।। ॐ आयङ्गौः०।। ॐ यतो यतः०।।

षष्ठम्–गणेश–ॐ गणानां त्वा गणपतिर्ठ० हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिर्ठ० हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिर्ठ० हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।। ॐ ऊद्ध्र्व ऽऊषु ण०।। ॐ आयङ्गौः०।। ॐ यतो यतः०।।

सप्तम–यम–ॐ यमाय त्वा मखाय त्वा सूर्यस्य त्वा तपसे। देवस्त्वा सविता मध्वानक्तु। पृथिव्याः सर्ठ० स्पृशस्पाहि। अर्चिरसि शोचिरसि तपोऽसि।। ॐ ऊद्ध्र्व ऽऊषु ण०।। ॐ आयङ्गौः०।। ॐ यतो यतः०।।

अष्टम–सर्प–नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।। ॐ ऊद्ध्र्व ऽऊषु ण०।। ॐ आयङ्गौः०।। ॐ यतो यतः०।।

नवम–स्कन्द–ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन्।। ॐ ऊद्ध्र्व ऽऊषु ण०।। ॐ आयङ्गौः०।। ॐ यतो यतः०।।

दशम–**वायु–ॐ वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि। नियुत्वान्सोम-पीतये।। ॐ ऊद्ध्र्व ऽऊषु ण०।। ॐ आयङ्गौः०।। ॐ यतो यतः०।।**

एकादश–**चन्द्र–ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे।। ॐ ऊद्ध्र्व ऽऊषु ण०।। ॐ आयङ्गौः०।। ॐ यतो यतः०।।**

द्वादश–**वरुण–ॐ इमं मे वरुण श्रुधी हवमद्या च मृडय। त्वामवस्युराचके।। ॐ ऊद्ध्र्व ऽऊषु ण०।। ॐ आयङ्गौः०।। ॐ यतो यतः०।।**

त्रयोदश–**अष्टवसु–ॐ वसुभ्यस्त्वा रुद्रेभ्यस्त्वाऽऽदित्येभ्यस्त्वा सञ्जानाथां द्यावापृथिवी मित्रावरुणौ त्वा वृष्ट्यावताम्। वयन्तु वयोऽक्तर्ठ० रिहाणा मरुतां पृषतीर्गच्छ वशापृश्निर्भूत्वा दिवं गच्छ ततो नो वृष्टिमावह। चक्षुष्पा अग्नेऽसि चक्षुर्मे पाहि।। ॐ ऊद्ध्र्व ऽऊषु ण०।। ॐ आयङ्गौः०।। ॐ यतो यतः०।।**

चतुर्दश–**कुबेर–ॐ सोमो धेनुर्ठ० सोमो अर्वन्तमाशुर्ठ० सोमो वीरं कर्मण्यं ददाति। सादन्यं विदथ्यर्ठ० सभेयं पितृश्रवणं यो ददाशदस्मै।। ॐ ऊद्ध्र्व ऽऊषु ण०।। ॐ आयङ्गौः०।। ॐ यतो यतः०।।**

पञ्चदश–**बृहस्पति–ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हा-द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।। ॐ ऊद्ध्र्व ऽऊषु ण०।। ॐ आयङ्गौः०।। ॐ यतोयतः०।।**

षोडश–**विश्वकर्मा–ॐ विश्वकर्मन्हविषा वर्धनेन त्रातारमिन्द्रमकृणोरवध्यम्। तस्मै विशः समनमन्त पूर्वीरयमुग्रो विहव्यो यथासत्।। ॐ ऊद्ध्र्व ऽऊषु ण०।। ॐ आयङ्गौः०।। ॐ यतो यतः०।।**

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान से प्रार्थना करवायें–

शेषादिनागराजानः समस्ता मम मण्डपे।
पूजाङ्गृह्णन्तु - सततं प्रसीदन्तु ममोपरि।।

आचार्य निम्न मंत्र और श्लोक का उच्चारण करते हुए यजमान से भूमि का स्पर्श करायें–

ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री।।

पृथिवी यच्छ पृथिवीन्दृर्ठ० ह पृथिवीं माहिर्ठ० सीः।। भूमिभूमिमवगान्माता यथा मातरमप्यगात्। भूयास्म पुत्रैः पशुभिर्यो नो द्वेष्टि स भिद्यताम्।।

भूमिभूमिमवगान्माता यथा मातरमप्यगात्।
भूयास्म पुत्रैः पशुभिर्यो नो द्वेष्टि स भिद्यताम्।।

पुनः यजमान अपने दोनों हाथों में पुष्पाञ्जलि के लिए पुष्प ले।

नमस्ते पुण्डरीकाक्ष नमस्ते विश्वभावन।
नमस्तेऽस्तु हृषीकेश महापुरुषपूर्वज।।

ॐ नृसिंह उग्ररूप ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल स्वाहा। ॐ नमः शिवाय—इन नामों का उच्चारण करके पुष्पाञ्जलि को मण्डप की भूमि में यजमान से छोड़वा दें।

तोरणपूजनम्

यजमान से निम्न संकल्प करवा के आचार्य तोरण की पूजा करवायें—

देशकालौ सङ्कीर्त्य—अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं (वर्माऽहं, गुप्तोऽहं, दासोऽहं) सपत्नीकोऽहं कालीचलप्रतिष्ठाङ्गभूतं तोरणपूजनं करिष्ये।

आचार्य एवं ब्राह्मण निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए यजमान से तोरण-पूजन करवायें—

ॐ अग्निमीले पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्।।१।। ॐ इषे त्वोर्जे त्वा वायवस्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायदूध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा वस्तेन ईशत माघशर्ठ० सो दध्रुवा अस्मिन्गोपतौ स्यात बह्विर्यजमानस्य पशून्पाहि।।२।। ॐ अग्न आयाहि वीतये गृणानो हव्यदातये। निहोता सत्सि बर्हिषि।।३।। ॐ शन्नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः।।४।।

मण्डपद्वारपूजनम्

यजमान अपनी पत्नी के साथ पूर्व दिशा की ओर जायें और आसन पर बैठकर आचमन एवं प्राणायाम करें। इसके पश्चात् आचार्य निम्न संकल्प मण्डप-द्वार पूजन के निमित्त यजमान से करवायें—

देशकालौ सङ्कीर्त्य—अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं (वर्माऽहं, गुप्तोऽहं, दासोऽहं) अस्मिन् कालीचलप्रतिष्ठाकर्मणि पूर्वादिद्वारा पूजा करिष्ये।

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्रर्ठ० हवे हवे सुहवर्ठ० शूरमिन्द्रम्। ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्रर्ठ० स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः।।१।।

ॐ आशुः शिशानो वृषभो न भीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्।। सङ्क्रन्दनो निमिषऽ एकवीरः शतर्ठ० सेना ऽअजयत्साकमिन्द्रः।।२।।

ॐ त्वन्नो ऽअग्ने तव देवपायुभिर्म्मघोनो रक्ष तन्वश्च वन्द्य। त्राता तोकस्य तनये गवामस्य निमेषर्ठ० रक्षमाणस्तव व्रते।।३।।

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुपब्रुवे। देवाँ२।। ऽआसादयादिह।।४।।

ॐ यमाय त्त्वाङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्मः पित्रे।।५।।

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामम्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु।।६।।

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोद्ध्युरुशर्ठ० स मा न आयुः प्रमोषीः।।७।।

ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमर्ठ० श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम।।८।।

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरद्ध्वरर्ठ० सहस्त्रिणीभिरुप याहि यज्ञम्। वायो ऽअस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः।।९।।

ॐ वायो ये ते सहस्त्रिणो रथासस्तेभिरागहि। नियुत्वान्त्सोमपीतये।।१०।।

ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्त्रवन्तु नः।।११।।

ॐ वयर्ठ० सोम व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रत। प्रजावन्तः सचेमाहि।।१२।।

ॐ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम्। भवा वाजस्य सङ्गथे।।१३।।

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।।१४।।

ॐ असमे रुद्रा मेहना पर्वतासो वृत्रहत्ये भरहूतौ सजोषाः। यः शर्ठ० सते स्तुवते धायि पज्र इन्द्रज्येष्ठा अस्माँ२।। अवन्तु देवाः।।१५।।

ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसी मतः सुरुचो वेन आवः।। स बुध्न्या ऽउपमा ऽअस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः।।१६।।

ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनि। यच्छानः शर्म सप्रथाः।।१७।।

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।।१८।।

ॐ आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।।१९।।

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः।।२०।।

ॐ नमोऽस्तु रुद्रेभ्यो ये दिवि येषां वर्षमिषवः। तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः।। तेभ्यो नमो ऽअस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्दिष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः।।२१।।

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु। ये ऽअन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।।२२।।

केवलं नामाऽनुक्रमेण सर्वतोभद्रपूजनं स्थापनं च

यजमान के दायें हाथ में जल, अक्षत, पुष्प और यथाशक्ति द्रव्य रखवाकर आचार्य सर्वतोभद्रमण्डल के देवताओं के स्थापन और पूजन के लिये निम्न संकल्प करायें।

देशकालौ सङ्कीर्त्य–अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं (वर्माऽहं, गुप्तोऽहं, दासोऽहं) सपत्नीकोऽहं कालीचलप्रतिष्ठाकर्मणि महावेद्यां सर्वतोभद्रमण्डले वा ब्रह्मादिदेवतानां स्थापनं पूजनं च करिष्ये।

एक समकोण चौकी पर सफेद रंग का नवीन वस्त्र बिछायें। चौकी पर उस वस्त्र को सुतली से चारों पायों सहित बाँध दें, चौकी पर बिछाये गये नवीन सफेद वस्त्र के ऊपर आचार्य सर्वतोभद्रमण्डल का निर्माण करें तथा उसमें ब्रह्मादिदेवों का उन्हीं के मंत्रों से आवाहन, स्थापन एवं रोली से पूजन करायें। तदुपरान्त सर्वतोभद्र के मध्य में सिंहासन या किसी शुद्ध पात्र में भगवती काली की स्वर्ण प्रतिमा को स्थापित करें। पुनः आचार्य व

सभी ब्राह्मण निम्न नाममन्त्रों का उच्चारण करते हुए सर्वतोभद्रमण्डल के देवताओं का स्थापन करायें।

१. (मध्ये कर्णिकायाम्) ॐ भूर्भुवः स्वः ब्रह्मणे नमः, ब्रह्माणमावाहयामि स्थापयामि।

२. (उत्तरे वाप्याम्) ॐ भू० सोमय नमः, सोममावाहयामि स्थापयामि।

३. (ईशान्यां खण्डेन्दौ) ॐ भू० ईशानाय नमः, ईशानमावाहयामि स्थापयामि।

४. (पूर्वे वाप्याम्) ॐ भू० इन्द्राय नमः, इन्द्रमावाहयामि स्थापयामि।

५. (आग्नेय्यां खण्डेन्दौ) ॐ भू० अग्नये नमः, अग्निमावाहयामि स्थापयामि।

६. (दक्षिणे वाप्याम्) ॐ भू० यमाय नमः, यममावाहयामि स्थापयामि।

७. (नैर्ऋत्यां खण्डेन्दौ) ॐ भू० निर्ऋतये नमः, निर्ऋतिमावाहयामि स्थापयामि।

८. (पश्चिमे वाप्याम्) ॐ भू० वरुणाय नमः, वरुणमावाहयामि स्थापयामि।

९. (वायव्यां खण्डेन्दौ) ॐ भू० वायवे नमः, वायुमावाहयामि स्थापयामि।

१०. (वायु-सोमयोर्मध्ये भद्रे) ॐ भू० एकादशरुद्रेभ्यो आवाहयामि स्थापयामि।

११. (सोमेशानयोर्मध्ये भद्रे) ॐ भू० एकादशरुद्रेभ्यो नमः, एकादश-रुद्रानावाहयामि स्थापयामि।

१२. (ईशानेन्द्रमध्ये भद्रे) ॐ भू० द्वादशादित्येभ्यो नमः, द्वादशादि-त्यानावाहयामि स्थापयामि।

१३. (इन्द्राग्निमध्ये भद्रे) ॐ भू० अश्विभ्यां नमः, अश्विनी आवाहयामि स्थापयामि।

१४. (अग्नि-यममध्ये भद्रे) ॐ भू० सपैतृकविश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः, सपैतृकविश्वान् देवानावाहयामि स्थापयामि।

१५. (यम-निर्ऋतिमध्ये भद्रे) ॐ भू० सप्तयक्षेभ्यो नमः, सप्तयक्षानावाहयामि स्थापयामि।

१६. (निर्ऋति-वरुणमध्ये भद्रे) ॐ भू० अष्टकुलनागेभ्यो नमः, अष्टकुलनागानावाहयामि स्थापयामि।

१७. (वरुण-वायुमध्ये भद्रे) ॐ भू० गन्धर्वाऽप्सरोभ्यो नमः, गन्धर्वाऽ-प्सरसः आवाहयामि स्थापयामि।

१८. (ब्रह्म-सोममध्ये वाप्यां लिंगे वा) ॐ भू० स्कन्दाय नमः, स्कन्दमावाहयामि स्थापयामि।

१९. (तत्रैव स्कन्दोत्तरतः) ॐ भू० वृषभाय नमः, वृषभमावाहयामि स्थापयामि।

२०. (तदुत्तरे) ॐ भू० शूलाय नमः, शूलमावाहयामि स्थापयामि।

२१. (अनेनैव मन्त्रेण तदुत्तरे) ॐ भू० महाकालाय नमः, महाकालमावाहयामि स्थापयामि।

२२. (ब्रह्मेशानमध्ये शृङ्खलायाम्) ॐ भू० दक्षादिसप्तगणेभ्यो नमः, दक्षादिसप्तगणानावाहयामि स्थापयामि।

२३. (ब्रह्मेन्द्रमध्ये वाप्याम्) ॐ भू० दुर्गायै नमः, दुर्गामावाहयामि स्थापयामि।

२४. (तत्पूर्वे) ॐ भू० विष्णवे नमः, विष्णुमावाहयामि स्थापयामि।

२५. (ब्रह्माग्निमध्ये शृङ्खलायाम्) ॐ भू० स्वधायै नमः, स्वधा-मावाहयामि स्थापयामि।

२६. (ब्रह्म-यममध्ये वाप्याम्) ॐ भू० मृत्युरोगेभ्यो नमः, मृत्युरोगानावाहयामि स्थापयामि।

२७. (ब्रह्म-निर्ऋतिमध्ये शृङ्खलायाम्) ॐ भू० गणपतये नमः, गणपमिावाहयामि स्थापयामि।

२८ (ब्रह्म-वरुणमध्ये वाप्याम्) ॐ भू० अद्भ्यो नमः, अपः आवाहयामि स्थापयामि।

२९. (ब्रह्म-वायुमध्ये शृङ्खलायाम्) ॐ भू० मरुद्भ्यो नमः, मरुतः आवाहयामि स्थापयामि।

३०. (ब्रह्मणः पादमूले) ॐ भू० पृथिव्यै नमः, पृथ्वीमावाहयामि स्थापयामि।

३१. (तदुत्तरे) ॐ भू० गङ्गादिनदीभ्यो नमः, गङ्गादिनदीः आवाहयामि स्थापयामि।

३२. (तदुत्तरे) ॐ भू० सप्तसागरेभ्यो नमः, सप्तसागरानावाहयामि स्थापयामि।

३३. (कर्णिकापरिधौ) ॐ भू० मेरवे नमः, मेरुमावाहयामि स्थापयामि।

३४. (ततः सत्त्वबाह्यपरिधौ सोमादिक्रमेण) ॐ भू० गदाय नमः, गदामावाहयामि स्थापयामि।

३५. (ईशान्याम्) ॐ भू० त्रिशूलाय नमः, त्रिशूलमावाहयामि स्थापयामि।

३६. (पूर्वे) ॐ भू० वज्राय नमः, वज्रमावाहयामि स्थापयामि।

३७. (आग्नेय्याम्) ॐ भू० शक्तये नमः, शक्तिमावाहयामि स्थापयामि।

३८. (दक्षिणे) ॐ भू० दण्डाय नमः, दण्डमावाहयामि स्थापयामि।

३९. (नैर्ऋत्याम्) ॐ भू० खड्गाय नमः, खड्गमावाहयामि स्थापयामि।

४०. (पश्चिमे) ॐ भू० पाशाय नमः, पाशमावाहयामि स्थापयामि।

४१. (वायव्याम्) ॐ भू० अङ्कुशाय नमः, अङ्कुशमावाहयामि स्थापयामि।

४२. (तद्बाह्ये उत्तरे रक्तपरिधौ सोमादिक्रमेण) ॐ भू० गौतमाय नमः, गौतममावाहयामि स्थापयामि।

४३. (ईशान्याम्) ॐ भू० भरद्वाजाय नमः, भरद्वाज़मावाहयामि स्थापयामि।

४४. (पूर्वे) ॐ भू० विश्वामित्राय नमः, विश्वामित्रमावाहयामि स्थापयामि।

४५. (आग्नेय्याम्) ॐ भू० कश्यपाय नमः, कश्यपमावाहयामि स्थापयामि।

४६. (दक्षिणे) ॐ भू० जमदग्नये नमः, जमदग्निमावाहयामि स्थापयामि।

४७. (नैर्ऋत्याम्) ॐ भू० वसिष्ठाय नमः, वसिष्ठमावाहयामि स्थापयामि।

४८. (पश्चिमे) ॐ भू० अत्रये नमः, अत्रिमावाहयामि स्थापयामि।

४९. (वायव्याम्) ॐ भू० अरुन्धत्यै नमः, अरुन्धतीमावाहयामि स्थापयामि।

५०. (पूर्वे) ॐ भू० ऐन्द्र्यै नमः, ऐन्द्रीमावाहयामि स्थापयामि।

५१. (आग्नेय्याम्) ॐ भू० कौमार्य्यै नमः, कौमारीमावाहयामि स्थापयामि।

५२. (दक्षिणे) ॐ भू० ब्राह्म्यै नमः, ब्राह्मीमावाहयामि स्थापयामि।

५३. (नैर्ऋत्याम्) ॐ भू० वाराह्यै नमः, वाराहीमावाहयामि स्थापयामि।

५४. (पश्चिमे) ॐ भू० चामुण्डायै नमः, चामुण्डामावाहयामि स्थापयामि।

५५. (वायव्ये) ॐ भू० वैष्णव्यै नमः, वैष्णवीमावाहयामि स्थापयामि।

५६. (उत्तरे) ॐ भू० माहेश्वर्यै नमः, माहेश्वरीमावाहयामि स्थापयामि।

५७. (ईशान्याम्) ॐ भू० वैनायक्यै नमः, वैनायकीमावाहयामि स्थापयामि।

इसके उपरान्त यजमान मूर्ति का निर्माण करने वाले शिल्पकार का सत्कार अर्थात् उसे द्रव्यादि से प्रसन्न करके उससे मूर्ति ले आयें। भगवती काली की मूर्ति मण्डप में आ जाने के पश्चात् आचार्य निम्न दो मन्त्रों का उच्चारण करते हुए जलाधिवासकर्म को करवायें–

ॐ अव ते हेलो वरुण नमोभिरव यज्ञेभिरीमहे हविर्भिः। क्षयन्न-स्मभ्यमसुर प्रचेता राजन्नेनांसि शिश्रथः कृतानि।।

ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम।।

प्रार्थना

स्वागतं देवदेवेशि विश्वरूपे नमोऽस्तु ते।
श्रद्धे च त्वदधिष्ठाने शुद्धिकर्म सहस्व भो।।

भूतशुद्धि आदि करके निम्नलिखित मातृकान्यास, पुरुषसूक्तन्यास तक करे, वे इस प्रकार है–

मातृकान्यासः

१. ॐ अं नमः तालुके। २. ॐ आं नमः मुखे। ३. ॐ इं नमः दक्षिणनेत्रे। ४. ॐ ईं नमः वाम नेत्रे। ५. ॐ उं नमः दक्षिणश्रोत्रे। ६. ॐ ऊं नमः वामश्रोत्रे। ७. ॐ ॠं नमः दक्षिण गंडे। ८. ॐ ॠं नमः वामगंडे। ९. ॐ लृं नमः दक्षिण चिबुके। १०. ॐ लॄं नमः वामचिबुके। ११. ॐ एं नमः उर्ध्व दशनेषु। १२. ॐ ऐं नमः अधोदशनेषु। १३. ॐ ओं नमः ऊर्ध्वोष्ठे। १४. ॐ औं नमः अधरोष्ठे। १५. ॐ अं नमः ललाटे। १६. ॐ अं नमः जिह्वायाम्। १७. ॐ यं नमः त्वचि रं चक्षुषोः। १८. ॐ लं नमः नासिकाय। १९. ॐ वं नमः दशनेषु। २०. ॐ शं नमः श्रोतयोः। २१. ॐ षं नमः उदरे। २२. ॐ सं नमः कटिदेशै। २३. ॐ हं नमः हृदये। २४. ॐ क्षं नमः नाभ्याम्। २५. ॐ कं नमः लिंगे। २६. ॐ पं फं बं भं मं नमः दक्षिणबाहौ। २७. ॐ तं थं दं धं नं नमः वामबाहौ। २८. ॐ टं ठं डं ढं णं नमः दक्षिणजंघायाम्। २९. ॐ चं छं जं झं ञं नमः वामजंघायाम्। ३०. ॐ कं खं गं घं ङं नमः सर्वांगुलीय।

पुरुषसूक्तन्यासः

ॐ सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिर्ठ० सर्वत स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।।वामकरे।।
पुरुष एवेदर्ठ० सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।।दक्षिणकरे।।
एतावानस्य महिमातो ज्यायांश्च पूरुषः।
पादो ऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।।वामपादे।।
त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि।।दक्षिणपादे।।
ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः।
स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः।।वामजानौ।।
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्।
पशूंस्तांश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये।।दक्षिणजानौ।।
तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।
छन्दार्ठ०सि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मादजायत।।वामकट्याम्।।
तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः।।दक्षिणकट्याम्।।
तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषं जातमग्रतः।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये।।नाभौ।।
यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्।
मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमूरू पादा उच्येते।।हृदये।।
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यार्ठ० शूद्रोऽ अजायत।।वामबाहौ।।
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।दक्षिणबाहौ।।
नाभ्या आसीदन्तरिक्षर्ठ० शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ २।। अकल्पयन्।।कण्ठे।।
यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।मुखे।।

सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिःसप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्पुरुषं पशुम्।।अक्ष्णोः।।
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।अस्त्राय फट्।।
ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहूराजन्यः कृतः।
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यार्ठ० शूद्रो अजायत।।हृदयाय नमः।।
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।।शिरसे स्वाहा।।
नाभ्या आसीदन्तरिक्षर्ठ० शीर्ष्णोद्यौः समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ अकल्पयन्।।कवचाय हुम।।
यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः।।नेत्रत्रयाय वौषट्।।
सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्पुरुषं पशुम्।।शिखायै वषट्।।
यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।अस्त्राय फट्।।

उपरोक्त न्यासों को करवाने के पश्चात् आचार्य निम्न न्यासों को यजमान से भगवती काली की मूर्ति में करवायें।

निवृत्यादिन्यासः

ॐ ह्रीं अं निवृत्यै नमः शिरसि न्यासामि। ॐ ह्रीं आँ प्रतिष्ठायै नमः मुखे न्यासामि। ॐ ह्रीं इं विद्यायै नमः दक्षिणनेत्रे न्यासामि। ॐ ह्रीं ईं शान्त्यै नमः वामनेत्रे न्यासामि। ॐ ह्रीं उं धुन्धिकायै नमः दक्षिणश्रोते न्यासामि। ॐ ह्रीं ऊं दीपिकायै नमः वामश्रोते न्यासामि। ॐ ह्रीं ऋं रेचिकायै नमः दक्षनासापुटे न्यासामि। ॐ ह्रीं ॠं मोचिकायै नमः वामनासापुटे न्यासामि। ॐ ह्रीं लृं सूक्ष्मायै नमः वामकपोले न्यासामि। ॐ ह्रीं एं सूक्ष्मामृतायै नमः ऊर्ध्वदंतेषु न्यासामि। ॐ ह्रीं ऐं ज्ञानामृतायै नमः अधोदंतेषु न्यासामि। ॐ ह्रीं ओं सावित्र्यै नमः ऊर्ध्वोष्ठे न्यासामि। ॐ ह्रीं औं व्यापिन्यै नमः अधरोष्ठे न्यासामि। ॐ ह्रीं अं सुरूपायै नमः जिह्वायां न्यासामि।

ॐ ह्रीं अंः अनंतायै नमः कण्ठे न्यासामि। ॐ ह्रीं कं सृष्ट्यै नमः दक्ष-बाहुमूले न्यासामि। ॐ ह्रीं खं ऋध्यै नमः दक्षकूर्परे न्यासामि। ॐ ह्रीं गं स्मृत्यै नमः दक्षमणिबन्धे न्यासामि। ॐ ह्रीं घं मेघायै नमः दक्षकरांगुलिमूलेषु न्यासामि। ॐ ह्रीं ङं घन्त्यै नमः दशाङ्गुल्यग्रेषु न्यासामि। ॐ ह्रीं चं लक्ष्म्यै नमः वामबाहुमुले न्यासामि। ॐ ह्रीं छं द्युत्यै नमः वामकूर्परे न्यासामि। ॐ ह्रीं जं स्थिरायै नमः वाममणिबन्धे न्यासामि। ॐ ह्रीं झं स्थित्यै नमः वामांगुलिमुले न्यासामि। ॐ ह्रीं ञं सिध्यै नमः वामांगुल्यग्रेषु न्यासामि। ॐ ह्रीं टं जरायै नमः दक्षपादमूले न्यासामि। ॐ ह्रीं ठं पालिन्यै नमः दक्षजानुनि न्यासामि। ॐ ह्रीं डं शान्त्यै नमः दक्षगुल्फे न्यासामि। ॐ ह्रीं ढं ऐश्वर्यै नमः दक्षपादाङ्गुलीषु न्यासामि। ॐ ह्रीं णं रत्यै नमः वामपादमूले न्यासामि। ॐ ह्रीं तं कामिन्यै नमः वामपादमूले न्यासामि। ॐ ह्रीं थं रदायै नमः वामजानुनि न्यासामि। ॐ ह्रीं दं ह्रादिन्यै नमः वामगुल्फेन्यासामि, वामपादाङ्गुल्यग्रेषु न्यासामि। ॐ ह्रीं धं प्रीत्यै नमः वामपादाङ्गुलिमूले न्यासामि। ॐ ह्रीं नं दीर्घायै नमः वामांगुल्यग्रेषु न्यासामि। ॐ ह्रीं पं तीक्ष्णायै नमः दक्षिणकुक्षौ न्यासामि। ॐ ह्रीं फं सुप्त्यै नमः वामकुक्षौ न्यासामि। ॐ ह्रीं बं अभयायै नमः पृष्ठे न्यासामि। ॐ ह्रीं भं निद्रायै नमः नाभौ न्यासामि। ॐ ह्रीं मं मात्रे नमः उदरे न्यासामि। ॐ ह्रीं यं शुद्धायै नमः हृदि न्यासामि। ॐ ह्रीं रं क्रोधिन्यै नमः कंठे न्यासामि। ॐ ह्रीं लं कृपायै नमः ककुदि न्यासामि। ॐ ह्रीं वं उत्कटायै नमः स्कन्धयो न्यासामि। ॐ ह्रीं शं मृत्यवे नमः दक्षिणकरे न्यासामि। ॐ ह्रीं षं पीताय नमः वामकरे न्यासामि। ॐ ह्रीं सं श्वेतायै नमः दक्षपादे न्यासामि। ॐ ह्रीं हं अरुणायै नमः वामपादे न्यासामि। ॐ ह्रीं त्रं असितायै नमः मूर्धापादान्तं न्यासामि। ॐ ह्रीं क्षं सर्वसिद्धिगौर्यै नमः पादादिमूर्धानां न्यासामि।

वशिन्यादिन्यासः

ॐ अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं एं ऐं ओं औं अं अः क्लृं वासिनीवाग्देवतायै नमः ब्रह्मरन्ध्रे न्यासामि।।१।।

ॐ कं खं गं घं ङं क्लीं ह्रीं कामेश्वरीवाग्देवतायै नमः ललाटे न्यासामि।।२।।

ॐ चं छं जं झं ञं क्लीं मोदिनीवाग्दैवतायै नमः भ्रूमध्ये न्यासामि।।३।।

ॐ टं ठं डं ढं णं ब्ल्यूं विमलावाग्देवतायै नमः कण्ठे न्यासामि।।४।।

ॐ तं थं दं धं नं क्लीं अरुणावाग्देवतायै नमः हृदि न्यासामि।।५।।

ॐ पं फं बं भं मं हस्लब्ल्यूं जयनीवाग्देवतायै नमः नाभौ न्यासामि।।६।।

ॐ यं रं लं वं हस्पब्यूं सर्वेश्वरीवाग्देवतायै नमः आधारे न्यासामि।।७।।

ॐ शं षं हं क्षं क्ष्मीं कौलिनीवाग्देवतायै नमः सर्वाङ्गे न्यासामि।।८।।

ततः—'खड्गाय से पादादि शिरपर्यन्त' तक के सभी न्यासों को भगवती काली की मूर्ति में करें। तदुपरान्त काली के मूल मन्त्र का न्यास आचार्य अथवा मन्त्र शास्त्री से जानकर ही यजमान करे। इसके पश्चात् 'क्राँ' इत्यादि दीर्घबीज से करांङ्गुली न्यास करने के पश्चात् यजमान षडङ्गन्यास कर देवी का ध्यान करें। इसके पश्चात् निम्न मंत्र का उच्चारण करके भगवती काली की मूर्ति को बारह बार मिट्टी से शुद्ध करें–

ॐ स्योना पृथिवी नो भवान्नृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः।।

पुनः मूर्ति के उत्तर भाग में स्थण्डिल का निर्माण कर उसके चारों कोनों पर चार कलश स्थापित कर प्रथम कलश में सप्तमृत्तिका, द्वितीय कलश में क्षीरवृक्षत्वक्, तृतीय कलश में यवशाली, चतुर्थ कलश में गन्ध पुष्प डालकर निम्न मंत्र से अभिमंत्रित करें–

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे।।

तत्पश्चात् निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए आचार्य यजमान से प्रथम कलश के जल से मूर्ति का अभिषेक कराये–

ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः।।

पुनः निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए आचार्य यजमान से द्वितीय कलश के जल से मूर्ति का अभिषेक करायें–

ॐ तस्मा अरं गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः।।

आचार्य पुनः निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए यजमान से तृतीय कलश के जल से मूर्ति का अभिषेक करायें–

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्त्रवन्तु नः।

उपरोक्त मन्त्र का पुनः उच्चारण करते हुए आचार्य यजमान से चतुर्थ कलश के जल से मूर्ति का अभिषेक करायें।

अभिषेक के पश्चात् यजमान घृत से भगवती काली की मूर्ति का लेपन कर उस पर निम्न उबटन (उद्वर्तन) लगायें।

१-चंदन, २-कर्पूर, ३-इलायची, ४-काचौर, ५-उशीर, ६-शतपत्र, ७-भद्र-मुस्ता। इनको चूर्ण कर दुग्ध में मिलाकर निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए दस बार अभिमंत्रित करें–

मन्त्रः—यां सां चंद्रचूड़ नीलकंठ-जटाजूटवृत्तसुशीतामोदवाहना-रुतांग-प्रत्यंगावय वधातुभ्यं एतन् मूर्ते निष्काश्यदाहताप शमय शमयसुशीतल त्वं कुरु कुरु देहि देहि यां सां स्वाहा।।

निम्न मंत्र का आचार्य उच्चारण करते हुए यजमान से मूर्ति में उद्वर्तन लगवाएँ–

ॐ या ओषधी पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा। मनैनु बभ्रूणामहर्ठ० शतं धामानि सप्त च।।

भगवती काली की चलप्रतिष्ठा में अग्न्युत्तारणकर्म करें अथवा न करें। तत्पश्चात् आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण यजमान से करवाते हुए मूर्ति पर जलधारा गिरवायें–

ॐ पवमानः सुवर्जनः पवित्रेण विचर्षणि। यः पोता स पुनातु मा।। पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनवो धिया। पुनन्तु विश्व आयवः जातवेदः पवित्रवत्।। पवित्रेण पुनाहि शुक्रेण देव दीद्यत्। अग्ने कृत्वा क्रतूँ रनु।। यत्रे पवित्रमर्चिषि आने वितत मन्तरा। ब्रह्म तेन पुनीमहे।। उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च। इन्द्र ब्रह्म पुनीमहे।।

इसके उपरान्त आचार्य पायसबलिदान यजमान से करायें। पायसबलि प्रदान करवाने के पश्चात् जलपूर्ण वस्त्रवेष्ठित तथा आम्रपल्लव विभूषित आठ कलशों को आचार्य निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए यजमान से आठों दिशाओं में क्रमानुसार स्थापित करवायें–

१. ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

२. ॐ य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः। यस्य छायामृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

३. ॐ यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव। य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

४. ॐ यस्येमे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्रं रसया सहाहुः। यस्येमाः प्रदिशो यस्य बाहु कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

५. ॐ येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन स्व स्तभितं येन नाकः। यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

६. ॐ यं क्रन्दसी अवसा तस्तभाने अभ्यैक्षेतां मनसा रेजमाने। यत्राधि सूर उदितो विभाति कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

७. ॐ आपो ह यद्बृहतीर्विश्वमायन् गर्भं दधाना जनयन्तीरग्निम्। ततो देवानां समवर्ततासुरेकः कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

८. ॐ यश्चिदापो महिना पर्यपश्यद् दक्षं दधाना जनयन्तीर्यज्ञम्। यो देवेष्वधि देव एक आसीत् कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

आचार्य आठों दिशाओं में आठों कलशों को स्थापित करवाने के पश्चात् यजमान से आठ दीपकों को प्रज्वलित करवा के समीप में रखवायें, तत्पश्चात् किसी तेजस पात्र में घृत और शहद मिलाकर स्वर्ण (सोने) की शलाका से काली की मूर्ति के दक्षिण नेत्र का उन्मीलन आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए यजमान से करवायें–

ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्नेः।।

उपरोक्त कर्म की समाप्ति के पश्चात् आचार्य निम्न दो मन्त्रों का उच्चारण करें–

ॐ यजिष्ठं त्वा ववृमहे देवं देवत्रा होमारममर्त्यम्। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्।।

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभिषिञ्चाम्यसौ।।

तत्पश्चात् यजमान शलाका को जल से स्वच्छ करे और मधु लेकर मूर्ति के वामनेत्र का उन्मीलन करते समय आचार्य निम्न वैदिक मन्त्र का उच्चारण करें–

ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम

शरदः शतठ० शृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्।।

निम्न तीनों मन्त्रों का उच्चारण आचार्य सहित सभी ब्राह्मण करें। उस समय वहाँ ब्राह्मण एवं आचार्य के अतिरिक्त कोई भी अन्य सदस्य न हों–

१. ॐ सुपर्णा वाचमक्रतोप द्यव्या खरे कृष्णा इषिरा अनर्तिषुः। न्य ङ्गि यन्नत्युपरस्य निष्कृतं पुरू रेतो दधिरे सूर्यश्वितः।

२. ॐ उद्वयं तमसस्परि स्वः पश्यन्त उत्तरम्। देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।

३. ॐ चित्रं देवानामुदगादनीकं चक्षुर्मित्रस्य वरुणस्याग्ने।।

तत्पश्चात् भगवती काली देवी को अन्नराशि प्रदान करें और दर्पण दिखायें। इसके साथ ही साथ मन्त्र घोष एवं वाद्य घोष करें तथा निम्न मन्त्र का उच्चारण करके आचार्य तथा प्रतिष्ठा-स्थल पर उपस्थित अन्य ब्राह्मण देवी को शुद्धजल से स्नान करायें–

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽ-रुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः।।

आचार्य निम्न मन्त्रों का उच्चारण करते हुए देवी को स्नान करायें–

ॐ समुद्रज्येष्ठाः सलिलस्य मध्यात् पुनाना यन्त्यनिविशमानाः। इन्द्रो या वज्री वृषभो रराद् ता आपो देवीरिह मामवन्तु।।

ॐ या आपो दिव्या उत वा स्त्रवन्ति खनित्रिमा उत वा याः स्वयंजाः। समुद्रार्था याः शुचयः पावकास्ता आपो देवीरिह मामवन्तु।।

ॐ यासां राजा वरुणो याति मध्ये सत्यानृते अवपश्यञ्जनानाम्। मधुश्चुतः शुचयो याः पावकास्ता आपो देवीरिह मामवन्तु।।

ॐ यासु राजा वरुणो यासु सोमो विश्वे देवा यासूर्जं मदन्ति। वैश्वानरो यास्वग्निः प्रविष्टस्ता आपो देवीरिह मामवन्तु।।

भगवती काली की मूर्ति को स्नान करवाने के पश्चात् निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए आचार्य वस्त्रयुग्म आच्छादित करें–

ॐ अभि वस्त्रा सुवसनान्यर्षाऽभि धेनूः सुदुघाः पूयमानः। अभि चन्द्रा भर्तवे नो हिरण्या ऽभ्यश्वान् रथिनो देव सोम।।

आचार्य निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए यजमान से मूर्ति के दाहिने हाथ में श्वेत ऊनी धागा बधवाएँ–

ॐ कनिक्रदज्जनुषं प्रब्रुवाण इयर्ति वाचमरितेव नावम्। सुमङ्गलश्च शकुने भवासि मा त्वा का चिदभिभा विश्व्या विदत्।।

भगवती काली की मूर्ति के दायें हाथ में श्वेत ऊनी धागा बँधवाने के पश्चात् आचार्य व सभी ब्राह्मण पुरुषसूक्त के सोलह मन्त्रों का उच्चारण करते हुए भगवती काली की स्तुति यजमान से करायें। पुरुषसूक्त से काली देवी की स्तुति करवाने के पश्चात् आचार्य निम्न दो मंत्रों का उच्चारण करते हुए भगवती काली की भूतशुद्धि करवायें–

१. ॐ विश्वकर्मन् हविषा वावृधानः स्वयं यजस्व पृथिवीमुत द्याम्। मुह्यन्त्वन्ये अभितो जनास इहास्माकं मधवा सूरिरस्तु।।

२. ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

तन्त्रोक्त भूतशुद्धि–**ॐ भूत श्रृगाराच्छिरः सुषुम्ना पथे न जीव शिवं परं शिव पदे योजयामि स्वाहाः।। १।। ॐ यँ लिङ्गाशरीरं शोषय-शोषय स्वाहा।। २।। ॐ रँ संकोच शरीरं दह दह स्वाहा।। ३।। ॐ परम शिव सुषुम्नापथेन मूल षृि मूल सोल्लस ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल सोऽहं हंसः स्वाहाः।। ४।।**

प्राणप्रतिष्ठा

तदनन्तर भगवती काली की मूर्ति के सिर या हृदय को स्पर्श कर प्राणप्रतिष्ठा करें, उसके पूर्व निम्न विनियोग करें–

अस्य प्राणप्रतिष्ठामन्त्रस्य ब्रह्म-विष्णु-रुद्रा ऋषयः, ऋग्यजुःसामानि छन्दांसि। क्रियामयवपुः प्राणाख्या देवता। आं बीजं। ह्रीं शक्तिः। क्रौं कीलकं श्रीकालीदेव्याः प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः।

इसके पश्चात् ऋष्यादियों का निम्न क्रम से सिर-मुख-हृदय-नाभि गुह्यस्थान और पैरों मे न्यास करें।

ॐ ब्रह्मविष्णुमहेश्वरेभ्यो ऋषिभ्यो नमः–शिरसि। ॐ ऋग्यजुःसामछन्देभ्यो नमः–मुखे। ॐ चैतन्यरूपायै प्राणशक्त्यै देवतायै नमः–हृदि। ॐ आं

बीजाय नमः—गुह्यस्थाने। ॐ शक्त्यै नमः —पादयो। ॐ कं खं गं घं ङं अं पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशात्मने ॐ हृदयाय नमः—हृदय। ॐ चं छं जं झं ञं इं शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने ईं शिरसे स्वाहा—सिर। ॐ टं ठं डं ढं णं उं श्रोत्रत्वक्चक्षुजिह्वाघ्राणात्मने ॐ शिखायै वषट्—शिखा। ॐ तं थं दं धं नं एं वाक्पाणिपादपायूपस्थात्सने ऐं कवचाय हुम्—कवच। ॐ पं फं बं भं मं ॐ वचनादानविहरणोत्सर्गानन्दात्मने ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्—नेत्र। ॐ अं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं मनोबुद्ध्यहङ्कारचित्तात्मने अः अस्त्राय फट्—अस्त्र।

इस प्रकार से भगवती काली की मूर्ति में न्यास करके, उपर्युक्त कर्म के पश्चात् देवी का स्पर्श कर जप करें—

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः कालीदेव्याः प्राणाः इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः कालीदेव्याः जीव इह स्थितः।। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः कालीदेव्याः सर्वेन्द्रियाणि। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सः कालीदेव्याः वाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणइहागत्यस्वस्तये सुखं चिरं तिष्ठतु स्वाहा।

तत्पश्चात् आचार्य निम्न सूक्त का जप अर्चित हृदय में अंगूठे को देखकर जप करें—

ॐ ध्रुवा द्यौर्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वतो इमे। ध्रुवं विश्वमिदं जगद् ध्रुवो राजा विशामयम्।।१।।

ॐ ध्रुवं ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः। ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्।।२।।

ॐ ध्रुवं ध्रुवेण हविषा ऽभि सोमं मृशामसि। अथो त इन्द्रः केवलीर्विशो बलिहृतस्करत्।।३।।

आचार्य निम्न श्लोक का उच्चारण यजमान से करावें—

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

उपरोक्त कर्म के पश्चात् प्रणव (ॐ) से रोककर देवी का सजीव ध्यान करे। पुनः निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए काली की मूर्ति के सिर में हाथ रखकर उनका ध्यान करें—

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात्।
सं बाहुभ्यां धमति सं पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः।।

प्राणप्रतिष्ठा के पश्चात् आचार्य श्रीसूक्त व पुरुषसूक्त के मन्त्रों का उच्चारण करते हुए भगवती काली का उपस्थान करायें, उसके पश्चात् आचार्य यजमान से निम्न प्रार्थना करवायें–

स्वागतं देव-देवेशि मद्भाग्यात्त्वमिहागता।
धर्मार्थं काममोक्षार्थं स्थिरा भव शुभासने।।

तत्पश्चात् आचार्य निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए यजमान से भगवती काली के पैर से सिर तक का स्पर्श करायें–

हरिः ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञठं० समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामों ३ प्रतिष्ठ।।

आचार्य एवं सभी ब्राह्मण निम्न पाँच मन्त्रों का तीन बार उच्चारण करें–

ॐ इहवैधि माप च्योष्ठाः पर्वत इवाविचाचलिः। इन्द्र इवेह ध्रुवस्तिष्ठे ह राष्ट्र मु धारय।।१।।

ॐ इममिन्द्रो अदीधरद् ध्रुवं ध्रुवेण हविषा। तस्मै सोमो अधि ब्रवत् तस्मा उ ब्रह्मणस्पतिः।।२।।

ॐ ध्रुवा द्यौर्ध्रुवा पृथिवी ध्रुवासः पर्वतो इमे। ध्रुवं विश्वमिदं जगद् ध्रुवो राजा विशामयम्।।३।।

ॐ ध्रुवं ते राजा वरुणो ध्रुवं देवो बृहस्पतिः। ध्रुवं त इन्द्रश्चाग्निश्च राष्ट्रं धारयतां ध्रुवम्।।४।।

ॐ ध्रुवं ध्रुवेण हविषा ऽभि सोमं मृशामसि। अथो त इन्द्रः केवलीर्विशो बलिहृतस्करत्।।५।।

आचार्य एवं ब्राह्मण निम्न पौराणिक श्लोकों एवं वैदिक मन्त्रों का उच्चारण करते हुए, क्रमानुसार भगवती काली देवी को पाद्य-आचमन करावे तथा पञ्चामृत से स्नान करायें–

पाद्यम्

सुवर्णपात्रेऽतितमां पवित्रे भागीरथीवारिमयोपनीतम्।
सुरासुरैरर्चितपादयुग्मे गृहाण पाद्यं विनिवेदितं ते।।

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्।
श्रियं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्।।

आचमनीयम्

समस्तदुःखौघविनाशदक्षे! सुगन्धितं फुल्लप्रशस्तपुष्पैः।
अये! गृहाणाचमनं सुवन्द्ये! निवेदनं भक्तियुतः करोमि।।
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मिनीमीं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे।।

पञ्चामृतस्नानम्

दुग्धेन दध्ना मधुना घृतेन संसाधितं शर्करया सुभक्त्या।
आलोकतृप्ति कृतलोक! देवि! पञ्चामृतं स्वीकुरु लोकपूज्ये!।।

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्त्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

ॐ इमा आपः शिवतमा, इमाः सर्वस्य भेषजीः। इमा राष्ट्रस्य वर्धनीरिमा राष्ट्रभृतोमृताः।। याभिरिन्द्रमभ्यषिञ्चत्प्रजापतिः सोमं राजानं वरुणं यमं मनुम्। तांभिरद्भिरभि षिञ्चामित्यामहं राज्ञां त्वमधिराजो भवेह। महान्तं महीनां सम्राजं चर्षणीनां देवीजनित्र्यजीजनन्दद्राजजनित्र्यजीजनत्।।

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यामग्नये स्तेजज्ञा सूर्यस्य वर्चसेन्द्रस्येन्द्रियेणाभिषिञ्चामि।।

उपरोक्त मंत्रों का उच्चारण करके आचार्य भगवती काली देवी का अभिषेक यजमान से करायें। तत्पश्चात् निम्न श्रीसूक्त, रुद्रसूक्त का उच्चारण करके आचार्य काली की मूर्ति को स्नान करायें।

श्रीसूक्तम्

हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरणमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म ऽआ वह।।१।।
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।।२।।
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्।
श्रियं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्।।३।।

कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम्।। ४ ।।
चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मिनीमीं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे।। ५ ।।
आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा या बाह्या अलक्ष्मीः।। ६ ।।
उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्ति मृद्धिं ददातु मे।। ७ ।।
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्।। ८ ।।
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम्।। ९ ।।
मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।।१०।।
कर्दमेन प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।।११।।
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।।१२।।
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।।१३।।
आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।।१४।।
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्।।१५।।
यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्।।१६।।

रुद्रसूक्तम्

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः।।१।।

या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि।।२।।

यामिषुं गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरु मा हिंऽ०सीः पुरुषं जगत्।।३।।

शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि। यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मऽं० सुमना असत्।।४।।

अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्। अहींऽं०श्च सर्व्वान् जम्भयन् सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परा सुव।।५।।

असौ यस्ताम्रो अरुण उत बभ्रुः सुमङ्गलः। ये चैनऽं० रुद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैषाऽं० हेड ईमहे।।६।।

असौ योऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अदृश्रन्नदृश्रन्नु-दहार्यः स दृष्टो मृडयाति नः।।७।।

नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे। अथो ये अस्य सत्वानोऽहं तेभ्योऽकरं नमः।।८।।

प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्याम्। याश्च ते हस्त इषवः परा ता भगवो वप।।९।।

विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ२ उत। अनेशन्नस्य या इषव आभुरस्य निषङ्गधिः।।१०।।

या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः। तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परि भुज।।११।।

परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथो इषुधिस्तवारे अस्मन्निधेहि तम्।।१२।।

अवतत्य धनुष्ट्वऽं० सहस्राक्ष शतेषुधे। निशीर्य शल्यानां मुखा शिवो नः सुमना भव।।१३।।

नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे। उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने स्वाहा।।१४।।

मा नो महान्तमुत मा नो अर्भकं मा न उक्षन्तमुत मा न उक्षितम्। मा नो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्वो रुद्र रीरिषः स्वाहा।।१५।।

मा नस्तोके तनये मा न आयुषि मा नो गोषु मा नो अश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे स्वाहा।। १६।।

इसके उपरान्त आचार्य वस्त्रादिक उपचारों से यजमान से भगवती काली देवी की मूर्ति का पूजन भी करायें। तत्पश्चात् आचार्य शान्त्यादिहोम, बलिदान करवाने के पश्चात् निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए यजमान से अग्निदेवता का पूजन करायें–

ॐ अग्ने नय सुपथा राये अस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्। युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठां ते नम उक्तिं विधेम।।

किसी बड़े पात्र से तिलों को ग्रहण कर दाहिने हाथ से घी भर कर स्त्रुव को ले दाहिने पैर की जाँघ को मोड़कर ब्रह्मा से स्पर्श कर इस मन्त्र से स्विष्टकृत संज्ञक आहुति यजमान से प्रदान करायें तथा स्त्रुवे में बचे घृत का त्याग आचार्य प्रोक्षणी पात्र में यजमान से ही करायें–

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते न मम।।

पश्चात्–अग्निदेव के दक्षिण अग्नि के पीछे पश्चिम देश में पूर्वाभिमुख बैठकर स्त्रुव के द्वारा कुण्ड से भस्म लेकर निम्न नाम मंत्रों से यजमान क्रमानुसार ललाट-गले-दाहिने बाहु और हृदय में भस्म लगायें–

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः–ललाट में लगायें। **ॐ कश्यपश्य त्र्यायुषम्**–गले में लगावें। **ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम्**–दाहिने बाहु में लगायें। **ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्**–हृदय में लगायें।

यजमान से निम्न श्लोक का उच्चारण करवा के विसर्जन करायें–

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ! स्वस्थाने परमेश्वरि।
यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन!।।

विसर्जन के पश्चात् यजमान संकल्प करके ही आचार्य को गोदान एवं दक्षिणा देवें।

दक्षिणा के पश्चात् ब्राह्मण-भोजन करवाने से पूर्व पुनः निम्न संकल्प यजमान करें–

कृतस्यकालीचलप्रतिष्ठाकर्म समृद्धयेयथाशक्ति-ब्राह्मणान् भोजयिष्यामि।

संकल्प के पश्चात् ब्राह्मणों को प्रेम व आदर-सत्कार से भोजन करायें। ब्राह्मण-भोजन के पश्चात् यजमान दीन, अनाथजनों को निम्न संकल्प करके भूयसी दक्षिणा एवं अन्नादिक भी प्रदान करें।

कृतेऽस्मिन् कालीचलप्रतिष्ठाकर्मणिन्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थं दीनानाथेभ्यश्च यथाशक्ति भूयसीं दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृज्ये।।

यजमान सपत्नीक, पुत्र-पौत्रादि व अपने सम्बन्धियों तथा अपने इष्टमित्रों के साथ भगवती काली देवी के प्रसाद को ग्रहण करें।

।।इति।।

ककारादिकालीसहस्रनामस्तोत्रम्

ध्यानम्

शवारूढां महाभीमां घोरद्रंष्ट्रां हसन्मुखीम्।
चतुर्भुजां खड्ग-मुण्डवराभयकरां शिवाम्।।१।।
मुण्डमालाधरां देवीं ललज्जिह्वां दिगम्बराम्।
एवं संचिन्तयेत् कालीं श्मशानालयवासिनीम्।।२।।

स्तोत्रम्

कैलासशिखरे रम्ये नानादेवगणावृते।
नानावृक्षलताकीर्णे नानापुष्पैरलङ्कृते।।१।।
चतुर्मण्डलसंयुक्ते शृङ्गारमण्डपे स्थिते।
समाधौ संस्थितं शान्तं क्रीडन्तं योगिनीप्रियम्।।२।।
तत्र मौनधरं दृष्ट्वा देवी पृच्छति शङ्करम्।

पार्वत्युवाच

किं त्वया जप्यते देव! किं त्वया स्मर्यते सदा।।३।।
सृष्टिः कुत्र विलीनाऽस्ति पुनः कुत्र प्रजायते।
ब्रह्माण्डकारणं यत् तत् किमाद्य कारणं महत्।।४।।

ध्यान—शवारूढ़, महाभीम, घोरदंष्ट्रावाली, हँसते हुए मुखवाली, चार भुजाओंवाली (और चारों) हाथों में खड्ग, मुण्ड, वर और अभयमुद्रा धारण करनेवाली। मुण्डमाला धारण करनेवाली, लपलपाती जीभवाली, दिगम्बर, श्मशानालयवासिनी इस प्रकार (के स्वरूपोंवाली) शिवादेवी काली का चिन्तन करना चाहिए॥१-२॥

अनेकानेक देवगणों से युक्त, वृक्षलता और पुष्पों से सुशोभित, अति सुन्दर कैलाश नाम का पर्वत है। वहीं पर चारों ओर से घिरे हुए शृंगारमण्डप के बीच में समाधि में संलग्न, शान्त, आत्माराम और योगिनियों से सेवित मुनि का रूप धारण किये हुए भगवान् शंकरजी से पार्वती ने प्रश्न किया। **पार्वती ने कहा**—हे देवाधिदेव! आप किसका जप करते हैं और किसे स्मरण करते हैं। यह सम्पूर्ण संसार किसमें लीन होता है और इस सृष्टि की उत्पत्ति किस प्रकार से होती है? इस ब्रह्माण्डरूपी कार्य का सबसे आद्य एवं महान् कारण क्या है?॥१-४॥

मनोरथमयी सिद्धिस्तथा वाञ्छामयी शिव!।
तृतीया कल्पनासिद्धिः कोटिसिद्धीश्वरत्वकम्।। ५ ।।
शक्तिपाताष्टदशकं चराऽचरपुरीगतिः।
महेन्द्रजालमिन्द्रादिजालानां रचनां तथा।। ६ ।।
अणिमाद्यष्टकं देव! परकायप्रवेशनम्।
नवीनसृष्टिकरणं समुद्रशोषणं तथा।। ७ ।।
अमायां चन्द्रसंदर्शो दिवा चन्द्रप्रकाशनम्।
चन्द्राष्टकं चाष्टदिक्षु तथा सूर्याष्टकं शिव!।। ८ ।।
जले जलमयत्वं च वह्नौ वह्निमयत्वकम्।
ब्रह्म-विष्ण्वादि-निर्माणमिन्द्राणां कारणं करे।। ९ ।।
पातालगुटिका-यक्ष-वेतालपञ्चकं तथा।
रसायनं तथा गुप्तिस्तथैव चाऽखिलाञ्जनम्।।१०।।
महामधुमती सिद्धिस्तथा पद्मावती शिव!।
तथा भोगवती सिद्धिर्यावत्यः सन्ति सिद्धयः।।११।।
केन मन्त्रेण तपसा कलौ पापसमाकुले।
आयुष्यं पुण्यरहिते कथं भवति तद्वद?।।१२।।

मनोरथमयी, वांछामयी, कल्पनामयी, कोटिसिद्धि, ईश्वरत्वसिद्धि, अट्ठारह प्रकार के शक्तिसंपात, चराचर जगत् में अव्याहतगति। महेन्द्रजाल, इन्द्रजालादि का निर्माण अणिमा आदि आठ सिद्धियाँ, परकाया प्रवेश, नवीन सृष्टि की रचना करने का सामर्थ्य, समुद्र शोषण। अमावास्या और दिन के समय चन्द्रमा का दर्शन तथा आठों दिशाओं मे प्रत्येक दिशा में चन्द्रदर्शन एवं सूर्यदर्शन, जल में जलमयत्व, अग्नि में अग्निमयत्व, ब्रह्मा, विष्णु और इन्द्रादि देवताओं के निर्माण की क्षमता॥५-९॥

जिससे पाताल की सभी वस्तुएँ दिखाई पड़ती हैं, ऐसी पाताल-गुटिका। यक्ष और बैताल के तुल्य अदृश्य और प्रकट होना। रसायनसिद्धि और सभी जगह गोपनीय हो जाना तथा सम्पूर्ण संसार की वस्तुओं को प्रत्यक्ष कर देनेवाला अञ्जन। इस प्रकार है शिव! महा मधुमती एवं पद्मावती सिद्धि, भोगवती आदि सिद्धियों की प्राप्ति इस पाप से युक्त कलियुग में और दीर्घायु की प्राप्ति किस प्रकार से होती है?॥१०-१२॥

शिव उवाच

विना मन्त्रं विना स्तोत्रं विनैव तपसा प्रिये।
विना बलिं विना न्यासं भूतशुद्धिं विना प्रिये!।।१३।।
विना ध्यानं विना यन्त्रं विना पूजादिना प्रिये।
विना क्लेशादिभिर्देवि! देहदुःखादिभिर्विना।।१४।।
सिद्धिराशु भवेद्येन तदेवं कथ्यते मया।
शून्ये ब्रह्माण्डगोले तु पञ्चाशच्छून्यमध्यके।।१५।।
पञ्चशून्यस्थिता तारा सर्वान्ते कालिका स्मृता।
अनन्त-कोटि-ब्रह्माण्ड-राजदन्ताग्रके शिवे!।।१६।।
स्थाप्यं शून्यलयं कृत्वा कृष्णवर्णं विधाय च।
महानिर्गुणरूपा च वाचातीता परा कला।।१७।।
क्रीडायां संस्थिता देवी शून्यरूपा प्रकल्पयेत्।
सृष्टेरारम्भकार्ये तु दृष्टा छाया तया यदा।।१८।।
इच्छाशक्तिस्तु सा जाता तया कालो विनिर्मितः।
प्रतिविम्ब तत्र दृष्टं जाता ज्ञानाभिधातु सा।।१९।।

शिव ने कहा—हे प्रिये! मंत्र, जप के बिना, स्तोत्र पाठ के बिना, तपस्या के बिना, बलि, अङ्गन्यास और भूतशुद्धि के बिना। ध्यान, यंत्र और पूजा के बिना, मानसिक क्लेश के बिना एवं शरीर के दुःख के बिना।।१३-१४।।

मनुष्यों को जिस प्रकार सिद्धि प्राप्त होती है, वह उपाय मैं तुम्हें बता रहा हूँ। पचास हजार योजन की वसुन्धरा से युक्त इस ब्रह्माण्डगोलक का जब प्रलय हो जाता है और जब पाँचों तत्त्वों से सृष्टि (पूर्णरूप) से शून्य हो जाती है। उस समय तारा नाम से प्रसिद्ध मात्र महाकाली ही शेष रह जाती है। हे देवि! उस समय अनंतकोटि ब्रह्माण्डों की रचना करनेवाले ब्रह्मादि भी तुम्हारे दाँत के ग्रास बन जाते हैं तथा महाप्रलय का भार उन्हीं पर स्थापित कर भगवती महाकाली उस शून्य में अपना काला वर्ण बनाकर वाणी से अतीत परा कला के रूप में खेलती हैं।।१५-१७।।

फिर सृष्टि के आरम्भकाल में उसी भगवती (काली) से छाया के रूप में इच्छाशक्ति का निर्माण होता है, जिससे महाकाल की उत्पत्ति होती है। उस समय वह इच्छाशक्ति स्वयं ज्ञानरूप में परिवर्तित हो जाती है।।१८-१९।।

इदमेतत् किं विशिष्टं जातं विज्ञानकं मुदा।
तदा क्रियाऽभिधा जाता तदीच्छातो महेश्वरि।।२०।।
ब्रह्माण्डगोले देवेशि! राजदन्तस्थितं च यत्।
सा क्रिया स्थापयामास स्व-स्वस्थानक्रमेण च।।२१।।
तत्रैव स्वेच्छया देवि! सामरस्यपरायणा।
तदिच्छा कथ्यते देवि! यथावदवधारय।।२२।।
युगादिसमये देवि! शिवं परगुणोत्तमम्।
तदिच्छा निर्गुणं शान्तं सच्चिदानन्दविग्रहम्।।२३।।
शाश्वतं सुन्दरं शुक्लं सर्व-देवयुतं वरम्।
आदिनाथं गुणातीतं काल्या संयुतमीश्वरम्।।२४।।
विपरीतरतं देवं सामरस्यपरायणम्।
पूजार्थमागतं देव-गन्धर्वा-ऽप्सरसांगणम्।।२५।।
यक्षिणी किन्नरीमन्यामुर्वश्याद्यां तिलोत्तमाम्।
वीक्ष्य तन्मायया प्राह सुन्दरी प्राणवल्लभा।।२६।।

इस प्रकार की विशिष्टताओं से युक्त विज्ञान की उत्पत्ति होती है, फिर स्वयं महेश्वरी अपनी इच्छा से क्रियारूप में परिवर्तित हो गई। इस प्रकार हे देवि! इस संसार में उसी क्रिया ने फिर से समस्त स्थानों में उन-उन देवताओं को स्थापित किया। (इस) ब्रह्माण्ड में समता के रूप में रहनेवाली उस देवी की इसी क्रिया को इच्छा कहते हैं। हे पार्वति! इसे भलीभाँति जानो।।२०-२२।।

परब्रह्मस्वरूप वह परमात्मा शिव ही भगवती (काली) की इच्छा के रूप में रहने के कारण निर्गुण, शान्त और सच्चिदानंद के विग्रहरूप में अवतरित हुए। उस शाश्वत, सुन्दर, स्वच्छ, सर्वदेवयुक्त, आदि-नाथ, निर्गुण, शिव को काली में विपरीत, रति से आसक्त देखकर देवताओं, गन्धर्वों और अप्सराओं का समूह पूजा करने के लिए वहाँ (स्वयं) आया।।२३-२५।।

यक्षिणी, किन्नरी, उर्वशी और तिलोत्तमा आदि को वहाँ उपस्थित देखकर शिवप्राणवल्लभा महाकाली ने महाकाल अर्थात् शिवजी से कहा।।२६।।

त्रैलोक्यसुन्दरी प्राणस्वामिनी प्राणरञ्जिनी।
किमागतं भवत्याऽद्य मम भाग्यार्णवो महान्।।२७।।
उक्त्वा मौनधरं शम्भुं पूजयन्त्यप्सरोगणाः।

अप्सरस ऊचुः

संसार तारितं देव! त्वया विश्वं जनप्रिय!।।२८।।
सृष्टेरारम्भकार्यार्थमुद्युक्तोऽसि महाप्रभो!।
वेश्याकृत्यमिदं देव! मङ्गलार्थं प्रगायनम्।।२९।।
प्रयाणोत्सवकाले तु समारम्भे प्रगायनम्।
गुणाद्यारम्भकालो हि वर्तते शिवशङ्कर!।।३०।।
इन्द्राणीकोटयः सन्ति तस्याः प्रसवबिन्दुतः।
ब्रह्माणी वैष्णवी चैव माहेशीकोटिकोटयः।।३१।।
तव सामरसानन्ददर्शनार्थं समुद्भवाः।
सञ्जाताश्चाग्रतो देव! चास्माकं सौख्यसागर!।।३२।।

त्रैलोक्यसुन्दरी, प्राणस्वामिनी, प्राणरञ्जिनी, महाकाली ने उन सभी अप्सराओं को वहाँ उपस्थित देखकर उनके आने का कारण उन सभी से पूछा। उन अप्सराओं ने कहा—हमारे भाग्यरूपी सागर का आज उदय हुआ है, ऐसा कहकर उन अप्सराओं ने मौन होकर शिव की पूजा की। अप्सराओं ने कहा—हे संसार का प्रिय करनेवाले भगवान शंकर! आप इस संसार के निर्माण करने में संलग्न दिखाई पड़ रहे हैं। इसलिए हे देव! सृष्टि के आरम्भ रूप कार्य के शुभ के लिए हम लोगों को गाने की आज्ञा प्रदान करें, क्योंकि हम वेश्याओं के लिए यही उपयुक्त है। हे शिवशंकर! जैसे कि यात्रा और उत्सव कार्य में गाना शुभ होता है, उसी प्रकार से त्रिगुणात्मक सृष्टि के आरम्भ होने के कारण शुभ गायन करना आवश्यक है।।२७-३०।।

इस सृष्टि रूप कार्य के लिए विपरीत रति में लगे हुए आपके दर्शन के लिए आप दोनों से ही उत्पन्न हुई करोड़ों इन्द्राणी, ब्रह्माणी और वैष्णवी शक्तियाँ (यहाँ) उपस्थित हुई हैं। हे सौख्यसागर! वे समस्त शक्तियाँ लज्जायुक्त होकर आपके सम्मुख खड़ी हैं।।३१-३२।।

रतिं हित्वा कामिनीनां नाऽन्यत् सौख्यं महेश्वर!।
सा रतिर्दृश्यतेऽस्माभिर्महत्सौख्यार्थकारिका।।३३।।
एवमेतत्तु चास्माभिः कर्तव्यं भर्तृणा सह।
एवं श्रुत्वा महादेवी ध्यानावस्थितमानसः।।३४।।
ध्यानं हित्वा मायया तु प्रोवाच कालिकां प्रति।
कालि! कालि! रुण्डमाले! प्रिये! भैरववादिनि!।।३५।।
शिवारूपधरे! क्रूरे! घोरदंष्ट्रे! भयानके!।
त्रैलोक्यसुन्दरकरी-सुन्दर्यः सन्ति मेऽग्रतः।।३६।।
सुन्दरीवीक्षणं कर्म कुरु कालि प्रियो शिवे!।
ध्यानं मुञ्च महादेवि! ता गच्छन्ति गृहं प्रति।।३७।।
तं रूपं महाकालि! महाकालप्रियङ्करम्।
एतासां सुन्दरं रूपं त्रैलोक्यप्रियकारकम्।।३८।।
एवं मायाप्रभाविष्टो महाकालो वदन्निति।
इति कालवचः श्रुत्वा कालं प्राह च कालिका।।३९।।

हे महेश्वर! स्त्रियों को रति से बढ़कर और कोई अन्य सुख नहीं है, इसीलिए वह सुख को प्रदान करनेवाला रति हम लोग आनन्द से यहाँ देख रहे हैं। हम लोग भी सृष्टि के लिए अपने पतियों से इसी प्रकार की रति (क्रिया) करना चाहते हैं। अप्सराओं की इस प्रकार की बात को श्रवण कर ध्यान में स्थित महादेव ने अपने ध्यान का परित्याग कर दिया और महाकाली से बोले—हे कालि! हे महाकालि! हे रुण्डमाले! हे भैरवि! हे शिवा-रूपधारिणी! हे क्रूरे! हे भयानक दाँतों से युक्त भगवति! (इस संसार की) अनेक तीनों लोकों की सुन्दरियाँ, कामिनियाँ हमारे सम्मुख हैं।।३३-३६।।

हे कालि, हे प्रिये, हे शिवे! इन सुन्दरियों को तुम देखो। अपने ध्यान का परित्याग कर दो, देखो, ये सभी सुन्दरियाँ अपने-अपने गृहों को जा रही हैं। हे महाकाली! तुम्हारा रूप तो मात्र महाकाल को ही मनोहर (सुन्दर) दिखाई पड़ता है। किन्तु ये (सभी) अप्सरायें तीनों लोकों को भी मोहित कर लेती हैं। जब माया के वशीभूत उस महाकाल अर्थात् शिव ने महाकाली से इस प्रकार कहा, तब काली ने महाकाल अर्थात् शिवजी से यह कहा।।३७-३९।।

माययाऽऽच्छाद्य चात्मानं निजस्त्रीरूपधारिणी।
इतः प्रभृति स्त्रीमात्रं भविष्यति युगे युगे।।४०।।
वल्ल्याद्यौषधयो देवि! दिवा वल्लीस्वरूपताम्।
रात्रौ स्त्रीरूपमासाद्य रतिकेलिः परस्परम्।।४१।।
अज्ञानं चैव सर्वेषां भविष्यति युगे युगे।
एवं शापं दत्त्वा तु पुनः प्रोवाच कालिका।।४२।।
विपरीतरतिं कृत्वा चिन्तयन्ति भजन्ति ये।
तेषां वरं प्रदास्यामि नित्यं तत्र वसाम्यहम्।।४३।।
इत्युक्त्वा कालिका विद्या तत्रैवान्तरधीयत।
त्रिंशत् - त्रिखर्व - षड्वृन्द - नवत्यर्बुदकोटयः।।४४।।
दर्शनार्थं तपस्तेपे सा वै कुत्र गता प्रिया।
मम प्राणप्रिया देवी हा-हा प्राणप्रिये शिवे!।।४५।।
किं करोमि? क्व गच्छामि? इत्येवं भ्रमसंकुलः।
तस्याः काल्या दया जाता मम चिन्ता परः शिवः।। ४६।।

स्त्री का रूप धारण करनेवाली महाकाली ने माया द्वारा अपने को मोहित कर लिया और वे महादेव से (यह) बोली। आज से प्रत्येक युग (चारों युग़) में हर योनियों में स्त्रियाँ पैदा होंगी। लता औषधियाँ आदि दिन में लता और औषधि के रूप में दिखाई पड़ेंगी। किन्तु रात्रि के समय ये सभी स्त्रीरूप धारण कर आपस में रतिक्रीड़ा करेंगी।।४०-४१।।

इन्हें प्रत्येक युग में अज्ञान होगा, ऐसा शाप देकर कालिका फिर बोली। जो लोग विपरीत रति में आसक्त होकर मेरा ध्यान एवं भजन करेंगे। मैं उन्हें वर प्रदत्त करूँगी और उनके यहाँ निवास करूँगी। ऐसा कहकर वह छत्तीस खरब छियानबे अरब करोड़ों संख्यावाली कालीरूपी महाविद्या वहीं अदृश्य हो गई। तब शिवजी ने हा, हा प्राणप्रिये, हा शिवे! तुम कहाँ चली गई? ऐसा अनेकानेक बार विलाप करते हुए तप करने लगे। अब मैं क्या करूँ, अब मैं कहाँ जाऊँ? इस प्रकार भ्रम में पड़े हुए शिवजी को देखकर उस महाकाली के हृदय में दयाभाव आ गया कि शिवजी हमारे बिना व्याकुल हो रहे हैं। तब काली ने यंत्र में अपने छिपे रहने की बुद्धि विस्तार से शिवजी को बताई।।४२-४६।।

यन्त्रप्रस्तारबुद्धिस्तु काल्या दत्तातिसत्त्वरम्।
यन्त्रयागं तदारभ्य पूर्वं बिन्दुत्वगोचरम्।।४७।।
श्रीचक्रं यन्त्रप्रस्तार-रचनाभ्यास-तत्परः।
इतस्ततो भ्राम्यमाणस्त्रैलोक्यं चक्रमध्यकम्।।४८।।
चक्रपारं दर्शनार्थं कोट्यर्बुदयुगं गतम्।
भक्तप्राणप्रिया देवी महाश्रीचक्रनायिका।।४९।।
तत्र बिन्दौ परं रूपं सुन्दरं सुमनोहरम्।
रूपं जातं महेशानि जाग्रत् त्रिपुरसुन्दरि!।।५०।।
रूपं दृष्ट्वा महादेवो राजराजेश्वरोऽभवत्।
तस्याः कटाक्षमात्रेण तस्या रूपधरः शिवः।।५१।।
विना शृङ्गारसंयुक्ता तदा जाता महेश्वरि।
विना काल्यंशतो देवि! जगत् स्थावर-जङ्गमम्।।५२।।
न शृङ्गारो न शक्तित्वं क्वाऽपि नास्ति महेश्वरि।
सुन्दर्या प्रार्थिता काली तुष्टा प्रोवाच कालिका।।५३।।

उसी समय से श्रीचक्ररूपी यन्त्रयाग में विन्दु के द्वारा महाकाली का दर्शन होने लगा। श्रीचक्ररूपी यंत्र के प्रस्तार की रचना का अभ्यास करनेवाले शिव ने चक्र के बीच में अवस्थित इधर से उधर भ्रमण करते हुए त्रिलोकी का दर्शन किया। फिर चक्र के परे भगवती के दर्शन के लिए करोड़ों व अरबों वर्ष व्यतीत हो गए। किन्तु शिवजी को भगवती का दर्शन प्राप्त नहीं हुआ। इसके पश्चात् ही चक्र के परे विन्दु में भक्तप्राणप्रिया श्रीचक्र की नायिका भगवती का जाग्रत दिव्य मनोहररूप दिखाई पड़ा। श्रीचक्र के विन्दु में त्रिपुसुन्दरी भगवती के उस (दिव्य) रूप को देखकर महादेव अर्थात् शिव ने राज-राजेश्वर का रूप धारण कर लिया, उस समय भगवती के कटाक्षमात्र देखने से ही शिवजी त्रिपुरसुन्दरी के रूप में परिवर्तित हो गए।।४७-५१।।

शिवजी को त्रिपुरसुन्दरी के रूप में (परिवर्तित) देखकर महाकाली महेश्वरी शृङ्गार से शून्य हो गई और सम्पूर्ण स्थावर-जंगमात्मक संसार काली के अंश से रहित हो गया। महेश्वरि महाकाली के शृङ्गार शून्य हो जाने के कारण त्रिलोकी की शक्ति समाप्त हो गई। उनमें कोई शृङ्गार-सज्जा भी न रह गई। उस समय त्रिपुरसुन्दरी ने महाकाली की प्रार्थना की, जिससे प्रसन्न होकर महाकालिका ने त्रिपुरसुन्दरी से कहा।।५२-५३।।

सर्वासां नेत्रकेशे च ममांशोऽत्र भविष्यति।
पूर्वावस्थासु देवेशि! ममांशस्तिष्ठति प्रिये!।।५४।।
साऽवस्था तरुणाख्या तु तदन्ते नैव तिष्ठति।
मद् भक्तानां महेशानि! सदा तिष्ठति निश्चितम्।।५५।।
शक्तिस्तु कुण्ठिता जाता तथा रूपं न सुन्दरम्।
चिन्ता-विष्टा तु मलिना जाता तत्र तु सुन्दरी।।५६।।
क्षणं स्थित्वा ध्यानपरा काली चिन्तनतत्परा।
तदा काली प्रसन्नाऽभूत् क्षणार्द्धेन महेश्वरी।।५७।।
वरं ब्रूहि वरं ब्रूहि वरं ब्रूहीति सादरम्।

सुन्दर्य्युवाच

मम सिद्धिवरं देहि वरोऽयं प्रार्थ्यते मया।।५८।।
तादृगुपायं कथन येन शक्तिर्भविष्यति?।

श्रीकाल्युवाच

मम नामसहस्रं च मया पूर्वं विनिर्मितम्।।५९।।

हे देवेशि! हे प्रिये! समस्त प्राणियों के पूर्वावस्था में नेत्र और केशों पर मेरा अंश बना रहेगा। उस पूर्वावस्था में, युवाअवस्था में, मेरा अंश स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ेगा। युवावस्था के चले जाने के पश्चात् मेरे अंश का लोप हो जाएगा, किन्तु मेरे भक्तों पर मेरी छाया सदैव निश्चित रूप से बनी रहेगी।।५४-५५।।

फिर भी त्रिपुरसुन्दरी की शक्ति क्षीण हो गई और रूप भी सुन्दर न हुआ। इसलिए वह दुःखित हो चिन्ताग्रस्त हो गई। फिर क्षणभर अवस्थित रहकर वह महाकाली का ध्यान करने लगी। क्षणभर में ही महेश्वरी महाकाली प्रसन्न हो गईं और त्रिपुरसुन्दरी से बोलीं–हे त्रिपुरसुन्दरि! (मुझसे) वर माँगो, (मुझसे) वर माँगो। **त्रिपुरसुन्दरी बोलीं**–हे महेश्वरि! मुझे जो वरदान चाहिए, वही वर मुझे दो। मुझे सिद्धि प्रदान करो और उस उपाय को भी बताओ, जिससे मुझमें शक्ति आ जावे। तब **महाकाली बोलीं**–मेरे द्वारा पहले से ही बनाया हुआ मेरा सहस्रनाम है। उसमें ककाररूप से मेरा स्वरूप विद्यमान है।।५६-५९।।

मत् स्वरूपं ककाराख्यं महासाम्राज्यनामकम्।
वरदानाभिधं नाम क्षणार्द्धाद् वरदायकम्।।६०।।
तत्पठस्व महामाये! तव शक्तिर्भविष्यति।
ततः प्रभृति श्रीविद्या तन्नामपाठतत्परा।।६१।।
तदेव नामसाहस्र सुन्दरीशक्तिदायकम्।
कथ्यते नामसाहस्र सावधानमनाः श्रृणु।।६२।।
सर्वसाम्राज्यमेधाख्य-नामसाहस्रकस्य च।
महाकाल ऋषिः प्रोक्त उष्णिक्छन्दः प्रकीर्तितम्।।६३।।
देवता दक्षिणा काली मायाबीजं प्रकीर्तितम्।
हूँ शक्तिः कालिका बीजं कीलकं परिकीर्तितम्।।६४।।
ध्यानं च पूर्ववत् कृत्वा साधय स्वेष्टसाधनम्।
कालिका वरदानादिस्वेष्टार्थे विनियोगतः।
कीलकेन षडङ्गानि षड्दीर्घाब्जेन कारयेत्।।६५।।

जो महासाम्राज्य को प्रदत्त करनेवाला है। उस सहस्रनाम का दूसरा नाम 'वरदान' ही है। जो क्षणमात्र में सम्पूर्ण इच्छाओं को पूर्ण करता है। हे महामाये! मेरे उस सहस्रनाम का पाठ करो। तुम्हें (निःसन्देह) शक्ति प्राप्त होगी। तभी से श्रीविद्या त्रिपुरसुन्दरी उस महाकाली के सहस्र-नाम का पाठ करती हैं (करने लगी)। यह वही काली सहस्र नाम है, जो त्रिपुरसुन्दरी को भी शक्ति प्रदान करनेवाला है। उस काली सहस्रनाम को हे पार्वती! मैं तुमसे मैं कह रहा हूँ, तुम एकाग्रचित्त होकर श्रवण करो॥६०-६२॥

इस सर्वसाम्राज्यमेधादायक कालीसहस्रनाम के (स्वयं) महाकाल ऋषि हैं, उष्णिकृछन्द हैं, दक्षिणमहाकालीदेवता हैं, ह्रीं बीज हैं, हूं शक्ति हैं और क्रीं कीलक हैं। कालिका के वरदान से इष्टसिद्धि के लिए विनियोग है। फिर कीलक द्वारा षडङ्गन्यास, करन्यास और पूर्व की भाँति महाकाली का ध्यान कर अपने मनोरथ सिद्धि के लिए कालीसहस्रनाम का पाठ करें॥६३-६५॥

विनियोगः—**ॐ अस्य श्रीसर्वसाम्राज्यमेधानाम कालीरूप-ककारात्मक-सहस्रनामस्तोत्रमन्त्रस्य महाकाल ऋषिरनुष्टुप्छन्दः श्रीदक्षिणमहाकाली देवता, ह्रीं बीजम्, हूं शक्तिः, क्रीं कीलकं, कालीवरदानाद्यखिलेष्टार्थे जपे विनियोगः।**

ॐ क्रीं काली क्रूं कराली च कल्याणी कमला कला।
कलावती कलाढ्या च कलापूज्या कलात्मिका।। १ ।।
कलाहृष्टा कलापुष्टा कलामस्ता कलाकरा।
कलाकोटिसमाभासा कलाकोटिप्रपूजिता।। २ ।।
कलाकर्मकलाधारा कलापारा कलागमा।
कलाधारा कमलिनी ककारा करुणा कविः।। ३ ।।
ककारवर्णसर्वाङ्गी कलाकोटिप्रभूषिता।
ककारकोटिगुणिता ककारकोटिभूषणा।। ४ ।।
ककारवर्णहृदया ककारमनुमण्डिता।
ककारवर्णनिलया काकशब्दपरायणा।। ५ ।।
ककारवर्णमुकुटा ककारवर्णभूषणा।
ककारवर्णरूपा च ककशब्दपरायणा।। ६ ।।
ककवीरास्फालरता कमलाकरपूजिता।
कमलाकरनाथा च कमलाकररूपधृक्।। ७ ।।
कमलाकरसिद्धिस्था कमलाकरपारदा।
कमलाकरमध्यस्था कमलाकरतोषिता।। ८ ।।
कथङ्कारपरालापा कथङ्कारपरायणा।
कथङ्कारपदान्तस्था कथङ्कारपदार्थभूः।। ९ ।।
कमलाक्षी कमलजा कमलाक्षप्रपूजिता।
कमलाक्षवरोद्युक्ता ककारा कर्बुराक्षरा।।१०।।
करतारा करच्छिन्ना करश्यामा करार्णवा।
करपूज्या कररता करदा करपूजिता।।११।।

विनियोग—इस श्रीसर्वसाम्राज्यमेधादायक ककाररूप कालीसहस्रनाम स्तोत्र मंत्र के महाकाल ऋषि, अनुष्टुप् छन्द, दक्षिणमहाकालीदेवता, ह्रीं बीज, हूं शक्ति, क्रीं कीलक, कांली के वरदान से सकल अभीष्ट सिद्धि के लिए (यह) विनियोग है।

करतोया करामर्षा कर्मनाशा करप्रिया।
करप्राणा करकजा करका करकान्तरा।।१२।।
करकाचलरूपा च कारकाचलशोभिनी।
करकाचलपुत्री च करकाचलतोषिता।।१३।।
करकाचलगेहस्था करकाचलरक्षिणी।
करकाचलसम्मान्या करकाचलकारिणी।।१४।।
करकाचलवर्षाढ्या करकाचलरञ्जिता।
करकाचलकान्तारा करकाचलमालिनी।।१५।।
करकाचलभोज्या च करकाचलरूपिणी।
करामलकसंस्था च करामलकसिद्धिदा।।१६।।
करामलकसम्पूज्या करामलकतारिणी।
करामलककाली च करामलकरोचिनी।।१७।।
करामलकमाता च करामलकसेविनी।
करामलकवद्ध्येया करामलकदायिनी।।१८।।
कञ्जनेत्रा कञ्जगतिः कञ्जस्था कञ्जधारिणी।
कञ्जमालाप्रियकरी कञ्जरूपा च कञ्जजा।।१९।।
कञ्जजातिः कञ्जगतिः कञ्जहोमपरायणा।
कञ्जमण्डलमध्यस्था कञ्जाभरणभूषिता।।२०।।
कञ्जसम्माननिरता कञ्जोत्पत्तिपरायणा।
कञ्जराशिसमाकारा कञ्जारण्यनिवासिनी।।२१।।
करञ्जवृक्षमध्यस्था करञ्जवृक्षवासिनी।
करञ्जफलभूषाढ्या करञ्जारण्यवासिनी।।२२।।
करञ्जमालाभरणा करवालपरायणा।
करवालप्रहृष्टात्मा करवालप्रियागतिः।।२३।।
करवालप्रियाकन्या करवालविहारिणी।
करवालमयी कर्मा करवालप्रियङ्करी।।२४।।
कबन्धमालाभरणा कबन्धराशिमध्यगा।
कबन्धकूटसंस्थाना कबन्धानन्तभूषणा।।२५।।

कबन्धनादसन्तुष्टा कबन्धासनधारिणी।
कबन्धगृहमध्यस्था कबन्धवनवासिनी।।२६।।
कबन्धकाञ्ची करणी कबन्धराशिभूषणा।
कबन्धमालाजयदा कबन्धदेहवासिनी।।२७।।
कबन्धासनमान्या च कपालमाल्यधारिणी।
कपालमालामध्यस्था कपालव्रततोषिता।।२८।।
कपालदीपसन्तुष्टा कपालदीपरूपिणी।
कपालदीपवरदा कपालकज्जलस्थिता।।२९।।
कपालमालाजयदा कपालजलतोषिणी।
कपालसिद्धिसंहृष्टा कपालभोजनोद्यता।।३०।।
कपालव्रतसंस्थाना कपालकमलालया।
कवित्वामृतसारा च कवित्वामृतसागरा।।३१।।
कवित्वसिद्धिसंहृष्टा कवित्वादानकारिणी।
कविपूज्या कविगतिः कविरूपा कविप्रिया।।३२।।
कविब्रह्मानन्दरूपा कवित्वव्रततोषिता।
कविमानससंस्थाना कविवाञ्छाप्रपूरिणी।।३३।।
कविकण्ठस्थिता कंह्रींकंकंकंकविपूर्तिदा।
कज्जला कज्जलादानमानसा कज्जलप्रिया।।३४।।
कपालकज्जलसमा कज्जलेशप्रपूजिता।
कज्जलार्णवमध्यस्था कज्जलानन्दरूपिणी।।३५।।
कज्जलप्रियसन्तुष्टा कज्जलप्रियतोषिणी।
कपालमालाभरणा कपालकरभूषणा।।३६।।
कपालकरभूषाढ्या कपालचक्रमण्डिता।
कपालकोटिनिलया कपालदुर्गकारिणी।।३७।।
कपालगिरिसंस्थाना कपालचक्रवासिनी।
कपालपात्रसन्तुष्टा कपालार्घ्यपरायणा।।३८।।
कपालार्घ्यप्रियप्राणा कपालार्घ्यवरप्रदा।
कपालचक्ररूपा च कपालरूपमात्रगा।।३९।।

कदली कदलीरूपा कदलीवनवासिनी।
कदलीपुष्पसम्प्रीता कदलीफलमानसा।।४०।।
कदलीहोमसन्तुष्टा कदलीदर्शनोद्यता।
कदलीगर्भमध्यस्था कदलीवनसुन्दरी।।४१।।
कदम्बपुष्पनिलया कदम्बवनमध्यगा।
कदम्बकुसुमामोदा कदम्बवनतोषिणी।।४२।।
कदम्बपुष्पसम्पूज्या कदम्बपुष्पहोमदा।
कदम्बपुष्पमध्यस्था कदम्बफलभोजिनी।।४३।।
कदम्बकाननान्तःस्था कदम्बाचलवासिनी।
कक्षपा कक्षपाराध्या कक्षपासनसंस्थिता।।४४।।
कर्णपूरा कर्णनासा कर्णाढ्या कालभैरवी।
कलहप्रीता कलहदा कलहा कलहातुरा।।४५।।
कर्णयक्षी कर्णवार्त्ता कथिनी कर्णसुन्दरी।
कर्णपिशाचिनी कर्णमञ्जरी कपिकक्षदा।।४६।।
कविकक्षविरूपाढ्या कविकक्षस्वरूपिणी।
कस्तूरीमृगसंस्थाना कस्तूरीमृगरूपिणी।।४७।।
कस्तूरीमृगसन्तोषा कस्तूरीमृगमध्यगा।
कस्तूरीरसनीलाङ्गी कस्तूरीगन्धतोषिता।।४८।।
कस्तूरीपूजकप्राणा कस्तूरीपूजकप्रिया।
कस्तूरीप्रेमसन्तुष्टा कस्तूरीप्राणधारिणी।।४९।।
कस्तूरीपूजकानन्दा कस्तूरीगन्धरूपिणी।
कस्तूरीमालिकारूपा कस्तूरीभोजनप्रिया।।५०।।
कस्तूरीतिलकानन्दा कस्तूरीतिलकप्रिया।
कस्तूरीहोमसन्तुष्टा कस्तूरीतर्पणोद्यता।।५१।।
कस्तूरीमार्जनोद्युक्ता कस्तूरीचक्रपूजिता।
कस्तूरीपुष्पसम्पूज्या कस्तूरीचर्वणोद्यता।।५२।।
कस्तूरीगर्भमध्यस्था कस्तूरीवस्त्रधारिणी।
कस्तूरीकामोदरता कस्तूरीवनवासिनी।।५३।।

कस्तूरीवनसंरक्षा कस्तूरीप्रेमधारिणी।
कस्तूरीशक्तिनिलया कस्तूरीशक्तिकुण्डगा।।५४।।
कस्तूरीकुण्डसंस्नाता कस्तूरीकुण्डमज्जना।
कस्तूरीजीवसन्तुष्टा कस्तूरीजीवधारिणी।।५५।।
कस्तूरीपरमामोदा कस्तूरीजीवनक्षमा।
कस्तूरीजातिभावस्था कस्तूरीगन्धचुम्बना।।५६।।
कस्तूरीगन्धसंशोभा - विराजित - कपालभूः।
कस्तूरीमदनान्तःस्था कस्तूरीमदहर्षदा।।५७।।
कस्तूरीकवितानाढ्या कस्तूरीगृहमध्यगा।
कस्तूरीस्पर्शकप्राणा कस्तूरीविन्दकान्तका।।५८।।
कस्तूर्यामोदरसिका कस्तूरीक्रीडनोद्यता।
कस्तूरीदाननिरता कस्तूरीवरदायिनी।।५९।।
कस्तूरीस्थापनासक्ता कस्तूरीस्थानरञ्जिनी।
कस्तूरीकुशलप्रश्ना कस्तूरीस्तुतिवन्दिता।।६०।।
कस्तूरीवन्दकाराध्या कस्तूरीस्थानवासिनी।
कहरूपा कहाढ्या च कहानन्दा कहात्मभूः।।६१।।
कहपूज्या कहाख्या च कहहेया कहात्मिका।
कहमाला कण्ठभूषा कहमन्त्रजपोद्यता।।६२।।
कहनामस्मृतिपरा कहनामपरायणा।
कहपरायणरता कहदेवी कहेश्वरी।।६३।।
कहहेतु कहानन्दा कहनादपरायणा।
कहमाता कहान्तस्था कहमन्त्रा कहेश्वरा।।६४।।
कहगेया कहाराध्या कहध्यानपरायणा।
कहतन्त्रा कहकहा कहचर्यापरायणा।।६५।।
कहचारा कहगतिः कहताण्डवकारिणी।
कहारण्या कहगतिः कहशक्तिपरायणा।।६६।।
कहराज्यनता कर्मसाक्षिणी कर्मसुन्दरी।
कर्मविद्या कर्मगतिः कर्मतन्त्रपरायणा।।६७।।

कर्ममात्रा कर्मगात्रा कर्मधर्मपरायणा।
कर्मरेखानाशकर्त्री कर्मरेखाविनोदिनी।।६८।।
कर्मरेखामोहकारी कर्मकीर्तिपरायणा।
कर्मविद्या कर्मसारा कर्मधारा च कर्मभूः।।६९।।
कर्मकारी कर्महारी कर्मकौतुकसुन्दरी।
कर्मकाली कर्मतारा कर्मच्छिन्ना च कर्मदा।।७०।।
कर्मचाण्डालिनी कर्मवेदमाता च कर्मभूः।
कर्मकाण्डरतानन्ता कर्मकाण्डानुमानिता।।७१।।
कर्मकाण्डपरीणाहा कमठी कमठाकृतिः।
कमठाराध्यहृदया कमठा कण्ठसुन्दरी।।७२।।
कमठासनसंसेव्या कमठी कर्मतत्परा।
करुणाकरकान्ता च करुणाकरवन्दिता।।७३।।
कठोरा करमाला च कठोरकुचधारिणी।
कपर्दिनी कपटिनी कठिनी कङ्कभूषणा।।७४।।
करभोरुः कठिनदा करभा करमालया।
कलभाषामयी कल्या कल्पना कल्पदायिनी।।७५।।
कमलस्था कलामाला कमलास्या क्वणत्प्रभा।
ककुद्मिनी कष्टवती करणीयकथार्चिता।।७६।।
कचार्चिता कचतनुः कचसुन्दरधारिणी।
कठोरकुचसंलग्ना कटिसूत्रविराजिता।।७७।।
कर्णभक्षप्रिया कन्दा कथा कन्दगतिः कलिः।
कलिघ्नी कलिदूती च कविनायकपूजिता।।७८।।
कणकक्षानियन्त्री च कश्चित् कविवरार्चिता।
कर्त्री च कर्तृकाभूषा करिणी कर्णशत्रुपा।।७९।।
करणेशी कर्णपा कलवाचा कलानिधिः।
कलना कलनाधारा कारिका करका करा।।८०।।
कलगेया कर्कराशिः कर्कराशि-प्रपूजिता।
कन्याराशिः कन्यका च कन्यकाप्रियभाषिणी।।८१।।

कन्यकादानसन्तुष्टा कन्यकादानतोषिणी।
कन्यादानकरानन्दा कन्यादानग्रहेष्टदा।।८२।।
कर्षणा कक्षदहना कामिता कमलासना।
करमालानन्दकर्त्री करमालाप्रतोषिता।।८३।।
करमालाशयानन्दा करमाला समागमा।
करमालासिद्धिदात्री करमालाकरप्रिया।।८४।।
करप्रियाकररता करदानपरायणा।
कलानन्दा कलिगतिः कलिपूज्या कलिप्रसूः।।८५।।
कलनादनिनादस्था कलनादवरप्रदा।
कलनादसमाजस्था कहोला च कहोलदा।।८६।।
कहोलगेहमध्यस्था कहोलवरदायिनी।
कहोलकविताधारा कहोलऋषिमानिता।।८७।।
कहोलमानसाराध्या कहोलवाक्यकारिणी।
कर्तृरूपा कर्तृमयी कर्तृमाता च कर्त्तरी।।८८।।
कनीयाकनकाराध्या कनीनकमयी तथा।
कनीयानन्दनिलया कनकानन्दतोषिता।।८९।।
कनीयककरा काष्ठा कथार्णवकरी करी।
करिगम्या करिगतिः करिध्वजपरायणा।।९०।।
करिनाथप्रिया कण्ठा कथानकप्रतोषिता।
कमनीया कमनका कमनीयविभूषणा।।९१।।
कमनीयसमाजस्था कमनीयव्रतप्रिया।
कमनीयगुणाराध्या कपिलाकपिलेश्वरी।।९२।।
कपिलाराध्यहृदया कपिला प्रियवादिनी।
कहचक्रमन्त्रवर्णा कहचक्रप्रसूनका।।९३।।
कएईलह्रींस्वरूपा च कएईलह्रींवरप्रदा।
कएईलह्रींसिद्धिदात्री कएईलह्रींस्वरूपिणी।।९४।।
क-ए-ईल्-ह्रींमन्त्रवर्णा क-ए-ईल्-ह्रींप्रसूकला।
कवर्गा च कपाटस्था कपाटोद्घाटनक्षमा।।९५।।

कङ्काली च कपाली च कङ्कालप्रियभाषिणी।
कङ्कालभैरवाराध्या कङ्कालमानसस्थिता।। ९६ ।।
कङ्कालमोहनिरता कङ्कालमोहदायिनी।
कलुषघ्नी कलुषहा कलुषार्तिविनाशिनी।। ९७ ।।
कलिपुष्पा कलादाना कशिपुः कश्यपार्चिता।
कश्यपा कश्यपाराध्या कलिपूर्णकलेवरा।। ९८ ।।
कलेवरकरी काञ्ची कवर्गा च करालका।
करालभैरवाराध्या करालभैरवेश्वरी।। ९९ ।।
कराला कलनाधारा कपर्दीशवरप्रदा।
कपर्दीशप्रेमलता कपर्दिमालिकायुता।।१००।।
कपर्दिजपमालाढ्या करवीरप्रसूनदा।
करवीरप्रियप्राणा करवीरप्रपूजिता।।१०१।।
कर्णिकारसमाकारा कर्णिकारप्रपूजिता।
करीषाग्निस्थिता कर्षा कर्षमात्रसुवर्णदा।।१०२।।
कलशा कलशाराध्या कषाया करिगानदा।
कपिला कलकण्ठी च कलिकल्पलता मता।।१०३।।
कल्पलता कल्पमाता कल्पकारी च कल्पभूः।
कर्पूरामोदरुचिरा कर्पूरामोदधारिणी।।१०४।।
कर्पूरमालाभरणा कर्पूरवासपूर्तिदा।
कर्पूरमालाजयदा कर्पूरार्णवमध्यगा।।१०५।।
कर्पूरतर्पणरता कटकाम्बरधारिणी।
कपटेश्वरसम्पूज्या कपटेश्वररूपिणी।।१०६।।
कटुः कपिध्वजाराध्या कलापपुष्पधारिणी।
कलापपुष्परुचिरा कलापपुष्पपूजिता।।१०७।।
क्रकचा क्रकचाराध्या कथं ब्रूमा करलता।
कथंकारविनिर्मुक्ता काली कालक्रिया क्रतुः।।१०८।।

कामिनी कामिनीपूज्या कामिनीपुष्पधारिणी।
कामिनीपुष्पनिलया कामिनीपुष्पपूर्णिमा।।१०९।।
कामिनीपुष्पपूजार्हा कामिनीपुष्पभूषणा।
कामिनीपुष्पतिलका कामिनीकुण्डचुम्बना।।११०।।
कामिनीयोगसन्तुष्टा कामिनीयोगभोगदा।
कामिनीकुण्डसम्भग्ना कामिनीकुण्डमध्यगा।।१११।।
कामिनीमानसाराध्या कामिनीमानतोषिता।
कामिनीमानसञ्चारा कालिका कालकालिका।।११२।।
कामा च कामदेवी च कामेशी कामसम्भवा।
कामभावा कामरता कामार्ता काममञ्जरी।।११३।।
काममञ्जीररणिता कामदेवप्रियान्तरा।
कामकाली कामकला कालिका कमलार्चिता।।११४।।
कादिका कमला काली कालानलसमप्रभा।
कल्पान्तदहना कान्ता कान्तारप्रियवासिनी।।११५।।
कालपूज्या कालरता कालमाता च कालिनी।
कालवीरा कालघोरा कालसिद्धा च कालदा।।११६।।
कालाञ्जनसमाकारा कालञ्जरनिवासिनी।
कालर्ऋद्धिः कालवृद्धिः कारागृहविमोचिनी।।११७।।
कादिविद्या कादिमाता कादिस्था कादिसुन्दरी।
काशी काञ्ची च काञ्चीशा काशीशवरदायिनी।।११८।।
क्रींबीजा चैव क्रांबीजा हृदयायनमस्मृता।
काम्या काम्यगतिः काम्यसिद्धिदात्री च काम्यभूः।।११९।।
कामाख्या कामरूपा च काम्यचापविमोचिनी।
कामदेवकलारामा कामदेवकलालया।।१२०।।
कामरात्रिः कामदात्री कान्ताराचलवासिनी।
कालरूपा कालगतिः कामयोगपरायणा।।१२१।।

कामसम्मर्दनरता कामगेहविकाशिनी।
कालभैरवभार्या च कालभैरवकामिनी।।१२२।।
कालभैरवयोगस्था कालभैरवभोगदा।
कामधेनुः कामदोग्ध्री काममाता च कान्तिदा।।१२३।।
कामुका कामुकाराध्या कामुकानन्दवर्द्धिनी।
कार्त्तवीर्या कार्तिकेया कार्तिकेयप्रपूजिता।।१२४।।
कार्या कारणदा कार्यकारिणी कारणान्तरा।
कान्तिगम्या कान्तिमयी कात्या कात्यायनी च का।।१२५।।
कामसारा च काश्मीरा काश्मीराचारतत्परा।
कामरूपाचाररता कामरूपप्रियंवदा।।१२६।।
कामरूपाचारसिद्धिः कामरूपमनोमयी।
कात्तिकी कार्त्तिकाराध्या काञ्चनारप्रसूनभूः।।१२७।।
काञ्चनारप्रसूनाभा काञ्चनारप्रपूजिता।
काञ्चरूपा काञ्चभूमिः कांस्यपात्रप्रभोजिनी।।१२८।।
कांस्यध्वनिमयी कामसुन्दरी कामचुम्बना।
काशपुष्पप्रतीकाशा कामद्रुमसमागमा।।१२९।।
कामपुष्पा कामभूमिः कामपूज्या च कामदा।
कामदेहा कामगेहा कामबीजपरायणा।।१३०।।
कामध्वजसमारूढा कामध्वजसमास्थिता।
काश्यपी काश्यपाराध्या काश्यपानन्ददायिनी।।१३१।।
कालिन्दीजलसङ्काशा कालिन्दीजलपूजिता।
कामदेवपूजानिरता कामदेवपरमार्थदा।।१३२।।
कार्मणा कार्मणाकारा कामकार्मणकारिणी।
कार्मणत्रोटनकरी काकिनी कारणाह्वया।।१३३।।
काव्यामृता च कालिंगा कालिङ्गमर्दनोद्यता।
कालागुरुविभूषाढ्या कालागुरुविभूतिदा।।१३४।।

कालागुरुसुगन्धा च कालागुरुप्रतर्पणा।
कावेरीनीरसम्प्रीता कावेरीतीरवासिनी।।१३५।।
कालचक्रभ्रमाकारा कालचक्रनिवासिनी।
कानना काननाधारा कारुः कारुणिकामयी।।१३६।।
काम्पिल्यवासिनी काष्ठा कामपत्नी च कामभूः।
कादम्बरीपानरता तथा कादम्बरी कला।।१३७।।
कामवन्द्या च कामेशी कामराजप्रपूजिता।
कामराजेश्वरीविद्या कामकौतुकसुन्दरी।।१३८।।
काम्बोजजा काञ्चिनदा कांस्यकाञ्चनकारिणी।
काञ्चनाद्रिसमाकारा काञ्चनाद्रिप्रदानदा।।१३९।।
कामकीर्तिः कामकेशी कारिका कान्तराश्रया।
कामभेदी च कामार्तिनाशिनी कामभूमिका।।१४०।।
कालनिर्णाशिनी काव्यवनिता कामरूपिणी।
कायस्थाकामसन्दीप्तिः काव्यदा कालसुन्दरी।।१४१।।
कामेशी कारणवरा कामेशीपूजनोद्यता।
काञ्चीनूपुरभूषाढ्या कुङ्कुमाभरणान्विता।।१४२।।
कालचक्रा कालगतिः कालचक्रामनोभवा।
कुन्दमध्या कुन्दपुष्पा कुन्दपुष्पप्रिया कुजा।।१४३।।
कुजमाता कुजाराध्या कुठारवरधारिणी।
कुञ्जरस्था कुशरता कुशेशयविलोचना।।१४४।।
कुनठी कुररी कुद्रा कुरङ्गी कुटजाश्रया।
कुम्भीनस-विभूषा च कुम्भीनस-वधोद्यता।।१४५।।
कुम्भकर्णमनोल्लासा कुलचूडामणिः कुला।
कुलालगृहकन्या च कुलचूडामणिप्रिया।।१४६।।
कुलपूज्या कुलाराध्या कुलपूजापरायणा।
कुलभूषा तथा कुक्षिः कुररीगणसेविता।।१४७।।

कुलपुष्पा कुलरता कुलपुष्पपरायणा।
कुलवस्त्रा कुलाराध्या कुलकुण्डसमप्रभा।।१४८।।
कुलकुण्डसमोल्लासा कुण्डपुष्पपरायणा।
कुण्डपुष्पाप्रसन्नास्या कुण्डगोलोद्भवात्मिका।।१४९।।
कुण्डगोलोद्भवाधारा कुण्डगोलमयी कुहूः।
कुण्डगोलप्रियप्राणा कुण्डगोलप्रपूजिता।।१५०।।
कुण्डगोलमनोल्लासा कुण्डगोलललप्रदा।
कुण्डदेवरता क्रुद्धा कुलसिद्धिकरापरा।।१५१।।
कुलकुण्डसमाकारा कुलकुण्डसमानभूः।
कुण्डसिद्धिः कुण्डऋद्धिः कुमारीपूजनोद्यता।।१५२।।
कुमारीपूजकप्राणा कुमारीपूजकालया।
कुमारीपूजकप्राणा कुमारीपूजनोत्सुका।।१५३।।
कुमारीव्रतसन्तुष्टा कुमारीरूपधारिणी।
कुमारीभोजनप्रीता कुमारी च कुमारदा।।१५४।।
कुमारमाता कुलदा कुलयोनिः कुलेश्वरी।
कुललिङ्गा कुलानन्दा कुलरम्या कुतर्कधृक्।।१५५।।
कुन्ती च कुलकान्ता च कुलमार्गपरायण।
कुल्ला च कुरुकुल्ला च कुल्लुका कुलकामदा।।१५६।।
कुलिशाङ्गी कुब्जिका च कुब्जिकानन्दवर्द्धिनी।
कुलीना कुञ्जरगतिः कुञ्जरेश्वरगामिनी।।१५७।।
कुलपाली कुलवती तथैव कुलदीपिका।
कुलयोगेश्वरी कुण्डा कुङ्कुमारुणविग्रहा।।१५८।।
कुङ्कुमानन्दसन्तोषा कुङ्कुमार्णववासिनी।
कुसुमा कुसुमप्रीता कुलभूः कुलसुन्दरी।।१५९।।
कुमुद्वती कुमुदिनी कुशला कुलटालया।
कुलटालयमध्यस्था कुलटासङ्गतोषिता।।१६०।।

कुलटाभवनोद्युक्ता कुशावर्ता कुलार्णवा।
कुलार्णवाचाररता कुण्डली कुण्डलाकृतिः।।१६१।।
कुमती च कुलश्रेष्ठा कुलचक्रपरायणा।
कूटस्था कूटदृष्टिश्च कुन्तला कुन्तलाकृतिः।।१६२।।
कुशलाकृतिरूपा च कूर्च्चबीजधरा च कूः।
कुं कुं कुं कुं शब्दरता क्रूं क्रूं क्रूं क्रूं परायणा।।१६३।।
कुं कुं कुं शब्दनिलया कुक्कुरालयवासिनी।
कुक्कुरासङ्गसंयुक्ता कुक्कुरानन्तविग्रहा।।१६४।।
कूर्चारम्भा कूर्चबीजा कूर्चजापपरायणा।
कुलिनी कुलस्थाना कूर्चकष्ठपरागतिः।।१६५।।
कूर्चवीणाभालदेशा कूर्चमस्तकभूषिता।
कुलवृक्षगता कूर्मा कूर्माचलनिवासिनी।।१६६।।
कुलबिन्दू कुलशिवा कुलशक्तिपरायणा।
कुलबिन्दुमणिप्रख्या कुङ्कुमद्रुमवासिनी।। १६७।।
कुचस्पर्शनसन्तुष्टा कूचालिङ्गनहर्षदा।।१६८।।
कुमतिघ्नी कुबेरार्चा कुचभूः कुलनायिका।
कुगायना कुचधरा कुमाता कुन्ददन्तिनी।।१६९।।
कुगेया कुहराभाषा कुगेयाकुघ्नदारिका।
कीर्त्तिः किरातिनी क्लिन्ना किन्नरा किन्नरी क्रिया।।१७०।।
क्रींकारा क्रींजपासक्ता क्रींहूँस्त्रींमन्त्ररूपिणी।
किर्मीरितदृशापाङ्गी किशोरी च किरीटिनी।।१७१।।
कीटभाषा कीटयोनिः कीटमाता च कीटदा।
किंशुका कीरभाषा च क्रियासारा क्रियावती।।१७२।।
कीं कींशब्दापरा क्लां क्लीं क्लूं क्लैंक्लौंमन्त्ररूपिणी।
कांकीकूंकैंस्वरूपा च कःफट्मन्त्रस्वरूपिणी।।१७३।।
केतकीभूषणानन्दा केतकीभरणान्विता।

कैकदा केशिनी केशी केशीसूदनतत्परा।।१७४।।
केशरूपा केशमुक्ता कैकेयी कौशिकी तथा।
कैरवा कैरवाह्लादा केशरा केतुरूपिणी।।१७५।।
केशवाराध्यहृदया केशवासक्तमानसा।
क्लैव्यविनाशिनी क्लैञ्च क्लैंबीजजपतोषिता।।१७६।।
कौशल्या कोशलाक्षी च कोशा च कोमला तथा।
कोलापुरनिवासा च कोलासुरविनाशिनी।।१७७।।
कोटिरूपा कोटिरता क्रोधिनी क्रोधरूपिणी।
केका च कोकिला कोटिः कोटिमन्त्रपरायणा।।१७८।।
कोट्यनन्तमन्त्रयुता कैरूपा केरलाश्रया।
केरलाचारनिपुणा केरलेन्द्रगृहस्थिता।।१७९।।
केदाराश्रमसंस्था च केदारेश्वरपूजिता।
क्रोधरूपा क्रोधपदा क्रोधमाता च कौशिकी।।१८०।।
कोदण्डधारिणी क्रौञ्चा कौशिल्या कौलमार्गगा।
कौलिनी कौलिकाराध्या कौलिकागारवासिनी।।१८१।।
कौतुकी कौमुदी कौला कौमारी कौरवार्चिता।
कौण्डिन्या कौशिकी क्रोधज्वालाभासुररूपिणी।।१८२।।
कोटिकालानलज्वाला कोटिमार्तण्डविग्रहा।
कृत्तिका कृष्णवर्णा च कृष्ण कृत्या क्रियातुरा।।१८३।।
कृशाङ्गी कृतकृत्या च क्रःफट् स्वाहारूपिणी।
क्रौंक्रौंहूंफट्मन्त्रवर्णा क्रींह्रीहूं फट् नमः स्वधा।।१८४।।
क्रींक्रींह्रींह्रीं तथा हूं हूं फट्स्वाहामन्त्ररूपिणी।
इति श्रीसर्वसाम्राज्यमेधानाम सहस्रकम्।।१८५।।

इस प्रकार (भगवती श्रीमहाकाली) के सर्वसाम्राज्य मेधानामक सहस्रनाममंत्र को मैंने (हे पार्वति!) तुमसे कहा॥१८२॥

फलश्रुतिकथनम्

सुन्दरी शक्तिदानाख्यं स्वरूपाभिधमेव च।
कथितं दक्षिणाकाल्याः सुन्दर्य्यै प्रीतियोगतः।।१।।
वरदानप्रसङ्गेन रहस्यमपि दर्शितम्।
गोपनीयं सदा भक्त्या पठनीयं परात्परम्।।२।।
प्रातर्मध्याह्नकाले च मध्यार्द्धरात्रयोरपि।
यज्ञकाले जपान्ते च पठनीयं विशेषतः।।३।।
यः पठेत् साधको धीरः कालीरूपो हि वर्षतः।
पठेद्वा पाठयेद्वाऽपि श्रृणोति श्रावयेदपि।।४।।
वाचकं तोषयेद्वापि स भवेत् कालिकातनुः।
सहेलं वा सलीलं वा यश्चैनं मानवः पठेत्।।५।।
सर्वदुःखविनिर्मुक्तस्त्रैलोक्यविजयी कविः।
मृतबन्ध्या काकबन्ध्या कन्याबन्ध्या च बन्ध्यका।।६।।

फलश्रुति–(हे पार्वती) यह काली सहस्रनाम त्रिपुरसुन्दरी को शक्ति प्रदत्त करनेवाला और ककार रूप ही इसका स्वरूप है। महाकाली ने त्रिपुरसुन्दरी को इसका उपदेश दिया था। त्रिपुरसुन्दरी को वर-प्रदत्त करने के प्रसंग से महाकाली के रहस्य को भी मैंने तुम्हें बताया। इसे (सदैव) गोपनीय रखना चाहिए और श्रद्धापूर्वक इसका पाठ करना चाहिए। प्रातः, मध्याह्न और मध्यरात्रि तथा रात्रि के बीच के समय यज्ञकाल, जपकाल में विशेषरूप से इसका पाठ करना चाहिए।।१-३।।

जो (साधना करनेवाला) साधक धैर्यता से युक्त होकर इस कालीसहस्रनाम स्तोत्र का पाठ करते हैं, वे एक साल में ही काली के तुल्य शक्तिवान् हो जाते हैं। जो (साधक) इस स्तोत्र को पढ़ते या दूसरों को पढ़कर सुनाते हैं, वह कालिका के तुल्य शक्तिमान् हो जाते हैं। अवज्ञा से जो इस कालीसहस्रनाम का पाठ करते हैं, वे सभी दुःखों से मुक्त हो जाते हैं और शत्रुओं पर विजय प्राप्त करते हैं, इसके साथ ही साथ वे कवि हो जाते हैं। जिस स्त्री के पुत्र मर जाते हैं, वह मृतबन्ध्या और जिसे एक ही पुत्र होता है, उसे काकबन्ध्या एवं केवल पुत्री उत्पन्न करनेवाली पुत्रीबन्ध्या होती है।।४-६।।

पुष्पवन्ध्या शूलवन्ध्या शृणुयात् स्तोत्रमुत्तमम्।
सर्वसिद्धिप्रदातारं सत्कविं चिरजीवितम्।।७।।
पण्डित्यं कीर्त्तिसंयुक्तं लभते नाऽत्र संशयः।
यं यं काममुपस्कृत्य कालीं ध्यात्वा जपेत् स्तवम्।।८।।
तं तं कामं करे कृत्वा मन्त्री भवति नाऽन्यथा।
योनिपुष्पैर्ल्लिङ्गपुष्पैः कुण्डगोलोद्भवैरपि।।९।।
संयोगामृतपुष्पैश्च वस्त्रदेवीप्रसूनकैः।
कालिपुष्पैः पीठतोयैर्योनिक्षालनतोयकैः।।१०।।
कस्तूरीकुङ्कुमैर्द्देवीं नखकालागुरुक्रमात्।
अष्टगन्धैर्धूपदीपैर्यवयायवसंयुतैः ।।११।।
रक्तचन्दनसिन्दूरैर्मत्स्यमांसादिभूषणैः ।
मधुभिः पायसैः क्षीरैः शोधितैः शोणितैरपि।।१२।।
महोपचारै रक्तैश्च नैवेद्यैः सुरसान्वितैः।
पूजयित्वा महाकालीं महाकालेन लालिताम्।।१३।।

पुष्प न होनेवाली पुष्पबन्ध्या और शूल से पीड़ा होने के कारण पुत्र प्रसव न करनेवाली शूलबन्ध्या, सर्वथा पुत्र न उत्पन्न करनेवाली बन्ध्या, इस सभी प्रकार की बन्ध्या स्त्रियों को इस स्तोत्र का पाठ अवश्य करना चाहिए। इसका पाठ करनेवालों को सुन्दर कवि और दीर्घायु पुत्र, काली के प्रसाद से प्राप्त होते हैं।।७।।

इस कालीसहस्रनाम स्तोत्र का पाठ करने से मनुष्य कीर्ति से युक्त, पांडित्य प्राप्त करते हैं, इसमें संदेह नहीं है। जिन-जिन कामनाओं की प्राप्ति के लिए मनुष्य महाकाली का ध्यान करते हुए उनके मंत्र का जप करते हैं, वह उन मनोवांछित कामनाओं को प्राप्त कर लेते हैं। रज, वीर्य, संयोगामृतपुष्प, रजस्वला के पुष्प, कालिपुष्प, योनितोय, पीठतोय, योनिक्षालिततोय से, कस्तूरी, कुमकुम से, नख, कालागुरु, अष्टगंध, धूप, दीप, यव, यावय संयुक्त, लालचंदन, सिंदूर, मत्स्यमांस, भूषण, शहद, चावल, दूध, शुद्ध शोणित, सुन्दर रसयुक्त फलादि महोपचार, खून और अति सरस नैवेद्य द्वारा महाकाल की गोद में स्थित महाकाली का पूजन करें।।८-१३।।

विद्याराज्ञीं कुल्लुकाञ्च जप्त्वा स्तोत्रं जपेच्छिवे।
कालीभक्तस्त्वेकचित्तः सिन्दूरतिलकान्वितः।।१४।।
ताम्बूलपूरितमुखो मुक्तकेशो दिगम्बरः।
शवयोनिस्थितो वीरः श्मशानसुरतान्वितः।।१५।।
शून्यालये बिन्दुपीठे पुष्पाकीर्णे शिवानने।
शयानोत्थप्रभुञ्जानः कालीदर्शनमाप्नुयात्।।१६।।
तत्र यद्यत् कृतं कर्म तदनन्तफलं भवेत्।
ऐश्वर्ये कमला साक्षात् सिद्धौ श्रीकालिकाम्बिका।।१७।।
कवित्वे तारिणीतुल्यः सौन्दर्ये सुन्दरीसमः।
सिन्धोर्द्धारासमः कार्ये श्रुतौ श्रुतिधरस्तथा।।१८।।
वज्रास्त्र इव दुर्द्धर्षस्त्रैलोक्यविजयास्त्रभूत्।
शत्रुहन्ता काव्यकर्त्ता भवेच्छिवसमः कलौ।।१९।।

फिर विद्याराज्ञी और कुल्लुका जप करके महाकालीसहस्रनाम का पाठ करें। पाठ करते समय काली में चित्त को लगा दें और पाठकर्ता को सिंदूर का तिलक लगाना चाहिए।।१४।।

साधक को पाठ करते समय मुख में ताम्बूल भक्षण कर मुक्तकेश और बिना वस्त्र के रहना चाहिए। शव (मुर्दे) पर स्थित होकर अकेले श्मशान में इसका पाठ करना चाहिए। अकेले घर में, त्रिकोण मध्यगामी बिन्दु के आसन पर या रजोयुक्त स्त्री के साथ और शृंगालियों के स्थान पर शयन करने से, खड़े रहकर भोजन करने से काली का दर्शन प्राप्त होता है।।१५-१६।।

उपरोक्त स्थानों पर जो साधक अर्चना करता है, वह अनन्त फल देनेवाला होता है। महाकाली के सहस्रनाम का पाठ करनेवाला साधक ऐश्वर्य में लक्ष्मी के तुल्य, सिद्धि ने माता महाकाली के तुल्य।।१७।।

कविता में श्रीविद्या के तुल्य, सुन्दरता में सुन्दरी के तुल्य, कार्य में समुद्रधारा के तुल्य, श्रुति में श्रुतिधर के तुल्य हो जाता है।।१८।।

त्रैलोक्य के विजय में इंद्र के तुल्य पराक्रमी तथा कलिकाल में शत्रुहन्ता और काव्यकर्ता शिव के तुल्य हो जाता है।।१९।।

दिग्-विदिक्-चन्द्रकर्त्ता च दिवारात्रिविपर्ययी।
महादेवसमो योगी त्रैलोक्यस्तम्भकः क्षणात्।।२०।।
गानेन तुम्बुरुः साक्षाद् दाने कर्णसमो भवेत्।
गजाश्व-रथ पत्तीनाम अस्त्राणामधिपः कृती।।२१।।
आयुष्येषु भुशुण्डी च जरापलितनाशकः।
वर्षषोडशवान् भूयात् सर्वकाले महेश्वरि।।२२।।
ब्रह्माण्डगोले देवेशि! न तस्य दुर्लभं क्वचित्।
सर्वं हस्तगतं भूयान्नात्र कार्या विचारणा।।२३।।
कुलपुष्पयुतं दृष्ट्वा तत्र कालीं विचिन्त्य च।
विद्याराज्ञीं तु सम्पूज्य पठेन्नामसहस्त्रकम्।।२४।।
मनोरथमयी सिद्धिस्तस्य हस्ते सदा भवेत्।
परदारान् समालिङ्ग्य सम्पूज्य परमेश्वरीम्।।२५।।
हस्ता हस्तिकया योगं कृत्वा जप्त्वा स्तवं पठेत्।
योनीं वीक्ष्य जपेत् स्तोत्रं कुबेरादधिको भवेत्।।२६।।

(ऐसा साधक) दिशाओं और विदिशाओं में चन्द्रमा को प्रगट कर देता है और रात्रि को दिन तथा दिन को रात्रि बनाने में समर्थवान् हो जाता है। (वह) योग में शिव के तुल्य हो जाता है और क्षणमात्र में तीनों लोकों को स्तंभित कर देता है। गायनविद्या में तुम्बुरु के तुल्य तथा दान देने में कर्ण के तुल्य होता है। हाथी, घोड़ा, रथ, पैदल तथा अस्त्र-शस्त्रों का वह स्वामी होता है और उसका जीवन सफल हो जाता है। काकभुशुण्डी के तुल्य आयु में दीर्घजीवी होता है, उसके पास वृद्धावस्था नहीं आती है, वह हमेशा सोलह वर्ष का किशोर बना रहता है॥२०-२२॥

हे पार्वती! इस संसार में उसके लिये कुछ भी दुर्लभ (अप्राप्य) नहीं होता है। सभी पदार्थ उसके वशीभूत हो जाते हैं, इसमें संदेह की आवश्यकता नहीं। साधना करनेवाला भगवती को रजस्वला के रूप में जानकर उनका ध्यान करे, फिर महाविद्याराज्ञी का पूजन कर कालीसहस्त्रनाम का पाठ करे। दूसरे की स्त्री का स्पर्श करते हुए परमेश्वरी का पूजन करे और दूसरे की स्त्री का हाथ पकड़कर कालीसहस्त्रनाम स्तोत्र का पाठ करने से मनुष्य को समस्त सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। (ऐसे साधक का) मनोरथ पूर्ण हो जाता है। ऐश्वर्य में वह कुबेर से भी अधिक सम्पन्न हो जाता है॥२३-२६॥

कुण्डगोलोद्भवं गृह्यवर्णाक्तं होमयेन्निशि।
पितृभूमौ महेशानि विधिरेखां प्रमार्जयेत्।।२७।।
तरुणीं सुन्दरीं रम्यां चञ्चलाङ्गामगर्विताम्।
समानीय प्रयत्नेन संशोध्य न्यास-योगतः।।२८।।
प्रसूनमञ्चं संस्थाप्य पृथिवीं कशिताञ्चरेत्।
मूलचक्रं तु संभाव्य देव्याश्चारणसंयुतम्।।२९।।
सम्पूज्य परमेशानि सङ्कल्प्य तु महेश्वरि!।
जप्त्वा स्तुत्वा महेशानीं प्रणवं संस्मरेच्छिवे।।३०।।
अष्टोत्तरशतैर्योनिं प्रमन्त्र्या चुम्ब्य यत्नतः।
संयोगीभूय जप्तव्यं सर्वविद्याधिपो भवेत्।।३१।।
शून्यागारे शिवारण्ये शिवदेवालये तथा।
शून्यदेशे तडागे च गङ्गागर्भे चतुष्पथे।।३२।।
श्मशाने पर्वतप्रान्ते एकलिङ्गे शिवामुखे।
मुण्डयोनौ ऋतौ स्नात्वा गेहे वेश्यागृहे तथा।।३३।।

हे महेशानि! कुल एवं गोलक के वर्णाक्त को लेकर श्मशान में हवन करनेवाला पुरुष ब्रह्मा के लिखे को भी बदल सकता है। अत्यधिक मनोहर तरुणी (युवती), जो काम के गर्व से इठलाती हो और चंचल हो, उसे प्रयत्न करके बुलावें। फिर न्यासविधि से उसे स्नान करावें, उस (स्त्री को) फूलों की सेज पर बिठावें और स्वयं भूमि पर रहें। फिर देवी के चरणों से युक्त मूलमंत्र का स्मरण करें। हे शिवे, हे महेशानि! फिर संकल्प करके देवी का पूजन कर देवी के मूलमंत्र का जप करें। इसके पश्चात् कालीसहस्रनाम स्तोत्र का पाठ करें, फिर प्रणव का स्मरण करें॥२७-३०॥

(साधक) महाकाली के मूलमंत्र से एक सौ आठ बार योनि को अभिमंत्रित कर चुम्बन करे। फिर उस स्त्री के साथ मिलकर काली के मंत्र का जप करे। ऐसा करनेवाला पुरुष समस्त विद्याओं का स्वामी हो जाता है। खंडहर में, शृंगालियों के वन में, शिवमन्दिर में, निर्जन स्थान में, तालाब में, गंगा के मध्य में, चौराहे पर, श्मशान में, पर्वत पर, अकेले और शिवामुख में ऋतुमती स्त्री की योनि को मुण्डित कराकर अपने गृह में स्नान करने के पश्चात् या वेश्या के गृह में,

कुट्टिनीगृहमध्ये च कदलीमण्डपे तथा।
पठेत् सहस्रनामाख्यं स्तोत्रं सर्वार्थसिद्धये।।३४।।
अरण्ये शून्यगर्त्ते च रणे शत्रुसमागमे।
प्रजपेच्च ततो नाम काल्याश्चैव सहस्रकम्।।३५।।
बालानन्दपरो भूत्वा पठित्वा कालिकास्तवम्।
कालीं सञ्चिन्त्य प्रजपेत् पठेन्नामसहस्रकम्।।३६।।
सर्वसिद्धीश्वरो भूयाद्वाञ्छासिद्धीश्वरो भवेत्।
मुण्डचूडकयोर्योनि त्वचि वा कोमले शिवे!।।३७।।
विष्टरे शववस्त्रे वा पुष्पवस्त्रासनेऽपि वा।
मुक्तकेशो दिशावासा मैथुनी शयने स्थितः।।३८।।
जप्त्वा कालीं पठेत् स्तोत्रं खेचरी सिद्धिभाग् भवेत्।
चिकुरं योगमासाद्य शुक्रोत्सारणमेव च।।३९।।

कुटनी के गृह में, केले के मण्डप का निर्माण कर उसमें कालीसहस्रनाम स्तोत्र का पाठ करने से सम्पूर्ण मनोरथों की सिद्धि होती है। जंगल में, गुफा में, शत्रु के साथ युद्ध के लिये समरभूमि में, इस कालीसहस्रनाम स्तोत्र का पाठ करे।।३१-३५।।

बालकों को प्रसन्न करने के पश्चात् कालिका स्तोत्र का पाठ एवं महाकाली का ध्यान करते हुए (इस) कालीसहस्रनाम स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। जो (साधक) ऐसा करते हैं, उनको सम्पूर्ण सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं और उनका अभीष्ट सदैव पूर्ण होता है। मुण्डित या अमुण्डित योनि में रतिक्रिया करता हुआ या कोमल चमड़े पर, कुशा निर्मित आसन पर, कफन पर, रजस्वलास्त्री के वस्त्र के आसन पर, बालों को खोले हुए निर्वस्त्र होकर मैथुन किये गये शयन पर, काली का (जो साधक) जप करता हुआ कालीसहस्रनाम का पाठ करता है, उसे खेचरी मुद्रा सिद्ध प्राप्त हो जाती है। चिकुर को पकड़कर दक्षिणाकाली का जप कर शुक्र को निकालनेवाला साधक शताधिक बलवानों का सामना करने में समर्थ हो जाता है। लता का स्पर्श कर जप करे या रमण कर महाकाली का पूजन करें।।३६-४०।।

जप्त्वा श्रीदक्षिणां कालीं शक्तिपातशतं भवेत्।
लतां स्पृशं जपित्वा च रमित्वा त्वर्चयन्नपि।।४०।।
आलोकयन् दिशावासाः परशक्तिं विशेषतः।
स्तुत्वा श्रीदक्षिणां कालीं योनिं स्वकरगां चरेत्।।४१।।
पठेन्नामसहस्रं यः स शिवादधिको भवेत्।
लतान्तरेषु जप्तव्यं स्तुत्वा कालीं निराकुलः।।४२।।
दशावधानो भवति मासमात्रेण साधकः।
कालरात्र्यां महारात्र्यां वीररात्र्यामपि प्रिये!।।४३।।
महारात्र्यां चतुर्द्दश्यामष्टम्यां संक्रमेऽपि वा।
कुहूपूर्णेन्दुशुक्रेषु भौमायां निशामुखे।।४४।।
नवम्यां मङ्गलदिने तथा कुलतिथौ शिवे!।
कुलक्षेत्रे प्रयत्नेन पठेन्नामसहस्रकम्।।४५।।
सौदर्शनो भवेदाशु किन्नरी सिद्धिभाग्भवेत्।
पश्चिमाभिमुखं लिङ्गं वृषशून्यं पुरातनम्।।४६।।
तत्र स्थित्वा जपेत् स्तोत्रं सर्वकामाप्तये शिवे।
भौमवारे निशीथे वा अमावस्यादिने शुभे।।४७।।

बिना वस्त्र के परशक्ति का ध्यान करें अपने हाथ से योनि को पकड़कर दक्षिणाकाली का स्मरण करें। इसके उपरान्त कालीसहस्रनाम स्तोत्र का पाठ करे, (ऐसे कृत्य) करनेवाला साधक शिव से भी अधिक शक्तिशाली होता है। लता के मध्य में काली का स्मरण कर सावधान होकर कालीसहस्रनाम का पाठ करना चाहिए।।४१-४२।।

इस प्रकार का साधक एक माह में दशावधान हो जाता है। कालरात्रि में, महारात्रि में, वीररात्रि में, चतुर्दशी और अष्टमी तिथि को, संक्रान्ति, अमावस्या, पूर्णमासी शुक्रयुक्त, भौमयुक्त अमावस्या में, सायंकाल मंगल दिनयुक्त नवमी तिथि में और कुलतिथि में कुरुक्षेत्र में प्रयत्नपूर्वक कालीसहस्रनाम का पाठ करना चाहिए। ऐसा साधक सभी अंगों से सुन्दर हो जाता है, किन्नरी सिद्धि उसे प्राप्त हो जाती है। जिस प्राचीन स्थान पर पश्चिमाभिमुख (शिव) लिंग हो, किन्तु नंदी न हो, ऐसे (प्राचीन) स्थान पर बैठकर समस्त कामना सिद्धि के लिये कालीसहस्रनाम का पाठ करना चाहिए। मंगलवार के दिन अर्धरात्रि

माषभक्तबलिं छागं कृसरान्नं च पायसम्।
दग्धमीनं शोणितञ्च दधि-दुग्धं गुडार्द्रकम्।।४८।।
बलिं दत्त्वा जपेत् तत्र त्वष्टोत्तरसहस्रकम्।
देव-गन्धर्व-सिद्धौघैः सेवितां सुरसुन्दरीम्।।४९।।
लभेद्देवेशि! मासेन तस्य चासन संहतिः।
हस्तत्रयं भेदूर्ध्वन्नात्र कार्या विचारणा।।५०।।
हेलया लीलया भक्त्या कालीं स्तौति नरस्तु यः।
ब्रह्मादींस्तम्भयेद्देवि! माहेशीं मोहयेत् क्षणात्।।५१।।
आकर्षयेन्महाविद्यां दशपूर्वान् त्रियामतः।
कुर्वीत विष्णुनिर्माणं यमादीनां तु मारणम्।।५२।।
ध्रुवमुच्चाटयेन्नूनं सृष्टिनूतनतां नरः।
मेष-माहिष-मार्ज्जार-खर-च्छाग-नरादिकैः ।।५३।।
खड्गी-शूकर-कापोतै-ष्टिट्टिभैः शशकैः पलैः।
शोणितैः सास्थिमांसैश्च कारण्डैर्दुग्धपायसैः।।५४।।

में और अमावस्या की अर्द्धरात्रि में काली को उर्द मिश्रित भात, बकरा, खिचड़ी, खीर, भुनी हुई मछली, खून, दूध, दही, गुड़मिश्रित आदि की बलि देकर एक हजार आठ बार कालीसहस्रनाम का पाठ करनेवाला साधक देव-गंधर्व और सिद्धों से सेवित महाकाली को प्राप्त कर लेता है।।४३-४९।।

इसमें संदेह नहीं है कि ऐसे पुरुष का आसन भूमि से तीन हाथ ऊपर गगन में स्थित होता है। बिना मन के भी जो मनुष्य महाकाली की स्तुति करता है, वह ब्रह्मादि देवों की गति को भी रोक सकता है और क्षणमात्र में देवी को मोहित कर लेता है। मात्र तीन प्रहर में ही वह दसों महाविद्याओं का आकर्षण कर सकता है, वह विष्णु का निर्माण कर सकता है और यमराज का भी वध कर सकता है। (ऐसा साधक) ध्रुव का उच्चाटन कर सकता है और नवीन सृष्टि के निर्माण में समर्थ हो सकता है। साधक को मेष, महीष, मार्जार, गदहा, बकरा, मनुष्य, गैंडा, सूअर, कबूतर, टिट्टिभ, खरगोश आदि के मांस और रक्त, अस्थि, बत्तख, दूध, खीर,

कादम्बरीसिन्धुमद्यैः सुरारिष्टैश्च सासवैः।
योनिक्षालिततोयैश्च योनिलिङ्गामृतैरपि।।५५।।
स्वजातकुसुमैः पूज्यां जपान्ते तर्पयेच्छिवाम्।
सर्वसाम्राज्यनाम्ना तु स्तुत्वा नत्वा स्वशक्तितः।।५६।।
शक्त्यालभन् पठेत् स्तोत्रं कालीरूपो दिनत्रयात्।
दक्षिणाकालिका तस्य गेहे तिष्ठति नाऽन्यथा।।५७।।
वेश्यालता गृहे गत्वा तस्याश्चुम्बनतत्परः।
तस्या योनौ मुखं दत्त्वा तद्रसं विलिहं जपेत्।।५८।।
तदन्ते नाम साहस्रं पठेद्भक्ति-परायणः।
कालिकादर्शनं तस्य भवेदेव त्रियामतः।।५९।।
नृत्यपात्रगृहे गत्वा मकारपञ्चकान्वितः।
प्रसूनमञ्चे संस्थाप्य शक्तिन्यासपरायणः।।६०।।
पात्राणां साधनं कृत्वा दिग्वस्त्रान्तां समाचरेत्।
संभाव्य चक्रं तन्मूले तत्र सावरणान् जपेत्।।६१।।

पुष्परस से बना हुआ मद्य, सीधुमद्य, सुगन्धित आसव, योनि का धोया हुआ जल, संभोगकाल में योनि और लिंग से निकले हुए रज-वीर्य आदि से जप के अंत में महाकाली का तर्पण करना चाहिए, फिर अपनी सामर्थ्य के अनुसार सर्वसाम्राज्यदायक महाकाली स्तोत्र का पाठ करना चाहिए।।५०-५६।।

जो साधक शक्ति का स्पर्श करता हुआ कालीसहस्रनाम का पाठ करता है, वह तीन दिन में ही काली के तुल्य हो जाता है। उसके गृह में हमेशा दक्षिणाकाली निवास करती हैं। वेश्या के गृह में जाकर (साधक) मुखचुम्बन करें। फिर उसकी योनि में मुख लगाकर उसका अवलेहन करते हुए एक हजार बार जप करे। तदुपरान्त भक्तियुक्त होकर कालीसहस्रनाम का पाठ करे। ऐसा करने से तीन प्रहर में ही काली का दर्शन प्राप्त हो जाता है। नाचनेवाली के गृह में जाकर उसको पुष्पशय्या पर पञ्चमकार से युक्त हो स्थापित करे, पुनः शक्तिन्यास करे। काली के उपभोग युक्त मद्य, मांस आदि युक्त पात्र स्थापित करके वेश्या को निर्वस्त्र करे। वहाँ पर चक्र को संभावित कर आवरण सहित जप करे।।५७-६१।।

शतं भाले शतं केशे शतं सिन्दूरमण्डले।
शतत्रयं कुचद्वन्द्वे शतन्नाभौ महेश्वरि!।।६२।।
शतं योनौ महेशानि! संयोगे च शतत्रयम्।
जपेत्तत्र महेशानि! तदन्ते प्रपठेत् स्तवम्।।६३।।
शतावधानो भवति मासमात्रेण साधकः।
मातङ्गिनीं समानीय किं वा कपालिनीं शिवे!।।६४।।
दन्तमाला जपे कार्या गले धार्या नृमुण्डजा।
नेत्रपद्मे योनिचक्रं शक्तिचक्रं स्ववक्त्रके।।६५।।
कृत्वा जपेन्महेशानि मुण्डयन्त्रं प्रपूजयेत्।
मुण्डासनस्थितो वीरो मकारपञ्चकान्वितः।।६६।।
अन्यामालिङ्ग्य प्रजपेदन्यां सञ्चुम्ब्य वै पठेत्।
अन्यां सम्पूजयेत्तत्र त्वन्यां सम्मर्दयन् जपेत्।।६७।।
अन्यायोनौ शिवं दत्त्वा पुनः पूर्ववदाचरेत्।
अवधानसहस्रेषु शशिपातशतेषु च।।६८।।
राजा भवति देवेशि! मासपञ्चयोगतः।
यवनीशक्तिमानीय गानशक्तिपरायणाम्।।६९।।
कुलाचारमते नैव तस्या योनिं विकासयेत्।
तत्र जिह्वां प्रदत्त्वा तु जपेन्नामसहस्रकम्।।७०।।

हे महेश्वरि! सौ बार मस्तक पर न्यास करे, सौ बार केश पर न्यास करे, सौ बार सिंदूर मण्डल के स्थान सीमन्त में न्यास करे। सौ बार दोनों स्तनों पर न्यास करे, सौ बार नाभि पर न्यास करे, हाथ के न्यासों से सौ बार मंत्र का जप करे। फिर योनि पर हाथ रखकर सौ बार तथा सम्भोग काल में तीन सौ बार जप करे। इसके उपरान्त ही स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। इस प्रकार का साधक एक मास में शतावधान हो जाता है, मातंगिनी या कापालिनी को स्थापित कर दूसरे की स्त्री का आलिंगन करके जप करे और दूसरे की स्त्री का चुम्बन करके पाठ करे। दूसरे की स्त्री का पूजन करें और दूसरे की स्त्री का संमर्दन करे। दूसरे की स्त्री की योनि में लिंग डालें। इस प्रकार का साधक शतावधानों में और शक्तिमानों में सबसे बड़ा राजा होता है। गायन विद्या में दक्ष किसी स्त्री को बुलाकर कुलाचार परम्परा के अनुकूल उसकी योनि के विकसित करें। तदुपरान्त उसमें जीभ डालकर सहस्रनाम का पाठ करें।।६२-७०।।

नृपकाले तत्र दीपं ज्वाल्य यत्नेन वै जपेत्।
महाकविवरो भूयान्नाऽत्र कार्या विचारणा।।७१।।
कामार्तो शक्तिमानीय योनौ तु मूलचक्रकम्।
विलिख्य परमेशानि तत्र मन्त्रं लिखेच्छिवे।।७२।।
तल्लिहन् प्रजपेद् देवि! सर्वशास्त्रार्थतत्त्ववित्।
अश्रुतानि च शास्त्राणि वेदादीन् पाठयेद् ध्रुवम्।।७३।।
विना न्यासैर्विना पाठैर्विना ध्यानादिभिः प्रिये!।
चतुर्वेदाधिपो भूत्वा त्रिकालज्ञस्त्रिवर्षतः।।७४।।
चतुर्विधं च पाण्डित्यं तस्य हस्तगतं क्षणात्।
शिवाबलिः प्रदातव्या सर्वदा शून्यमण्डले।।७५।।
कालीध्यानं मन्त्रचिन्ता नीलसाधनमेव च।
सहस्रनामपाठश्च कालीनाम-प्रकीर्तनम्।।७६।।
भक्तस्य कार्यमेतावदन्यदभ्युदय विदुः।
वीरसाधनकं कर्म शिवापूजा बलिस्तथा।।७७।।

(मृतक) मनुष्य की खोपड़ी पर दीप की माला स्थापित करके (साधक को) जप करना चाहिए। ऐसा करने से साधक महाकवि होता है, इसमें संदेह नहीं है। साधक कामातुर हो शक्ति को बुलाकर योनि पर मूलचक्र लिखकर फिर मंत्र लिखे। इस प्रकार का साधक मंत्रयुक्त उस योनि का अवलेहन करता हुआ समस्त शास्त्रों के अर्थों का जानकार हो जाता है। (वह) अश्रुत और बिना पठन किये गये वेदादि को भी पढ़ाने में दक्ष होता है। न्यास, पाठ और ध्यान के बिना भी वह चारों वेदों (ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद, सामवेद) का ज्ञाता होता है और तीन वर्ष तक नियमित पाठ करने से त्रिकालज्ञ हो जाता है।।७१-७४।।

चारों प्रकार का पाण्डित्य कालीसहस्रनाम का पाठ करनेवाले साधक को प्राप्त हो जाता है। पूर्णतः निर्जन स्थान में ही महाकाली को बलि प्रदत्त करनी चाहिए। काली का ध्यान, मंत्र का जप, नील-साधन, सहस्रनाम का पाठ, कालीनाम का जप करने से साधक को सर्वत्र अभ्युदय की प्राप्ति होती है। प्रेतसिद्धि, महाकाली पूजा, महाकाली की बलि,

सिन्दूरतिलको देवि! वेश्यालापो निरन्तरम्।
वेश्यागृहे निशाचारो रात्रौ पर्यटनं तथा।।७८।।
शक्तिपूजा योनिदृष्टिः खड्गहस्तो दिगम्बरः।
मुक्तकेशो वीरवेषः कुलमूर्तिधरो नरः।।७९।।
कालीभक्तो भवेद् देवि! नाऽन्यथा क्षोभमाप्नुयात्।
दुग्धस्वादी योनिलेही संविदासवघूर्णितः।।८०।।
वेश्यालता-समायोगान् मासात् कल्पलता स्वयम्।
वेश्याचक्र-समायोगात् कालीचक्रसमः स्वयम्।।८१।।
वेश्यादेह-समायोगात् कालीदेहसमः स्वयम्।
वेश्यामध्यगतं वीरं कदा पश्यामि साधकम्।।८२।।
एवं वदति सा काली तस्माद् वेश्या वरा मता।
वेश्याकन्या तथा पीठ-जातिभेद-कुलक्रमात्।।८३।।
अकुलक्रमभेदेन ज्ञात्वा चाऽपि कुमारिकाम्।
कुमारीं पूजयेद् भक्त्या जपान्ते भवनं प्रिये!।।८४।।
पठेन्नामसहस्त्रं यः कालीदर्शनभाग् भवेत्।
भक्त्या पूज्य कुमारीं च वेश्याकुलसमुद्भवाम्।।८५।।

सिंदूर का तिलक, सदैव वेश्याओं से वार्ता, रात्रि के समय वेश्या के घर में रहना और रात्रि में पर्यटन करना, शक्तिपूजा, यौनदृष्टि, हाथ में खड्ग, बिना वस्त्र के, बिखरे हुए बाल, वीरवेष, कुलमूर्ति को धारण करने वाला मनुष्य ही महाकाली का भक्त होता है। यदि वह ऐसा नहीं है तो दु:ख को प्राप्त करता है। दुग्धपान करनेवाला, योनि का लेह करनेवाला, ज्ञानी आसव से देखता हुआ मनुष्य वेश्यालता का आश्रय लेने से क्षणभर में कल्पलता के तुल्य हो जाता है और वेश्याचक्र के समायोग से कालीचक्र के सदृश हो जाता है। (साधना करनेवाला) साधक वेश्या के शरीर के समायोग से स्वयं काली देह के तुल्य हो जाता है। काली ऐसा भी कहती हैं कि मैं अपनी साधना करनेवाले साधक को वेश्या के बीच में कब देखूँगी? यही कारण है कि वेश्या उत्तम (श्रेष्ठ) है, वेश्या कन्या, पीठजाति भेद कुलचक्र से जो (साधक इस) कालीसहस्त्रनाम का पाठ करता है, वह काली दर्शन के फल को (अवश्य) प्राप्त करता है। वेश्याकुल में पैदा हुई कुमारी का भी पूजन करें।।७५-८५।।

वस्त्रहेमादिभिस्तोष्य यत्नात् स्तोत्रं पठेच्छिवे!।
त्रैलोक्यविजयी भूयाद् दिवाचन्द्रप्रकाशकः।।८६।।
यद्यद् दत्तं कुमार्यै तु तदनन्तफलं भवेत्।
कुमारीपूजनफलं मया वक्तुं न शक्यते।।८७।।
चाञ्चल्यादुदिकं किञ्चित् क्षम्यतामयमञ्जलिः।
एका चेत् पूजिता बाला द्वितीया पूजिता भवेत्।। ८८।।
कुमार्यः शक्तयश्चैव सर्वमेतच्चराचरम्।
शक्तिमानीय तद्‌गात्रे न्यासजालं प्रविन्यसेत्।।८९।।
वामभागे च संस्थाप्य जपेन्नामसहस्रकम्।
सर्वसिद्धीश्वरो भूयान्नात्र कार्या विचारणा।।९०।।
श्मशानस्थो भवेत् स्वस्थो गलितं चिकुरं चरेत्।
दिगम्बरः सहस्रं च सूर्यपुष्पं समानयेत्।।९१।।
स्ववीर्येण युतं कृत्वा प्रत्येकं प्रजपन् हुनेत्।
पूज्य ध्यात्वा महाभक्त्या क्षमापालो नरः भवेत्।।९२।।

कुमारी को वस्त्र और होमादि द्वारा संतुष्ट (प्रसन्न) कर प्रयत्नपूर्वक कालीसहस्रनाम स्तोत्र का पाठ करना चाहिए। (ऐसा करने से) पुरुष तीनों लोकों में विजयी होता है और दिन में चन्द्रमा को भी (आकाश में) प्रगट कर देता है। कुमारी को प्रदत्त किया गया दान अनन्त फल देनेवाला होता है। कुमारी-पूजन का फल अनन्त है, जिसे कहने में मैं सक्षम नहीं हूँ। चंचलतावश (मैंने) जो कुछ कहा हो, उसे क्षमा करें। मैं हाथ जोड़ता हूँ, मात्र एक बाला की पूजा करने से महाकाली अपने आप पूजित हो जाती हैं।।८६-८८।।

यह सम्पूर्ण संसार ही कुमारी और शक्तिमय है। इसलिए कुमारी के शरीर में शक्ति का आवाहन कर न्यासादि द्वारा शक्ति को स्थापित करना चाहिए। कुमारी को महाकाली के बायें भाग में स्थापित कर कालीसहस्रनाम का पाठ करें। (ऐसा करने से) मनुष्य सर्वसिद्धीश्वर हो जाता है। इसमें विचार करने की आवश्यकता नहीं है। श्मशान में बिना भय के निवास करें, बालों को बिखेर कर बिना वस्त्र पहने एक हजार धतूरे का पुष्प ले आवें। तत्पश्चात् धतूरे का पुष्प लें (उसमें) वीर्य मिलाकर (काली के प्रत्येक मंत्र से) क्रमानुसार एक-एक पुष्प का एक हजार बार हवन करें। फिर पूजा कर भगवती का ध्यान करें। ऐसा करनेवाला मनुष्य राजा होता है।।८९-९२।।

नखकेशं स्ववीर्यं च यद्यत् संमार्जनीगतम्।
मुक्तकेशों दिशावासो मूलमन्त्रपुरःसरः।।९३।।
कुजवारे मध्यरात्रे होमं कृत्वा श्मशानके।
पठेन्नाम-सहस्त्रं यः पृथ्वीशाकर्षण भवेत्।।९४।।
पुष्पयुक्ते भगे देवि! संयोगानन्दतत्परः।
पुनश्चिकुरमासाद्य मूलमन्त्रं जपन् शिवे!।।९५।।
चितावह्नौ मध्यरात्रे वीर्यमुत्सार्ययत्नतः।
कालिकां पूजयेत् तत्र पठेन्नाम-सहस्त्रकम्।।९६।।
पृथ्वीशाकर्षणं कुर्यान्नाऽत्र कार्या विचारणा।
कदलीवनमासाद्य लक्षमात्रं जपेन्नरः।।९७।।
मधुमत्या स्वयं देव्या सेव्यमानः स्मरोपमः।
श्रीमधुमतीत्युक्त्वा तथा स्थावर-जङ्गमान्।।९८।।
आकर्षिणीं समुच्चार्य ठं ठं स्वाहा समुच्चरेत्।
त्रैलोक्याकर्षिणी विद्या तस्य हस्ते सदा भवेत्।। ९९।।

सम्मार्जनीय में नख, केश और अपना वीर्य रखकर बालों को बिखेरकर और बिना वस्त्र पहने मूलमन्त्र द्वारा श्मशान में, मंगलवार के दिन मध्य रात्रि में हवन करके कालीसहस्त्रनाम का पाठ करनेवाला साधक राजा को भी (अपनी ओर) आकृष्ट कर लेता है। रजस्वला स्त्री से संभोग कर फिर केशयुक्त आसन पर बैठकर मूलमंत्र का जप करें। फिर मध्यरात्रि में यत्नपूर्वक अपना वीर्य निकालकर (जलती हुई) चिता की अग्नि में हवन करके काली का पूजन करने के उपरान्त कालीसहस्त्रनाम का पाठ करें।।९३-९६।।

इस प्रकार का साधक राजा को भी (अपनी ओर) आकृष्ट कर लेता है। इसमें (लेशमात्र) संदेह नहीं है। केले के वन में एक लाख जप करनेवाला साधक मधुमती देवी से स्वयं काम के सदृश पूजित होता है। तदुपरान्त 'श्रीमधुमति स्थावरजंगमान् आकषर्य ठंठं स्वाहा' यह उच्चारण करें। ऐसा करने से साधक के हाथ में त्रैलोक्याकर्षिणी विद्या सिद्ध हो जाती है।।९७-९९।।

नदीं पुरीं च रत्नानि हेम-स्त्री-शैलभूरुहान्।
आकर्षयत्यम्बुनिधिं सुमेरु च दिगन्ततः।।१००।।
अलभ्यानि च वस्तूनि दूराद् भूमितलादपि।
वृत्तान्तं च सुरस्थानाद् रहस्यं विदुषामपि।।१०१।।
राज्ञां च कथयत्येषा सत्यं सत्त्वरमादिशेत्।
द्वितीयवर्षपाठेन भवेत् पद्मावती शुभा।।१०२।।
ॐ ह्रीं पद्मावतिपदं ततस्त्रैलोक्यनाम च।
वार्त्ता च कथय द्वन्द्वं स्वाहान्तो मन्त्र ईरितः।।१०३।।
ब्रह्म-विष्ण्वादिकानां च त्रैलोक्ये यादृशी भवेत्।
सर्वं वदति देवेशी त्रिकालज्ञः कविः शुभः।।१०४।।
त्रिवर्षं पठतो देवि! लभेद् भोगवतीं कलाम्।
महाकालेन दष्टोऽपि चितामध्यगतोऽपि वा।।१०५।।
तस्या दर्शनमात्रेण चिरञ्जीवी नरो भवेत्।
मृतसञ्जीविनीत्युक्त्वा मृतमुत्थापय द्वयम्।।१०६।।

यह मधुमती विद्या नदी, नगर, रत्न, सुवर्ण, स्त्री, पर्वत, वृक्ष, सागर और सुमेरु को भी सरलता से (अपनी ओर) आकृष्ट कर लेती है। दूर की वस्तु, अलभ्य वस्तु, भूमि के नीचे की वस्तु और स्वर्ग का वृत्तान्त, विद्वानों का रहस्य और राजाओं के रहस्य को भी यथार्थ रूप द्वारा शीघ्रता से प्रकट कर देती है। दूसरे वर्ष पाठ करने से साधना करनेवाले को पद्मावती विद्या सिद्ध हो जाती है।।१००-१०२।।

पद्मावती विद्या का यह मंत्र है–"ॐ ह्रीं पद्मावति त्रैलोक्यवार्तां कथय कथय स्वाहा।" ब्रह्मा, विष्णु आदि देवताओं का वृत्तान्त और तीनों लोकों का वृत्तान्त यह पद्मावती विद्या (स्वयं) बता देती है। पद्मावती विद्या का जप करनेवाला साधक तीनों कालों का ज्ञानी और कवि हो जाता है। हे देवि! तीन वर्षों तक (निरन्तर) कालीसहस्रनाम का पाठ करने से साधक भोगवती कला को प्राप्त कर लेता है। इस कला को प्राप्त करनेवाले मानव का दर्शन करने से ही महाकाल के द्वारा डँसा हुआ मनुष्य और चिता के बीच में रखा हुआ पुरुष भी जीवित हो जाता है। इसके साथ ही साथ वह दीर्घजीवी होता है।।१०३-१०६।।

स्वाहान्तो मनुराख्यातो मृतसञ्जीवनात्मकः।
चतुर्वर्षं पठेद्यस्तु स्वप्नसिद्धस्ततो भवेत्।।१०७।।
ॐ ह्रीं स्वप्नवाराहि कलिस्वप्ने कथयोच्चरेत्।
अमुकस्याऽमुकं देहि क्रींस्वाहान्तो मनुर्मतः।।१०८।।
स्वप्नसिद्धा चतुर्वर्षात्तस्य स्वप्ने सदा स्थिता।
चतुर्वर्षस्य पाठेन चतुर्वेदाधिपो भवेत्।।१०९।।
तद्धस्त-जलसंयोगान् मूर्खः काव्यं करोति च।
तस्य वाक्यपरिचयान् मूर्तिर्विन्दति काव्यताम्।।११०।।
मस्तके तु करं कृत्वा वद वाणीमिति ध्रुवम्।
साधको वाञ्छया कुर्यात्तत्तथैव भविष्यति।।१११।।
ब्रह्माण्डगोलके याश्च याः काश्चिज्जगतीतले।
समस्ताः सिद्धयो देवि! करामलकवद् भवेत्।।११२।।
साधकस्मृतिमात्रेण यावन्त्यः सन्ति सिद्धयः।
स्वयमायान्ति पुरतो जपादीनां तु का कथा?।।११३।।

मृतसञ्जीवनी का यह मंत्र है–"मृतसञ्जीवनि मृतमुत्थापय उत्थापय स्वाहा।" चार वर्षों तक (निरन्तर) कालीसहस्रनाम का पाठ करनेवाले पुरुष को स्वप्नसिद्ध हो जाता है। स्वप्नसिद्ध का मन्त्र यह है–"ॐ ह्रीं स्वप्नवाराहि कलिस्वप्ने कथय अमुकस्य अमुकं देहि क्रीं स्वाहा"॥१०७-१०८॥

चार वर्ष पर्यन्त पाठ करनेवाले मनुष्य के स्वप्न में यह स्वप्नसिद्धा देवी स्थित रहती है। चार वर्षों तक (काली) सहस्रनाम का पाठ करनेवाला (मनुष्य) चारों वेदों का पंडित हो जाता है। (ऐसे साधक) के हाथ के जल का संयोग होने से मूढ़ व्यक्ति भी काव्य करनेवाला हो जाता है। उसकी वाणी का श्रवण कर शिला की मूर्ति भी काव्यभाषा बोलने लगती है। माथे पर हाथ रखकर "वाणीं वद" ऐसा उच्चारण करनेवाला साधक जो भी कहता है, वैसा ही होता है। इस (सम्पूर्ण) ब्रह्माण्ड में और इस संसार में जितनी भी सिद्धियाँ हैं, वे समस्त कालीसहस्रनाम का पाठ करनेवाले साधक को हस्तामलकवत् दिखाई पड़ती हैं। इतना ही नहीं जितनी भी सिद्धियाँ हैं, वे सभी साधक के स्मरण करते ही उसके समक्ष स्वयं उपस्थित हो जाती हैं। फिर जप करने की बात की क्या है?॥१०९-११३॥

विदेशवर्तिनो भूत्वा वर्तन्ते चेटका इव।
अमायां चन्द्रसन्दर्शश्चन्द्रग्रहणमेव च।।११४।।
अष्टम्यां पूर्णचन्द्रत्वं चन्द्रसूर्याष्टकं तथा।
अष्टदिक्षु तथाऽष्टौ च करोत्येव महेश्वरि।।११५।।
अणिमाखेचरत्वं च चराऽचरपुरीगतिम्।
पादुका-खड्ग-वेताल-यक्षिणी-गुह्यकादयः ।।११६।।
तिलको गुप्ततादृश्यं चराऽचरकथानकम्।
मृतसञ्जीविनीसिद्धिर्गुटिका च रसायनम्।।११७।।
उड्डीनसिद्धिर्देवेशि! षष्टिसिद्धीश्वरत्वकम्।
तस्य हस्ते वसेद् देवि! नाऽत्र कार्या विचारणा।।११८।।
केतौ वा दुन्दुभौ वस्त्रे विताने वेष्टने गृहे।
भित्तौ च फलके देवि! लेख्यं पूज्यं च यत्नतः।।११९।।
मध्ये चक्रं दशाङ्कोक्तं परितो नामलेखनम्।
तद्धारणान् महेशानि! त्रैलोक्यविजयी भवेत्।।१२०।।

विदेश में रहनेवाले उसके सेवक के तुल्य हो जाते हैं और अमावस्या को चन्द्र का दर्शन और चन्द्रग्रहण भी उसे दिखाई पड़ सकता है। काली के भक्त को अष्टमी तिथि को पूर्ण चन्द्रमा और आठों दिशाओं में आठ चन्द्रमा तथा आठ सूर्य भी दिख सकते हैं। अणिमादि सिद्धि, आकाश में किसी बाधा के बिना जाना, सम्पूर्ण चराचर संसार में अव्याहत गति उसकी होती है। पादुका, खड्ग, वैताल, यक्षिणी, गुह्यकादि।।११४-११६।।

तिलक, गुप्तवस्तुओं का प्रत्यक्ष होना, चराचर जगत् का समाचार, मृतसञ्जीवनी सिद्धि, गुटिका, रसायन, उड्डीन सिद्धि, षष्टि सिद्धि, ईशित्व सिद्धि आदि सम्पूर्ण चमत्कारिक गुण उसके वशीभूत हो जाते हैं। इसमें संदेह मत करो, हे पार्वति! ध्वज, दुन्दुभि, वस्त्र, चँदवा, बिछौना, गृह, भीत, लकड़ी के फलक पर देवी के मंत्रों का लेखन और पूजन (साधक को) करना चाहिए। दशाङ्ग में वर्णित की गई विधि के अनुसार चक्र को बीच में स्थापित करें, फिर उसके चारों ओर अपना नाम लिखें। इस प्रकार के यंत्र को धारण करने से मनुष्य तीनों लोकों में विजयी होता है।।११७-१२०।।

एको हि शतसाहस्त्रं निर्जित्य च रणाङ्गणे।
पुनरायाति च सुखं स्वगृहं प्रति पार्वति!।।१२१।।
एको हि शतसन्दर्शी लोकानां भवति ध्रुवम्।
कलशं स्थाप्य यत्नेन नाम-साहस्त्रकं पठेत्।।१२२।।
सेकः कार्यो महेशानि सर्वापत्तिनिवारणे।
भूत-प्रेत-ग्रहादीनां रक्षसां ब्रह्मरक्षसाम्।।१२३।।
वेतालानां भैरवाणां स्कन्द-वैनायकादिकान्।
नाशयेत् क्षणमात्रेण नाऽत्र कार्या विचारणा।।१२४।।
भस्माभिमन्त्रितं कृत्वा ग्रहग्रस्ते विलेपयेत्।
भस्मसंक्षेपणादेव सर्वग्रहविनाशनम्।।१२५।।
नवनीतं चाऽभिमन्त्र्य स्त्रीणां दद्यान्महेश्वरि!।
वन्ध्या पुत्रप्रदा देवि! नाऽत्र कार्या विचारणा।।१२६।।

इस यंत्र को धारण करनेवाला मनुष्य अकेले ही समर में सैकड़ों, हजारों (योद्धाओं) को हराकर कुशलता से अपने गृह में लौट आता है। वह अकेला ही लोगों को सैकड़ों अथवा हजारों रूप में दिखाई पड़ता है। यत्नपूर्वक कलश स्थापित कर फिर कालीसहस्त्रनाम का पाठ करना चाहिए। समस्त विपत्तियों के निवारण के लिए कालीसहस्त्रनाम का पाठ करते हुए प्रत्येक नाम से जल का छींटा देना चाहिए। यह कालीसहस्त्रनाम भूत, प्रेत, ग्रह, राक्षस और ब्रह्म राक्षस को भी दूर भगानेवाला है। इसमें संदेह नहीं है कि यह वेताल, भैरव, स्कन्द और विनायकादिकों का भी क्षणभर में विनाश कर देता है॥१२१-१२४॥

ग्रहों की बाधा से ग्रसित मनुष्य के शरीर पर कालीसहस्त्रनाम से भस्म को अभिमंत्रित करके उस भस्म का लेप कर देना चाहिए। मात्र भस्म के प्रक्षेप से सभी (अनिष्टकारी) ग्रह पलायित हो जाते हैं। हे महेश्वरि! कालीसहस्त्रनाम से अभिमंत्रित मक्खन को (यदि) बन्ध्या स्त्री को खिला दिया जाय, तो वह भी पुत्र उत्पन्न करती है। इसमें संदेह की कोई बात नहीं है॥१२५-१२६॥

कण्ठे वा वामबाहौ वा योनौ वा धारणाच्छिवे!।
बहुपुत्रवती नारी सुभगा जायते ध्रुवम्।।१२७।।
पुरुषो दक्षिणाङ्गे तु धारयेत् सर्वसिद्धये।
बलवान् कीर्तिमान् धन्यो धार्मिकः साधकः कृती।।१२८।।
बहुपुत्रो रथानां च गजानामधिपः सुधीः।
कामिनीकर्षणोद्युक्तः क्रीं च दक्षिणकालिके।।१२९।।
क्रीं स्वाहा प्रजपेन् मन्त्रमयुतं नामपाठकः।
आकर्षणं चरेद् देवि! जलखेचरभूगतान्।।१३०।।
वशीकरणकामो हि हूं-हूं ह्रीं-ह्रीं च दक्षिणे।
कालिके पूर्वबीजानि पूर्ववत् प्रजपन् पठेत्।।१३१।।
उर्वशीमपि वशयेन्नाऽत्र कार्या विचारणा।
क्रीं च दक्षिणकालिके स्वाहायुक्तं जपेन्नरः।।१३२।।
पठेन्नाम-सहस्रं तु त्रैलोक्यं मारयेद् ध्रुवम्।
सद्भक्ताय प्रदातव्या विद्याराज्ञि शुभे दिने।।१३३।।

हे शिवे! इस काली के महामंत्र को गले में, बायें हाथ में या योनि में धारण करने से स्त्री बहुत से पुत्रों वाली एवं सौभाग्यशालिनी होती है। समस्त प्रकार की सिद्धियों के लिए मनुष्य महाकाली मंत्र को अपने दायें अंग में धारण करें। (ऐसा करने से) वह बलवान्, कीर्तिमान्, धन्य और धार्मिक तथा (सभी कार्यों में) सफल होता है॥१२७-१२८॥

"ॐ क्रीं दक्षिणकालिके क्रीं स्वाहा" इस मंत्र का दस हजार जप और कालीसहस्रनाम का दस हजार बार पाठ करनेवाला साधक कामिनियों को अपनी ओर आकृष्ट कर लेता है। (इसके साथ ही साथ) वह आकाश, जल, और पृथ्वी पर निवास करनेवाले समस्त जन्तुओं को आकृष्ट करता है। वशीकरण की इच्छा रखनेवाला साधक "ॐ हूं हूं ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं स्वाहा" इस मंत्र का दस हजार बार जप करे। (ऐसा करने से) वह उर्वशी को भी अपने वशीभूत कर लेता है, इसमें संदेह नहीं है। "क्रीं च दक्षिणकालिके स्वाहा" इस मंत्र से संपुट लगाकर कालीसहस्रनाम का पाठ करनेवाला साधक तीनों लोकों को भी मारने में समर्थवान् हो जाता है। इस महाविद्या की दीक्षा शुभ दिन में सदाचारयुक्त एवं अच्छे भक्त को ही प्रदत्त करनी चाहिए॥१२९-१३३॥

सद्विनीताय शान्ताय दान्तायाऽतिगुणाय च।
भक्ताय ज्येष्ठपुत्राय गुरुभक्तिपराय च।।१३४।।
वैष्णवाय प्रशुद्धाय शिवाबलिरताय च।
वेश्यापूजनयुक्ताय कुमारीपूजकाय च।।१३५।।
दुर्गाभक्ताय रौद्राय महाकालप्रजापिने।
अद्वैतभावयुक्ताय कालीभक्तिपराय च।।१३६।।
देयं सहस्र नामाख्यं स्वयं काल्या प्रकाशितम्।
गुरुदैवतमन्त्राणां महेशस्याऽपि पार्वति!।।१३७।।
अभेदेन स्मरेन् मन्त्रं स शिवः स गणाधिपः।
यो मन्त्रं भावयेन् मन्त्री स शिवो नाऽत्र संशयः।।१३८।।
स शाक्तो वैष्णवः सौरः स एव पूर्णदीक्षितः।
अयोग्याय न दातव्यं सिद्धिरोधः प्रजायते।।१३९।।
वेश्यास्त्री-निन्दकायाऽथ सुरासंवित्प्रनिन्दके।।
सुरामुखीमनुं स्मृत्वा सुराचारो भविष्यति।।१४०।।

सुविनीत, सुशान्त, जितेन्द्रिय, गुणवान्, भक्त, ज्येष्ठपुत्र, गुरु की भक्ति करनेवाले, वैष्णव, मन, कर्म और वाणी से विशुद्ध, महाकाली को बलि प्रदत्त करनेवाले, वेश्या का पूजन करनेवाले, कुमारी का पूजन करनेवाले, दुर्गा और रुद्र (शिव) के भक्त, महाकाल का जप करनेवाले, अद्वैत सिद्धान्त के अनुयायी, महाकाली के भक्त को भी इस कालीसहस्रनाम को, जिसे स्वयं महाकाली ने प्रकाशित किया है, प्रदत्त करना चाहिए। हे पार्वति! जो गुरु और देवता के मंत्रों में भेद न मानता हो, वह शिव है, वह गणेश है। जो मंत्र को सिद्ध करता है, वह साक्षात् शिव है। इसमें (लेशमात्र) संदेह नहीं है। वही शाक्त है, वही वैष्णव है, वही सौर है, वही पूर्णरूप से दीक्षित है। कालीसहस्रनाम का उपदेश अयोग्य (व्यक्ति) को नहीं देना चाहिए। ऐसा करने से सिद्धि नहीं होती है।।१३४-१३९।।

वेश्या स्त्री की निन्दा करनेवाले और मदिरा-मांसादि की निन्दा करनेवाले को कभी भी कालीसहस्रनाम स्तोत्र का उपदेश प्रदत्त नहीं करना चाहिए।।१४०।।

आसां वाग्देवता घोरे परघोरे च हूं वदेत्।
घोररूपे महाघोरे मुखी भीमपदं वदेत्।।१४१।।
भीषण्यमुपषष्ठ्यन्तं हेतुर्वामियुगे शिवे।
शिववह्नियुगास्त्र हूं-हूं कवचमनुर्भवेत्।।१४२।।
एतस्य स्मरणादेव दुष्टानां च मुखे सुरा।
अवतीर्णा भवेद् देवि! दुष्टानां भद्रनाशिनी।।१४३।।
खलाय परतन्त्राय परनिन्दापराय च।
भ्रष्टाय दुष्टसत्त्वाय परवादरताय च।।१४४।।
शिवाभक्ताय दुष्टाय परदाररताय च।
न स्तोत्र दर्शयेद् देवि! शिवाहत्याकरो भवेत्।।१४५।।
कालिकानन्दहृदयः कालिकाभक्तिमानसः।
कालीभक्तो भवेत् सो हि धन्यरूपः स एव तु।।१४६।।
कलौ काली कलौ काली कलौ काली वरप्रदा।
कलौ काली कलौ काली कलौ काली तु केवला।।१४७।।
बिल्वपत्रसहस्राणि करवीराणि वै तथा।
प्रतिनाम्ना पूजयेद् हि तेन काली वरप्रदा।।१४८।।

सुरामुखी महाकाली का स्मरण कर मानव सुरा का आचरण करनेवाला हो जाता है। कवच का मन्त्र यह है–'आसां वाग्देवता घोरे परघोरे हूं घोररूपे महाघोरे भीममुखी भीषण्या हेतुर्वामियुगे शिवे क्लीं क्लीं हूं हूं।' इस मंत्र के स्मरण करने मात्र से ही दुष्टों का संहार करनेवाली (भगवती काली) देवी अवतरित हो जाती हैं।।१४१-१४५।।

खल को, पराधीन रहनेवाले को, दूसरे की निन्दा करनेवाले को, भ्रष्ट को, दूसरे से विवाह करनेवाले को, काली में आस्था न रखनेवाले को, परदारसेवी को, दुष्ट को यह स्तोत्र प्रदत्त नहीं करना चाहिए। यदि ऐसा किया जाय तो (उसे) कालीहत्या का पाप लगता है। हमेशा काली में ध्यानमग्न रहनेवाले, काली में भक्ति रखनेवाले कालीभक्त ही धन्य हैं। 'इस कलिकाल में मात्र महाकाली ही श्रेष्ठ है, एवं वर प्रदत्त करनेवाली है। 'कालीसहस्रनाम' के प्रत्येक नाम से बिल्वपत्र और कनैल का पुष्प (काली को) समर्पित कर पूजन करनेवाले साधक को काली वर प्रदत्त करती है।।१४६-१४८।।

कमलानां सहस्रं तु प्रतिनाम्ना समर्पयेत्।
चक्रं सम्पूज्य देवेशि! कालिकावरमाप्नुयात्।।१४९।।
मन्त्रक्षोभयुतो नैव कलशस्थजलेन च।
नाम्ना प्रसेचयेद् देवि! सर्वक्षोभविनाशकृत्।।१५०।।
तथा दमननकं देवि! सहस्रमाहरेद् व्रती।
सहस्रनाम्ना सम्पूज्य कालीवरमवाप्नुयात्।।१५१।।
चक्रं विलिख्य देहस्थं धारयेत् कालिकातनुः।
काल्यै निवेदितं यद्यदशं भक्षयेच्छिवे!।।१५२।।
दिव्यदेहधरो भूत्वा कालीदेहे स्थिरो भवेत्।
नैवेद्य-निन्दकान् दुष्टान् दृष्ट्वा नृत्यन्ति भैरवाः।।१५३।।
योगिन्यश्च महावीरा रक्तपानोद्यताः प्रिये!।
मांसा-ऽस्थि-चर्मणोद्युक्ता भक्षयन्ति न संशयः।।१५४।।
तस्मान्न निन्दयेद् देवि! मनसा कर्मणा गिरा।
अन्यथा कुरुते यस्तु तस्य नाशो भविष्यति।।१५५।।

या काली सहस्रनाम के प्रत्येक नाम (मंत्र) से महाकाली को कमल पुष्प समर्पित करनेवाले और प्रत्येक नाम से महाकाली के श्रीचक्र का पूजन करनेवाले साधक को भी महाकाली वर प्रदत्त करती हैं। सावधान होकर मंत्र का पाठ करनेवाला साधक कलश के जल से महाकाली के प्रत्येक नाम से यदि जल का छींटा दें, तो उसकी समस्त विपत्तियाँ दूर हो जाती हैं। दमनक के एक हजार पत्ते से काली के हजार नाम द्वारा पूजन करने से (साधक) काली से वर प्राप्त करता है। काली का भक्त महाचक्र लिखकर (यदि) अपने शरीर में धारण करे या किसी (पत्र) पर लिखकर उसे खाये तो महाकाली उसे वर देनेवाली हो जाती है॥१४९-१५२॥

इस प्रकार की साधना करनेवाला साधक दिव्य शरीर को धारण कर काली के शरीर में स्थिर हो जाता है। महाकाली की भर्त्सना करनेवाले दुष्टों को देखकर भैरव और योगिनियाँ (उनके) रक्तपान करने की इच्छा से नाचने लगती हैं और उनके मांस, अस्थि और उनके चमड़े को भी खा जाती हैं, इसमें संदेह नहीं है। अतः महाकाली की कभी भी मन, वचन तथा कर्म से निन्दा नहीं करनी चाहिए। जो निन्दा करते हैं, उनका विनाश निश्चित है॥१५३-१५५॥

क्रमदीक्षायुतानां च सिद्धिर्भवति नाऽन्यथा।
मन्त्रक्षोभश्च वा भूयात् क्षीणायुर्वा भवेद् ध्रुवम्।।१५६।।
पुत्रहारी स्त्रियोहारी राज्यहारी भवेद् ध्रुवम्।
क्रमदीक्षायुतो देवि! क्रमाद्राज्यमवाप्नुयात्।।१५७।।
एकवारं पठेद् देवि! सर्वपापविनाशनम्।
द्विवारं च पठेद् यो हि वाञ्छां विन्दति नित्यशः।।१५८।।
त्रिवारं च पठेद्यस्तु वागीशसमतां व्रजेत्।
चतुर्वारं पठेद् देवि! चतुर्वर्णाधिपो भवेत्।।१५९।।
पञ्चवारं पठेद् देवि! पञ्चकामाधिपो भवेत्।
षड्वारं च पठेद् देवि! षडेश्वर्याधिपो भवेत्।।१६०।।
सप्तवारं पठेत् सप्तकामानां चिन्तितं लभेत्।
अष्टवारं पठेद् देवि! दिगीशो भवति ध्रुवम्।। १६१।।

क्रमानुसार दीक्षा लेनेवाले को ही सिद्धि प्राप्त होती है, अन्य को नही।। जो क्रम से दीक्षा नहीं लेते, उनका मन सिद्ध नहीं होता है। वह अल्पायु हो जाते हैं अर्थात् कम आयु में मर जाते हैं।।१५६।।

क्रमानुसार दीक्षा न लेनेवाले पुरुष की धर्मपत्नी, पुत्र और राज्य का विनाश हो जाता है। परन्तु क्रमानुसार दीक्षा लेनेवाला साधक पुत्र, स्त्री और राज्य को भी प्राप्त कर लेता है। जो कालीसहस्रनाम का प्रतिदिन एक बार पाठ करता है, उसके समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। दो बार प्रतिदिन पाठ करनेवाले की सम्पूर्ण इच्छाएँ पूर्ण होती हैं। प्रतिदिन तीन बार पाठ करनेवाला साधक बृहस्पति (देवता) के तुल्य विदग्ध होता है। नित्य (चार बार) पाठ करनेवाला (साधक) चारों वर्णों का स्वामी हो जाता है।।१५७-१५९।।

पाँच बार नित्य पाठ करनेवाला साधक पञ्चज्ञानेन्द्रियों के काम रूप, रस, गन्ध, स्पर्श और शब्दरूपी पाँचों कामनाओं को प्राप्त करता है। (नित्य) छः बार पाठ करनेवाला साधक ज्ञान-वैराग्यादि छहों ऐश्वर्यों को प्राप्त कर लेता है। नित्य सात बार पाठ करनेवाला सातों कामनाओं से चिन्तित वस्तु को प्राप्त करता है। नित्य आठ बार पाठ करनेवाला साधक आठों दिशाओं का स्वामी हो जाता है।।१६०-१६१।।

नववारं पठेद् देवि! नवनाथसमो भवेत्।
दशवारं कीर्तयेद् यो दशार्हः खेचरेश्वरः।।१६२।।
विंशद्-वारं कीर्तयेद् यः सर्वैश्वर्यमयो भवेत्।
पञ्चविंशतिवारैस्तु सर्वचिन्ताविनाशकः।।१६३।।
पञ्चाशद्वारमावर्त्य पञ्चभूतेश्वरो भवेत्।
शतवारं कीर्तयेद् यः शतानन-समान-धीः।।१६४।।
शतपञ्चकमावर्त्य राजराजेश्वरो भवेत्।
सहस्रावर्तनाद् देवि! लक्ष्मीरावृणुते स्वयम्।।१६५।।
त्रिसहस्रं समावर्त्य त्रिनेत्रसदृशो भवेत्।
पञ्चसाहस्रमावर्त्य कामकोटिविमोहनः।।१६६।।
दशसहस्रावर्तनैर्भवेद् दशमुखेश्वरः।
पञ्चविंशतिसाहस्रैश्चतुर्विंशति-सिद्धिधृक ।।१६७।।

हे देवि! जो (साधक प्रतिदिन) नौ बार पाठ करता है, वह गोरखनाथ आदि नौ नाथों के तुल्य हो जाता है। जो (साधक) प्रतिदिन दस बार पाठ करता है, वह आकाश में दसों दिशाओं में चलनेवाला हो जाता है। जो (साधक प्रतिदिन) बीस बार पाठ करता है, उसे सम्पूर्ण ऐश्वर्य प्राप्त हो जाते हैं। जो (साधक प्रतिदिन) पच्चीस बार पाठ करते हैं, उनकी समस्त चिन्ताएँ नष्ट हो जाती हैं।।१६२-१६३)

जो (साधक प्रतिदिन) पचास बार पाठ करते हैं, वह पञ्चभूत के ईश्वर हो जाते हैं। जो (साधक प्रतिदिन) सौ बार पाठ करते हैं, वह शतानन के सदृश बुद्धिमान् होते हैं। जो (साधक प्रतिदिन) एक सौ पाँच बार पाठ करते हैं, वह राजराजेश्वर हो जाते हैं। जो (साधक प्रतिदिन) एक हजार बार पाठ करते हैं, (ऐसे साधक का) लक्ष्मी स्वयं वरण कर लेती है। तीन हजार बार पाठ करने से (साधक) त्रिनयन के तुल्य हो जाता है। पाँच हजार बार पाठ करने से (साधक) कामकोटि को भी मोहित कर लेता है। दस हजार बार पाठ करने से (साधक) दशमुखेश्वर हो जाता है। चौबीस हजार पाठ करने से (साधक को) चौबीस सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं।।१६४-१६७।।

लक्षावर्तनमात्रेण लक्ष्मीपतिसमो भवेत्।
लक्षत्रयावर्तनात्तु महादेवं विजेष्यति।।१६८।।
लक्षपञ्चकमावर्त्त्य कलापञ्चकसंयुतः।
दशलक्षावर्तनात्तु दशविद्याप्तिरुत्तमा।।१६९।।
पञ्चविंशतिलक्षैस्तु दशविद्येश्वरो भवेत्।
पञ्चाशल्लक्षमावृत्य महाकालसमो भवेत्।।१७०।।
कोटिमावर्तयेद्यस्तु कालीं पश्यति चक्षुषा।
वरदानोद्युक्तकरां महाकालसमन्विताम्।।१७१।।
प्रत्यक्षं पश्यति शिवे! तस्या देहो भवेद् ध्रुवम्।
श्रीविद्या-कालिका-तारा-त्रिशक्तिविजयी भवेत्।।१७२।।
विधेर्लिपिं च संमार्ज्य किङ्करत्वं विसृज्य च।
महाराज्यमवाप्नोति नाऽत्र कार्या विचारणा।।१७३।।

एक लाख बार पाठ करने से (साधक) लक्ष्मीपति के सदृश हो जाता है। तीन लाख बार पाठ करनेवाला शिव को भी जीत लेता है। पाँच लाख बार पाठ करनेवाले (साधक) को पाँच कलाओं की प्राप्ति होती है। दस लाख बार पाठ करने से दस महाविद्याओं की प्राप्ति हो जाती है। पच्चीस लाख बार पाठ करने से (साधक) दस विद्याओं का स्वामी हो जाता है। पचास लाख बार पाठ करनेवाले (साधक) को महाकाल की समता प्राप्त हो जाती है॥१६८-१७०॥

जो साधक अर्थात् पुरुष एक करोड़ बार पाठ करता है, वह महाकाली को (प्रत्यक्षरूप से) अपनी आँखों के द्वारा देखता है। स्वयं काली उसे वरदान देने की मुद्रा में महाकाल के साथ उसके समक्ष प्रगट होती है। ऐसा पुरुष श्रीविद्या, कालिका, तारा आदि तीनों शक्तियों पर विजय प्राप्त करता है और इन्हें वह अपनी देह में प्रत्यक्षरूप से देखता है। (ऐसा) वह पुरुष ब्रह्मा के लिखे हुए लेख को भी मिटा सकता है और वह किसी देवता का किंकर नहीं रहता है। वह स्वयं राजा के पद को प्राप्त करता है, इसमें संदेह नहीं है॥१७१-१७३॥

त्रिशक्तिविषये देवि! क्रमदीक्षा प्रकीर्तिता।
क्रमदीक्षायुतो देवि! राजा भवति निश्चितम्।।१७४।।
क्रमदीक्षाविहीनस्य फलं पूर्वमिहेरितम्।
क्रमदीक्षायुतो देवि! शिव एव न चाऽपरः।।१७५।।
क्रमदीक्षासमायुक्तः काल्योक्तसिद्धिभाग् भवेत्।
क्रमदीक्षाविहीनस्य सिद्धिहानिः पदे पदे।।१७६।।
अहो जन्मवतां मध्ये धन्यः क्रमयुतः कलौ।
तत्राऽपि धन्यो देवेशि! नामसहस्रपाठकः।।१७७।।
दशकालीविधौ देवि! स्तोत्रमेतत् सदा पठेत्।
सिद्धिं विन्दति देवेशि! नाऽत्र कार्या विचारणा।।१७८।।
कालौ काली महाविद्या कलौ काली च सिद्धिदा।
कलौ काली च सिद्धा च कलौ काली वरप्रदा।।१७९।।
कलौ काली साधकस्य दर्शनार्थं समुद्यता।
कलौ काली केवला स्यान्नाऽत्र कार्या विचारणा।।१८०।।

महादेव जी पार्वती से बोले–हे देवि! त्रिशक्ति की उपासना में क्रमपूर्वक दीक्षा आवश्यक है, जो क्रमानुसार दीक्षा प्राप्त करते हैं, वह बिना किसी संदेह के राजा हो जाते हैं। जो क्रमानुसार दीक्षा नहीं लेते हैं, उसका फल हम पूर्व में ही कह आए हैं। परन्तु क्रमानुसार दीक्षा लेनेवाला पुरुष शिव के तुल्य ही है। इसमें संदेह नहीं करना चाहिए। क्रमानुसार दीक्षा लेनेवाला साधक ही काली को सिद्ध करने में समर्थ होता है। यह वचन (भगवती) काली का है, किन्तु जो क्रमानुसार दीक्षा नहीं लेते हैं, उन्हें पग-पग पर सिद्धि की हानि प्राप्त होती है। क्रमानुसार दीक्षा लेनेवाला पुरुष ही इस कलिकाल के मानवों में सर्वश्रेष्ठ है। उसमें कालीसहस्रनाम का पाठ करनेवाला तो धन्य (पूज्य) है। हे पार्वति! काली के सन्निधान में दस बार (कालीसहस्रनाम) का पाठ करनेवाला साधक सिद्धि को प्राप्त कर लेता है, इसमें संदेह मत करो। कलियुग में काली महाविद्या हैं, कलियुग में कालीसिद्धि प्रदान करनेवाली हैं। (इस) कलिकाल में काली ही सिद्ध है और वर प्रदत्त करनेवाली है। कलियुग में एक (मात्र) काली ही अपने साधक को दर्शन देने के लिए तत्पर रहती है। कलियुग में मात्र काली ही विद्यामान हैं, इसमें संदेह नहीं है।।१७४-१८०।।

नाऽन्यविद्या नाऽन्यविद्या नाऽन्यविद्या कलौ भवेत्।
कलौ कालीं विहायाऽथ यः कश्चित् सिद्धिकामुकः।।१८१।।
स तु शक्तिं विना देवि! रतिसम्भोगमिच्छति।
कलौ कालीं विना देवि! यः कश्चित् सिद्धिमिच्छति।।१८२।।
स नीलसाधनं त्यक्त्वा परिभ्रमति सर्वतः।
कलौ कालीं विहायाऽथ यः कश्चिन् मोक्षमिच्छति।।१८३।।
गुरुध्यानं परित्यज्य सिद्धिमिच्छति साधकः।
कलौ कालीं विहायाऽथ यः कश्चिद् राज्यमिच्छति।।१८४।।
स भोजनं परित्यज्य भिक्षुवृत्तिमभीप्सति।
स धन्यः स च विज्ञानी स एव सुरपूजितः।।१८५।।
स दीक्षितः सुखी साधुः सत्यवादी जितेन्द्रियः।
स वेदवक्ता स्वाध्यायी नाऽत्र कार्या विचारणा।।१८६।।

इस कलियुग में और महाविद्यायें सिद्धि प्रदान नहीं करती हैं, यह मैं तीन बार शक्ति का उच्चारण करके कह रहा हूँ। कलियुग में काली का परित्याग करके जो सिद्धि चाहता है, मानो वह शक्ति के बिना ही रति, सम्भोग का सुख चाह रहा है। इस कलियुग में काली का परित्याग कर जो सिद्धि चाहता है, वह नीलमणि का परित्याग करके व्यर्थ ही भ्रमवश इधर-उधर दौड़ रहा है।।१८१-१८३।।

जो काली को छोड़कर मुक्ति प्राप्त करना चाहता है, ऐसा साधक गुरुध्यान का परित्याग करके सिद्धि चाहता है। कलियुग में काली का परित्याग कर जो राज्य चाहता है, वह भोजन का परित्याग कर भिक्षावृत्ति ही करना चाहता है। इस कलियुग में वही धन्य है, वही ज्ञानी है, वही देवपूजित है।।१८४-१८५।।

वही दीक्षित होते हुए सुखी है, वही साधु है, वही सत्यवादी एवं वही जितेन्द्रिय है, वही वेद को बोलनेवाला एवं स्वाध्यायी है, इसमें विशेष विचार की आवश्यकता नहीं है।।१८६।।

शिवरूपं गुरुं ध्यात्वा शिवरूप गुरुं स्मरेत्।
सदाशिवः स एव स्यान्नाऽत्र कार्या विचारणा।। १८७।।
स्वस्मिन् कालीं तु सम्भाव्य पूजयेज्जगदम्बिकाम्।
त्रैलोक्यविजयी भूयान्नाऽत्र कार्या विचारणा।।१८८।।
गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः।
रहस्याऽतिरहस्यं च रहस्याऽतिरहस्यकम्।।१८९।।
श्लोकार्द्धं पादमात्रं वा पादार्द्धं च तदर्द्धकम्।
नामार्द्धं यः पठेद् देवि! न वन्ध्यदिवसं न्यसेत्।।१९०।।
पुस्तकं पूजयेद् भक्त्या त्वरितं फलसिद्धये।
न च मारीभयं तत्र न चाऽग्निर्वायुसम्भवम्।।१९१।।
न भूतादिभयं तत्र सर्वत्र सुखमेधते।
कुङ्कुमालक्तकेनैव रोचनाऽगुरुपोगतः।।१९२।।

जो साधक शिवरूप गुरु का ध्यान और शिवरूप गुरु का स्मरण करते हुए महाकाली की आराधना करता है, वही सदाशिव है, इसमें संदेह नहीं है।।१८७।।

अपने में ही काली को मानकर जगदम्बा की पूजा करनी चाहिए। ऐसा साधक तीनों लोक में विजयी होता है, इसमें भी संदेह नहीं है। प्रयत्नपूर्वक इस 'कालीसहस्रनाम' को गोपनीय रखना चाहिए। (क्योंकि) यह सभी रहस्यों का रहस्य है और सम्पूर्ण रहस्यों का अतिक्रमण करने वाला है। कालीसहस्रनाम के अर्ध श्लोक या अर्ध पाठ या चरण के अर्ध का अर्ध और उसका भी अर्ध एवं उसके भी अर्ध का जो पाठ करता है, उसका दिन सफल होता है। हे देवि! सद्यः फलप्राप्ति के लिए इस सहस्रनाम पुस्तक की पूजा करनी अत्यावश्यक है। जहाँ इसकी पूजा होती है, वहाँ महामारी का भय नहीं होता है, न अग्नि का, न वायु का भय रहता है। वहाँ भूतादि का भय नहीं रहता तथा सभी जगह सुख का वातावरण रहता है। कुमकुमादि राग, अलक्तकादि शृंगार दूर्वा, हरिद्रा और अगुरु से (इस कालीसहस्रनाम) पुस्तक की पूजा करनी चाहिए।।१८८-१९२।।

भूर्जपत्रे लिखेत् पुस्तं सर्वकामार्थसिद्धये।।१९३।।
इति गदितमशेषं कालिकावर्णरूपं,
पठति यदि भक्त्या सर्वसिद्धीश्वरः स्यात्।
अभिनव-सुख-कामः सर्वविद्याभिरामो,
भवति सकलसिद्धिः सर्ववीरासमृद्धिः।।१९४।।
इति संक्षेपतः प्रोक्तं किमन्यच्छ्रोतुमिच्छसि?।।१९५।।

॥ इति श्रीककरादिकालीसहस्रनामस्तोत्रं समाप्तम्॥

समस्त कामनाओं की सिद्धि के लिए भोजपत्र पर (इस कालीसहस्रनाम) की पुस्तक का लेखन करना चाहिए। हे पार्वति! इस प्रकार मैंने वर्ण के रूप में स्थित (रहनेवाली) भगवती काली के सम्पूर्ण सहस्र नामों मैंने तुमसे कहा, जो कोई भक्ति-भाव से इस (काली सहस्रनाम) का पाठ करेगा, वह सर्वसिद्धीश्वर हो जायेगा। उनको उत्तम से उत्तम अनेकानेक प्रकार के सुखों की प्राप्ति होगी। सभी विद्याओं में वे पारंगत होंगे, वे पुत्र-पौत्रादि और समृद्धि से युक्त होकर सम्पूर्ण प्रकार की सिद्धि प्राप्त करेंगे। (हे पार्वति!) यह सब मैंने तुमसे संक्षिप्त रूप से कहा है, अब और क्या श्रवण करना चाहती हो?॥१९३-१९५॥

ककारादिकालीसहस्रनामावली

साधक आचमन एवं प्राणायाम करके अपने दाहिने हाथ में जल, अक्षत, पुष्प और द्रव्य लेकर निम्न संकल्प करे–

संकल्प–**देशकालौ सङ्कीर्त्य–अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं (वर्माऽहं, गुप्तोऽहं, दासोऽहं) सकुटुम्बस्य सकल-पापक्षय-निवृत्तिपूर्वक-दीर्घायुः पुत्र-पौत्राद्यनवच्छिन्न-सन्ततिवृद्धि-स्थिरलक्ष्म्यैहिका-ऽऽमुष्मिक-समस्तकामनासिद्धिद्वारा धर्माऽर्थ-काम-मोक्ष-चतुर्विध-पुरुषार्थफलावाप्तये श्रीदक्षिणकालीदेवताप्रीत्यर्थं तद्दिव्य-सहस्रनामावलीभिः पुष्पादिसमर्पणं करिष्ये।**

विनियोगः–**ॐ अस्य श्रीदक्षिणकालिकामन्त्रस्य महाकाल ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीदक्षिणमाकाली देवता, ह्रीं बीजं, हूं शक्तिः, क्रीं कीलकम्, श्रीदक्षिणकालिकादेवताप्रसादसिद्ध्यर्थं चतुर्वर्गफलप्राप्तये वा तद्दिव्यसहस्रनामभिः पुष्पादिद्रव्यसमर्पणे विनियोगः।**

करन्यासः–**ॐ क्रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ क्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा। ॐ क्रूं मध्यमाभ्यां वषट्। ॐ क्रैं अनामिकाभ्यां हुम्। ॐ क्रौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ॐ क्रः करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।**

अङ्गन्यासः–**ॐ क्रां हृदयाय नमः। ॐ क्रीं शिरसे स्वाहा। ॐ क्रूं शिखायै वषट्। ॐ क्रैं कवचाय हुम्। ॐ क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ क्रः अस्त्राय फट्।**

ध्यानम्

शवारूढां महाभीमां घोरद्रंष्ट्रां हसन्मुखीम्।
चतुर्भुजां खड्ग-मुण्डवराभयकरां शिवाम्।।१।।
मुण्डमालाधरां देवीं ललज्जिह्वां दिगम्बराम्।
एवं संचिन्तयेत् कालीं श्मशानालयवासिनीम्।।२।।

१. ॐ क्रीं काल्यै नमः
२. ॐ क्रूं कराल्यै नमः
३. ॐ कल्याण्यै नमः
४. ॐ कमलायै नमः
५. ॐ कलायै नमः
६. ॐ कलावत्यै नमः
७. ॐ कलाढ्यायै नमः
८. ॐ कलापूज्यायै नमः
९. ॐ कलात्मिकायै नमः
१०. ॐ कलाहृष्टायै नमः
११. ॐ कलापुष्टायै नमः
१२. ॐ कलामस्तायै नमः
१३. ॐ कलाकरायै नमः
१४. ॐ कलाकोटिसमाभासायै नमः
१५. ॐ कलाकोटिप्रपूजितायै नमः
१६. ॐ कलाकर्मकलाधारायै नमः
१७. ॐ कलापारायै नमः
१८. ॐ कलागमायै नमः
१९. ॐ कलाधारायै नमः
२०. ॐ कमलिन्यै नमः
२१. ॐ ककरायै नमः
२२. ॐ करुणायै नमः
२३. ॐ काव्यै नमः
२४. ॐ ककारवर्णसर्वाङ्ग्यै नमः
२५. ॐ कलाकोटिप्रभूषितायै नमः
२६. ॐ ककारकोटिगुणितायै नमः
२७. ॐ ककारकोटिभूषणायै नमः
२८. ॐ ककारवर्णहृदयायै नमः
२९. ॐ ककारमनुमण्डितायै नमः
३०. ॐ ककारवर्णनिलयायै नमः
३१. ॐ काकशब्दपरायणायै नमः
३२. ॐ ककारवर्णमुकुटायै नमः
३३. ॐ ककारवर्णभूषणायै नमः
३४. ॐ ककारवर्णरूपायै नमः
३५. ॐ ककशब्दपरायणायै नमः
३६. ॐ ककवीरास्फालरतायै नमः
३७. ॐ कमलाकरपूजितायै नमः
३८. ॐ कमलाकरनाथायै नमः
३९. ॐ कमलाकररूपधृषे नमः
४०. ॐ कमलाकरसिद्धिस्थायै नमः
४१. ॐ कमलाकरपारदायै नमः
४२. ॐ कमलाकरमध्यस्थायै नमः
४३. ॐ कमलाकरतोषितायै नमः
४४. ॐ कथङ्कारपरालापायै नमः
४५. ॐ कथङ्कारपरायणायै नमः
४६. ॐ कथङ्कारपदान्तस्थायै नमः
४७. ॐ कथङ्कारपदार्थभुवे नमः
४८. ॐ कमलाक्ष्यै नमः
४९. ॐ कमलजायै नमः
५०. ॐ कमलाक्षप्रपूजितायै नमः
५१. ॐ कमलाक्षवरोद्युक्तायै नमः
५२. ॐ ककरायै नमः
५३. ॐ कर्बुराक्षरायै नमः
५४. ॐ करतारायै नमः
५५. ॐ करच्छिन्नायै नमः
५६. ॐ करश्यामायै नमः
५७. ॐ करार्णवायै नमः
५८. ॐ करपूज्यायै नमः

५९. ॐ कररतायै नमः
६०. ॐ करपूदायै नमः
६१. ॐ करजितायै नमः
६२. ॐ करतोयायै नमः
६३. ॐ करामर्षायै नमः
६४. ॐ कर्मनाशायै नमः
६५. ॐ करप्रियायै नमः
६६. ॐ करप्राणायै नमः
६७. ॐ करकजायै नमः
६८. ॐ करकायै नमः
६९. ॐ करकान्तरायै नमः
७०. ॐ करकाचलरूपायै नमः
७१. ॐ करकाचलशोभिन्यै नमः
७२. ॐ करकाचलपुत्र्यै नमः
७३. ॐ करकाचलतोषितायै नमः
७४. ॐ करकाचलगेहस्थायै नमः
७५. ॐ करकाचलरक्षिण्यै नमः
७६. ॐ करकाचलसम्मान्यायै नमः
७७. ॐ करकाचलकारिण्यै नमः
७८. ॐ करकाचलवर्षाढ्यायै नमः
७९. ॐ करकाचलरञ्जितायै नमः
८०. ॐ करकाचलकान्तारायै नमः
८१. ॐ करकाचलमालिन्यै नमः
८२. ॐ करकाचलभोज्यायै नमः
८३. ॐ करकाचलरूपिण्यै नमः
८४. ॐ करामलकसंस्थायै नमः
८५. ॐ करामलकसिद्धिदायै नमः
८६. ॐ करामलकसम्पूज्यायै नमः
८७. ॐ करामलकतारिण्यै नमः
८८. ॐ करामलककाल्यै नमः
८९. ॐ करामलकरोचिन्यै नमः
९०. ॐ करामलकमात्रे नमः
९१. ॐ करामलकसेविन्यै नमः
९२. ॐ करामलकवद्ध्येयायै नमः
९३. ॐ करामलकदायिन्यै नमः
९४. ॐ कञ्जनेत्रायै नमः
९५. ॐ कञ्जगत्यै नमः
९६. ॐ कञ्जस्थायै नमः
९७. ॐ कञ्जधारिण्यै नमः
९८. ॐ कञ्जमालाप्रियकर्यै नमः
९९. ॐ कञ्जरूपायै नमः
१००. ॐ कञ्जजायै नमः
१०१. ॐ कञ्जजात्यै नमः
१०२. ॐ कञ्जगत्यै नमः
१०३. ॐ कञ्जहोमपरायणायै नमः
१०४. ॐ कञ्जमण्डलमध्यस्थायै नमः
१०५. ॐ कञ्जाभरणभूषितायै नमः
१०६. ॐ कञ्जसम्माननिरतायै नमः
१०७. ॐ कञ्जोत्पत्तिपरायणायै नमः
१०८. ॐ कञ्जराशिसमाकारायै नमः
१०९. ॐ कञ्जारण्यनिवासिन्यै नमः
११०. ॐ करञ्जवृक्षमध्यस्थायै नमः
१११. ॐ करञ्जवृक्षवासिन्यै नमः
११२. ॐ करञ्जफलभूषाढ्यायै नमः
११३. ॐ करञ्जारण्यवासिन्यै नमः
११४. ॐ करञ्जमालाभरणायै नमः
११५. ॐ करवालपरायणायै नमः
११६. ॐ करवालप्रहृष्टात्मने नमः

११७. ॐ करवालप्रियागत्यै नमः
११८. ॐ करवालप्रियाकन्थायै नमः
११९. ॐ करवालविहारिण्यै नमः
१२०. ॐ करवालमय्यै नमः
१२१. ॐ कर्मायै नमः
१२२. ॐ करवालप्रियङ्कर्यै नमः
१२३. ॐ कबन्धमालाभरणायै नमः
१२४. ॐ कबन्धराशिमध्यगायै नमः
१२५. ॐ कबन्धकूटसंस्थानायै नमः
१२६. ॐ कबन्धानन्तभूषणायै नमः
१२७. ॐ कबन्धनादसन्तुष्टायै नमः
१२८. ॐ कबन्धासनधारिण्यै नमः
१२९. ॐ कबन्धगृहमध्यस्थायै नमः
१३०. ॐ कबन्धवनवासिन्यै नमः
१३१. ॐ कबन्धकाञ्च्यै नमः
१३२. ॐ करण्यै नमः
१३३. ॐ कबन्धराशिभूषणायै नमः
१३४. ॐ कबन्धमालाजयदायै नमः
१३५. ॐ कबन्धदेहवासिन्यै नमः
१३६. ॐ कबन्धासनमान्यायै नमः
१३७. ॐ कपालमाल्यधारिण्यै नमः
१३८. ॐ कपालमालामध्यस्थायै नमः
१३९. ॐ कपालव्रततोषितायै नमः
१४०. ॐ कपालदीपसन्तुष्टायै नमः
१४१. ॐ कपालदीपरूपिण्यै नमः
१४२. ॐ कपालदीपवरदायै नमः
१४३. ॐ कपालकज्जलस्थितायै नमः
१४४. ॐ कपालमालाजयदायै नमः
१४५. ॐ कपालजलतोषिण्यै नमः
१४६. ॐ कपालसिद्धिसंहृष्टायै नमः
१४७. ॐ कपालभोजनोद्यतायै नमः
१४८. ॐ कपालव्रतसंस्थानायै नमः
१४९. ॐ कपालकमलालयायै नमः
१५०. ॐ कवित्वामृतसारायै नमः
१५१. ॐ कवित्वामृतसागरायै नमः
१५२. ॐ कवित्वसिद्धिसंहृष्टायै नमः
१५३. ॐ कवित्वादानकारिण्यै नमः
१५४. ॐ कविपूज्यायै नमः
१५५. ॐ कविगत्यै नमः
१५६. ॐ कविरूपायै नमः
१५७. ॐ कविप्रियायै नमः
१५८. ॐ कविब्रह्मानन्दरूपायै नमः
१५९. ॐ कवित्वव्रततोषितायै नमः
१६०. ॐ कवित्वमानससंस्थानायै नमः
१६१. ॐ कविवाञ्छाप्रपूरिण्यै नमः
१६२. ॐ कविकण्ठस्थितायै नमः
१६३. ॐ कंह्लींकंकंकविपूर्तिदायै नमः
१६४. ॐ कज्जलायै नमः
१६५. ॐ कज्जलादानमानसायै नमः
१६६. ॐ कज्जलप्रियायै नमः
१६७. ॐ कपालकज्जलसमायै नमः
१६८. ॐ कज्जलेशप्रपूजितायै नमः
१६९. ॐ कज्जलार्णवमध्यस्थायै नमः
१७०. ॐ कज्जलानन्दरूपिण्यै नमः
१७१. ॐ कज्जलप्रियसन्तुष्टायै नमः
१७२. ॐ कज्जलप्रियतोषिण्यै नमः
१७३. ॐ कपालमालाभरणायै नमः
१७४. ॐ कपालकरभूषणायै नमः

१७५. ॐ कपालकरभूषाढ्यायै नमः
१७६. ॐ कपालचक्रमण्डितायै नमः
१७७. ॐ कपालकोटिनिलयायै नमः
१७८. ॐ कपालदुर्गकारिण्यै नमः
१७९. ॐ कपालगिरिसंस्थानायै नमः
१८०. ॐ कपालचक्रवासिन्यै नमः
१८१. ॐ कपालपात्रसन्तुष्टायै नमः
१८२. ॐ कपालार्घ्यपरायणायै नमः
१८३. ॐ कपालार्घ्यप्रियप्राणायै नमः
१८४. ॐ कपालार्घ्यवरप्रदायै नमः
१८५. ॐ कपालचक्ररूपायै नमः
१८६. ॐ कपालरूपमात्रगायै नमः
१८७. ॐ कदल्यै नमः
१८८. ॐ कदलीरूपायै नमः
१८९. ॐ कदलीवनवासिन्यै नमः
१९०. ॐ कदलीपुष्पसंप्रीतायै नमः
१९१. ॐ कदलीफलमानसायै नमः
१९२. ॐ कदलीहोमसन्तुष्टायै नमः
१९३. ॐ कदलीदर्शनोद्यतायै नमः
१९४. ॐ कदलीगर्भमध्यस्थायै नमः
१९५. ॐ कदलीवनसुन्दर्य्यै नमः
१९६. ॐ कदम्बपुष्पनिलयायै नमः
१९७. ॐ कदम्बवनमध्यगायै नमः
१९८. ॐ कदम्बकुसुमामोदायै नमः
१९९. ॐ कदम्बवनतोषिण्यै नमः
२००. ॐ कदम्बपुष्पसम्पूज्यायै नमः
२०१. ॐ कदम्बपुष्पहोमदायै नमः
२०२. ॐ कदम्बपुष्पमध्यस्थायै नमः
२०३. ॐ कदम्बफलभोजिन्यै नमः
२०४. ॐ कदम्बकाननान्तस्थायै नमः
२०५. ॐ कदम्बाचलवासिन्यै नमः
२०६. ॐ कक्षपायै नमः
२०७. ॐ कक्षपाराध्यायै नमः
२०८. ॐ कच्छपासन संस्थितायै नमः
२०९. ॐ कर्णपूरायै नमः
२१०. ॐ कर्णनासायै नमः
२११. ॐ कर्णाढ्यायै नमः
२१२. ॐ कालभैरव्यै नमः
२१३. ॐ कलहप्रीतायै नमः
२१४. ॐ कलहदायै नमः
२१५. ॐ कलहायै नमः
२१६. ॐ कलहातुरायै नमः
२१७. ॐ कर्णयक्ष्यै नमः
२१८. ॐ कर्णवार्त्तायै नमः
२१९. ॐ कथिन्यै नमः
२२०. ॐ कर्णसुन्दर्यै नमः
२२१. ॐ कर्णपिशाचिन्यै नमः
२२२. ॐ कर्णमञ्जर्यै नमः
२२३. ॐ कपिकक्षदायै नमः
२२४. ॐ कविकक्षविरूपाढ्यायै नमः
२२५. ॐ कविकक्षस्वरूपिण्यै नमः
२२६. ॐ कस्तूरीमृगसंस्थानायै नमः
२२७. ॐ कस्तूरीमृगरूपिण्यै नमः
२२८. ॐ कस्तूरीमृगसन्तोषायै नमः
२२९. ॐ कस्तूरीमृगमध्यगायै नमः
२३०. ॐ कस्तूरीरसनीलाङ्ग्यै नमः
२३१. ॐ कस्तूरीगन्धतोषितायै नमः
२३२. ॐ कस्तूरीपूजकप्राणायै नमः

२३३. ॐ कस्तूरीपूजकप्रियायै नमः
२३४. ॐ कस्तूरीप्रेमसन्तुष्टायै नमः
२३५. ॐ कस्तूरीप्राणधारिण्यै नमः
२३६. ॐ कस्तूरीपूजकानन्दायै नमः
२३७. ॐ कस्तूरीगन्धरूपिण्यै नमः
२३८. ॐ कस्तूरीमालिकारूपायै नमः
२३९. ॐ कस्तूरीभोजनप्रियायै नमः
२४०. ॐ कस्तूरीतिलकानन्दायै नमः
२४१. ॐ कस्तूरीतिलकप्रियायै नमः
२४२. ॐ कस्तूरीहोमसन्तुष्टायै नमः
२४३. ॐ कस्तूरीतर्पणोद्यतायै नमः
२४४. ॐ कस्तूरीमार्जनोद्युक्तायै नमः
२४५. ॐ कस्तूरीचक्रपूजितायै नमः
२४६. ॐ कस्तूरीपुष्पसम्पूज्यायै नमः
२४७. ॐ कस्तूरीचर्वणोद्यतायै नमः
२४८. ॐ कस्तूरीगर्भमध्यस्थायै नमः
२४९. ॐ कस्तूरीवस्त्रधारिण्यै नमः
२५०. ॐ कस्तूरिकामोदरतायै नमः
२५१. ॐ कस्तूरीवनवासिन्यै नमः
२५२. ॐ कस्तूरीवनसंरक्षायै नमः
२५३. ॐ कस्तूरीप्रेमधारिण्यै नमः
२५४. ॐ कस्तूरीशक्तिनिलयायै नमः
२५५. ॐ कस्तूरीशक्तिकुण्डगायै नमः
२५६. ॐ कस्तूरीकुण्डसंस्नातायै नमः
२५७. ॐ कस्तूरीकुण्डमज्जनायै नमः
२५८. ॐ कस्तूरीजीवसन्तुष्टायै नमः
२५९. ॐ कस्तूरीजीवधारिण्यै नमः
२६०. ॐ कस्तूरीपरमामोदायै नमः
२६१. ॐ कस्तूरीजीवनक्षमायै नमः
२६२. ॐ कस्तूरीजातिभावस्थायै नमः
२६३. ॐ कस्तूरीगन्धचुम्बनायै नमः
२६४. ॐ कस्तूरीगन्धसंशोभाविराजितकपालभुवे नमः
२६५. ॐ कस्तूरीमदनान्तस्थायै नमः
२६६. ॐ कस्तूरीमदहर्षदायै नमः
२६७. ॐ कस्तूर्यै नमः
२६८. ॐ कवितानाढ्यायै नमः
२६९. ॐ कस्तूरीगृहमध्यगायै नमः
२७०. ॐ कस्तूरीस्पर्शकप्राणायै नमः
२७१. ॐ कस्तूरीविन्दकान्तकायै नमः
२७२. ॐ कस्तूर्यामोदरसिकायै नमः
२७३. ॐ कस्तूरीक्रीडनोद्यतायै नमः
२७४. ॐ कस्तूरीदाननिरतायै नमः
२७५. ॐ कस्तूरीवरदायिन्यै नमः
२७६. ॐ कस्तूरीस्थापनासक्तायै नमः
२७७. ॐ कस्तूरीस्थानरञ्जिन्यै नमः
२७८. ॐ कस्तूरीकुशलप्रश्नायै नमः
२७९. ॐ कस्तूरीस्तुतिवन्दितायै नमः
२८०. ॐ कस्तूरीवन्दकाराध्यायै नमः
२८१. ॐ कस्तूरीस्थानवासिन्यै नमः
२८२. ॐ कहरूपायै नमः
२८३. ॐ कहाढ्यायै नमः
२८४. ॐ कहानन्दायै नमः
२८५. ॐ कहात्मभुवे नमः
२८६. ॐ कहपूज्यायै नमः
२८७. ॐ कहाख्यायै नमः
२८८. ॐ कहहेयायै नमः
२८९. ॐ कहात्मिकायै नमः

२९०. ॐ कहमालायै नमः
२९१. ॐ कण्ठभूषायै नमः
२९२. ॐ कहमन्त्रजपोद्यतायै नमः
२९३. ॐ कहनामस्मृतिपरायै नमः
२९४. ॐ कहनामपरायणायै नमः
२९५. ॐ कहपरायणरतायै नमः
२९६. ॐ कहदेव्यै नमः
२९७. ॐ कहेश्वर्यै नमः
२९८. ॐ कहहेत्वै नमः
२९९. ॐ कहानन्दायै नमः
३००. ॐ कहनादपरायणायै नमः
३०१. ॐ कहमात्रे नमः
३०२. ॐ कहान्तस्थायै नमः
३०३. ॐ कहमन्त्रायै नमः
३०४. ॐ कहेश्वरायै नमः
३०५. ॐ कहगेयायै नमः
३०६. ॐ कहाराध्यायै नमः
३०७. ॐ कहध्यानपरायणायै नमः
३०८. ॐ कहतन्त्रायै नमः
३०९. ॐ कहकहायै नमः
३१०. ॐ कहचर्यापरायणायै नमः
३११. ॐ कहचारायै नमः
३१२. ॐ कहगत्यै नमः
३१३. ॐ कहताण्डवकारिण्यै नमः
३१४. ॐ कहारण्यायै नमः
३१५. ॐ कहगत्यै नमः
३१६. ॐ कहशक्तिपरायणायै नमः
३१७. ॐ कहराज्यनतायै नमः
३१८. ॐ कर्मसाक्षिण्यै नमः
३१९. ॐ कर्मसुन्दर्यै नमः
३२०. ॐ कर्मविद्यायै नमः
३२१. ॐ कर्मगत्यै नमः
३२२. ॐ कर्मतन्त्रपरायणायै नमः
३२३. ॐ कर्ममात्रायै नमः
३२४. ॐ कर्मगात्रायै नमः
३२५. ॐ कर्मधर्मपरायणायै नमः
३२६. ॐ कर्मरेखानाशकर्त्र्यै नमः
३२७. ॐ कर्मरेखाविनोदिन्यै नमः
३२८. ॐ कर्मरेखामोहकर्यै नमः
३२९. ॐ कर्मकीर्तिपरायणायै नमः
३३०. ॐ कर्मविद्यायै नमः
३३१. ॐ कर्मसारायै नमः
३३२. ॐ कर्मधारायै नमः
३३३. ॐ कर्मभुवे नमः
३३४. ॐ कर्मकार्य्यै नमः
३३५. ॐ कर्महार्य्यै नमः
३३६. ॐ कर्मकौतुकसुन्दर्य्यै नमः
३३७. ॐ कर्मकाल्यै नमः
३३८. ॐ कर्मतारायै नमः
३३९. ॐ कर्मछिन्नायै नमः
३४०. ॐ कर्मदायै नमः
३४१. ॐ कर्मचाण्डालिन्यै नमः
३४२. ॐ कर्मवेदमात्रे नमः
३४३. ॐ कर्मभुवे नमः
३४४. ॐ कर्मकाण्डरतानन्तायै नमः
३४५. ॐ कर्मकाण्डानुमानितायै नमः
३४६. ॐ कर्मकाण्डपरीणाहायै नमः
३४७. ॐ कमठ्यै नमः

३४८. ॐ कमठाकृत्यै नमः
३४९. ॐ कमठाराध्यहृदयायै नमः
३५०. ॐ कमठायै नमः
३५१. ॐ कण्ठसुन्दर्य्यै नमः
३५२. ॐ कमठासनसंसेव्यायै नमः
३५३. ॐ कमठ्यै नमः
३५४. ॐ कर्मतत्परायै नमः
३५५. ॐ करुणाकरकान्तायै नमः
३५६. ॐ करुणाकरवन्दितायै नमः
३५७. ॐ कठोरायै नमः
३५८. ॐ करमालायै नमः
३५९. ॐ कठोरकुचधारिण्यै नमः
३६०. ॐ कपर्दिन्यै नमः
३६१. ॐ कपटिन्यै नमः
३६२. ॐ कठिन्यै नमः
३६३. ॐ कङ्कभूषणायै नमः
३६४. ॐ करभोर्वै नमः
३६५. ॐ कठिनदायै नमः
३६६. ॐ करभायै नमः
३६७. ॐ करमालयायै नमः
३६८. ॐ कलभाषामय्यै नमः
३६९. ॐ कल्पायै नमः
३७०. ॐ कल्पनायै नमः
३७१. ॐ कल्पदायिन्यै नमः
३७२. ॐ कमलस्थायै नमः
३७३. ॐ कलामालायै नमः
३७४. ॐ कमलास्यायै नमः
३७५. ॐ क्वणत्प्रभायै नमः
३७६. ॐ ककुद्मिन्यै नमः
३७७. ॐ कष्टवत्यै नमः
३७८. ॐ करणीयकथार्चितायै नमः
३७९. ॐ कचार्चितायै नमः
३८०. ॐ कचतन्वै नमः
३८१. ॐ कचसुन्दरधारिण्यै नमः
३८२. ॐ कठोरकुचसंलग्नायै नमः
३८३. ॐ कटिसूत्रविराजितायै नमः
३८४. ॐ कर्णभक्षप्रियायै नमः
३८५. ॐ कन्दायै नमः
३८६. ॐ कथायै नमः
३८७. ॐ कन्दगत्यै नमः
३८८. ॐ कल्यै नमः
३८९. ॐ कलिघ्न्यै नमः
३९०. ॐ कलिदूत्यै नमः
३९१. ॐ कविनायकपूजितायै नमः
३९२. ॐ कणकक्षानियन्त्र्यै नमः
३९३. ॐ कश्चित्कविवरार्चितायै नमः
३९४. ॐ कर्त्र्यै नमः
३९५. ॐ कर्तृकाभूषायै नमः
३९६. ॐ करिण्यै नमः
३९७. ॐ कर्णशत्रुपायै नमः
३९८. ॐ करणेश्यै नमः
३९९. ॐ कर्णपायै नमः
४००. ॐ कलवाचायै नमः
४०१. ॐ कलानिध्यै नमः
४०२. ॐ कलनायै नमः
४०३. ॐ कलनाधारायै नमः
४०४. ॐ कारिकायै नमः
४०५. ॐ करकायै नमः

४०६. ॐ करायै नमः
४०७. ॐ कलगेयायै नमः
४०८. ॐ कर्कराश्यै नमः
४०९. ॐ कर्कराशिप्रपूजितायै नमः
४१०. ॐ कन्याराश्यै नमः
४११. ॐ कन्यकायै नमः
४१२. ॐ कन्यकाप्रियभाषिण्यै नमः
४१३. ॐ कन्यकादानसन्तुष्टायै नमः
४१४. ॐ कन्यकादानतोषिण्यै नमः
४१५. ॐ कन्यादानकरानन्दायै नमः
४१६. ॐ कन्यादानग्रहेष्टदायै नमः
४१७. ॐ कर्षणायै नमः
४१८. ॐ कक्षदहनायै नमः
४१९. ॐ कामितायै नमः
४२०. ॐ कमलासनायै नमः
४२१. ॐ करमालानन्दकर्त्र्यै नमः
४२२. ॐ करमालाप्रतोषितायै नमः
४२३. ॐ करमालाशयानन्दायै नमः
४२४. ॐ करमालासमागमायै नमः
४२५. ॐ करमालासिद्धिदात्र्यै नमः
४२६. ॐ करमालायै नमः
४२७. ॐ करप्रियायै नमः
४२८. ॐ करप्रियाकररतायै नमः
४२९. ॐ करदानपरायणायै नमः
४३०. ॐ कलानन्दायै नमः
४३१. ॐ कलिगत्यै नमः
४३२. ॐ कलिपूज्यायै नमः
४३३. ॐ कलिप्रस्वै नमः
४३४. ॐ कलनादनिनादस्थायै नमः
४३५. ॐ कलनादवरप्रदायै नमः
४३६. ॐ कलनादसमाजस्थायै नमः
४३७. ॐ कहोलायै नमः
४३८. ॐ कहोलदायै नमः
४३९. ॐ कहोलगेहमध्यस्थायै नमः
४४०. ॐ कहोलवरदायिन्यै नमः
४४१. ॐ कहोलकविताधारायै नमः
४४२. ॐ कहोलऋषिमानितायै नमः
४४३. ॐ कहोलमानसाराध्यायै नमः
४४४. ॐ कहोलवाक्यकारिण्यै नमः
४४५. ॐ कर्तृरूपायै नमः
४४६. ॐ कर्तृमय्यै नमः
४४७. ॐ कर्तृमात्रे नमः
४४८. ॐ कर्त्र्यै नमः
४४९. ॐ कनीयायै नमः
४५०. ॐ कनकाराध्यायै नमः
४५१. ॐ कनीनकमय्यै नमः
४५२. ॐ कनीयानन्दनिलयायै नमः
४५३. ॐ कनकानन्दतोषितायै नमः
४५४. ॐ कनीयककरायै नमः
४५५. ॐ काष्ठायै नमः
४५६. ॐ कथार्णवकर्य्यै नमः
४५७. ॐ कर्य्यै नमः
४५८. ॐ करिगम्यायै नमः
४५९. ॐ करिगत्यै नमः
४६०. ॐ करिध्वजपरायणायै नमः
४६१. ॐ करिनाथप्रियायै नमः
४६२. ॐ कण्ठायै नमः
४६३. ॐ कथानकप्रतोषितायै नमः

४६४. ॐ कमनीयायै नमः
४६५. ॐ कमनकायै नमः
४६६. ॐ कमनीयविभूषणायै नमः
४६७. ॐ कमनीयसमाजस्थायै नमः
४६८. ॐ कमनीयव्रतप्रियायै नमः
४६९. ॐ कमनीयगुणाराध्यायै नमः
४७०. ॐ कपिलायै नमः
४७१. ॐ कपिलेश्वर्य्यै नमः
४७२. ॐ कपिलाराध्यहृदयायै नमः
४७३. ॐ कपिलाप्रियवादिन्यै नमः
४७४. ॐ कहचक्रमन्त्रवर्णायै नमः
४७५. ॐ कहचक्रप्रसूनकायै नमः
४७६. ॐ कएईलह्रींस्वरूपायै नमः
४७७. ॐ कएईलह्रींवरप्रदायै नमः
४७८. ॐ कएईलह्रींसिद्धिदात्र्यै नमः
४७९. ॐ कएईलह्रींस्वरूपिण्यै नमः
४८०. ॐ कएईलह्रींमन्त्रवर्णायै नमः
४८१. ॐ कएईलह्रींप्रसूकलायै नमः
४८२. ॐ कवर्गायै नमः
४८३. ॐ कपाटस्थायै नमः
४८४. ॐ कपाटोद्घाटनक्षमायै नमः
४८५. ॐ कङ्काल्यै नमः
४८६. ॐ कपाल्यै नमः
४८७. ॐ कङ्कालप्रियभाषिण्यै नमः
४८८. ॐ कङ्कालभैरवाराध्यायै नमः
४८९. ॐ कङ्कालमानसस्थितायै नमः
४९०. ॐ कङ्कालमोहनिरतायै नमः
४९१. ॐ कङ्कालमोहदायिन्यै नमः
४९२. ॐ कलुषघ्न्यै नमः
४९३. ॐ कलुषहायै नमः
४९४. ॐ कलुषार्त्तिविनाशिन्यै नमः
४९५. ॐ कलिपुष्पायै नमः
४९६. ॐ कलादानायै नमः
४९७. ॐ कशिप्वै नमः
४९८. ॐ कश्यपार्चितायै नमः
४९९. ॐ कश्यपायै नमः
५००. ॐ कश्यपाराध्यायै नमः
५०१. ॐ कलिपूर्णकलेवरायै नमः
५०२. ॐ कलेवरकर्य्यै नमः
५०३. ॐ कांच्यै नमः
५०४. ॐ कवर्गायै नमः
५०५. ॐ करालकायै नमः
५०६. ॐ करालभैरवाराध्यायै नमः
५०७. ॐ करालभैरवेश्वर्य्यै नमः
५०८. ॐ करालायै नमः
५०९. ॐ कलनाधारायै नमः
५१०. ॐ कपर्दीशवरप्रदायै नमः
५११. ॐ कपर्दीशप्रेमलतायै नमः
५१२. ॐ कपर्दिमालिकायुतायै नमः
५१३. ॐ कपर्दिजषमालाढ्यायै नमः
५१४. ॐ करवीरप्रसूनदायै नमः
५१५. ॐ करवीरप्रियप्राणायै नमः
५१६. ॐ करवीरप्रपूजितायै नमः
५१७. ॐ कर्णिकारसमाकारायै नमः
५१८. ॐ कर्णिकारप्रपूजितायै नमः
५१९. ॐ करीषाग्निस्थितायै नमः
५२०. ॐ कर्षायै नमः
५२१. ॐ कर्षमात्रसुवर्णदायै नमः

५२२. ॐ कलशायै नमः
५२३. ॐ कलशाराध्यायै नमः
५२४. ॐ कषायायै नमः
५२५. ॐ करिगानदायै नमः
५२६. ॐ कपिलायै नमः
५२७. ॐ कलकण्ठ्यै नमः
५२८. ॐ कलिकल्पलतायै नमः
५२९. ॐ कल्पलतायै नमः
५३०. ॐ कल्पमात्रे नमः
५३१. ॐ कल्पकार्यै नमः
५३२. ॐ कल्पभुवे नमः
५३३. ॐ कर्पूरामोदरुचिरायै नमः
५३४. ॐ कर्पूरामोदधारिण्यै नमः
५३५. ॐ कर्पूरमालाभरणायै नमः
५३६. ॐ कर्पूरवासपूर्त्तिदायै नमः
५३७. ॐ कर्पूरमाजयदायै नमः
५३८. ॐ कर्पूरार्णवमध्यगायै नमः
५३९. ॐ कर्पूरतर्पणरतायै नमः
५४०. ॐ कटकाम्बरधारिण्यै नमः
५४१. ॐ कपटेश्वरसम्पूज्यायै नमः
५४२. ॐ कपटेश्वररूपिण्यै नमः
५४३. ॐ कट्वै नमः
५४४. ॐ कपिध्वजाराध्यायै नमः
५४५. ॐ कलापपुष्पधारिण्यै नमः
५४६. ॐ कलापपुष्परुचिरायै नमः
५४७. ॐ कलापपुष्पपूजितायै नमः
५४८. ॐ क्रकचायै नमः
५४९. ॐ क्रकचाराध्यायै नमः
५५०. ॐ कथंब्रूमायै नमः
५५१. ॐ करलतायै नमः
५५२. ॐ कथङ्कारविनिर्मुक्तायै नमः
५५३. ॐ काल्यै नमः
५५४. ॐ कालक्रियायै नमः
५५५. ॐ क्रत्वै नमः
५५६. ॐ कामिन्यै नमः
५५७. ॐ कामिनीपूज्यायै नमः
५५८. ॐ कामिनीपुष्पधारिण्यै नमः
५५९. ॐ कामिनीपुष्पनिलयायै नमः
५६०. ॐ कामिनीपुष्पपूर्णिमायै नमः
५६१. ॐ कामिनीपुष्पपूजार्हायै नमः
५६२. ॐ कामिनीपुष्पभूषणायै नमः
५६३. ॐ कामिनीपुष्पतिलकायै नमः
५६४. ॐ कामिनीकुण्डचुम्बनायै नमः
५६५. ॐ कामिनीयोगसंतुष्टायै नमः
५६६. ॐ कामिनीयोगभोगदायै नमः
५६७. ॐ कामिनीकुण्डसम्भग्नायै नमः
५६८. ॐ कामिनीकुण्डमध्यगायै नमः
५६९. ॐ कामिनीमानसाराध्यायै नमः
५७०. ॐ कामिनीमानतोषितायै नमः
५७१. ॐ कामिनीमानसञ्चारायै नमः
५७२. ॐ कालिकायै नमः
५७३. ॐ कालकालिकायै नमः
५७४. ॐ कामायै नमः
५७५. ॐ कामदेव्यै नमः
५७६. ॐ कामेश्यै नमः
५७७. ॐ कामसम्भवायै नमः
५७८. ॐ कामभावायै नमः
५७९. ॐ कामरतायै नमः

५८०. ॐ कामार्त्तायै नमः
५८१. ॐ काममञ्जर्य्यै नमः
५८२. ॐ काममञ्जीररणितायै नमः
५८३. ॐ कामदेवप्रियान्तरायै नमः
५८४. ॐ कामकाल्यै नमः
५८५. ॐ कामकलायै नमः
५८६. ॐ कालिकायै नमः
५८७. ॐ कमलार्चितायै नमः
५८८. ॐ कादिकायै नमः
५८९. ॐ कमलायै नमः
५९०. ॐ काल्यै नमः
५९१. ॐ कालानलसमप्रभायै नमः
५९२. ॐ कल्पान्तदहनायै नमः
५९३. ॐ कान्तायै नमः
५९४. ॐ कान्तारप्रियवासिन्यै नमः
५९५. ॐ कालपूज्यायै नमः
५९६. ॐ कालरतायै नमः
५९७. ॐ कालमात्रे नमः
५९८. ॐ कालिन्यै नमः
५९९. ॐ कालवीरायै नमः
६००. ॐ कालघोरायै नमः
६०१. ॐ कालसिद्धायै नमः
६०२. ॐ कालदायै नमः
६०३. ॐ कालाञ्जनसमाकारायै नमः
६०४. ॐ कालञ्जरनिवासिन्यै नमः
६०५. ॐ कालऋद्ध्यै नमः
६०६. ॐ कालवृद्ध्यै नमः
६०७. ॐ कारागृहविमोचिन्यै नमः
६०८. ॐ कादिविद्यायै नमः
६०९. ॐ कादिमात्रे नमः
६१०. ॐ कादिस्थायै नमः
६११. ॐ कादिसुन्दर्य्यै नमः
६१२. ॐ काश्यै नमः
६१३. ॐ काञ्च्यै नमः
६१४. ॐ काञ्चीशायै नमः
६१५. ॐ काशीशवरदायिन्यै नमः
६१६. ॐ क्रींबीजायै नमः
६१७. ॐ क्रांबीजाहृदयायै नमः
स्मृतायै नमः
६१८. ॐ काम्यायै नमः
६१९. ॐ काम्यगत्यै नमः
६२०. ॐ काम्यसिद्धिदात्र्यै नमः
६२१. ॐ काम्यभुवे नमः
६२२. ॐ कामाख्यायै नमः
६२३. ॐ कामरूपायै नमः
६२४. ॐ कामचापविमोचिन्यै नमः
६२५. ॐ कामदेवकलारामायै नमः
६२६. ॐ कामदेवकलालयायै नमः
६२७. ॐ कामरात्र्यै नमः
६२८. ॐ कामदात्र्यै नमः
६२९. ॐ कान्ताराचलवासिन्यै नमः
६३०. ॐ कालरूपायै नमः
६३१. ॐ कालगत्यै नमः
६३२. ॐ कामयोगपरायणायै नमः
६३३. ॐ कामसम्मर्दनरतायै नमः
६३४. ॐ कामगेहविकाशिन्यै नमः
६३५. ॐ कालभैरवभार्यायै नमः
६३६. ॐ कालभैरवकामिन्यै नमः

६३७. ॐ कालभैरवयोगस्थायै नमः
६३८. ॐ कालभैरवभोगदायै नमः
६३९. ॐ कामधेन्वै नमः
६४०. ॐ कामदोग्ध्र्यै नमः
६४१. ॐ काममात्रे नमः
६४२. ॐ कान्तिदायै नमः
६४३. ॐ कामुकायै नमः
६४४. ॐ कामुकाराध्यै नमः
६४५. ॐ कामुकानन्दवर्द्धिन्यै नमः
६४६. ॐ कार्त्तवीर्यायै नमः
६४७. ॐ कार्तिकेयायै नमः
६४८. ॐ कार्त्तिकेयप्रपूजितायै नमः
६४९. ॐ कार्यायै नमः
६५०. ॐ कारणदायै नमः
६५१. ॐ कार्यकारिण्यै नमः
६५२. ॐ कारणान्तरायै नमः
६५३. ॐ कान्तिगम्यायै नमः
६५४. ॐ कान्तिमय्यै नमः
६५५. ॐ कात्यायै नमः
६५६. ॐ कात्यायन्यै नमः
६५७. ॐ कायै नमः
६५८. ॐ कामसारायै नमः
६५९. ॐ काश्मीरायै नमः
६६०. ॐ काश्मीराचारतत्परायै नमः
६६१. ॐ कामरूपाचाररतायै नमः
६६२. ॐ कामरूपप्रियंवदायै नमः
६६३. ॐ कामरूपाचारसिद्ध्यै नमः
६६४. ॐ कामरूपमनोमय्यै नमः
६६५. ॐ कात्तिक्यै नमः
६६६. ॐ कार्त्तिकाराध्यायै नमः
६६७. ॐ काञ्चनारप्रसूनाभायै नमः
६६८. ॐ काञ्चनारप्रपूजितायै नमः
६६९. ॐ काञ्चरूपायै नमः
६७०. ॐ काञ्चभूम्यै नमः
६७१. ॐ कांस्यपात्रप्रभोजिन्यै नमः
६७२. ॐ कांस्यध्वनिमय्यै नमः
६७३. ॐ कामसुन्दर्य्यै नमः
६७४. ॐ कामचुम्बनायै नमः
६७५. ॐ काशपुष्पप्रतीकाशायै नमः
६७६. ॐ कामद्रुमसमागमायै नमः
६७७. ॐ कामपुष्पायै नमः
६७८. ॐ कामभूम्यै नमः
६७९. ॐ कामपूज्यायै नमः
६८०. ॐ कामदायै नमः
६८१. ॐ कामदेहायै नमः
६८२. ॐ कामगेहायै नमः
६८३. ॐ कामबीजपरायणायै नमः
६८४. ॐ कामध्वजसमारूढायै नमः
६८५. ॐ कामध्वजसमास्थितायै नमः
६८६. ॐ काश्यप्यै नमः
६८७. ॐ काश्यपाराध्यायै नमः
६८८. ॐ काश्यपानन्ददायिन्यै नमः
६८९. ॐ कालिन्दीजल-
संकाशायै नमः
६९०. ॐ कालिन्दीजलपूजितायै नमः
६९१. ॐ कामदेवपूजानिरतायै नमः
६९२. ॐ कामदेवपरमार्थदायै नमः
६९३. ॐ कार्मणायै नमः

६९४. ॐ कार्मणाकारायै नमः
६९५. ॐ कामकार्मणकारिण्यै नमः
६९६. ॐ कार्मणत्रोटनकर्य्यै नमः
६९७. ॐ काकिन्यै नमः
६९८. ॐ कारणाह्वयायै नमः
६९९. ॐ काव्यामृतायै नमः
७००. ॐ कालिङ्गायै नमः
७०१. ॐ कालिङ्गमर्दनोद्यतायै नमः
७०२. ॐ कालागुरुविभूषा-
ढ्यायै नमः
७०३. ॐ कालागुरुविभूतिदायै नमः
७०४. ॐ कालागुरुसुगन्धायै नमः
७०५. ॐ कालागुरुप्रतर्पणायै नमः
७०६. ॐ कावेरीनीरसम्प्रीतायै नमः
७०७. ॐ कावेरीतीरवासिन्यै नमः
७०८. ॐ कालचक्रभ्रमाकारायै नमः
७०९. ॐ कालचक्रनिवासिन्यै नमः
७१०. ॐ काननायै नमः
७११. ॐ काननाधारायै नमः
७१२. ॐ कारवे नमः
७१३. ॐ कारुणिकामय्यै नमः
७१४. ॐ काम्पिल्यवासिन्यै नमः
७१५. ॐ काष्ठायै नमः
७१६. ॐ कामपत्न्यै नमः
७१७. ॐ कामभुवे नमः
७१८. ॐ कादम्बरीपानरतायै नमः
७१९. ॐ कादम्बर्य्यै नमः
७२०. ॐ कलायै नमः
७२१. ॐ कामवन्द्यायै नमः
७२२. ॐ कामेश्यै नमः
७२३. ॐ कामराजप्रपूजितायै नमः
७२४. ॐ कामराजेश्वरीविद्यायै नमः
७२५. ॐ कामकौतुकसुन्दर्य्यै नमः
७२६. ॐ काम्बोजजायै नमः
७२७. ॐ काञ्चिनदायै नमः
७२८. ॐ कांस्यकाञ्चनकारिण्यै नमः
७२९. ॐ काञ्चनाद्रिसमा-
कारायै नमः
७३०. ॐ काञ्चनाद्रिप्रदानदायै नमः
७३१. ॐ कामकीर्त्यै नमः
७३२. ॐ कामकेश्यै नमः
७३३. ॐ कारिकायै नमः
७३४. ॐ कान्ताराश्रयायै नमः
७३५. ॐ कामभेद्यै नमः
७३६. ॐ कामार्त्तिनाशिन्यै नमः
७३७. ॐ कामभूमिकायै नमः
७३८. ॐ कालनिर्णाशिन्यै नमः
७३९. ॐ काव्यवनितायै नमः
७४०. ॐ कामरूपिण्यै नमः
७४१. ॐ कायस्थाकाम-
सन्दीप्त्यै नमः
७४२. ॐ काव्यदायै नमः
७४३. ॐ कालसुन्दर्य्यै नमः
७४४. ॐ कामेश्यै नमः
७४५. ॐ कारणवरायै नमः
७४६. ॐ कामेशीपूजनोद्यतायै नमः
७४७. ॐ काञ्चीनूपुरभूषाढ्यायै नमः
७४८. ॐ कुङ्कुमाभरणान्वितायै नमः

७४९. ॐ कालचक्रायै नमः
७५०. ॐ कालगत्यै नमः
७५१. ॐ कालचक्रमनोभवायै नमः
७५२. ॐ कुन्दमध्यायै नमः
७५३. ॐ कुन्दपुष्पायै नमः
७५४. ॐ कुन्दपुष्पप्रियायै नमः
७५५. ॐ कुजायै नमः
७५६. ॐ कुजमात्रे नमः
७५७. ॐ कुजाराध्यायै नमः
७५८. ॐ कुठारवरधारिण्यै नमः
७५९. ॐ कुञ्जरस्थायै नमः
७६०. ॐ कुशरतायै नमः
७६१. ॐ कुशेशयविलोचनायै नमः
७६२. ॐ कुनठ्यै नमः
७६३. ॐ कुरर्य्यै नमः
७६४. ॐ क्रुद्रायै नमः
७६५. ॐ कुरुङ्ग्यै नमः
७६६. ॐ कुटजाश्रयायै नमः
७६७. ॐ कुम्भीनसविभूषायै नमः
७६८. ॐ कुम्भीनसवधोद्यतायै नमः
७६९. ॐ कुम्भकर्णमनोल्लासायै नमः
७७०. ॐ कुलचूडामण्यै नमः
७७१. ॐ कुलायै नमः
७७२. ॐ कुलालगृहकन्यायै नमः
७७३. ॐ कुलचूडामणिप्रियायै नमः
७७४. ॐ कुलपूज्यायै नमः
७७५. ॐ कुलाराध्यायै नमः
७७६. ॐ कुलपूजापरायणायै नमः
७७७. ॐ कुलभूषायै नमः
७७८. ॐ कुक्ष्यै नमः
७७९. ॐ कुररीगणसेवितायै नमः
७८०. ॐ कुलपुष्पायै नमः
७८१. ॐ कुलरतायै नमः
७८२. ॐ कुलपुष्पपरायणायै नमः
७८३. ॐ कुलवस्त्रायै नमः
७८४. ॐ कुलाराध्यायै नमः
७८५. ॐ कुलकुण्डसमप्रभायै नमः
७८६. ॐ कुलकुण्डसमोल्लासायै नमः
७८७. ॐ कुण्डपुष्पपरारणायै नमः
७८८. ॐ कुण्डपुष्पप्रसन्नास्यायै नमः
७८९. ॐ कुण्डगोलोद्भवात्मिकायै नमः
७९०. ॐ कुण्डगोलोद्भवाधारायै नमः
७९१. ॐ कुण्डगोलमय्यै नमः
७९२. ॐ कुह्वै नमः
७९३. ॐ कुण्डगोलप्रियप्राणायै नमः
७९४. ॐ कुण्डगोलप्रपूजितायै नमः
७९५. ॐ कुण्डगोलमनोल्लासायै नमः
७९६. ॐ कुण्डगोललप्रदायै नमः
७९७. ॐ कुण्डदेवरतायै नमः
७९८. ॐ क्रुद्धायै नमः
७९९. ॐ कुलसिद्धिकरापरायै नमः
८००. ॐ कुलकुण्डसमाकारायै नमः
८०१. ॐ कुलकुण्डसमानभुवे नमः
८०२. ॐ कुण्डसिद्ध्यै नमः
८०३. ॐ कुण्डऋद्ध्यै नमः
८०४. ॐ कुमारीपूजनोद्यतायै नमः
८०५. ॐ कुमारीपूजकप्राणायै नमः
८०६. ॐ कुमारीपूजकालयायै नमः

८०७. ॐ कुमार्य्यै नमः
८०८. ॐ कामसन्तुष्टायै नमः
८०९. ॐ कुमारीपूजनोत्सुकायै नमः
८१०. ॐ कुमारीव्रतसन्तुष्टायै नमः
८११. ॐ कुमारीरूपधारिण्यै नमः
८१२. ॐ कुमारीभोजनप्रीतायै नमः
८१३. ॐ कुमार्यै नमः
८१४. ॐ कुमारदायै नमः
८१५. ॐ कुमारमात्रे नमः
८१६. ॐ कुलदायै नमः
८१७. ॐ कुलयोन्यै नमः
८१८. ॐ कुलेश्वर्यै नमः
८१९. ॐ कुललिङ्गायै नमः
८२०. ॐ कुलानन्दायै नमः
८२१. ॐ कुलरम्यायै नमः
८२२. ॐ कुतर्कधृषे नमः
८२३. ॐ कुन्त्यै नमः
८२४. ॐ कुलकान्तायै नमः
८२५. ॐ कुलमार्गपरायणायै नमः
८२६. ॐ कुल्लायै नमः
८२७. ॐ कुरुकुल्ल्यायै नमः
८२८. ॐ कुल्लुकायै नमः
८२९. ॐ कुलकामदायै नमः
८३०. ॐ कुलिशाङ्ग्यै नमः
८३१. ॐ कुब्जिरकायै नमः
८३२. ॐ कुब्जिकानन्दवर्द्धिन्यै नमः
८३३. ॐ कुलीनायै नमः
८३४. ॐ कुञ्जरगत्यै नमः
८३५. ॐ कुञ्जरेश्वरगामिन्यै नमः
८३६. ॐ कुलपाल्यै नमः
८३७. ॐ कुलवत्यै नमः
८३८. ॐ कुलदीपिकायै नमः
८३९. ॐ कुलयोगेश्वर्य्यै नमः
८४०. ॐ कुण्डायै नमः
८४१. ॐ कुङ्कुमारुणविग्रहायै नमः
८४२. ॐ कुङ्कुमानंदसन्तोषायै नमः
८४३. ॐ कुङ्कुमार्णववासिन्यै नमः
८४४. ॐ कुसुमायै नमः
८४५. ॐ कुसुमप्रीतायै नमः
८४६. ॐ कुलभुवे नमः
८४७. ॐ कुलसुन्दर्यै नमः
८४८. ॐ कुमुद्वत्यै नमः
८४९. ॐ कुमुदिन्यै नमः
८५०. ॐ कुशलायै नमः
८५१. ॐ कुलटालयायै नमः
८५२. ॐ कुलटालयमध्यस्थायै नमः
८५३. ॐ कुलटासङ्गतोषितायै नमः
८५४. ॐ कुलटाभवनोद्युक्तायै नमः
८५५. ॐ कुशावर्त्तायै नमः
८५६. ॐ कुलार्णवायै नमः
८५७. ॐ कुलार्णवाचाररतायै नमः
८५८. ॐ कुण्डल्यै नमः
८५९. ॐ कुण्डलाकृत्यै नमः
८६०. ॐ कुमत्यै नमः
८६१. ॐ कुलश्रेष्ठायै नमः
८६२. ॐ कुलचक्रपरायणायै नमः
८६३. ॐ कूटस्थायै नमः
८६४. ॐ कूटदृष्ट्यै नमः

८६५. ॐ कुन्तलायै नमः
८६६. ॐ कुन्तलाकृत्यै नमः
८६७. ॐ कुशलाकृतिरूपायै नमः
८६८. ॐ कूर्चबीजधरायै नमः
८६९. ॐ क्वै नमः
८७०. ॐ कुंकुंकुंकुंशब्दरतायै नमः
८७१. ॐ क्रूंक्रूंक्रूंक्रूंपरायणायै नमः
८७२. ॐ कुंकुंकुंशब्दनिलयायै नमः
८७३. ॐ कुक्कुरालयवासिन्यै नमः
८७४. ॐ कुक्कुरासङ्गसंयुक्तायै नमः
८७५. ॐ कुक्कुरानन्तविग्रहायै नमः
८७६. ॐ कूर्चारम्भायै नमः
८७७. ॐ कूर्चबीजायै नमः
८७८. ॐ कूर्चजापपरायणायै नमः
८७९. ॐ कुलिन्यै नमः
८८०. ॐ कुलस्थानायै नमः
८८१. ॐ कूर्चकण्ठपरागत्यै नमः
८८२. ॐ कूर्चवीणाभालदेशायै नमः
८८३. ॐ कूर्चमस्तकभूषितायै नमः
८८४. ॐ कुलवृक्षगतायै नमः
८८५. ॐ कूर्मायै नमः
८८६. ॐ कूर्माचलनिवासिन्यै नमः
८८७. ॐ कुलबिन्द्वै नमः
८८८. ॐ कुलशिवायै नमः
८८९. ॐ कुलशक्तिपरायणायै नमः
८९०. ॐ कुलबिन्दुमणिप्रख्यायै नमः
८९१. ॐ कुङ्कुमद्रुमवासिन्यै नमः
८९२. ॐ कुचमर्दनसन्तुष्टायै नमः
८९३. ॐ कुचजापपरायणायै नमः
८९४. ॐ कुचस्पर्शनसन्तुष्टायै नमः
८९५. ॐ कुचालिङ्गनहर्षदायै नमः
८९६. ॐ कुमतिघ्न्यै नमः
८९७. ॐ कुबेरार्चायै नमः
८९८. ॐ कुचभुवे नमः
८९९. ॐ कुलनायिकायै नमः
९००. ॐ कुगायनायै नमः
९०१. ॐ कुचधरायै नमः
९०२. ॐ कुमात्रे नमः
९०३. ॐ कुन्ददन्तिन्यै नमः
९०४. ॐ कुगेयायै नमः
९०५. ॐ कुहूराभाषायै नमः
९०६. ॐ कुगेयाकुघ्नदारिकायै नमः
९०७. ॐ कीर्त्यै नमः
९०८. ॐ किरातिन्यै नमः
९०९. ॐ क्लिन्नायै नमः
९१०. ॐ किन्नरायै नमः
९११. ॐ किन्नर्यै नमः
९१२. ॐ क्रियायै नमः
९१३. ॐ क्रीङ्कारायै नमः
९१४. ॐ क्रींजपासक्तायै नमः
९१५. ॐ क्रींहूंस्त्रींमन्त्ररूपिण्यै नमः
९१६. ॐ किर्मीरितदृशापाङ्ग्यै नमः
९१७. ॐ किशोर्यै नमः
९१८. ॐ किरीटिन्यै नमः
९१९. ॐ कीटभाषायै नमः
९२०. ॐ कीटयोन्यै नमः
९२१. ॐ कीटमात्रे नमः
९२२. ॐ कीटदायै नमः

९२३. ॐ किंशुकायै नमः
९२४. ॐ कीरभाषायै नमः
९२५. ॐ क्रियासारायै नमः
९२६. ॐ क्रियावत्यै नमः
९२७. ॐ कींकींशब्दपरायै नमः
९२८. ॐ क्लांक्लींक्लूंक्लैंक्लौं-
मन्त्ररूपिण्यै नमः
९२९. ॐ कांकींकूंकैंस्वरूपायै नमः
९३०. ॐ कः फट्मन्त्रस्वरू-
पिण्यै नमः
९३१. ॐ केतकीभूषणानन्दायै नमः
९३२. ॐ केतकीभरणान्वितायै नमः
९३३. ॐ कैकदायै नमः
९३४. ॐ केशिन्यै नमः
९३५. ॐ केश्यै नमः
९३६. ॐ केशीसूदनतत्परायै नमः
९३७. ॐ केशरूपायै नमः
९३८. ॐ केशमुक्तायै नमः
९३९. ॐ कैकेय्यै नमः
९४०. ॐ कौशिक्यै नमः
९४१. ॐ कैरवायै नमः
९४२. ॐ कैरवाह्लादायै नमः
९४३. ॐ केशरायै नमः
९४४. ॐ केतुरूपिण्यै नमः
९४५. ॐ केशवाराध्यहृदयायै नमः
९४६. ॐ केशवासक्तमानसायै नमः
९४७. ॐ क्लैव्यविनाशिन्यै नमः
९४८. ॐ क्लैं च क्लैंबीजजप-
तोषितायै नमः
९४९. ॐ कौशल्यायै नमः
९५०. ॐ कोशलाक्ष्यै नमः
९५१. ॐ कोशायै नमः
९५२. ॐ कोमलायै नमः
९५३. ॐ कोलापुरनिवासायै नमः
९५४. ॐ कोलासुरविनाशिन्यै नमः
९५५. ॐ कोटिरूपायै नमः
९५६. ॐ कोटिरतायै नमः
९५७. ॐ क्रोधिन्यै नमः
९५८. ॐ क्रोधरूपिण्यै नमः
९५९. ॐ केकायै नमः
९६०. ॐ कोकिलायै नमः
९६१. ॐ कोट्यै नमः
९६२. ॐ कोटिमन्त्रपरायणायै नमः
९६३. ॐ कोट्यनन्तमन्त्रयुतायै नमः
९६४. ॐ कैरूपायै नमः
९६५. ॐ केरलाश्रयायै नमः
९६६. ॐ केरलाचारनिपुणायै नमः
९६७. ॐ केरलेन्द्रगृहस्थितायै नमः
९६८. ॐ केदाराश्रमसंस्थायै नमः
९६९. ॐ केदारेश्वरपूजितायै नमः
९७०. ॐ क्रोधरूपायै नमः
९७१. ॐ क्रोधपदायै नमः
९७२. ॐ क्रोधमात्रे नमः
९७३. ॐ कौशिक्यै नमः
९७४. ॐ कोदण्डधारिण्यै नमः
९७५. ॐ क्रौञ्चायै नमः
९७६. ॐ कौशिल्यायै नमः
९७७. ॐ कौलमार्गगायै नमः

९७८. ॐ कौलिन्यै नमः
९७९. ॐ कौलिकाराध्यायै नमः
९८०. ॐ कौलिकागारवासिन्यै नमः
९८१. ॐ कौतुक्यै नमः
९८२. ॐ कौमुद्यै नमः
९८३. ॐ कौलायै नमः
९८४. ॐ कौमार्यै नमः
९८५. ॐ कौरवार्चितायै नमः
९८६. ॐ कौण्डिन्यायै नमः
९८७. ॐ कौशिक्यै नमः
९८८. ॐ क्रोधज्वालाभासुर-रूपिण्यै नमः
९८९. ॐ कोटिकालानलज्वालायै नमः
९९०. ॐ कोटिमार्तण्डविग्रहायै नमः
९९१. ॐ कृत्तिकायै नमः
९९२. ॐ कृष्णवर्णायै नमः
९९३. ॐ कृष्णायै नमः
९९४. ॐ कृत्यायै नमः
९९५. ॐ क्रियातुरायै नमः
९९६. ॐ कृशाङ्ग्यै नमः
९९७. ॐ कृतकृत्यायै नमः
९९८. ॐ क्रः फट्स्वाहारूपिण्यै नमः
९९९. ॐ क्रौंक्रौंहूंफट्मन्त्रवर्णायै नमः
१०००. ॐ क्रींह्रींह्रूंफट् नमः स्वधायै नमः
१००१. ॐ क्रींक्रीं-ह्रींह्रीं तथा ह्रूंह्रूं फट्स्वाहामन्त्ररूपिण्यै नमः

~✻✻~

विशेष—जो साधक कालीसहस्रनामावली के द्वारा हवन करना चाहते हों, वे कालीसहस्रनामावली में 'नमः' शब्द को हटाकर 'स्वाहा' शब्द लगाकर काला तिल, कमलगट्टा, मखाना, तालमिश्री, शक्कर, बिल्वपत्र एवं शुद्ध घृत द्वारा हवन करें।

श्रीदक्षिणकालिकासहस्त्रनामस्तोत्रम्

॥ श्रीशिव उवाच॥

कथितोऽयं महामन्त्रः सर्वमन्त्रोत्तमोत्तमः।
यामासाद्य मया प्राप्तमैश्वर्यपदमुत्तमम्॥ १ ॥
संयुक्तः परया भक्त्या यथोक्त विधिना भवान्।
कुरुतामर्चनं देव्यास्त्रैलोक्यविजिगीषया॥ २ ॥

॥श्रीराम उवाच॥

प्रसन्नो यदि मे देव परमेश पुरातन।
रहस्यं परमं देव्याः कृपया कथय प्रभो॥ ३ ॥
विनार्चनं विना होमं विना न्यासं विना बलिं।
विना गन्धं विना पुष्पं विना नित्योदितां क्रियां॥ ४ ॥
प्राणायामं विना ध्यानं विना भूतविशोधनम्।
विना दानं विना जापं येन काली प्रसीदति॥ ५ ॥

॥शिव उवाच॥

पृष्टं त्वयोत्तमं प्राज्ञ भृगुवंशसमुद्भव।
भक्तानामपि भक्तोऽसि त्वमेव साधयिष्यसि॥ ६ ॥
देवीं दानवकोटिघ्नीं लीलया रुधिरप्रियाम्।
सदा स्तोत्रप्रियामुग्रां कामकौतुकलालसां॥ ७ ॥
सर्वदानन्दहृदयाभासवोत्सवमानसाम् ।
माध्वीकमत्स्यमांसानुरागिणीं वैष्णवीं पराम्॥ ८ ॥
श्मशानवासिनीं प्रेतगणनृत्यमहोत्सवाम्।
योगप्रभावां योगेशीं योगीन्द्रहृदयस्थिताम्॥ ९ ॥
तामुग्रकालिकां राम प्रसीदयितुमर्हसि।
तस्याः स्तोत्रं परं पुण्यं स्वयं काल्या प्रकाशितम्॥१०॥
तव तत् कथयिष्यामि श्रुत्वा वत्सावधारय।
गोपनीयं प्रयत्नेन पठनीयं परात्परम्॥११॥
यस्यैककालपठनात् सर्वे विघ्नाः समाकुलाः।
नश्यन्ति दहने दीप्ते पतङ्गा इव सर्वतः॥१२॥

गद्यपद्यमयीं वाणीं तस्य गङ्गाप्रवाहवत्।
तस्य दर्शनमात्रेण वादिनो निष्प्रभां गताः।।१३।।
तस्य हस्ते सदैवास्ति सर्वसिद्धिर्नसंशयः।
राजानोऽपि च दासत्वं भजते किं परे जनाः।।१४।।
निशीथे मुक्तकेशस्तु नग्नः शक्तिसमाहितः।
मनसा चिन्तयेत् कालीं महाकालेन चार्चितां।।१५।।
पठेत् सहस्त्रनामाख्यं स्तोत्रं मोक्षस्य साधनम्।
प्रसन्ना कालिका तस्य पुत्रत्वेनानुकम्पते।।१६।।
यथा ब्रह्ममृतैर्ब्रह्मकुसुमैः पूजिता परा।
प्रसीदति तथानेन स्तुता काली प्रसीदति।।१७।।

।।विनियोगः।।

अस्य श्रीदक्षिणकालिकासहस्त्रनामस्तोत्रस्य महाकालभैरव ऋषिस्त्रिष्टुप् छन्दः श्मशानकाली देवता धर्मार्थकाममोक्षार्थे विनियोगः।

।।श्रीदक्षिणकालिकासहस्त्रनामस्तोत्रम्।।

श्मशानकालिका काली भद्रकाली कपालिनी।
गुह्यकाली महाकाली कुरुकुल्ला विरोधिनी।।१८।।
कालिका कालरात्रिश्च महाकालनितम्बिनी।
कालभैरवभार्या च कुलवर्त्मप्रकाशिनी।।१९।।
कामदा कामिनी कन्या कमनीयस्वरूपिणी।
कस्तूरीरसलिप्ताङ्गी कुञ्जरेश्वरगामिनी।।२०।।
ककारवर्णसर्वाङ्गी कामिनी कामसुन्दरी।
कामार्ता कामरूपा च कामधेनुः कलावती।।२१।।
कान्ता कामस्वरूपा च कामाख्या कुलकामिनी।
कुलीना कुलवत्यम्बा दुर्गा दुर्गतिनाशिनी।।२२।।
कौमारी कलजा कृष्णा कृष्णदेहा कृशोदरी।
कृशाङ्गी कुलिशांगी क्रीं क्रीङ्कारी कमला कला।।२३।।
करालास्या कराली च कुलकान्तापराजिता।
उग्रा उग्रप्रभा दीप्ता विप्रचित्ता महाबला।।२४।।

नीला घना मेघनादा मात्रा मुद्रा मितामिता।
ब्राह्मी नारायणी भद्रा सुभद्रा भक्तवत्सला।।२५।।
माहेश्वरी च चामुण्डा वाराही नारसिंहका।
वज्राङ्गी वज्रकङ्काला नृमुण्डस्रग्विणी शिवा।।२६।।
मालिनी नरमुण्डाली गलद्रक्तविभूषणा।
रक्तचन्दनसिक्ताङ्गी सिन्दूरारुणमस्तका।।२७।।
घोररूपा घोरदंष्ट्रा घोरा घोरतरा शुभा।
महादंष्ट्रा महामाया सुदन्ती युगदन्तुरा।।२८।।
सुलोचना विरूपाक्षी विशालक्षी त्रिलोचना।
शारदेन्दु प्रसन्नास्या स्फुरत् स्मिताम्बुजेक्षणा।।२९।।
अट्टाहासा प्रफुल्लास्या स्मेरवक्त्रा सुभाषिणी।
प्रफुल्लपद्मवदना स्मितास्या प्रियभाषिणी।।३०।।
कोटराक्षी कुलश्रेष्ठा महती बहुभाषिणी।
सुमतिः कुमतिश्चण्डा चण्डमुण्डातिवेगिनी।।३१।।
सुकेशी मुक्तकेशी च दीर्घकेशी महाकचा।
प्रेतदेहाकर्णपूरा प्रेतपाणि सुमेखला।।३२।।
प्रेतासना प्रियप्रेता पुण्यदा कुलपण्डिता।
पुण्यालया पुण्यदेहा पुण्यश्लोका च पावनी।।३३।।
पूता पवित्रा परमा परा पुण्यविभूषणा।
पुण्यनाम्नी भीतिहरा वरदा खड्गपाशिनी।।३४।।
नृमुण्डहस्ता शान्ता च छिन्नमस्ता सुनासिका।
दक्षिणा श्यामला श्यामा शान्ता पीनोन्नतस्तनी।।३५।।
दिगम्बरी महारावा सृक्कान्तरक्तवाहिनी।
घोररावा शिवासङ्गा निःसङ्गा मदनातुरा।।३६।।
मत्ता प्रमत्ता मदना सुधासिन्धुनिवासिनी।
अभिमत्ता महामत्ता सर्वाकर्षणकारिणी।।३७।।
गीतप्रिया वाद्यरता प्रेतनृत्यपरायणा।
चतुर्भुजा दशभुजा अष्टादशभुजा तथा।।३८।।
कात्यायनी जगन्माता जगती परमेश्वरी।
जगद्बन्धुर्जगद्धात्री जगदानन्दकारिणी।।३९।।

जगज्जीववती हैमवती माया महालया।
नागयज्ञोपवीताङ्गी नागिनी नागशायिनी।।४०।।
नागकन्या देवकन्या गान्धारी किन्नरी सुरी।
मोहरात्रि महारात्रि दारुणाभा सुरासुरी।।४१।।
विद्याधरी वसुमति यक्षिणी योगिनी जरा।
राक्षसी डाकिनी वेदमयी वेदविभूषणा।।४२।।
श्रुतिस्मृती महाविद्या गुह्यविद्या पुरातनी।
चिन्ताचिन्ता स्वधा स्वाहा निद्रा तन्द्रा च पार्वती।।४३।।
अपर्णा निश्चला लोला सर्वविद्या तपस्विनी।
गङ्गा काशी शची सीता सती सत्यपरायणा।।४४।।
नीतिः सुनीतिः सुरुचिस्तुष्टिः पुष्टिर्धृतिः क्षमा।
वाणी बुद्धिर्महालक्ष्मी लक्ष्मीर्नीलसरस्वती।।४५।।
स्रोतस्वती स्रोतवती मातङ्गी विजया जया।
नदी सिन्धुः सर्वमयी तारा शून्यनिवासिनी।।४६।।
शुद्धा तरंगिणी मेधा लाकिनी बहुरूपिणी।
सदानन्दमयी सत्या सर्वानन्दस्वरूपिणी।।४७।।
सुनन्दा नन्दिनी स्तुत्या स्तवनीया स्वभाविनी।
रङ्किणी टङ्किणी चित्रा विचित्रा चित्ररूपिणी।।४८।।
पद्मा पद्मालया पद्ममुखी पद्मविभूषणा।
शाकिनी हाकिनी क्षान्ता राकिणी रुधिरप्रिया।।४९।।
भ्रान्तिर्भवानी रुद्राणी मृडानी शत्रुमर्दिनी।
उपेन्द्राणी महेशानी ज्योत्स्ना चन्द्रस्वरूपिणी।।५०।।
सूर्यात्मिका रुद्रपत्नी रौद्री स्त्री प्रकृतिः पुमान्।
शक्तिः सूक्तिर्मतिमती भुक्तिर्मुक्तिः पतिव्रता।।५१।।
सर्वेश्वरी सर्वमता सर्वाणी हरवल्लभा।
सर्वज्ञा सिद्धिदा सिद्धा भाव्या भव्या भयापहा।।५२।।
कर्त्री हर्त्री पालयित्री शर्वरी तामसी दया।
तमिस्रा यामिनीस्था च स्थिरा धीरा तपस्विनी।।५३।।
चार्वङ्गी चञ्चला लोलजिह्वा चारुचरित्रिणी।
त्रपा त्रपावती लज्जा निर्लज्जा ह्रीं रजोवती।।५४।।

सत्त्ववती धर्मनिष्ठा श्रेष्ठा निष्ठुरवादिनी।
गरिष्ठा दुष्टसंहर्त्री विशिष्टा श्रेयसीघृणा।।५५।।
भीमा भयानका भीमनादिनी भीः प्रभावती।
वागीश्वरी श्रीर्यमुना यज्ञकर्त्री यजुःप्रिया।।५६।।
ऋक्सामथर्वनिलया रागिणी शोभनस्वरा।
कलकण्ठी कम्बुकण्ठी वेणुवीणापरायणा।।५७।।
वंशिनी वैष्णवी स्वच्छा धात्री त्रिजगदीश्वरी।
मधुमती कुण्डलिनी ऋद्धिः सिद्धिः शुचिस्मिता।।५८।।
अम्भोर्वशी रती रामा रोहिणी रेवती रमा।
शङ्खिनी चक्रिणी कृष्णा गदिनी पद्मिनी तथा।।५९।।
शूलिनी परिघास्त्रा च पाशिनी शार्ङ्गपाणिनी।
पिनाकधारिणी धूम्रा शरभा वनमालिनी।।६०।।
वज्रिणी समरप्रीता वेगिनी रणपण्डिता।
जटिनी बिम्बिनी नीला लावण्याम्बुधिचन्द्रिका।।६१।।
बलिप्रिया सदा पूज्या पूर्णा दैत्येन्द्रमाथिनी।
महिषासुरसंहन्त्री वासिनी रक्तदन्तिका।।६२।।
रक्तपा रुधिराक्ताङ्गी रक्तखर्परहस्तिनी।
रक्तप्रिया मांसरुचिरा सवासरक्तमानसा।।६३।।
गलच्छोणितमुण्डालिकण्ठमालाविभूषणा ।
शवासना चितान्तस्था माहेशी वृषवाहिनी।।६४।।
व्याघ्रत्वगम्बरा चीनचेलिनी सिंहवाहिनी।
वामदेवी महादेवी गौरी सर्वज्ञभाविनी।।६५।।
बालिका तरुणी वृद्धा वृद्धमाता जरातुरा।
सुभ्रुर्विलासिनी ब्रह्मवादिनी ब्राह्मणी मही।।६६।।
स्वप्नावती चित्रलेखा लोपामुद्रा सुरेश्वरी।
अमोघाऽरुन्धती तीक्ष्णा भोगवश्यनुवादिनी।।६७।।
मन्दाकिनी मन्दहासा ज्वालमुख्या सुरान्तका।
मानदा मानिनी मान्या माननीया मदोद्धता।।६८।।
मदिरा मदिरोन्मादा मेध्या नव्या प्रसादिनी।
सुमध्यानन्तगुणिनी सर्वलोकोत्तमोत्तमा।।६९।।

जयदा जित्वरा जेत्री जयश्रीर्जयशालिनी।
सुखदा शुभदा सत्या सभासंक्षोभकारिणी।।७०।।
शिवदूती भूतिमती विभूतिर्भीषणानना।
कौमारी कुलजा कुन्ती कुलस्त्री कुलपालिका।।७१।।
कीर्तिर्यशस्विनी भूषा भूष्या भूतपतिप्रिया।
सगुणा निर्गुणा धृष्टा निष्ठा काष्ठा प्रतिष्ठिता।।७२।।
धनिष्ठा धनदा धन्या वसुधा स्वप्रकाशिनी।
उर्वी गुर्वी गुरुश्रेष्ठा सगुणा त्रिगुणात्मिका।।७३।।
महाकुलीना निष्कामा सकामा कामजीवना।
कामदेवकला रामाभिरामा शिवनर्तकी।।७४।।
चिन्तामणि कल्पलता जाग्रती दीनवत्सला।
कार्त्तिकी कीर्त्तिका कृत्या अयोध्या विषमा समा।।७५।।
सुमन्त्रा मन्त्रिणी घूर्णा ह्लादिनी क्लेशनाशिनी।
त्रैलोक्यजननी हृष्टा मनोज्ञा मधुरूपिणी।।७६।।
तडागनिम्नजठरा शुष्कमांसास्थिमालिनी।
आवन्ती मथुरा माया त्रैलोक्यपावनीश्वरी।।७७।।
व्यक्ताव्यक्तानेकमूर्त्तिः शर्वरी भीमनादिनी।
क्षेमङ्करी शंकरी च सर्वसम्मोहकारिणी।।७८।।
श्रर्द्धतेजस्विनी क्लिन्ना महातेजस्विनी तथा।
अद्बैता भोगिनी पूज्या युवती सर्वमङ्गला।।७९।।
सर्वप्रियङ्करी भोग्या धरणी पिशिताशना।
भयङ्करी पापहरा निष्कलङ्का वशङ्करी।।८०।।
आशा तृष्णा चन्द्रकला निद्रान्या वायुवेगिनी।
सहस्रसूर्यसंकाशा चन्द्रकोटिसमप्रभा।।८१।।
वह्निमण्डलसंस्था च सर्वतत्त्वप्रतिष्ठिता।
सर्वाचारवती सर्वदेवकन्याधिदेवता।।८२।।
दक्षकन्या दक्षयज्ञनाशिनी दुर्गतारिका।
ईज्या पूज्या विभा भूतिः सत्कीर्तिर्ब्रह्मरूपिणी।।८३।।
रम्भोरुश्चतुरा राका जयन्ती करुणा कुहुः।
मनस्विनी देवमाता यशस्या ब्रह्मचारिणी।।८४।।

ऋद्धिदा वृद्धिदा वृद्धिः सर्वाद्या सर्वदायिनी।
आधाररूपिणी ध्येया मूलाधारनिवासिनी।।८५।।
अज्ञा प्रज्ञा पूर्णमनाश्चन्द्रमुख्यनुकूलिनी।
वावदूका निम्ननाभिः सत्या सन्ध्या दृढव्रता।।८६।।
आन्वीक्षिकी दण्डनीतिस्त्रयी त्रिदिवसुन्दरी।
ज्वलिनी ज्वालिनी शैलतनया विन्ध्यवासिनी।।८७।।
अमेया खेचरी धैर्या तुरीया विमलातुरा।
प्रगल्भा वारुणीच्छाया शशिनी विस्फुलिङ्गिनी।।८८।।
भुक्तिः सिद्धिः सदा प्राप्तिः प्राकाम्या महिमाणिमा।
इच्छासिद्धिर्विसिद्धा च वशित्वोर्ध्वनिवासिनी।।८९।।
लघिमा चैव गायत्री सावित्री भुवनेश्वरी।
मनोहरा चिता दिव्या देव्युदारा मनोरमा।।९०।।
पिङ्गला कपिला जिह्वारसज्ञा रसिका रसा।
सुषुम्नेडा भोगवती गान्धारी नरकान्तका।।९१।।
पाञ्चाली रुक्मिणी राधाराध्या भीमाधिराधिका।
अमृता तुलसी वृन्दा कैटभी कपटेश्वरी।।९२।।
उग्रचण्डेश्वरी वीरा जननी वीरसुन्दरी।
उग्रतारा यशोदाख्या देवकी देवमानिता।।९३।।
निरञ्जना चित्रदेवी क्रोधिनी कुलदीपिका।
कुलवागीश्वरी वाणी मातृका द्राविणी द्रवा।।९४।।
योगेश्वरी महामारी भ्रामरी विन्दुरूपिणी।
दूती प्राणेश्वरी गुप्ता बहुला चमरी प्रभा।।९५।।
कुब्जिका ज्ञानिनी ज्येष्ठा भुशुण्डी प्रकटा तिथिः।
द्रविणी गोपनी माया कामबीजेश्वरी क्रिया।।९६।।
शाम्भवी केकरा मेना मूषलास्त्रा तिलोत्तमा।
अमेयविक्रमा क्रूरा सम्पत्शाला त्रिलोचना।।९७।।
सुस्थी हव्यवहा प्रीतिरुष्मा धूम्रार्चिरङ्गदा।
तपिनी तापिनी विश्वा भोगदा धारिणी धरा।।९८।।
त्रिखण्डा बोधनी वश्या सकला शब्दरूपिणी।
बीजरूपा महामुद्रा योगिनी योनिरूपिणी।।९९।।

अनङ्गकुसुमानङ्गमेखलानङ्गरूपिणी ।
वज्रेश्वरी च जयिनी सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करी।।१००।।
षडङ्गयुवती योगयुक्ता ज्वालांशुमालिनी।
दुराशया दुराधारा दुर्जया दुर्गरूपिणी।।१०१।।
दुरन्ता दुष्कृतिहरा दुर्ध्येया दुरतिक्रमा।
हंसेश्वरी त्रिकोणस्था शाकम्भर्यनुकम्पिनी।।१०२।।
त्रिकोणनिलया नित्या परमामृतरञ्जिता।
महाविद्येश्वरी श्वेता भेरुण्डा कुलसुन्दरी।।१०३।।
त्वरिता भक्तिसंसक्ता भक्तवश्या सनातनी।
भक्तानन्दमयी भक्तभाविका भक्तशङ्करी।।१०४।।
सर्वसौन्दर्यनिलया सर्वसौभाग्यशालिनी।
सर्वसम्भोगभवना सर्वसौख्यनिरूपिणी।।१०५।।
कुमारीपूजनरता कुमारीव्रतचारिणी।
कुमारीभक्तिसुखिनी कुमारीरूपधारिणी।।१०६।।
कुमारीपूजकप्रीता कुमारीप्रीतिदा प्रिया।
कुमारीसेवकासङ्गा कुमारीसेवकालया।।१०७।।
आनन्दभैरवी बालाभैरवी बटुकभैरवी।
श्मशानभैरवी कालभैरवी पुरभैरवी।।१०८।।
महाभैरवपत्नी च परमानन्दभैरवी।
सुधानन्दाभैरवी च उन्मादानन्दभैरवी।।१०९।।
मुक्तानन्दाभैरवी च तथा तरुणभैरवी।
ज्ञाननन्दाभैरवी च अमृतानन्दभैरवी।।११०।।
महाभयङ्करी तीव्रा तीव्रवेगा तपस्विनी।
त्रिपुरा परमेशानी सुन्दरी पुरसुन्दरी।।१११।।
त्रिपुरेशी पञ्चदशी पञ्चमी पुरवासिनी।
महासप्तदशी चैव षोडशी त्रिपुरेश्वरी।।११२।।
महाङ्कुशस्वरूपा च महाचक्रेश्वरी तथा।
नवचक्रेश्वरी चक्रेश्वरी त्रिपुरमालिनी।।११३।।
राजराजेश्वरी धीरा महात्रिपुरसुन्दरी।
सिन्दूरपूररुचिरा श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी।।११४।।

सर्वाङ्गसुन्दरी रक्ता रक्तवस्त्रोत्तरीयका।
जावायावकसिन्दूररक्तचन्दनधारिणी ॥११५॥
जावायावकसिन्दूररक्तचन्दनरूपधृक् ।
चामरी बाला कुटिला निर्मला श्यामकेशिनी॥११६॥
वज्रमौक्तिकरत्नाढ्यकिरीटमुकुटोज्ज्वला ।
रत्नकुण्डलसंसक्तस्फुरद्गण्डमनोरमा ॥११७॥
कुञ्जरेश्वरकुम्भोत्थमुक्तारञ्जितनासिका ।
मुक्ताविद्रुममाणिक्यहाराढ्यस्तनमण्डला ॥११८॥
सूर्यकान्तेन्दुकान्ताढ्या स्पर्शाश्मकण्ठभूषणा।
बीजपूरस्फुरद्बीजदन्तपंक्तिरनुत्तमा ॥११९॥
कामकोदण्डकाभुग्नभ्रूकटाक्षप्रवर्षिणी ।
मातङ्गकुम्भवक्षोजा लसत्कोकनदेक्षणा॥१२०॥
मनोज्ञा शष्कुलीकर्णा हंसीगतिविडम्बिनी।
पद्मरागाङ्गदज्योतिर्दोश्चतुष्कप्रकाशिनी ॥१२१॥
नानामाणपरिस्फूर्जच्छुद्धकाञ्चन-कङ्कना ।
नागेन्द्रदन्तनिर्माणवलयाङ्कितपाणिनी ॥१२२॥
अङ्गुरीयकचित्राङ्गी विचित्रक्षुद्रघण्टिका।
पट्टाम्बरपरीधाना कलमञ्जीरशिञ्जिनी॥१२३॥
कर्पूरागरुकस्तूरीकुङ्कुमद्रवलेपिता ।
विचित्ररत्ना पृथिवी कल्पशाखितलस्थिता॥१२४॥
रत्नद्वीपस्फुरद्रत्न सिंहासनविलासिनी।
षट्चक्रभेदनकरी परमानन्दरूपिणी॥१२५॥
सहस्रदलपद्मान्ताचन्द्रमण्डलवर्तिनी ।
ब्रह्मरूपशिवक्रोडनानासुखविलासिनी ॥१२६॥
हरविष्णुविरिंचीन्द्रग्रहनायकसेविता ।
शिवा शैवा च रुद्राणी तथैव शिववादिनी॥१२७॥
मातङ्गिनी श्रीमती च तथैवानन्दमेखला।
डाकिनी योगिनी चैव तथोपयोगिनी मता॥१२८॥
माहेश्वरी वैष्णवी च भ्रामरी शिवरूपिणी।
अलम्बुषा वेगवती क्रोधरूपा सुमेखला॥१२९॥

गान्धारी हस्तजिह्वा च इडा चैव शुभङ्करी।
पिङ्गला ब्रह्मदूती च सुषुम्ना चैव गन्धिनी।।१३०।।
आत्मयोनिर्ब्रह्मयोनिर्जगद्योनिरयोनिजा ।
भगरूपा भगस्थात्री भगिनी भगरूपिणी।।१३१।।
भगात्मिका भगाधाररूपिणी भगमालिनी।
लिङ्गाख्या चैव लिङ्गेशी त्रिपुराभैरवी तथा।।१३२।।
लिङ्गगीतिः सुगीतिश्च लिङ्गस्था लिङ्गरूपधृक्।
लिङ्गमाना लिङ्गभवा लिङ्गलिङ्गा च पार्वती।।१३३।।
भगवती कौशिकी च प्रेमा चैव प्रियंवदा।
गृध्ररूपा शिवारूपा चक्रिणी चक्ररूपधृक्।।
लिङ्गाभिधायिनी लिङ्गप्रिया लिङ्गनिवासिनी।।१३४।।
लिङ्गस्था लिङ्गिनी लिङ्गरूपिणी लिङ्गसुन्दरी।
लिङ्गगीतिर्महाप्रीता भगगीतिर्महासुखा।।१३५।।
लिङ्गनामसदानन्दा भगनामसदागतिः।
लिङ्गमालाकण्ठभूषा भगमालाविभूषणा।।१३६।।
भगलिङ्गस्वरूपा च भगलिङ्गस्वरूपिणी।
भगलिङ्गामृतप्रीता भगलिङ्गसुखावहा।।१३७।।
स्वयम्भूकुसुमप्रीता स्वयम्भूकुमार्चिता।
स्वयम्भूकुसुमप्राणा स्वयम्भूपुष्पतर्पिता।।१३८।।
स्वयम्भूपुष्पघटिता स्वयम्भूपुष्पधारिणी।
स्वयम्भूपुष्पतिलका स्वयम्भूपुष्पचर्चिता।।१३९।।
स्वयम्भूपुष्पनिरता स्वयम्भूकुसुमग्रहा।
स्वयम्भूपुष्पयज्ञांशा स्वयम्भूकुसुमात्मिका।।१४०।।
स्वयम्भूपुष्पनिचिता स्वयम्भूकुसुमप्रिया।
स्वयम्भूकुसुमादानलालसोन्मत्तमानसा ।।१४१।।
स्वयम्भूकुसुमानन्दलहरी स्निग्धदेहिनी।।१४२।।
स्वयम्भूकुसुमाधारा स्वयम्भूकुसुमाकुला।
स्वयम्भूपुष्पनिलया स्वयम्भूपुष्पवासिनी।।१४३।।
स्वयम्भूकुसुमस्निग्धा स्वयमूकुसुमात्मिका।
स्वयम्भूपुष्पकरिणी स्वयम्भूपुष्पमालिका।।१४४।।

स्वयम्भूकुसुमध्याना स्वयम्भूकुसुमप्रभा।
स्वयम्भूकुसुमज्ञाना स्वयम्भूपुष्पभागिनी।।१४५।।
स्वयम्भूकुसुमोल्लासा स्वयम्भूपुष्पवर्षिणी।
स्वयम्भूकुसुमोत्साहा स्वयम्भूपुष्परूपिणी।।१४६।।
स्वयम्भूकुसुमोन्मादा स्वयम्भूपुष्पसुन्दरी।
स्वयम्भूकुसुमाराध्या स्वयम्भूकुसुमोद्भवा।।१४७।।
स्वयम्भूकुसुमव्याग्रा स्वयम्भूपुष्पपूर्णिता।
स्वयम्भूपूजकप्रज्ञा स्वयम्भूहोतृमातृका।।१४८।।
स्वयम्भूदातृरक्षित्री स्वयम्भूरक्ततारिका।
स्वयम्भूपूजकग्रस्ता स्वयम्भूपूजकप्रिया।।१४९।।
स्वयम्भूवन्दकाधारा स्वयम्भूनिन्दकान्तिका।
स्वयम्भूप्रदसर्वस्वा स्वयम्भूप्रदपुत्रिणी।।१५०।।
स्वयम्भूप्रदसस्मेरा स्वयम्भू च शरीरिणी।।१५१।।
सर्वकालोद्भवप्रीता सर्वकालोद्भवात्मिका।
सर्वकालोद्भवोद्भावा सर्वकालोद्भवोद्भवा।।१५२।।
कुण्डपुष्पसदाप्रीतिः गोलपुष्पसदारतिः।
कुण्डगोलोद्भवप्राणा कुण्डगोलोद्भवात्मिका।।१५३।।
स्वयम्भुवा शिवा धात्री पावनी लोकपावनी।
कीर्तिर्यशस्विनी मेधा विमेधा शुक्रसुन्दरी।।१५४।।
अश्विनी कृत्तिका पुष्या तेजस्का चन्दमण्डला।
सूक्ष्मासूक्ष्मा वलाका च वरदा भयनाशिनी।।१५५।।
वरदाभयदा चैव मुक्तिबन्धविनाशिनी।
कामुका कामदा कान्ता कामाख्या कुलसुन्दरी।।१५६।।
दुःखदा सुखदा मोक्षा मोक्षदार्थप्रकाशिनी।
दुष्टादुष्टमतिश्चैव सर्वकार्यविनाशिनी।।१५७।।
शुक्राधारा शुक्ररूपा शुक्रसिन्धुनिवासिनी।
शुक्रालया शुक्रभोगा शुक्रपूजा सदारतिः।।१५८।।
शुक्रपूज्या शुक्रहोमा सन्तुष्टा शुक्रवत्सला।
शुक्रमूर्त्तिः शुक्रदेहा शुक्रपूजकपुत्रिणी।।१५९।।

शुक्रस्था शुक्रिणी शुक्रसंस्पृहा शुक्रसुन्दरी।
शुक्रस्नाता शुक्रकरी शुक्रसेव्यातिशुक्रिणी।।१६०।।
महाशुक्रा शुक्रभवा शुक्रवृष्टिविधायिनी।
शुक्राभिधेया शुक्रार्हा शुक्रवन्दकवन्दिता।।१६१।।
शुक्रानन्दकरी शुक्रसदानन्दाभिधायिका।
शुक्रोत्सवा सदाशुक्रपूर्णा शुक्रमनोरमा।।१६२।।
शुक्रपूजकसर्वस्वा शुक्रनिन्दकनाशिनी।
शुक्रात्मिका शुक्रसम्वत् शुक्राकर्षणकारिणी।।१६३।।
शारदा साधकप्राणा साधकासक्तामानसा।
साधकोत्तमसर्वस्वा साधकाऽभक्तरक्तापा।।१६४।।
साधकानन्दसन्तोषा साधकानन्दकारिणी।
आत्मविद्या ब्रह्मविद्या परब्रह्मस्वरूपिणी।।१६५।।
त्रिकूटस्था पञ्चकूटा सर्वकूटशरीरिणी।
सर्ववर्णमयी वर्णजपमालाविधायिनी।।१६६।।

फलश्रुति

इति श्रीकालिकानामसहस्त्रं शिवभाषितम्।
गुह्याद्गुह्यतरं साक्षात्महापातकनाशनम्।।१६७।।
पूजाकाले निशीथे च सन्ध्ययोरुभयोरपि।
लभते गाणपत्यं स यः पठेत् साधकोत्तमः।।१६८।।
यः पठेत् पाठयेद्वापि शृणोति श्रावयेदथ।
सर्वपापविनिर्मुक्तः स याति कालिकापुरम्।।१६९।।
श्रद्धयाऽश्रद्धया वापि यः कश्चिम्मानवः स्मरेत्।
दुर्गं दुर्गशतं तीर्त्वा स याति परमां गतिम्।।१७०।।
बन्ध्या वा काबन्ध्या वा मृतवत्सा च याङ्गना।
श्रुत्या स्तोत्रमिदं पुत्रान् लभते चिरजीविनः।।१७१।।
यं यं कामयते कामं पठन् स्तोत्रमनुत्तमम्।
देवीपादप्रसादेन तत्तदाप्नोति निश्चितम्।।१७२।।

।।इति श्रीकालिकाकुलसर्वस्वे शिवपरशुरामसंवादे
दक्षिणकालिकासहस्त्रनामस्तोत्रम् समाप्तम्।।

।।श्रीदक्षिणकालिकायै नमः।।

श्रीदक्षिणकालिकासहस्त्रनामावलिः

१. ॐ श्मशानकालिकायै नमः
२. ॐ काल्यै नमः
३. ॐ भद्रकाल्यै नमः
४. ॐ कपालिन्यै नमः
५. ॐ गुह्यकाल्यै नमः
६. ॐ महाकाल्यै नमः
७. ॐ कुरुकुल्लायै नमः
८. ॐ विरोधिन्यै नमः
९. ॐ कालिकायै नमः
१०. ॐ कालरात्र्यै नमः
११. ॐ महाकालनितम्बिन्यै नमः
१२. ॐ कालभैरवभार्यायै नमः
१३. ॐ कुलवर्त्मप्रकाशिन्यै नमः
१४. ॐ कामदायै नमः
१५. ॐ कामिन्यै नमः
१६. ॐ कन्यायै नमः
१७. ॐ कमनीयस्वरूपिण्यै नमः
१८. ॐ कस्तूरीरसलिप्ताङ्ग्यै नमः
१९. ॐ कुञ्जरेश्वरगामिन्यै नमः
२०. ॐ ककारवर्णसर्वाङ्ग्यै नमः
२१. ॐ कामिन्यै नमः
२२. ॐ कामसुन्दर्यै नमः
२३. ॐ कामार्तायै नमः
२४. ॐ कामरूपायै नमः
२५. ॐ कामधेनवे नमः
२६. ॐ कलावत्यै नमः
२७. ॐ कान्तायै नमः
२८. ॐ कामस्वरूपायै नमः
२९. ॐ कामाख्यायै नमः
३०. ॐ कुलकामिन्यै नमः
३१. ॐ कुलीनायै नमः
३२. ॐ कुलवत्यम्बायै नमः
३३. ॐ दुर्गायै नमः
३४. ॐ दुर्गतिनाशिन्यै नमः
३५. ॐ कौमार्यै नमः
३६. ॐ कलजायै नमः
३७. ॐ कृष्णायै नमः
३८. ॐ कृष्णदेहायै नमः
३९. ॐ कृशोदर्यै नमः
४०. ॐ कृशाङ्ग्यै नमः
४१. ॐ कुलिशाङ्ग्यै नमः
४२. ॐ क्रीं क्रींकार्यै नमः
४३. ॐ कमलायै नमः
४४. ॐ कलायै नमः
४५. ॐ करालास्यायै नमः
४६. ॐ कराल्यै नमः
४७. ॐ कुलकान्तायै नमः
४८. ॐ अपराजितायै नमः
४९. ॐ उग्रायै नमः
५०. ॐ उग्रप्रभायै नमः
५१. ॐ दीप्तायै नमः
५२. ॐ विप्रचित्तायै नमः
५३. ॐ महाबलायै नमः
५४. ॐ नीलायै नमः

५५. ॐ घनायै नमः
५६. ॐ मेघनादायै नमः
५७. ॐ मात्रायै नमः
५८. ॐ मुद्रायै नमः
५९. ॐ मितायै नमः
६०. ॐ अमितायै नमः
६१. ॐ ब्राह्म्यै नमः
६२. ॐ नारायण्यै नमः
६३. ॐ भद्रायै नमः
६४. ॐ सुभद्रायै नमः
६५. ॐ भक्तवत्सलायै नमः
६६. ॐ माहेश्वर्यै नमः
६७. ॐ चामुण्डायै नमः
६८. ॐ वाराह्यै नमः
६९. ॐ नारसिंहकायै नमः
७०. ॐ वज्राङ्ग्यै नमः
७१. ॐ वज्रकङ्कालायै नमः
७२. ॐ नृमुण्डस्त्रग्विण्यै नमः
७३. ॐ शिवायै नमः
७४. ॐ मालिन्यै नमः
७५. ॐ नरमुण्डाल्यै नमः
७६. ॐ गलद्रक्तविभूषणायै नमः
७७. ॐ रक्तचन्दनसिक्ताङ्ग्यै नमः
७८. ॐ सिन्दूरारुणमस्तकायै नमः
७९. ॐ घोररूपायै नमः
८०. ॐ घोरदंष्ट्रायै नमः
८१. ॐ घोरायै नमः
८२. ॐ घोरतरायै नमः
८३. ॐ शुभायै नमः
८४. ॐ महादंष्ट्रायै नमः
८५. ॐ महामायायै नमः
८६. ॐ सुदन्त्यै नमः
८७. ॐ युगदन्तुरायै नमः
८८. ॐ सुलोचनायै नमः
८९. ॐ विरूपाक्ष्यै नमः
९०. ॐ विशालाक्ष्यै नमः
९१. ॐ त्रिलोचनायै नमः
९२. ॐ शारदेन्दवे नमः
९३. ॐ प्रसन्नास्यायै नमः
९४. ॐ स्फुरत् स्मिताम्बुजेक्षणायै नमः
९५. ॐ अट्टहासायै नमः
९६. ॐ प्रफुल्लास्यायै नमः
९७. ॐ स्मेरवक्त्रायै नमः
९८. ॐ सुभाषिण्यै नमः
९९. ॐ प्रफुल्लपद्मवदनायै नमः
१००. ॐ स्मितास्यायै नमः
१०१. ॐ प्रियभाषिण्यै नमः
१०२. ॐ कोटराक्ष्यै नमः
१०३. ॐ कुलश्रेष्ठायै नमः
१०४. ॐ महत्यै नमः
१०५. ॐ बहुभाषिण्यै नमः
१०६. ॐ सुमत्यै नमः
१०७. ॐ कुमत्यै नमः
१०८. ॐ चण्डायै नमः
१०९. ॐ चण्डमुण्डातिवेगिन्यै नमः
११०. ॐ सुकेश्यै नमः
१११. ॐ मुक्तकेश्यै नमः
११२. ॐ दीर्घकेश्यै नमः

११३. ॐ महाकचायै नमः
११४. ॐ प्रेतदेहायै नमः
११५. ॐ आकर्णपूरायै नमः
११६. ॐ प्रेतपाण्यै नमः
११७. ॐ सुमेखलायै
११८. ॐ प्रेतासनायै नमः
११९. ॐ प्रियप्रेतायै नमः
१२०. ॐ पुण्यदायै नमः
१२१. ॐ कुलपण्डितायै नमः
१२२. ॐ पुण्यालयायै नमः
१२३. ॐ पुण्यदेहायै नमः
१२४. ॐ पुण्यश्लोकायै नमः
१२५. ॐ पावन्यै नमः
१२६. ॐ पूतायै नमः
१२७. ॐ पवित्रायै नमः
१२८. ॐ परमायै नमः
१२९. ॐ परायै नमः
१३०. ॐ पुण्यविभूषणायै नमः
१३१. ॐ पुण्यनाम्न्यै नमः
१३२. ॐ भीतिहरायै नमः
१३३. ॐ वरदायै नमः
१३४. ॐ खड्गपाशिन्यै नमः
१३५. ॐ नृमुण्डहस्तायै नमः
१३६. ॐ शान्तायै नमः
१३७. ॐ छिन्नमस्तायै नमः
१३८. ॐ सुनासिकायै नमः
१३९. ॐ दक्षिणायै नमः
१४०. ॐ श्यामलायै नमः
१४१. ॐ श्यामायै नमः
१४२. ॐ शान्तायै नमः
१४३. ॐ पीनोन्नतस्तन्यै नमः
१४४. ॐ दिगम्बर्यै नमः
१४५. ॐ महारावायै नमः
१४६. ॐ सृक्कान्तरक्तवाहिन्यै नमः
१४७. ॐ घोररावायै नमः
१४८. ॐ शिवायै नमः
१४९. ॐ असङ्गायै नमः
१५०. ॐ निःसङ्गायै नमः
१५१. ॐ मदनातुरायै नमः
१५२. ॐ मत्तायै नमः
१५३. ॐ प्रमत्तायै नमः
१५४. ॐ मदनायै नमः
१५५. ॐ सुधासिन्धुनिवासिन्यै नमः
१५६. ॐ अभिमत्तायै नमः
१५७. ॐ महामत्तायै नमः
१५८. ॐ सर्वाकर्षणकारिण्यै नमः
१५९. ॐ गीतप्रियायै नमः
१६०. ॐ वाद्यरतायै नमः
१६१. ॐ प्रेतनृत्यपरायणायै नमः
१६२. ॐ चतुर्भुजायै नमः
१६३. ॐ दशभुजायै नमः
१६४. ॐ अष्टादशभुजायै नमः
१६५. ॐ कात्यायन्यै नमः
१६६. ॐ जगन्मात्रे नमः
१६७. ॐ जगत्यै नमः
१६८. ॐ परमेश्वर्यै नमः
१६९. ॐ जगद्बन्धवे नमः
१७०. ॐ जगद्धात्र्यै नमः

१७१. ॐ जगदानन्दकारिण्यै नमः
१७२. ॐ जगज्जीववत्यै नमः
१७३. ॐ हैमवत्यै नमः
१७४. ॐ मायायै नमः
१७५. ॐ महालयायै नमः
१७६. ॐ नागयज्ञोपवीताङ्ग्यै नमः
१७७. ॐ नागिन्यै नमः
१७८. ॐ नागशायिन्यै नमः
१७९. ॐ नागकन्यायै नमः
१८०. ॐ देवकन्यायै नमः
१८१. ॐ गान्धार्यै नमः
१८२. ॐ किन्नर्यै नमः
१८३. ॐ सुर्यै नमः
१८४. ॐ मोहरात्र्यै नमः
१८५. ॐ महारात्र्यै नमः
१८६. ॐ दारुणायै नमः
१८७. ॐ आभायै नमः
१८८. ॐ सुरायै नमः
१८९. ॐ आसुर्यै नमः
१९०. ॐ विद्याधर्यै नमः
१९१. ॐ वसुमत्यै नमः
१९२. ॐ यक्षिण्यै नमः
१९३. ॐ योगिन्यै नमः
१९४. ॐ जरायै नमः
१९५. ॐ राक्षस्यै नमः
१९६. ॐ डाकिन्यै नमः
१९७. ॐ वेदमय्यै नमः
१९८. ॐ वेदविभूषणायै नमः
१९९. ॐ श्रुत्यै नमः
२००. ॐ स्मृत्यै नमः
२०१. ॐ महाविद्यायै नमः
२०२. ॐ गुह्यविद्यायै नमः
२०३. ॐ पुरातन्यै नमः
२०४. ॐ चिन्तायै नमः
२०५. ॐ अचिन्तायै नमः
२०६. ॐ स्वधायै नमः
२०७. ॐ स्वाहायै नमः
२०८. ॐ निद्रायै नमः
२०९. ॐ तन्द्रायै नमः
२१०. ॐ पार्वत्यै नमः
२११. ॐ अपर्णायै नमः
२१२. ॐ निश्चलायै नमः
२१३. ॐ लोलायै नमः
२१४. ॐ सर्वविद्यायै नमः
२१५. ॐ तपस्विन्यै नमः
२१६. ॐ गङ्गायै नमः
२१७. ॐ काश्यै नमः
२१८. ॐ शच्यै नमः
२१९. ॐ सीतायै नमः
२२०. ॐ सत्यै नमः
२२१. ॐ सत्यपरायणायै नमः
२२२. ॐ नीत्यै नमः
२२३. ॐ सुनीत्यै नमः
२२४. ॐ सुरुच्यै नमः
२२५. ॐ तुष्ट्यै नमः
२२६. ॐ पुष्ट्यै नमः
२२७. ॐ धृत्यै नमः
२२८. ॐ क्षमायै नमः

२२९. ॐ वाण्यै नमः
२३०. ॐ बुद्ध्यै नमः
२३१. ॐ महालक्ष्म्यै नमः
२३२. ॐ लक्ष्म्यै नमः
२३३. ॐ नीलसरस्वत्यै नमः
२३४. ॐ स्रोतस्वत्यै नमः
२३५. ॐ स्रोतवत्यै नमः
२३६. ॐ मातङ्ग्यै नमः
२३७. ॐ विजयायै नमः
२३८. ॐ जयायै नमः
२३९. ॐ नद्ये नमः
२४०. ॐ सिन्धवे नमः
२४१. ॐ सर्वमय्यै नमः
२४२. ॐ तारायै नमः
२४३. ॐ शून्यनिवासिन्यै नमः
२४४. ॐ शुद्धायै नमः
२४५. ॐ तरङ्गिण्यै नमः
२४६. ॐ मेधायै नमः
२४७. ॐ लाकिन्यै नमः
२४८. ॐ बहुरूपिण्यै नमः
२४९. ॐ सदानन्दमय्यै नमः
२५०. ॐ सत्यायै नमः
२५१. ॐ सर्वानन्दस्वरूपिण्यै नमः
२५२. ॐ सुनन्दायै नमः
२५३. ॐ नन्दिन्यै नमः
२५४. ॐ स्तुत्यायै नमः
२५५. ॐ स्तवनीयायै नमः
२५६. ॐ स्वभाविन्यै नमः
२५७. ॐ रङ्किण्यै नमः
२५८. ॐ टङ्किण्यै नमः
२५९. ॐ चित्रायै नमः
२६०. ॐ विचित्रायै नमः
२६१. ॐ चित्ररूपिण्यै नमः
२६२. ॐ पद्मायै नमः
२६३. ॐ पद्मालयायै नमः
२६४. ॐ पद्ममुख्यै नमः
२६५. ॐ पद्मविभूषणायै नमः
२६६. ॐ शाकिन्यै नमः
२६७. ॐ हाकिन्यै नमः
२६८. ॐ क्षान्तायै नमः
२६९. ॐ राकिण्यै नमः
२७०. ॐ रुधिरप्रियायै नमः
२७१. ॐ भ्रान्त्यै नमः
२७२. ॐ भवान्यै नमः
२७३. ॐ रुद्राण्यै नमः
२७४. ॐ मृडान्यै नमः
२७५. ॐ शत्रुमर्दिन्यै नमः
२७६. ॐ उपेन्द्राण्यै नमः
२७७. ॐ महेशान्यै नमः
२७८. ॐ ज्योत्स्नायै नमः
२७९. ॐ चन्द्रस्वरूपिण्यै नमः
२८०. ॐ सूर्यात्मिकायै नमः
२८१. ॐ रुद्रपत्न्यै नमः
२८२. ॐ रौद्रायै नमः
२८३. ॐ स्त्र्यै नमः
२८४. ॐ प्रकृत्यै नमः
२८५. ॐ पुंसे नमः
२८६. ॐ शक्त्यै नमः

२८७. ॐ सूक्त्यै नमः
२८८. ॐ मतिमत्यै नमः
२८९. ॐ भुक्त्यै नमः
२९०. ॐ मुक्त्यै नमः
२९१. ॐ पतिव्रतायै नमः
२९२. ॐ सर्वेश्वर्यै नमः
२९३. ॐ सर्वमतायै नमः
२९४. ॐ सर्वाण्यै नमः
२९५. ॐ हरवल्लभायै नमः
२९६. ॐ सर्वज्ञायै नमः
२९७. ॐ सिद्धिदायै नमः
२९८. ॐ सिद्धायै नमः
२९९. ॐ भाव्यायै नमः
३००. ॐ भव्यायै नमः
३०१. ॐ भयापहायै नमः
३०२. ॐ कर्त्र्यै नमः
३०३. ॐ हर्त्र्यै नमः
३०४. ॐ पालयित्र्यै नमः
३०५. ॐ शर्वर्यै नमः
३०६. ॐ तामस्यै नमः
३०७. ॐ दयायै नमः
३०८. ॐ तमिस्रायै नमः
३०९. ॐ यामिनीस्थायै नमः
३१०. ॐ स्थिरायै नमः
३११. ॐ धीरायै नमः
३१२. ॐ तपस्विन्यै नमः
३१३. ॐ चार्वङ्ग्यै नमः
३१४. ॐ चञ्चलायै नमः
३१५. ॐ लोलजिह्वायै नमः
३१६. ॐ चारुचरित्रिण्यै नमः
३१७. ॐ त्रपायै नमः
३१८. ॐ त्रपावत्यै नमः
३१९. ॐ लज्जायै नमः
३२०. ॐ निर्लज्जायै नमः
३२१. ॐ ह्रीं रजोवत्यै नमः
३२२. ॐ सत्त्ववत्यै नमः
३२३. ॐ धर्मनिष्ठायै नमः
३२४. ॐ श्रेष्ठायै नमः
३२५. ॐ निष्ठुरवादिन्यै नमः
३२६. ॐ गरिष्ठायै नमः
३२७. ॐ दुष्टसंहर्त्र्यै नमः
३२८. ॐ विशिष्टायै नमः
३२९. ॐ श्रेयसीघृणायै नमः
३३०. ॐ भीमायै नमः
३३१. ॐ भयानकायै नमः
३३२. ॐ भीमनादिन्यै नमः
३३३. ॐ भियै नमः
३३४. ॐ प्रभावत्यै नमः
३३५. ॐ वागीश्वर्यै नमः
३३६. ॐ श्रियै नमः
३३७. ॐ यमुनायै नमः
३३८. ॐ यज्ञकर्त्र्यै नमः
३३९. ॐ यजुःप्रियायै नमः
३४०. ॐ ऋक्सामाथर्वनिलयायै नमः
३४१. ॐ रागिण्यै नमः
३४२. ॐ शोभनस्वरायै नमः
३४३. ॐ कलकण्ठ्यै नमः
३४४. ॐ कम्बुकण्ठ्यै नमः

३४५. ॐ वेणुवीणापरायणायै नमः
३४६. ॐ वंशिन्यै नमः
३४७. ॐ वैष्णव्यै नमः
३४८. ॐ स्वच्छायै नमः
३४९. ॐ धात्र्यै नमः
३५०. ॐ त्रिजगदीश्वर्यै नमः
३५१. ॐ मधुमत्यै नमः
३५२. ॐ कुण्डलिन्यै नमः
३५३. ॐ ऋद्ध्यै नमः
३५४. ॐ सिद्ध्यै नमः
३५५. ॐ शुचिस्मितायै नमः
३५६. ॐ अम्भोर्वश्यै नमः
३५७. ॐ रत्यै नमः
३५८. ॐ रामायै नमः
३५९. ॐ रोहिण्यै नमः
३६०. ॐ रेवत्यै नमः
३६१. ॐ रमायै नमः
३६२. ॐ शङ्खिन्यै नमः
३६३. ॐ चक्रिण्यै नमः
३६४. ॐ कृष्णायै नमः
३६५. ॐ गदिन्यै नमः
३६६. ॐ पद्मिन्यै नमः
३६७. ॐ शूलिन्यै नमः
३६८. ॐ परिघायै नमः
३६९. ॐ अस्त्रायै नमः
३७०. ॐ पाशिन्यै नमः
३७१. ॐ शार्ङ्गपाणिन्यै नमः
३७२. ॐ पिनाकधारिण्यै नमः
३७३. ॐ धूम्रायै नमः
३७४. ॐ शरभायै नमः
३७५. ॐ वनमालिन्यै नमः
३७६. ॐ वज्रिण्यै नमः
३७७. ॐ समरप्रीतायै नमः
३७८. ॐ वेगिन्यै नमः
३७९. ॐ रणपण्डितायै नमः
३८०. ॐ जटिन्यै नमः
३८१. ॐ बिम्बिन्यै नमः
३८२. ॐ नीलायै नमः
३८३. ॐ लावण्याम्बुधिचन्द्रिकायै नमः
३८४. ॐ बलिप्रियायै नमः
३८५. ॐ सदा पूज्यायै नमः
३८६. ॐ पूर्णायै नमः
३८७. ॐ दैत्येन्द्रमाथिन्यै नमः
३८८. ॐ महिषासुरसंहन्त्र्यै नमः
३८९. ॐ वासिन्यै नमः
३९०. ॐ रक्तदन्तिकायै नमः
३९१. ॐ रक्तपायै नमः
३९२. ॐ रुधिराक्ताङ्ग्यै नमः
३९३. ॐ रक्तखर्परहस्तिन्यै नमः
३९४. ॐ रक्तप्रियायै नमः
३९५. ॐ मांसरुचिरायै नमः
३९६. ॐ सवासरक्तमानसायै नमः
३९७. ॐ गलच्छोणितमुण्डालि-
कण्ठमालाविभूषणायै नमः
३९८. ॐ शवासनायै नमः
३९९. ॐ चितान्तस्थायै नमः
४००. ॐ माहेश्यै नमः
४०१. ॐ वृषवाहिन्यै नमः

४०२. ॐ व्याघ्रत्वगम्बरायै नमः
४०३. ॐ चीनचेलिन्यै नमः
४०४. ॐ सिंहवाहिन्यै नमः
४०५. ॐ वामदेव्यै नमः
४०६. ॐ महादेव्यै नमः
४०७. ॐ गौर्यै नमः
४०८. ॐ सर्वज्ञभाविन्यै नमः
४०९. ॐ बालिकायै नमः
४१०. ॐ तरुण्यै नमः
४११. ॐ वृद्धायै नमः
४१२. ॐ वृद्धमात्रे नमः
४१३. ॐ जरायै नमः
४१४. ॐ आतुरायै नमः
४१५. ॐ सुभ्रुवे नमः
४१६. ॐ विलासिन्यै नमः
४१७. ॐ ब्रह्मवादिन्यै नमः
४१८. ॐ ब्राह्मण्यै नमः
४१९. ॐ मह्यै नमः
४२०. ॐ स्वप्नावत्यै नमः
४२१. ॐ चित्रलेखायै नमः
४२२. ॐ लोपामुद्रायै नमः
४२३. ॐ सुरेश्वर्यै नमः
४२४. ॐ अमोघायै नमः
४२५. ॐ अरुन्धत्यै नमः
४२६. ॐ तीक्ष्णायै नमः
४२७. ॐ भोगवश्यै नमः
४२८. ॐ अनुवादिन्यै नमः
४२९. ॐ मन्दाकिन्यै नमः
४३०. ॐ मन्दहास्यै नमः

४३१. ॐ ज्वालामुख्यायै नमः
४३२. ॐ सुरान्तकायै नमः
४३३. ॐ मानदायै नमः
४३४. ॐ मानिन्यै नमः
४३५. ॐ मान्यायै नमः
४३६. ॐ माननीयायै नमः
४३७. ॐ मदोद्धतायै नमः
४३८. ॐ मदिरायै नमः
४३९. ॐ मदिरोन्मादायै नमः
४४०. ॐ मेध्यायै नमः
४४१. ॐ नव्यायै नमः
४४२. ॐ प्रसादिन्यै नमः
४४३. ॐ सुमध्यायै नमः
४४४. ॐ अनन्तगुणिन्यै नमः
४४५. ॐ सर्वलोकोत्तमोत्तमायै नमः
४४६. ॐ जयदायै नमः
४४७. ॐ जित्वरायै नमः
४४८. ॐ जेत्र्यै नमः
४४९. ॐ जयश्रियै नमः
४५०. ॐ जयशालिन्यै नमः
४५१. ॐ सुखदायै नमः
४५२. ॐ शुभदायै नमः
४५३. ॐ सत्यायै नमः
४५४. ॐ सभासंक्षोभकारिण्यै नमः
४५५. ॐ शिवदूत्यै नमः
४५६. ॐ भूतिमत्यै नमः
४५७. ॐ विभूतयै नमः
४५८. ॐ भीषणाननायै नमः
४५९. ॐ कौमार्यै नमः

४६०. ॐ कुलजायै नमः
४६१. ॐ कुन्त्यै नमः
४६२. ॐ कुलस्त्र्यै नमः
४६३. ॐ कुलपालिकायै नमः
४६४. ॐ कीर्तये नमः
४६५. ॐ यशस्विन्ये नमः
४६६. ॐ भूषायै नमः
४६७. ॐ भूष्यायै नमः
४६८. ॐ भूतपतिप्रियायै नमः
४६९. ॐ सगुणायै नमः
४७०. ॐ निर्गुणायै नमः
४७१. ॐ धृष्टायै नमः
४७२. ॐ निष्ठायै नमः
४७३. ॐ काष्ठायै नमः
४७४. ॐ प्रतिष्ठितायै नमः
४७५. ॐ धनिष्ठायै नमः
४७६. ॐ धनदायै नमः
४७७. ॐ धन्यायै नमः
४७८. ॐ वसुधायै नमः
४७९. ॐ स्वप्रकाशिन्यै नमः
४८०. ॐ उर्व्यै नमः
४८१. ॐ गुर्व्यै नमः
४८२. ॐ गुरुश्रेष्ठायै नमः
४८३. ॐ सगुणायै नमः
४८४. ॐ त्रिगुणात्मिकायै नमः
४८५. ॐ महाकुलीनायै नमः
४८६. ॐ निष्कामायै नमः
४८७. ॐ सकामायै नमः
४८८. ॐ कामजीवनायै नमः
४८९. ॐ कामदेवकलायै नमः
४९०. ॐ रामायै नमः
४९१. ॐ अभिरामायै नमः
४९२. ॐ शिवनर्तक्यै नमः
४९३. ॐ चिन्तामणये नमः
४९४. ॐ कल्पलतायै नमः
४९५. ॐ जाग्रत्यै नमः
४९६. ॐ दीनवत्सलायै नमः
४९७. ॐ कार्तिक्यै नमः
४९८. ॐ कीर्तिकायै नमः
४९९. ॐ कृत्यायै नमः
५००. ॐ अयोध्यायै नमः
५०१. ॐ विषमायै नमः
५०२. ॐ समायै नमः
५०३. ॐ सुमन्त्रायै नमः
५०४. ॐ मन्त्रिण्यै नमः
५०५. ॐ घूर्णायै नमः
५०६. ॐ ह्लादिन्यै नमः
५०७. ॐ क्लेशनाशिन्यै नमः
५०८. ॐ त्रैलोक्यजनन्यैं नमः
५०९. ॐ हृष्टायै नमः
५१०. ॐ मनोज्ञायै नमः
५११. ॐ मधुरूपिण्यै नमः
५१२. ॐ तडागनिम्नजठरायै नमः
५१३. ॐ शुष्कमांसास्थिमालिन्यै नमः
५१४. ॐ आवन्त्यै नमः
५१५. ॐ मथुरायै नमः
५१६. ॐ मायायै नमः
५१७. ॐ त्रैलोक्यपावन्यै नमः

५१८. ॐ ईश्वर्यै नमः
५१९. ॐ व्यक्तायै नमः
५२०. ॐ अव्यक्तायै नमः
५२१. ॐ अनेकमूतर्ये नमः
५२२. ॐ शर्वर्यै नमः
५२३. ॐ भीमनादिन्यै नमः
५२४. ॐ क्षेमङ्कर्यै नमः
५२५. ॐ शङ्कर्यै नमः
५२६. ॐ सर्वसम्मोहकारिण्यै नमः
५२७. ॐ श्रर्द्धतेजस्विन्यै नमः
५२८. ॐ क्लिन्नायै नमः
५२९. ॐ महातेजस्विन्यै नमः
५३०. ॐ अद्वैतायै नमः
५३१. ॐ भोगिन्यै नमः
५३२. ॐ पूज्यायै नमः
५३३. ॐ युवत्यै नमः
५३४. ॐ सर्वमङ्गलायै नमः
५३५. ॐ सर्वप्रियंकर्यै नमः
५३६. ॐ भोग्यायै नमः
५३७. ॐ धरण्यै नमः
५३८. ॐ पिशिताशनायै नमः
५३९. ॐ भयङ्कर्यै नमः
५४०. ॐ पापहरायै नमः
५४१. ॐ निष्कलङ्कायै नमः
५४२. ॐ वशङ्कर्यै नमः
५४३. ॐ आशायै नमः
५४४. ॐ तृष्णायै नमः
५४५. ॐ चन्द्रकलायै नमः
५४६. ॐ निद्रायै नमः
५४७. ॐ अन्यायै नमः
५४८. ॐ वायुवेगिन्यै नमः
५४९. ॐ सहस्रसूर्यसकाशायै नमः
५५०. ॐ चन्द्रकोटिसमप्रभायै नमः
५५१. ॐ वह्निमण्डलसंस्थायै नमः
५५२. ॐ सर्वतत्त्वप्रतिष्ठितायै नमः
५५३. ॐ सर्वाचारवत्यै नमः
५५४. ॐ सर्वदेवकन्याधिदेवतायै नमः
५५५. ॐ दक्षकन्यायै नमः
५५६. ॐ दक्षयज्ञनाशिन्यै नमः
५५७. ॐ दुर्गतारिकायै नमः
५५८. ॐ ईज्यायै नमः
५५९. ॐ पूज्यायै नमः
५६०. ॐ विभायै नमः
५६१. ॐ भूत्यै नमः
५६२. ॐ सत्कीर्तये नमः
५६३. ॐ ब्रह्मरूपिण्यै नमः
५६४. ॐ रम्भोरवे नमः
५६५. ॐ चतुरायै नमः
५६६. ॐ राकायै नमः
५६७. ॐ जयन्त्यै नमः
५६८. ॐ करुणायै नमः
५६९. ॐ कुहवे नमः
५७०. ॐ मनस्विन्ये नमः
५७१. ॐ देवमात्रे नमः
५७२. ॐ यशस्यायै नमः
५७३. ॐ ब्रह्मचारिण्यै नमः
५७४. ॐ ऋद्धिदायै नमः
५७५. ॐ वृद्धिदायै नमः

५७६. ॐ वृद्ध्यै नमः
५७७. ॐ सर्वस्यै नमः
५७८. ॐ आद्यायै नमः
५७९. ॐ सर्वदायिन्यै नमः
५८०. ॐ आधाररूपिण्यै नमः
५८१. ॐ ध्येयायै नमः
५८२. ॐ मूलाधारनिवासिन्यै नमः
५८३. ॐ अज्ञायै नमः
५८४. ॐ प्रज्ञायै नमः
५८५. ॐ पूर्णमनायै नमः
५८६. ॐ चन्द्रमुख्यै नमः
५८७. ॐ अनुकूलिन्यै नमः
५८८. ॐ वावदूकायै नमः
५८९. ॐ निम्ननाभ्यै नमः
५९०. ॐ सत्यायै नमः
५९१. ॐ सन्ध्यायै नमः
५९२. ॐ दृढव्रतायै नमः
५९३. ॐ आन्वीक्षिक्यै नमः
५९४. ॐ दण्डनीत्यै नमः
५९५. ॐ त्रय्यै नमः
५९६. ॐ त्रिदिवसुन्दर्यै नमः
५९७. ॐ ज्वलिन्यै नमः
५९८. ॐ ज्वालिन्यै नमः
५९९. ॐ शैलतनयायै नमः
६००. ॐ विन्ध्यवासिन्यै नमः
६०१. ॐ अमेयायै नमः
६०२. ॐ खेचर्यै नमः
६०३. ॐ धैर्यायै नमः
६०४. ॐ तुरीयायै नमः
६०५. ॐ विमलायै नमः
६०६. ॐ आतुरायै नमः
६०७. ॐ प्रगल्भायै नमः
६०८. ॐ वारुण्यै नमः
६०९. ॐ छायायै नमः
६१०. ॐ शशिन्यै नमः
६११. ॐ विस्फुलिङ्गिन्यै नमः
६१२. ॐ भुक्तये नमः
६१३. ॐ सिद्धये नमः
६१४. ॐ सदा प्राप्तये नमः
६१५. ॐ प्राकाम्यायै नमः
६१६. ॐ महिमायै नमः
६१७. ॐ अणिमायै नमः
६१८. ॐ इच्छायै नमः
६१९. ॐ सिद्ध्यै नमः
६२०. ॐ विसिद्धायै नमः
६२१. ॐ वशित्वायै नमः
६२२. ॐ ऊर्ध्वनिवासिन्यै नमः
६२३. ॐ लघिमायै नमः
६२४. ॐ गायत्र्यै नमः
६२५. ॐ सावित्र्यै नमः
६२६. ॐ भुवनेश्वर्यै नमः
६२७. ॐ मनोहरायै नमः
६२८. ॐ चितायै नमः
६२९. ॐ दिव्यायै नमः
६३०. ॐ देव्युदारायै नमः
६३१. ॐ मनोरमायै नमः
६३२. ॐ पिङ्गलायै नमः
६३३. ॐ कपिलायै नमः

६३४. ॐ जिह्वारसज्ञायै नमः
६३५. ॐ रसिकायै नमः
६३६. ॐ रसायै नमः
६३७. ॐ सुषुम्नायै नमः
६३८. ॐ इडायै नमः
६३९. ॐ भोगवत्यै नमः
६४०. ॐ गान्धार्यै नमः
६४१. ॐ नरकान्तकायै नमः
६४२. ॐ पाञ्चाल्यै नमः
६४३. ॐ रुक्मिण्यै नमः
६४४. ॐ राधायै नमः
६४५. ॐ आराध्यायै नमः
६४६. ॐ भीमाधिराधिकायै नमः
६४७. ॐ अमृतायै नमः
६४८. ॐ तुलस्यै नमः
६४९. ॐ वृन्दायै नमः
६५०. ॐ कैटभ्यै नमः
६५१. ॐ कपटेश्वर्यै नमः
६५२. ॐ उग्रचण्डेश्वर्यै नमः
६५३. ॐ वीरायै नमः
६५४. ॐ जनन्यै नमः
६५५. ॐ वीरसुन्दर्यै नमः
६५६. ॐ उग्रतारायै नमः
६५७. ॐ यशोदाख्यायै नमः
६५८. ॐ देवक्यै नमः
६५९. ॐ देवमानितायै नमः
६६०. ॐ निरञ्जनायै नमः
६६१. ॐ चित्रदेव्यै नमः
६६२. ॐ क्रोधिन्यै नमः
६६३. ॐ कुलदीपिकायै नमः
६६४. ॐ कुलवागीश्वर्यै नमः
६६५. ॐ वाण्यै नमः
६६६. ॐ मातृकायै नमः
६६७. ॐ द्राविण्यै नमः
६६८. ॐ द्रवायै नमः
६६९. ॐ योगेश्वर्यै नमः
६७०. ॐ महामार्यै नमः
६७१. ॐ भ्रामर्यै नमः
६७२. ॐ बिन्दुरूपिण्यै नमः
६७३. ॐ दूत्यै नमः
६७४. ॐ प्राणेश्वर्यै नमः
६७५. ॐ गुप्तायै नमः
६७६. ॐ बहुलायै नमः
६७७. ॐ चमर्यै नमः
६७८. ॐ प्रभायै नमः
६७९. ॐ कुब्जिकायै नमः
६८०. ॐ ज्ञानिन्यै नमः
६८१. ॐ ज्येष्ठायै नमः
६८२. ॐ भुशुण्ड्यै नमः
६८३. ॐ प्रकटायै नमः
६८४. ॐ तिथये नमः
६८५. ॐ द्रविण्यै नमः
६८६. ॐ गोपन्यै नमः
६८७. ॐ मायायै नमः
६८८. ॐ कामबीजेश्वर्यै नमः
६८९. ॐ क्रियायै नमः
६९०. ॐ शाम्भव्यै नमः
६९१. ॐ केकरायै नमः

६९२. ॐ मेनायै नमः
६९३. ॐ मूषलायै नमः
६९४. ॐ अस्त्रायै नमः
६९५. ॐ तिलोत्तमायै नमः
६९६. ॐ अमेयविक्रमायै नमः
६९७. ॐ क्रूरायै नमः
६९८. ॐ सम्पत्शालायै नमः
६९९. ॐ त्रिलोचनायै नमः
७००. ॐ सुस्थ्यै नमः
७०१. ॐ हव्यवहायै नमः
७०२. ॐ प्रीतये नमः
७०३. ॐ ऊष्मायै नमः
७०४. ॐ धूम्रायै नमः
७०५. ॐ अर्चये नमः
७०६. ॐ अङ्गदायै नमः
७०७. ॐ तपिन्यै नमः
७०८. ॐ तापिन्यै नमः
७०९. ॐ विश्वस्यै नमः
७१०. ॐ भोगदायै नमः
७११. ॐ धारिण्यै नमः
७१२. ॐ धरायै नमः
७१३. ॐ त्रिखण्डायै नमः
७१४. ॐ बोधिन्यै नमः
७१५. ॐ वश्यायै नमः
७१६. ॐ सकलायै नमः
७१७. ॐ शब्दरूपिण्यै नमः
७१८. ॐ बीजरूपायै नमः
७१९. ॐ महामुद्रायै नमः
७२०. ॐ योगिन्यै नमः
७२१. ॐ योनिरूपिण्यै नमः
७२२. ॐ अनङ्गकुसुमायै नमः
७२३. ॐ अनङ्गमेखलायै नमः
७२४. ॐ अनङ्गरूपिण्यै नमः
७२५. ॐ वज्रेश्वर्यै नमः
७२६. ॐ जयिन्यै नमः
७२७. ॐ सर्वद्वन्द्वक्षयङ्कर्यै नमः
७२८. ॐ षडङ्गयुवत्यै नमः
७२९. ॐ योगयुक्तायै नमः
७३०. ॐ ज्वालायै नमः
७३१. ॐ अंशुमालिन्यै नमः
७३२. ॐ दुराशयायै नमः
७३३. ॐ दुराधारायै नमः
७३४. ॐ दुर्जयायै नमः
७३५. ॐ दुर्गरूपिण्यै नमः
७३६. ॐ दुरन्तायै नमः
७३७. ॐ दुष्कृतिहरायै नमः
७३८. ॐ दुर्ध्येयायै नमः
७३९. ॐ दुरतिक्रमायै नमः
७४०. ॐ हंसेश्वर्यै नमः
७४१. ॐ त्रिकोणस्थायै नमः
७४२. ॐ शाकम्भर्यै नमः
७४३. ॐ अनुकम्पिन्यै नमः
७४४. ॐ त्रिकोणनिलयायै नमः
७४५. ॐ नित्यायै नमः
७४६. ॐ परमायै नमः
७४७. ॐ अमृतरञ्जितायै नमः
७४८. ॐ महाविद्येश्वर्यै नमः
७४९. ॐ श्वेतायै नमः

७५०. ॐ भेरुण्डायै नमः
७५१. ॐ कुलसुन्दर्यै नमः
७५२. ॐ त्वरितायै नमः
७५३. ॐ भक्तिसंसक्तायै नमः
७५४. ॐ भक्तवश्यायै नमः
७५५. ॐ सनातन्यै नमः
७५६. ॐ भक्तानन्दमय्यै नमः
७५७. ॐ भक्तभाविकायै नमः
७५८. ॐ भक्तशङ्कर्यै नमः
७५९. ॐ सर्वसौन्दर्यनिलयायै नमः
७६०. ॐ सर्वसौभाग्यशालिन्यै नमः
७६१. ॐ सर्वसम्भोगभवनायै नमः
७६२. ॐ सर्वसौख्यनिरूपिण्यै नमः
७६३. ॐ कुमारीपूजनरतायै नमः
७६४. ॐ कुमारीव्रतचारिण्यै नमः
७६५. ॐ कुमारीभक्तिसुखिन्यै नमः
७६६. ॐ कुमारीरूपधारिण्यै नमः
७६७. ॐ कुमारीपूजकप्रीतायै नमः
७६८. ॐ कुमारीप्रीतिदायै नमः
७६९. ॐ प्रियायै नमः
७७०. ॐ कुमारीसेवकासङ्गायै नमः
७७१. ॐ कुमारीसेवकालयायै नमः
७७२. ॐ आनन्दभैरव्यै नमः
७७३. ॐ बालाभैरव्यै नमः
७७४. ॐ बटुभैरव्यै नमः
७७५. ॐ श्मशानभैरव्यै नमः
७७६. ॐ कालभैरव्यै नमः
७७७. ॐ पुरभैरव्यै नमः
७७८. ॐ महाभैरवपत्न्यै नमः
७७९. ॐ परमानन्दभैरव्यै नमः
७८०. ॐ सुधानन्दायै नमः
७८१. ॐ भैरव्यै नमः
७८२. ॐ उन्मादानन्दभैरव्यै नमः
७८३. ॐ मुक्तानन्दायै नमः
७८४. ॐ भैरव्यै नमः
७८५. ॐ तरुणभैरव्यै नमः
७८६. ॐ ज्ञानानन्दायै नमः
७८७. ॐ भैरव्यै नमः
७८८. ॐ अमृतानन्दभैरव्यै नमः
७८९. ॐ महाभयङ्कर्यै नमः
७९०. ॐ तीव्रायै नमः
७९१. ॐ तीव्रवेगायै नमः
७९२. ॐ तपस्विन्यै नमः
७९३. ॐ त्रिपुरायै नमः
७९४. ॐ परमेशान्यै नमः
७९५. ॐ सुन्दर्यै नमः
७९६. ॐ पुरसुन्दर्यै नमः
७९७. ॐ त्रिपुरायै नमः
७९८. ॐ ईश्यै नमः
७९९. ॐ पञ्चदश्यै नमः
८००. ॐ पञ्चम्यै नमः
८०१. ॐ पुरवासिन्यै नमः
८०२. ॐ महासप्तदश्यै नमः
८०३. ॐ षोडश्यै नमः
८०४. ॐ त्रिपुरायै नमः
८०५. ॐ ईश्वर्यै नमः
८०६. ॐ महांकुशस्वरूपायै नमः
८०७. ॐ महाचक्रेश्वर्यै नमः

८०८. ॐ नवचक्रेश्वर्यै नमः
८०९. ॐ चक्रेश्वर्यै नमः
८१०. ॐ त्रिपुरमालिन्यै नमः
८११. ॐ राजराजेश्वर्यै नमः
८१२. ॐ धीरायै नमः
८१३. ॐ महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः
८१४. ॐ सिन्दूरपूररुचिरायै नमः
८१५. ॐ श्रीमत्त्रिपुरसुन्दर्यै नमः
८१६. ॐ सर्वाङ्गसुन्दर्यै नमः
८१७. ॐ रक्तायै नमः
८१८. ॐ रक्तवस्त्रायै नमः
८१९. ॐ उत्तरीयकायै नमः
८२०. ॐ जावायावकसिन्दूररक्त-चन्दनधारिण्यै नमः
८२१. ॐ जावायावकसिन्दूररक्त-चन्दनरूपधृजे नमः
८२२. ॐ चामर्यै नमः
८२३. ॐ बालायै नमः
८२४. ॐ कुटिलायै नमः
८२५. ॐ निर्मलायै नमः
८२६. ॐ श्यामकेशिन्यै नमः
८२७. ॐ वज्रमौक्तिकरत्नाढ्यकिरी-टमुकुटायै नमः
८२८. ॐ उज्ज्वलायै नमः
८२९. ॐ रक्तकुण्डलसंसक्तस्फुर-द्गण्डमनोरमायै नमः
८३०. ॐ कुञ्जरेश्वरकुम्भोत्थमुक्ता-रञ्जितनासिकायै नमः
८३१. ॐ मुक्ताविद्रुममाणिक्यहारा-ढ्यस्तनमण्डलायै नमः
८३२. ॐ सूर्यकान्तेन्दुकान्ता-ढ्यायै नमः
८३३. ॐ स्पर्शाश्मकण्ठभूषणायै नमः
८३४. ॐ बीजपूरस्फुरद्बीजदन्त-पंक्तिरनुत्तमायै नमः
८३५. ॐ कामकोदण्डकाभुग्नभ्रू-कटाक्षप्रवर्षिण्यै नमः
८३६. ॐ मातङ्गकुम्भवक्षोजायै नमः
८३७. ॐ लसत्कोकनदेक्षणायै नमः
८३८. ॐ मनोज्ञायै नमः
८३९. ॐ शुष्कुलीकर्णायै नमः
८४०. ॐ हंसीगतिविडम्बिन्यै नमः
८४१. ॐ पद्मरागाङ्गदज्योतिर्दोश्च-तुष्कप्रकाशिन्यै नमः
८४२. ॐ नानामणिपरिस्फूर्जच्छु-द्धकाञ्चनकङ्कनायै नमः
८४३. ॐ अङ्गुरीयकचित्राङ्ग्यै नमः
८४४. ॐ विचित्रक्षुद्रघण्टिकायै नमः
८४५. ॐ पट्टाम्बरपरीधानायै नमः
८४६. ॐ कलमञ्जीरशिञ्जिन्यै नमः
८४७. ॐ कर्पूरागरुकस्तूरीकुङ्कुम-द्रवलेपितायै नमः
८४८. ॐ विचित्ररत्नायै नमः
८४९. ॐ पृथिव्यै नमः
८५०. ॐ कल्पशाखितलस्थितायै नमः
८५१. ॐ रत्नद्वीपस्फुरद्रत्नसिंहा-सनविलासिन्यै नमः
८५२. ॐ षट्चक्रभेदनकर्यै नमः

८५३. ॐ परमानन्दरूपिण्यै नमः
८५४. ॐ सहस्रदलपद्मान्तायै नमः
८५५. ॐ चन्द्रमण्डलवर्तिन्यै नमः
८५६. ॐ ब्रह्मरूपशिवक्रोडनाना-
सुखविलासिन्यै नमः
८५७. ॐ हरविष्णुविरिञ्चीन्द्रग्रहना-
यकसेवितायै नमः
८५८. ॐ शिवायै नमः
८५९. ॐ शैवायै नमः
८६०. ॐ रुद्राण्यै नमः
८६१. ॐ शिववादिन्यै नमः
८६२. ॐ मातङ्गिन्यै नमः
८६३. ॐ श्रीमत्यै नमः
८६४. ॐ आनन्दमेखलायै नमः
८६५. ॐ डाकिन्यै नमः
८६६. ॐ योगिन्यै नमः
८६७. ॐ उपयोगिन्यै नमः
८६८. ॐ माहेश्वर्यै नमः
८६९. ॐ वैष्णव्यै नमः
८७०. ॐ भ्रामर्यै नमः
८७१. ॐ शिवरूपिण्यै नमः
८७२. ॐ अलुम्बुषायै नमः
८७३. ॐ वेगवत्यै नमः
८७४. ॐ क्रोधरूपायै नमः
८७५. ॐ सुमेखलायै नमः
८७६. ॐ गान्धार्यै नमः
८७७. ॐ हस्तजिह्वायै नमः
८७८. ॐ इडायै नमः
८७९. ॐ शुभङ्कर्यै नमः

८८०. ॐ पिङ्गलायै नमः
८८१. ॐ ब्रह्मदूत्यै नमः
८८२. ॐ सुषुम्नायै नमः
८८३. ॐ गन्धिन्यै नमः
८८४. ॐ आत्मयोनये नमः
८८५. ॐ ब्रह्मयोनये नमः
८८६. ॐ जगद्योनये नमः
८८७. ॐ अयोनिजायै नमः
८८८. ॐ भगरूपायै नमः
८८९. ॐ भगस्थात्र्यै नमः
८९०. ॐ भगिन्यै नमः
८९१. ॐ भगरूपिण्यै नमः
८९२. ॐ भगात्मिकायै नमः
८९३. ॐ भगाधाररूपिण्यै नमः
८९४. ॐ भगमालिन्यै नमः
८९५. ॐ लिङ्गाख्यायै नमः
८९६. ॐ लिङ्गेश्यै नमः
८९७. ॐ त्रिपुराभैरव्यै नमः
८९८. ॐ लिङ्गगीतये नमः
८९९. ॐ सुगीतये नमः
९००. ॐ लिङ्गस्थायै नमः
९०१. ॐ लिङ्गरूपधृजे नमः
९०२. ॐ लिङ्गमानायै नमः
९०३. ॐ लिङ्गभवायै नमः
९०४. ॐ लिङ्गलिङ्गायै नमः
९०५. ॐ पार्वत्यै नमः
९०६. ॐ भगवत्यै नमः
९०७. ॐ कौशिक्यै नमः
९०८. ॐ प्रेमायै नमः

९०९. ॐ प्रियंवदायै नमः
९१०. ॐ गृध्ररूपायै नमः
९११. ॐ शिवारूपायै नमः
९१२. ॐ चक्रिण्यै नमः
९१३. ॐ चक्ररूपधृजे नमः
९१४. ॐ लिङ्गाभिधायिन्यै नमः
९१५. ॐ लिङ्गप्रियायै नमः
९१६. ॐ लिङ्गनिवासिन्यै नमः
९१७. ॐ लिङ्गस्थायै नमः
९१८. ॐ लिङ्गिन्यै नमः
९१९. ॐ लिङ्गरूपिण्यै नमः
९२०. ॐ लिङ्गसुन्दर्यै नमः
९२१. ॐ लिङ्गगीतये नमः
९२२. ॐ महाप्रीतायै नमः
९२३. ॐ भगगीतये नमः
९२४. ॐ महासुखायै नमः
९२५. ॐ लिङ्गनामसदानन्दायै नमः
९२६. ॐ भगनामसदागतये नमः
९२७. ॐ लिङ्गमालाकण्ठभूषायै नमः
९२८. ॐ भगमालाविभूषणायै नमः
९२९. ॐ भगलिङ्गामृतप्रीतायै नमः
९३०. ॐ भगलिङ्गस्वरूपिण्यै नमः
९३१. ॐ भगलिङ्गस्वरूपायै नमः
९३२. ॐ भगलिङ्गसुखावहायै नमः
९३३. ॐ स्वयंभूकुसुमप्रीतायै नमः
९३४. ॐ स्वयंभूकुसुमार्चितायै नमः
९३५. ॐ स्वयंभूकुसुमप्राणायै नमः
९३६. ॐ स्वयंभूपुष्पतर्पितायै नमः
९३७. ॐ स्वयंभूपुष्पघटितायै नमः
९३८. ॐ स्वयंभूपुष्पधारिण्यै नमः
९३९. ॐ स्वयंभूपुष्पतिलकायै नमः
९४०. ॐ स्वयंभूपुष्पचर्चितायै नमः
९४१. ॐ स्वयंभूपुष्पनिरतायै नमः
९४२. ॐ स्वयंभूकुसुमग्रहायै नमः
९४३. ॐ स्वयंभूपुष्पयज्ञांशायै नमः
९४४. ॐ स्वयंभूकुसुमात्मिकायै नमः
९४५. ॐ स्वयंभूपुष्पनिचितायै नमः
९४६. ॐ स्वयंभूकुसुमप्रियायै नमः
९४७. ॐ स्वयंभूकुसुमादानलाल-
सोन्मत्तमानसायै नमः
९४८. ॐ स्वयंभूकुसुमानन्दलहर्यै नमः
९४९. ॐ स्निग्धदेहिन्यै नमः
९५०. ॐ स्वयंभूकुसुमाधारायै नमः
९५१. ॐ स्वयंभूकुसुमाकुलायै नमः
९५२. ॐ स्वयंभूपुष्पनिलयायै नमः
९५३. ॐ स्वयंभूपुष्पवासिन्यै नमः
९५४. ॐ स्वयंभूकुसुमस्निग्धायै नमः
९५५. ॐ स्वयंभूकुसुमात्मिकायै नमः
९५६. ॐ स्वयंभूपुष्पकरिण्यै नमः
९५७. ॐ स्वयंभूपुष्पमालिकायै नमः
९५८. ॐ स्वयंभूकुसुमध्यानायै नमः
९५९. ॐ स्वयंभूकुसुमप्रभायै नमः
९६०. ॐ स्वयंभूकुसुमज्ञानायै नमः
९६१. ॐ स्वयंभूपुष्पभागिन्यै नमः
९६२. ॐ स्वयंभूकुसुमोल्लासायै नमः
९६३. ॐ स्वयंभूपुष्पवर्षिण्यै नमः
९६४. ॐ स्वयंभूकुसुमोत्साहायै नमः
९६५. ॐ स्वयंभूपुष्परूपिण्यै नमः

९६६. ॐ स्वयंभूकुसुमोन्मादायै नमः
९६७. ॐ स्वयंभूपुष्पसुन्दर्यै नमः
९६८. ॐ स्वयंभूकुसुमाराध्यायै नमः
९६९. ॐ स्वयंभूकुसुमोद्भवायै नमः
९७०. ॐ स्वयंभूकुसुमव्याग्रायै नमः
९७१. ॐ स्वयंभूपुष्पपूर्णितायै नमः
९७२. ॐ स्वयंभूपूजकप्रज्ञायै नमः
९७३. ॐ स्वयंभूहोतृमातृकायै नमः
९७४. ॐ स्वयंभूदातृरक्षित्र्यै नमः
९७५. ॐ स्वयंभूरक्ततारिकायै नमः
९७६. ॐ स्वयंभूपूजकग्रस्तायै नमः
९७७. ॐ स्वयंभूपूजकप्रियायै नमः
९७८. ॐ स्वयंभूवन्दकाधारायै नमः
९७९. ॐ स्वयंभूनिन्दकान्तिकायै नमः
९८०. ॐ स्वयंभूप्रदसर्वस्यै नमः
९८१. ॐ स्वयंभूप्रदपुत्रिण्यै नमः
९८२. ॐ स्वयंभूप्रदसस्मेरायै नमः
९८३. ॐ स्वयंभूशरीरिण्यै नमः
९८४. ॐ सर्वकालोद्भवप्रीतायै नमः
९८५. ॐ सर्वकालोद्भवात्मिकायै नमः
९८६. ॐ सर्वकालोद्भवोद्भावायै नमः
९८७. ॐ सर्वकालोद्भवोद्भवायै नमः
९८८. ॐ कुण्डपुष्पसदाप्रीतये नमः
९८९. ॐ गोलपुष्पसदारतये नमः
९९०. ॐ कुण्डगोलोद्भवप्राणायै नमः
९९१. ॐ कुण्डगोलोद्भवात्मिकायै नमः
९९२. ॐ स्वयंभुवायै नमः
९९३. ॐ शिवायै नमः
९९४. ॐ धात्र्यै नमः
९९५. ॐ पावन्यै नमः
९९६. ॐ लोकपावन्यै नमः
९९७. ॐ कीर्तये नमः
९९८. ॐ यशस्विन्यै नमः
९९९. ॐ मेधायै नमः
१०००. ॐ विमेधायै नमः
१००१. ॐ शुक्रसुन्दर्यै नमः
१००२. ॐ अश्विन्यै नमः
१००३. ॐ कृतिकायै नमः
१००४. ॐ पुष्यायै नमः
१००५. ॐ तेजस्कायै नमः
१००६. ॐ चन्दमण्डलायै नमः
१००७. ॐ सूक्ष्मायै नमः
१००८. ॐ असूक्ष्मायै नमः
१००९. ॐ बलाकायै नमः
१०१०. ॐ वरदायै नमः
१०११. ॐ भयनाशिन्यै नमः
१०१२. ॐ वरदायै नमः
१०१३. ॐ अभयदायै नमः
१०१४. ॐ मुक्तिबन्धविनाशिन्यै नमः
१०१५. ॐ कामुकायै नमः
१०१६. ॐ कामदायै नमः
१०१७. ॐ कान्तायै नमः
१०१८. ॐ कामाख्यायै नमः
१०१९. ॐ कुलसुन्दर्यै नमः
१०२०. ॐ दुःखदायै नमः
१०२१. ॐ सुखदायै नमः
१०२२. ॐ मोक्षायै नमः
१०२३. ॐ मोक्षदार्थप्रकाशिन्यै नमः

१०२५. ॐ सर्वकार्यविनाशिन्यै नमः
१०२६. ॐ शुक्राधारायै नमः
१०२७. ॐ शुक्ररूपायै नमः
१०२८. ॐ शुक्रसिन्धुनिवासिन्यै नमः
१०२९. ॐ शुक्रालयायै नमः
१०३०. ॐ शुक्रभोगायै नमः
१०३१. ॐ शुक्रपूजायै नमः
१०३२. ॐ सदारतये नमः
१०३३. ॐ शुक्रपूज्यायै नमः
१०३४. ॐ शुक्रहोमायै नमः
१०३५. ॐ सन्तुष्टायै नमः
१०३६. ॐ शुक्रवत्सलायै नमः
१०३७. ॐ शुक्रमूर्तये नमः
१०३८. ॐ शुक्रदेहायै नमः
१०३९. ॐ शुक्रपूजकपुत्रिण्यै नमः
१०४०. ॐ शुक्रस्थायै नमः
१०४१. ॐ शुक्रिण्यै नमः
१०४२. ॐ शुक्रसंस्पृहायै नमः
१०४३. ॐ शुक्रसुन्दर्यै नमः
१०४४. ॐ शुक्रस्नातायै नमः
१०४५. ॐ शुक्रकर्यै नमः
१०४६. ॐ शुक्रसेव्यायै नमः
१०४७. ॐ अतिशुक्रिण्यै नमः
१०४८. ॐ महाशुक्रायै नमः
१०४९. ॐ शुक्रभवायै नमः
१०५०. ॐ शुक्रवृष्टिविधायिन्यै नमः
१०५१. ॐ शुक्राभिधेयायै नमः
१०५२. ॐ शुक्रार्हायै नमः
१०५३. ॐ शुक्रवन्दकवन्दितायै नमः
१०५४. ॐ शुक्रानन्दकर्यै नमः
१०५५. ॐ शुक्रसदानन्दाभिधायिकायै नमः
१०५६. ॐ शुक्रोत्सवायै नमः
१०५७. ॐ सदाशुक्रपूर्णायै नमः
१०५८. ॐ शुक्रमनोरमायै नमः
१०५९. ॐ शुक्रपूजकसर्वस्यै नमः
१०६०. ॐ शुक्रनिन्दकनाशिन्यै नमः
१०६१. ॐ शुक्रात्मिकायै नमः
१०६२. ॐ शुक्रसम्वते नमः
१०६३. ॐ शुक्राकर्षणकारिण्यै नमः
१०६४. ॐ शारदायै नमः
१०६५. ॐ साधकप्राणायै नमः
१०६६. ॐ साधकासक्तमानसायै नमः
१०६७. ॐ साधकोत्तमसर्वस्यै नमः
१०६८. ॐ साधकायै नमः
१०६९. ॐ अभक्तरक्तपायै नमः
१०७०. ॐ साधकानन्दसन्तोषायै नमः
१०७१. ॐ साधकानन्दकारिण्यै नमः
१०७२. ॐ आत्मविद्यायै नमः
१०७३. ॐ ब्रह्मविद्यायै नमः
१०७४. ॐ परब्रह्मस्वरूपिण्यै नमः
१०७५. ॐ त्रिकूटस्थायै नमः
१०७६. ॐ पञ्चकूटायै नमः
१०७७. ॐ सर्वकूटशरीरिण्यै नमः
१०७८. ॐ सर्ववर्णमय्यै नमः
१०७९. ॐ वर्णजपमालाविधायिन्यै नमः

कालिकाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्

भैरव उवाच

शतनाम प्रवक्ष्यमि कालिकाया वरानने!।
यस्य प्रपठनाद् वाग्मी सर्वत्र विजयी भवेत्।।१।।
काली कपालिनी कान्ता कामदा कामसुन्दरी।
कालरात्रि कालिका च कालभैरवपूजिता।।२।।
कुरुकुल्ला कामिनी च कमनीयस्वभाविनी।
कुलीना कुलकर्त्री च कुलवर्त्म-प्रकाशिनी।।३।।
कस्तूरीरसनीला च काम्या कामस्वरूपिणी।
ककारवर्णनिलया कामधेनुः करालिका।।४।।
कुलकान्ता करालास्या कामार्ता च कलावती।
कृशोदरी च कामाख्या कौमारी कुलपालिनी।।५।।
कुलजा कुलकन्या च कलहा कुलपूजिता।
कामेश्वरी कामकान्ता कुञ्जरेश्वरगामिनी।।६।।
कामदात्री कामहर्त्री कृष्णा चैव कपर्दिनी।
कुमुदा कृष्णदेहा च कालिन्दी कुलपूजिता।।७।।
काश्यपी कृष्णमाता च कुलिशाङ्गी कला तथा।
क्रींरूपा कुलगम्या च कमला कृष्णपूजिता।।८।।

भैरव ने कहा–हे वरानने! (अब मैं) काली के सौ नामों का जो तुमसे वर्णन कर रहा हूँ। जिसके पठनमात्र से ही मनुष्य बोलने में कुशल होकर समस्त स्थानों पर विजय को प्राप्त करता है।।१।। काली, कपालिनी, कान्ता, कामदा, कामसुन्दरी, कालरात्रि, कालिका, कालभैरवपूजिता, कुरुकुल्ला, कामिनी, कमनीयस्वभाविनी, कुलीना, कुलकर्त्री, कुलवर्त्म-प्रकाशिनी, कस्तूरी के समान नीले रंगवाली, काम्या, कामस्वरूपिणी, ककारवर्ण में रहनेवाली, कामधेनु, करालिका, कुलकान्ता, करालास्या, कामार्ता, कलावती, कृशोदरी, कामाख्या, कौमारी, कुलपालिनी, कुलजा, कुलकन्या, कलहा, कुलपूजिता, कामेश्वरी, कामकान्ता, कुञ्जरेश्वरगामिनी।।२-६।। कामदात्री, कामहर्त्री, कृष्णा, कपर्दिनी, कुमुदा, कृष्णदेहा, कालिन्दी, कुलपूजिता, काश्यपी, कृष्णमाता, कुलिशाङ्गी, कला, क्रींरूपा, कुलगम्या, कमला, कृष्णपूजिता,

कृशाङ्गी किन्नरी कर्त्री कलकण्ठी च कार्तिकी।
कम्बुकण्ठी कौलिनी च कुमुदा कामजीविनी।। ९ ।।
कुलस्त्री कीर्तिका कृत्या कीर्तिश्च कुलपालिका।
कामदेवकला कल्पलता कामाङ्गवर्द्धिनी।।१०।।
कुन्ती च कुमुदप्रीता कदम्बकुसुमोत्सुका।
कादम्बिनी कमलिनी कृष्णानन्दप्रदायिनी।।११।।
कुमारीपूजनरता कुमारीगणशोभिता।
कुमारीरञ्जनरता कुमारीव्रतधारिणी।।१२।।
कङ्काली कमनीया च कामशास्त्रविशारदा।
कपालकट्वाङ्गधरा कालभैरवरूपिणी।।१३।।
कोटरी कोटराक्षी च काशी कैलासवासिनी।
कात्यायिनी कार्यकरी काव्यशास्त्रप्रमोदिनी।।१४।।
कामाकर्षणरूपा च कामपीठनिवासिनी।
कङ्गिनी काकिनी क्रीडा कुत्सिता कलहप्रिया।।१५।।
कुण्डगोलोद्भवप्राणा कौशिकी कीर्तिवर्द्धिनी।
कुम्भस्तनी कटाक्षा च काव्या कोकनदप्रिया।।१६।।

कृशाङ्गी, किन्नरी, कर्त्री, कलकण्ठी, कार्तिकी, कम्बुकण्ठी, कौलिनी, कुमुदा, कामजीविनी।।७-९।।

कुलस्त्री, कार्तिकी, कृत्या, कीर्ति, कुलपालिका, कामदेवकला, कल्पलता, कामाङ्गवर्धिनी, कुन्ती, कुमुदप्रीता, कदम्बकुसुमोत्सुका, कादम्बिनी, कमलिनी, कृष्णानन्दप्रदायिनी, कुमारीपूजनरता, कुमारीगणशोभिता, कुमारी-रञ्जनरता, कुमारीव्रतधारिणी, कंकाली, कमनीया, कामशास्त्रविशारदा, कपाल-खट्वांगधरा, कालभैरवरूपिणी।।१०-१३।। कोटरी, कोटराक्षी, काशी, कैलास-वासिनी, कात्यायिनी, कार्यकरी, काव्यशास्त्रप्रमोदिनी, कामाकर्षणरूपा, कामपीठ-निवासिनी, कङ्गिनी, काकिनी, क्रीडा, कुत्सिता, कलहप्रिया, कुण्डगोलोद्भवप्राणा, कौशिकी, कीर्तिवर्धिनी, कुम्भस्तनी, कटाक्षा, काव्या, कोकनदप्रिया,

कान्तारवासिनी कान्तिः कठिना कृष्णवल्लभा।
इति ते कथितं देव! गुह्याद् गुह्यतरं परम्।।१७।।
प्रपठेद् य इदं नित्यं कालीनामशताष्टकम्।
त्रिषु लोकेषु देवेशि! तस्याऽसाध्यं न विद्यते।।१८।।
प्रातःकाले च मध्याह्ने सायाह्ने च सदा निशि।
यः पठेत् परया भक्त्या कालीनामशताष्टकम्।।१९।।
कालिका तस्य गेहे च संस्थानं कुरुते सदा।
शून्यागारे श्मशाने वा प्रान्तरे जलमध्यतः।।२०।।
वह्निमध्ये च संग्रामे तथा प्राणस्य संशये।
शताष्टकं जपन्मन्त्री लभते क्षेममुत्तमम्।।२१।।
कालीं संस्थाप्य विधिवत् स्तुत्वा नामशताष्टकैः।
साधकः सिद्धिमाप्नोति कालिकायाः प्रसादतः।।२२।।

।।कालिकाअष्टोत्तरशतनामस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

कान्तारवासिनी, कान्ती, कठिना, कृष्णवल्लभा।। भैरव ने कहा–हे देवि! मैंने महाकाली के अत्यन्त गोपनीय एक सौ आठ नामों का वर्णन आपसे किया है। (जो साधक) काली के इन एक सौ आठ नामों का प्रत्येक दिन पाठ करते हैं। उनके लिये इस चराचर जगत् में कोई भी वस्तु असाध्य एवं अप्राप्य नहीं हो सकती।।१४-१८।।

जो (मनुष्य) प्रातःकाल, मध्याह्नकाल, सायंकाल एवं आधी रात के समय भगवती महाकाली के इन एक सौ आठ नामों का पाठ करते हैं। (ऐसे साधकों के) घर में भगवती काली सदैव निवास करती है। शून्यागार, श्मशान, अत्यधिक घनघोर जंगल या जलाशय के मध्य में, अग्नि के बीच में, युद्ध में एवं प्राणों पर संकट आने पर भगवती महाकाली के इन एक सौ आठ नामों का पाठ करनेवाला अथवा मन्त्र का जप करनेवाला (साधक) शुभ एवं कल्याण की प्राप्ति करता है। शास्त्रों के मतानुसार भगवती काली की स्थापना कर उक्त एक सौ आठ नामों द्वारा उनकी प्रार्थना करनेवाला, साधक माता कालिका के प्रभाव से उत्तमोत्तम सिद्धि को प्राप्त करता है।।१९-२२।।

।। हिन्दी टीका सहित कालिकाअष्टोत्तरशतनामस्तोत्र पूर्ण हुआ।।

।।श्रीकालिकायै नमः।।

श्रीकाल्यष्टोत्तरशतनामावलिः

१. ॐ काल्यै नमः
२. ॐ कपालिन्यै नमः
३. ॐ कान्तायै नमः
४. ॐ कामदायै नमः
५. ॐ कामसुन्दर्यै नमः
६. ॐ कालरात्र्यै नमः
७. ॐ कालिकायै नमः
८. ॐ कालभैरवपूजितायै नमः
९. ॐ कुरुकल्लायै नमः
१०. ॐ कामिन्यै नमः
११. ॐ कमनीयस्वभाविन्यै नमः
१२. ॐ कुलीनायै नमः
१३. ॐ कुलकर्त्र्यै नमः
१४. ॐ कुलवर्त्मप्रकाशिन्यै नमः
१५. ॐ कस्तूरीरसनीलायै नमः
१६. ॐ काम्यायै नमः
१७. ॐ कामस्वरूपिण्यै नमः
१८. ॐ ककारवर्णनिलयायै नमः
१९. ॐ कामधेन्वै नमः
२०. ॐ करालिकायै नमः
२१. ॐ कुलकान्तायै नमः
२२. ॐ करालास्यायै नमः
२३. ॐ कामार्तायै नमः
२४. ॐ कलावत्यै नमः
२५. ॐ कृशोदर्यै नमः
२६. ॐ कामाख्यायै नमः
२७. ॐ कौमार्यै नमः
२८. ॐ कुलपालिन्यै नमः
२९. ॐ कुलजायै नमः
३०. ॐ कुलकन्यायै नमः
३१. ॐ कलहायै नमः
३२. ॐ कुलपूजितायै नमः
३३. ॐ कामेश्वर्यै नमः
३४. ॐ कामकान्तायै नमः
३५. ॐ कुञ्जेश्वरगामिन्यै नमः
३६. ॐ कामदात्र्यै नमः
३७. ॐ कामहर्त्र्यै नमः
३८. ॐ कृष्णायै नमः
३९. ॐ कपर्दिन्यै नमः
४०. ॐ कुमुदायै नमः
४१. ॐ कृष्णदेहायै नमः
४२. ॐ कालिन्द्यै नमः
४३. ॐ कुलपूजितायै नमः
४४. ॐ काश्यप्यै नमः
४५. ॐ कृष्णमात्रे नमः
४६. ॐ कुलिशाङ्ग्यै नमः
४७. ॐ कलायै नमः
४८. ॐ क्रींरूपायै नमः
४९. ॐ कुलगम्यायै नमः
५०. ॐ कमलायै नमः
५१. ॐ कृष्णपूजितायै नमः
५२. ॐ कृशाङ्ग्यै नमः
५३. ॐ किन्नर्यै नमः
५४. ॐ कर्त्र्यै नमः

५५. ॐ कलकण्ठ्यै नमः
५६. ॐ कार्तिक्यै नमः
५७. ॐ कम्बुकण्ठ्यै नमः
५८. ॐ कौलिन्यै नमः
५९. ॐ कुमुदायै नमः
६०. ॐ कामजीविन्यै नमः
६१. ॐ कुलस्त्रियै नमः
६२. ॐ कीर्तिकायै नमः
६३. ॐ कृत्यायै नमः
६४. ॐ कीर्त्यै नमः
६५. ॐ कुलपालिकायै नमः
६६. ॐ कामदेवकलायै नमः
६७. ॐ कल्पलतायै नमः
६८. ॐ कामाङ्गवर्धिन्यै नमः
६९. ॐ कुन्तायै नमः
७०. ॐ कुमुदप्रीतायै नमः
७१. ॐ कदम्बकुसुमोत्सुकायै नमः
७२. ॐ कादम्बिन्यै नमः
७३. ॐ कमलिन्यै नमः
७४. ॐ कृष्णानन्दप्रदायिन्यै नमः
७५. ॐ कुमारीपूजनरतायै नमः
७६. ॐ कुमारीगणशोभितायै नमः
७७. ॐ कुमारीञ्जनरतायै नमः
७८. ॐ कुमारीव्रतधारिण्यै नमः
७९. ॐ कङ्काल्यै नमः
८०. ॐ कमनीयायै नमः
८१. ॐ कामशास्त्रविशारदायै नमः
८२. ॐ कपालखट्वाङ्गधरायै नमः
८३. ॐ कालभैरवरूपिण्यै नमः
८४. ॐ कोटर्यै नमः
८५. ॐ कोटराक्ष्यै नमः.
८६. ॐ काशीवासिन्यै नमः
८७. ॐ कैलासवासिन्यै नमः
८८. ॐ कात्यायन्यै नमः
८९. ॐ कार्यकर्यै नमः
९०. ॐ काव्यशास्त्रप्रमोदिन्यै नमः
९१. ॐ कामाकर्षणरूपायै नमः
९२. ॐ कामपीठनिवासिन्यै नमः
९३. ॐ कङ्गिन्यै नमः
९४. ॐ काकिन्यै नमः
९५. ॐ क्रीडायै नमः
९६. ॐ कुत्सितायै नमः
९७. ॐ कलहप्रियायै नमः
९८. ॐ कुण्डगोलोद्भवप्राणायै नमः
९९. ॐ कौशिक्यै नमः
१००. ॐ कीर्तिवर्धिन्यै नमः
१०१. ॐ कुम्भस्तन्यै नमः
१०२. ॐ कटाक्षायै नमः
१०३. ॐ काव्यायै नमः
१०४. ॐ कोकनदप्रियायै नमः
१०५. ॐ कान्तारवासिन्यै नमः
१०६. ॐ कान्त्यै नमः
१०७. ॐ कठिनायै नमः
१०८. ॐ कृष्णवल्लभायै नमः

॥इति शाक्तप्रमोदे श्रीकाल्यष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा॥

श्रीकालीशतनामस्तोत्रम्

।। श्रीशिव उवाच।।

ॐ करालवदना काली कामिनी कमलालया।
क्रियावती कोटराक्षी कामाक्षी कामसुन्दरी।। १ ।।
कपोला च कराला च काशी कात्यायनी कुहूः।
कङ्काली कालदमनी करुणा कमलार्चिता।। २ ।।
कादम्बरी कालहरा कौतुकी कारणप्रिया।
कृष्णा कृष्णप्रिया कृष्णपूजिता कृष्णवल्लभा।। ३ ।।
कृष्णाऽपराजिता कृष्णप्रिया च कृष्णरूपिणी।
कालिका कालरात्रिश्च कुलजा कुलपण्डिता।। ४ ।।
कुलधर्मप्रिया कामा काम्यकर्मविभूषिता।
कुलप्रिया कुलरता कुलीनपरिपूजिता।। ५ ।।
कुलज्ञा कमला पूज्या कैलासनगभूषिता।
कुटजा केशिनी कामा कामदा कामपण्डिता।। ६ ।।
करालास्या च कन्दर्पकामिनी कामशोभिता।
केलिप्रिया केलिरता केलिनी केलिभूषिता।। ७ ।।
केशवस्य प्रिया केशा काश्मीरा केशवार्चिता।
कामेश्वरी कामरूपा कामदानविभूषिता।। ८ ।।
कामहन्त्री कूर्ममांसप्रिया कूर्मादिपूजिता।
केलिनी करकी कारा करकूर्मनिषेविनी।। ९ ।।
कटकेशरमध्यस्था कटकी कटकार्चिता।
कटप्रिया कटरता कटकूर्मनिषेविनी।।१०।।
कुमारीपूजनरता कुमारीजनसेविता।
कुलाचारप्रिया कौलप्रिया कुलनिषेविनी।।११।।
कुलीना कुलधर्मज्ञा कुलभीतिविमर्दिनी।
कामधर्मप्रिया कामा नित्याकामस्वरूपिणी।।१२।।
कामरूपा कामहरा काममन्दिरपूजिता।
कामागारस्वरूपा च कामाख्या कामभूषिता।।१३।।

क्रियाभक्तिरता कामा काञ्चिनी चैव कामदा।
कोलपुष्पाम्बरा कोला निष्कोला कलहान्तिका।।१४।।
कौषिकी केतिकी कुम्भी कुन्तिलादिविभूषिता।

फलश्रुति

इत्येवं शृणु चार्वाङ्गि रहस्यं सर्वमङ्गलम्।।१५।।
यः पठेत् परमा भक्त्या स शिवो नाऽत्र संशयः।
शतनामप्रसादेन किं न सिध्यन्ति भूतले।।१६।।
ब्रह्माविष्णुश्च रुद्रश्च वासवाद्या दिवौकसः।
सहस्रपठनाद्देवि सर्वे च विगतज्वराः।।१७।।
नास्ति नास्ति महामाये तन्त्रमध्ये कथञ्चन।
कृपया च विना देवि विना भक्त्या महेश्वरी।।१८।।
प्रसन्ना स्यात् करालास्या स्तवपाठाद्दिगम्बरा।
सत्यं वच्मि महेशानि अतः परतरं न हि।।१९।।
न गोलोके न वैकुण्ठे न च कैलासमन्दिरे।
अतः परतरा विद्या स्तोत्रं कवचमेव च।।२०।।
त्रिलोकेषु जगद्धात्री नास्ति नास्ति कदाचन।
रात्रावपि दिवाभागे सन्ध्यायां वा सुरेश्वरी।।२१।।
प्रजपेत् भक्तिभावेन रहस्यं स्तवमुत्तमम्।
शतनामप्रसादेन मन्त्रसिद्धिः प्रजायते।।२२।।
कुजवारे चतुर्दश्यां निशाभागे पठेत्तु यः।
स कृती सर्वशास्त्रज्ञः स कुलीनः सदा शुचिः।।२३।।
सकुलज्ञः सकालज्ञः स धर्मज्ञो महीतले।
प्राप्नोति देवदेवेशि सत्यं परम सुन्दरी।।२४।।
स्तवपाठाद् वरारोहे किं न सिध्यन्ति भूतले।
आणिमाद्यष्टसिद्धिश्च भवत्येव न संशयः।।२५।।
रात्रौ बिल्वतलेऽश्वत्थमूलेऽपराजितातले।
प्रपठेत् कालिकास्तोत्रं यथाभक्त्या महेश्वरि।।
शतवारप्रपठनान्मन्त्रसिद्धिं भवेद्ध्रुवम्।।२६।।

॥श्रीकाल्यै नमः॥

।।श्रीकालीशतनामावलिः।।

१. ॐ करालवदनायै नमः

२. ॐ काल्यै नमः

३. ॐ कामिन्यै नमः

४. ॐ कमलालयायै नमः

५. ॐ क्रियावत्यै नमः

६. ॐ कोटराक्ष्यै नमः

७. ॐ कामाक्ष्यै नमः

८. ॐ कामसुन्दर्यै नमः

९. ॐ कपोलायै नमः

१०. ॐ करालायै नमः

११. ॐ काश्यै नमः

१२. ॐ कात्यायन्यै नमः

१३. ॐ कुहुवे नमः

१४. ॐ कङ्काल्यै नमः

१५. ॐ कालदमन्यै नमः

१६. ॐ करुणायै नमः

१७. ॐ कमलार्चितायै नमः

१८. ॐ कादम्बर्यै नमः

१९. ॐ कालहरायै नमः

२०. ॐ कौतुक्यै नमः

२१. ॐ कारणप्रियायै नमः

२२. ॐ कृष्णायै नमः

२३. ॐ कृष्णप्रियायै नमः

२४. ॐ कृष्णपूजितायै नमः

२५. ॐ कृष्णवल्लभायै नमः

२६. ॐ कृष्णायै नमः

२७. ॐ अपराजितायै नमः

२८. ॐ कृष्णप्रियायै नमः

२९. ॐ कृष्णरूपिण्यै नमः

३०. ॐ कालिकायै नमः

३१. ॐ कालरात्र्यै नमः

३२. ॐ कुलजायै नमः

३३. ॐ कुलपण्डितायै नमः

३४. ॐ कुलधर्मप्रियायै नमः

३५. ॐ कामायै नमः

३६. ॐ काम्यकर्मविभूषितायै नमः

३७. ॐ कुलप्रियायै नमः

३८. ॐ कुलरतायै नमः

३९. ॐ कुलीनपरिपूजितायै नमः

४०. ॐ कुलज्ञायै नमः

४१. ॐ कमलायै नमः

४२. ॐ पूज्यायै नमः

४३. ॐ कैलासनगभूषितायै नमः

४४. ॐ कुटजायै नमः

४५. ॐ केशिन्यै नमः

४६. ॐ कामायै नमः

४७. ॐ कामदायै नमः

४८. ॐ कामपण्डितायै नमः

४९. ॐ करालास्यायै नमः

५०. ॐ कन्दर्पकामिन्यै नमः

५१. ॐ कामशोभितायै नमः

५२. ॐ केलिप्रियायै नमः

५३. ॐ केलिरतायै नमः

५४. ॐ केलिन्यै नमः

५५. ॐ केलिभूषितायै नमः
५६. ॐ केशवस्यप्रियायै नमः
५७. ॐ केशायै नमः
५८. ॐ काश्मीरायै नमः
५९. ॐ केशवार्चितायै नमः
६०. ॐ कामेश्वर्यै नमः
६१. ॐ कामरूपायै नमः
६२. ॐ कामदानविभूषितायै नमः
६३. ॐ कामहन्त्र्यै नमः
६४. ॐ कूर्ममांसप्रियायै नमः
६५. ॐ कूर्मादिपूजितायै नमः
६६. ॐ केलिन्यै नमः
६७. ॐ करक्यै नमः
६८. ॐ कारायै नमः
६९. ॐ करकूर्मनिषेविन्यै नमः
७०. ॐ कटकेशरमध्यस्थायै नमः
७१. ॐ कटक्यै नमः
७२. ॐ कटकार्चितायै नमः
७३. ॐ कटप्रियायै नमः
७४. ॐ कटरतायै नमः
७५. ॐ कटकूर्मनिषेविन्यै नमः
७६. ॐ कुमारीपूजनरतायै नमः
७७. ॐ कुमारीजनसेवितायै नमः
७८. ॐ कुलाचारप्रियायै नमः
७९. ॐ कौलप्रियायै नमः
८०. ॐ कुलनिषेविन्यै नमः
८१. ॐ कुलीनायै नमः
८२. ॐ कुलधर्मज्ञायै नमः
८३. ॐ कुलभीतिविमर्दिन्यै नमः
८४. ॐ कामधर्मप्रियायै नमः
८५. ॐ कामायै नमः
८६. ॐ नित्याकामस्वरूपिण्यै नमः
८७. ॐ कामरूपायै नमः
८८. ॐ कामहरायै नमः
८९. ॐ काममन्दिरपूजितायै नमः
९०. ॐ कामागारस्वरूपायै नमः
९१. ॐ कामाख्यायै नमः
९२. ॐ कामभूषितायै नमः
९३. ॐ क्रियाभक्तिरतायै नमः
९४. ॐ कामायै नमः
९५. ॐ काञ्चिन्यै नमः
९६. ॐ कामदायै नमः
९७. ॐ कोलफुष्पाम्बरायै नमः
९८. ॐ कोलायै नमः
९९. ॐ निष्कोलायै नमः
१००. ॐ कलहान्तिकायै नमः
१०१. ॐ कौषिक्यै नमः
१०२. ॐ केतिक्यै नमः
१०३. ॐ कुम्भयै नमः
१०४. ॐ कुन्तिलादिविभूषितायै नमः

।।इति शाक्तप्रमोदे श्रीकालीशतनामावलिः सम्पूर्णा।।

काली-कवचम्

भैरवी उवाच

कालीपूजा श्रुता नाथ! भावाश्च विविधा प्रभोः।
इदानीं श्रोतुमिच्छामि कवचं पूर्वसूचितम्।।१।।
त्वमेव स्रष्टा पाता च संहर्ता च त्वमेव च।
त्वमेव शरणं नाथ! त्राहि मां दुःख-सङ्कटात्।।२।।

भैरव उवाच

रहस्यं शृणु वक्ष्यामि भैरवि प्राणवल्लभे!।
श्रीजगन्मङ्गलं नाम कवचं मन्त्र-विग्रहम्।।३।।
पठित्वा धारयित्वा च त्रैलोक्यं मोहयेत्क्षणात्।
नारायणोऽपि यद् धृत्वा नारी भूत्वा महेश्वरम्।।४।।
योगिनं क्षोभमनयद् यद् धृत्वा च रघूत्तमः।
वरतृप्तो जघानैव रावणादिनिशाचरान्।।५।।

भैरवी ने कहा—हे स्वामि! मैंने अनेक भावयुक्त कालीपूजन आपके मुखारविन्द से श्रवण किया। आपने जो पहले कहा था कि, मैं तुमको कालीकवच सुनाऊँगा। (इसलिए) हे स्वामी! वह कालीकवच मैं इस समय श्रवण करना चाहती हूँ। क्योंकि आपही संसार के निर्माणकर्ता, रक्षक और विनाशकर्ता हैं। (इसलिए) मैं आपकी शरणागत हूँ। अतः इस घनघोर दुःख संकट से मेरी रक्षा करें। **भैरव बोले**—हे प्राणों से प्रिय भैरवि! मंत्रस्वरूप जगन्मङ्गल नामक कवच के रहस्य का मैं (तुमसे) वर्णन करता हूँ। अतः तुम अत्यन्त सावधान चित्त से इसे सुनो।।१-३।।

इस कवच को पढ़नेवाले तथा धारण करनेवाले साधकगण उसी क्षण ही तीनों लोकों को मोहित कर लेते हैं। स्वयं भगवान् नारायण ने भी इसे धारण कर स्त्रीस्वरूप से योगिराज महेश्वर (शिव) के मन में क्षोभ पैदा कर दिया था। इसी कवच को धारण कर मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम ने अति क्रूर रावण आदि राक्षसों का युद्धभूमि में वध किया था।।४-५।।

यस्य प्रसादादीशोऽहं त्रैलोक्य-विजयी विभुः।
धनाधिपः कुबेरोऽपि सुरेशोऽभूच्छचीपतिः।। ६ ।।
एवं सकला देवाः सर्वसिद्धीश्वराः प्रिये!।
श्रीजगन्मङ्गलस्याऽस्य कवचस्य ऋषिः शिवः।। ७ ।।
छन्दोऽनुष्टुप् देवता च कालिका दक्षिणेरिता।
जगतां मोहने दुष्टविजये भुक्ति-मुक्तिषु।। ८ ।।
योषिदाकर्षणे चैव विनियोगः प्रकीर्तितः।

कवच

शिरो मे कालिका पातु क्रींकारैकाक्षरी परा।। ९ ।।
क्रीं क्रीं क्रीं मे ललाटं च कालिका खड्गधारिणी।
हूं हूं पातु नेत्रयुगं ह्रीं ह्रीं पातु श्रुती मम।।१०।।
दक्षिणे कालिका पातु घ्राणयुग्मं महेश्वरी।
क्रीं क्रीं क्रीं रसनां पातु हूं हूं पातुं कपोलकम्।।११।।

इस कवच के धारण करने से मैं सम्पूर्ण जगत् का स्वामी, त्रैलोक्य विजयी एवं विभु हूँ। (धन के स्वामी) कुबेर ने भी इस कवच को धारण कर धनाधिप और (अदितिपुत्र) इन्द्र तीनों लोकों की सुंदरी शची के पति हुए।।६।।

हे प्रिये! सम्पूर्ण देवता इसी कवच को धारण कर समस्त सिद्धियों के स्वामी हुए, (क्योंकि) इस जगन्मङ्गल कवच के ऋषि शिव हैं।।७।।

अनुष्टुप् छन्द, दक्षिण काली देवता उक्त कवच सम्पूर्ण संसार को मोहने-वाला दुष्टों पर विजय प्राप्त करनेवाला तथा भुक्ति-मुक्ति प्रदत्त करनेवाला है। विशेषरूप से स्त्रियों के आकर्षण में इसका प्रयोग अत्यधिक उपयोगी है। परा, एकाक्षरी क्रीं रूप कालिका मेरे सिर की रक्षा करें। खड्गधारिणी अर्थात् खड्ग को धारण करनेवाली क्रीं-क्रीं-क्रीं रूप कालिका मेरे ललाट की, हूँ हूँ रूप कालिका मेरे दोनों नेत्रों की, एवं ह्रीं-ह्रीं रूप कालिका मेरे दोनों कर्णों की रक्षा करें। कालिका मेरी दायीं ओर महेश्वरी दोनों नासिका की, क्रीं-क्रीं-क्रीं रूप काली मेरी जिह्वा की तथा हूँ-हूँ स्वरूपा काली मेरे कपोल की रक्षा करें।।८-११।।

वदनं सकलं पातु ह्रीं ह्रीं स्वाहा-स्वरूपिणी।
द्वविंशत्यक्षरी स्कन्धौ महाविद्या सुखप्रदा।।१२।।
खड्ग-मुण्डधरा काली सर्वाङ्गमभितोऽवतु।
क्रीं हूं ह्रीं त्र्यक्षरी पातु चामुण्डा हृदये मम।।१३।।
ऐं हूं ओं ऐं स्तनद्वन्द्वं ह्रीं फट् स्वाहा ककुत्स्थलम्।
अष्टाक्षरी महाविद्या भुजौ पातु सकर्तृका।।१४।।
क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रींह्रींकारी पातु षडक्षरी मम।
क्रीं नाभिं मध्यदेशं च दक्षिणे कालिकाऽवतु।।१५।।
क्रीं स्वाहा पातु पुष्टं च कालिका सा दशाक्षरी।
क्रीं मे गुह्यं सदा पातु कालिकायै नमस्ततः।।१६।।
सप्ताक्षरी महाविद्या सर्वतन्त्रेषु गोपिता।
ह्रीं ह्रीं दक्षिणे कालिके हूं हूं पातु कटिद्वयम्।।१७।।

ह्रीं-ह्रीं स्वाहा स्वरूपिणी कालिका मेरे मुख की रक्षा करें, बाईस अक्षरवाली, सुख प्रदत्त करनेवाली, महाविद्यारूपा काली मेरे दोनों कंधों की रक्षा करें॥१२॥

खड्गमुण्ड धारण करनेवाली काली मेरे शरीर के समस्त अंगों की चारो ओर से (सदैव) रक्षा करें। क्रीं-हूँ-ह्रीं तीन अक्षरवाली चामुण्डारूप काली मेरे हृदय की रक्षा करें॥१३॥

ऐं-हूँ-ओं-ऐं रूप कालिका मेरे दोनों स्तनों की रक्षा करें। ह्रीं फट् स्वाहा रूप कालिका मेरे तालु भाग की रक्षा करें एवं अष्टाक्षरी महाविद्या सकर्तृका रूप काली मेरी दोनों भुजाओं की रक्षा करें। क्रीं-क्रीं-हूँ-हूँ-ह्रीं-ह्रीं ये षडक्षरी रूप कालिका मेरी रक्षा करें। क्रीं रूपा काली मेरी नाभि की और दक्षिण कालिका मेरे मध्य भाग की (सदैव) रक्षा करें॥१४-१५॥

क्रीं स्वाहा दशाक्षरी रूप कालिका मेरे पीछे के भाग की रक्षा करें, क्रीं रूप कालिका सदैव मेरे गुप्तांग की रक्षा करें। इसके उपरान्त काली को नमस्कार करें। सप्ताक्षरी महाविद्यारूप कालिका सम्पूर्ण मंत्रों में अत्यन्त गुप्त है। ह्रीं-ह्रीं रूप कालिका मेरी दाहिने भाग की रक्षा करें एवं हूँ-हूँ रूप कालिका मेरे वामभाग की रक्षा करें॥१६-१७॥

काली दशाक्षरी विद्या स्वाहा मामूरुयुग्मकम्।
ॐ क्रीं क्रीं मे स्वाहा पातु कालिका जानुनी सदा।।१८।।
कालीहृन्नामविद्येयं चतुर्वर्गफलप्रदा।
क्रीं हूं ह्रीं पातु सा गुल्फं दक्षिणे कालिकेऽवतु।।१९।।
क्रीं हूं ह्रीं स्वाहा पदं पातु चतुर्दशाक्षरी मम।
खड्ग-मुण्डधरा काली वरदाभयधारिणी।।२०।।
विद्याभिः सकलाभिः सा सर्वाङ्गमभितोऽवतु।
काली कपालिनी कुल्ला कुरुकुल्ला विरोधिनी।।२१।।
विप्रचित्ता तथोग्रोग्रप्रभा दीप्ता घनत्विषा।
नीला घना बलाका च मात्रा मुद्रा मिता च माम्।।२२।।
एताः सर्वाः खड्गधरा मुण्डमाला-विभूषणाः।
रक्षन्तु मां दिग्-विदिक्षु ब्राह्मी नारायणी तथा।।२३।।

दशाक्षरवाली विद्या एवं स्वाहा रूप काली मेरे दोनों ऊरु भाग की रक्षा करें। ओं-क्रीं-क्रीं मे स्वाहा रूप कालिका मेरे घुटनों की (सदैव) रक्षा करें।।१८।।

हृद् नामक विद्यारूप यह काली धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चतुर्वर्गरूप फल को प्रदत्त करनेवाली है। क्रीं-ह्रीं-ह्रीं रूप दक्षिण कालिका मेरे गुल्फ भाग की रक्षा करें।।१९।।

चतुर्दशाक्षरी क्रीं हूँ ह्रीं स्वाहा रूप मेरे (दोनों) पैरों की रक्षा करें। खड्ग-मुण्डधारी काली, वरद और अभयमुद्रा धारण करनेवाली सम्पूर्ण कलाओं से युक्त, सम्पूर्ण विद्यारूपा कालिका मेरे सभी अंगों की चारों ओर से रक्षा करें। काली, कपालिनी, कुल्ला, कुरुकुल्ला, विरोधिनी, विप्रचित्ता एवं उग्रोग्र प्रभा, दीप्ता, घनत्विषा, नीला, घना, बलाका, मात्रा, मुद्रा, मिता ये सभी खड्ग को धारण करनेवाली मुण्डमाला से विभूषित दिशा एवं विदिशाओं में मेरी रक्षा करें। ब्राह्मी, नारायणी और

माहेश्वरी च चामुण्डा कौमारी चाऽपराजिता।
वाराही नारसिंही च सर्वाश्चाऽमितभूषणाः।।२४।।
रक्षन्तु स्वायुधैर्दिक्षु विदिक्षु मां यथा तथा।
इति ते कथितं दिव्यं कवचं परमाद्भुतम्।।२५।।

फलश्रुतिः

श्रीजगन्मङ्गलं नाम महाविद्यौघविग्रहम्।
त्रैलोक्याकर्षणं ब्रह्मन्! कवचं मन्मुखोदितम्।।२६।।
गुरुपूजां विधायाऽथ विधिवत् प्रपठेत्ततः।
कवचं त्रिसकृद् वाऽपि यावज्जीवं च वा पुनः।।२७।।
एतच्छतार्द्धमावृत्य त्रैलोक्य-विजयी भवेत्।
त्रैलोक्यं क्षोभयत्येव कवचस्य प्रसादतः।।२८।।
महाकविर्भवेन्मासं सर्वसिद्धीश्वरो भवेत्।
पुष्पाञ्जलि कालिकायै मूलेनैवाऽर्पयेत् सकृत्।।२९।।

माहेश्वरी, चामुण्डा, कौमारी एवं अपराजिता, वाराही, नारसिंही ये समस्त सर्वाधिक भूषण धारण करनेवली देवी।।२०-२४।।

अपने-अपने अस्त्र-शस्त्रों से सम्पूर्ण दिशा और विदिशाओं में मेरी रक्षा करें। हे भैरवि! अत्यन्त आश्चर्यकारी इस दिव्य कवच का मैंने तुमसे वर्णन किया है।।२५।।

फलश्रुति—भैरवजी ने ब्रह्माजी से कहा—हे ब्रह्माजी! सम्पूर्ण महाविद्या समूह विग्रहरूप और मेरे द्वारा कहा गया त्रैलोक्य आकर्षणरूप 'श्रीजगन्मङ्गल' नामक कवच का विधि-विधान द्वारा सबसे पहले अपने गुरु का पूजन कर पाठ करें। सम्पूर्ण जीवनभर तीनों कालों में इस कवच का पाठ करें।।२६-२७।।

इस कवच का पचास बार पाठ करने से साधक तीनों लोकों पर विजय प्राप्त करता है तथा इस कवच के प्रभाव से तीनों लोकों को वो शोभित कर देता है। एक मास तक इसका पाठ करने से सम्पूर्ण सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं एवं साधक महाकवि बन जाता है। मूलमंत्र द्वारा कालिका

शतवर्षसहस्राणां पूजायाः फलमाप्नुयात्।
भूर्जे विलिखितं चैतत् स्वर्णस्थं धारयेद् यदि।।३०।।
विशाखायां दक्षबाहौ कण्ठे वा धारयेद् यदि।
त्रैलोक्यं मोहयेत् क्रोधात् त्रैलोक्यं चूर्णयेत् क्षणात्।।३१।।
स पुत्रवान् धनवान् श्रीमान् नानाविद्या-निधिर्भवेत्।
ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि तद्गात्रस्पर्शनात्ततः।।३२।।
नाशमायान्ति सर्वत्र कवचस्यास्य कीर्तनात्।
मृतवत्सा च या नारी वन्ध्या वा मृतपुत्रिणी।
कण्ठे वा वामबाहौ वा कवचस्यास्यधारणात्।
बह्वपत्या जीवतोका भवत्येव न संशयः।।३३।।
न देयं परशिष्येभ्यो ह्यभक्तेभ्यो विशेषतः।
शिष्येभ्यो भक्तियुक्तेभ्यो ह्यन्यथा मृत्युमाप्नुयात्।।३४।।

को एक बार पुष्पाञ्जलि प्रदत्त करने से सौ एवं हजार वर्ष पर्यन्त पूजा का फल प्राप्त होता है। यदि इस कवच को भोजपत्र पर लिखकर, स्वर्ण में मढ़वाकर, विशाखा नक्षत्र में दायीं भुजा या गले में धारण करने से साधक तीनों लोकों को मोहित कर लेता है और क्रोधित होने पर उसी क्षण तीनों लोकों को नष्ट कर देता है।।२८-३१।।

जो साधक इस कवच को धारण करता है, वह पुत्रयुक्त, धनयुक्त एवं श्रीमान् और अनेक विद्याओं का ज्ञाता होता है। उस साधक के शरीर स्पर्शमात्र से अत्यन्त भयंकर और अमोघ ब्रह्मास्त्रादि सभी शस्त्र नष्ट हो जाते हैं। इस कवच को कण्ठ या बाहु में धारण करनेवाली, बाँझ स्त्री या मरे हुए पुत्र को जन्म देनेवाली स्त्री भी बहुत-से पुत्रों को जन्म देती है। इस कवच को अपने दीक्षित शिष्य के अतिरिक्त अन्य के शिष्यों को तथा विशेषरूप से श्रद्धाभक्तिहीन, नास्तिक शिष्य को इसे प्रदान नहीं करना चाहिए। अर्थात् श्रद्धाभक्ति से युक्त शिष्य को ही इसे प्रदत्त करना चाहिए। क्योंकि इसके विपरीत आचरण से साधक की मृत्यु हो सकती है।।३२-३४।।

स्पर्द्धामुद्धूय कमला वाग्देवी मन्दिरे मुखे।
पौत्रान्तं स्थैर्यमास्थाय निवसत्येव निश्चितम्।।३५।।
इदं कवचमज्ञात्वा यो भजेद् घोरदक्षिणाम्।
शतलक्षं प्रजप्त्वाऽपि तस्य विद्या न सिद्ध्यति।।
सहस्रघातमाप्नोति सोऽचिरान् मृत्युमाप्नुयात्।।३६।।

।।काली-कवचं सम्पूर्णम्।।

लक्ष्मी, सरस्वती आपस में द्वेष रखने पर भी इस कवच को धारण करने से स्पर्धा को छोड़कर तीन पीढ़ी तक स्थिर हो, निःसन्देह रूप से साधक के पास (स्थिर भाव से) निवास करती हैं। इस कवच का सम्पूर्ण ज्ञान न रखनेवाला साधक घोर दक्षिण कालिका प्रयोग करता है तो उस साधक को एक करोड़ बार कालिका मन्त्रजप करने पर भी सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती और हजारों बार चोट-चपेट लगने से वह कष्ट प्राप्त करता है और अतिशीघ्र मृत्यु को प्राप्त होता है।।३५-३६।।

।। हिन्दी टीका सहित कालीकवच पूर्ण हुआ।।

श्रीकाली-अर्गलास्तोत्रम्

विनियोग

ॐ अस्य श्रीकालिकार्गलस्तोत्रस्य भैरव ऋषिरनुष्टुप् छन्दः श्रीकालिका देवता मम सर्वसिद्धिसाधने विनियोगः।

स्तोत्र

ॐ नमस्ते कालिके देवि आद्यबीजत्रयप्रिये।
वशमानय मे नित्यं सर्वेषां प्राणिनां सदा।। १ ।।
कूर्चयुग्मं ललाटे च स्थातु मे शववाहिनी।
सर्वसौभाग्यसिद्धिं च देहि दक्षिणकालिके।। २ ।।
भुवनेश्वरि बीजयुग्मं भ्रूयुगे मुण्डमालिनी।
कन्दर्परूपं मे देहि महाकालस्य गेहिनि।। ३ ।।
दक्षिणे कालिके नित्ये पितृकाननवासिनि।
नेत्रयुग्मं च मे देहि ज्योतिरालोकनं महत्।। ४ ।।
श्रवणे च पुनर्लज्जाबीजयुग्मं मनोहरम्।
महाश्रुतिधरत्वं च मे देहि मुक्तकुन्तले।। ५ ।।
ह्रीं ह्रीं बीजद्वयं देवि पातु नासापुटे मम।
देहि नाना विधिमह्यं सुगन्धिं त्वं दिगम्बरे।। ६ ।।
पुनस्त्रिबीजप्रथमं दन्तोष्ठरसनादिकम्।
गद्यपद्यमयीं वाणीं काव्यशास्त्राद्यलंकृताम्।। ७ ।।
अष्टादशपुराणानां स्मृतीनां घोरचण्डिके।
कविता सिद्धिलहरीं मम जिह्वां निवेशय।। ८ ।।
वह्निजाया महादेवि घण्टिकायां स्थिराभव।
देहि मे परमेशानि बुद्धिसिद्धिरसायनम्।। ९ ।।
तुर्याक्षरी चित्स्वरूपा या कालिका मन्त्रसिद्धिदा।
सा च तिष्ठतु हृत्पद्मे हृदयानन्दरूपिणी।।१०।।

विनियोग—श्रीकालिका अर्गलास्तोत्र के ऋषि भैरव हैं, अनुष्टुप छन्द है, कालिका देवता हैं तथा सम्पूर्ण सिद्धियों के साधन में इसका विनियोग है।

षडक्षरी महाकाली चण्डकाली शुचिस्मिता।
रक्तासिनी घोरदंष्ट्रा भुजयुग्मे सदाऽवतु।।११।।
सप्ताक्षरी महाकाली महाकालरतोद्यता।
स्तनयुग्मे शूर्पकर्णा नरमुण्डसुकुन्तला।।१२।।
तिष्ठ स्वजठरे देवि अष्टाक्षरी शुभप्रदा।
पुत्रपौत्रकलत्रादि सुहृन्मित्राणि देहि मे।।१३।।
दशाक्षरी महाकाली महाकालप्रिया सदा।
नाभौ तिष्ठतु कल्याणी श्मशानालयवासिनी।।१४।।
चतुर्दशार्णवा या च जयकाली सुलोचना।
लिङ्गमध्ये च तिष्ठस्व रेतस्विनी ममाङ्के।।१५।।
गुह्यमध्ये गुह्यकाली मम तिष्ठ कुलाङ्गने।
सर्वाङ्गे भद्रकाली च तिष्ठ मे परमात्मिके।।१६।।
कालि पादयुगे तिष्ठ मम सर्वमुखे शिवे।
कपालिनी च या शक्तिः खड्गमुण्डधरा शिवा।।१७।।
पादद्वयांगुलिष्वङ्गे तिष्ठस्व पापनाशिनि।
कुल्लादेवी मुक्तकेशी रोमकूपेषु वैष्णवी।।१८।।
तिष्ठतु उत्तमाङ्गे च कुरुकुल्ला महेश्वरी।
विरोधिनी विराधे च मम तिष्ठतु शंकरी।।१९।।
विप्रचित्तै महेशानि मुण्डधारिणि तिष्ठ माम्।
मार्गे दुर्मार्गगमने उग्रा तिष्ठतु सर्वदा।।२०।।
प्रभा दिक्षु विदिक्षु माम् दीप्तां दीप्तं करोतु माम्।
नीला शक्तिश्च पाताले घना चाकाशमण्डले।।२१।।
पातु शक्तिर्वलाका मे भुवं मे भुवनेश्वरी।
मात्रा मम कुले पातु मुद्रा तिष्ठतु मन्दिरे।।२२।।
मिता मे योगिनी या च तथा मित्रकुलप्रदा।
सा मे तिष्ठतु देवेशि पृथिव्यां दैत्यदारिणी।।२३।।
ब्राह्मी ब्रह्मकुले तिष्ठ मम सर्वार्थदायिनी।
नारायणी विष्णुमाया मोक्षद्वारे च तिष्ठ मे।।२४।।

माहेश्वरी वृषारूढा काशिकापुरवासिनी।
शिवतां देहि चामुण्डे पुत्रपौत्रादि चानघे।।२५।।
कौमारी च कुमाराणां रक्षार्थं तिष्ठ मे सदा।
अपराजिता विश्वरूपा जये तिष्ठ स्वभाविनी।।२६।।
वाराही वेदरूपा च सामवेदपरायणा।
नारसिंही नृसिंहस्य वक्षःस्थलनिवासिनी।।२७।।
सा मे तिष्ठतु देवेशि पृथिव्यां दैत्यदारिणी।
सर्वेषां स्थावरादीनां जङ्गमानां सुरेश्वरी।।२८।।
स्वेदजोद्भिज्जण्डजानां चराणां च भयादिकम्।
विनाश्याप्यभिमतिं च देहि दक्षिणकालिके।।२९।।
य इदं चार्गलं देवि यः पठेत्कालिकार्चने।
सर्वसिद्धिमवाप्नोति खेचरो जायते तु सः।।३०।।

।।इति श्रीकालिकार्गलास्तोत्रं समाप्तम्।।

श्रीकाली-कीलकम्

विनियोग

ॐ अस्य श्रीकालिकाकीलकस्य सदाशिव ऋषिरनुष्टुप् छन्दः श्रीदक्षिणकालिका देवता सर्वसिद्धिसाधने कीलकन्यासे जपे विनियोगः।

स्तोत्र

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि कीलकं सर्वकामदम्।
कालिकायाः परं तत्त्वं सत्यं सत्यं त्रिभिर्मम।।१।।
दुर्वासाश्च वसिष्ठश्च दत्तात्रेयो बृहस्पतिः।
सुरेशो धनदश्चैव अङ्गिराश्च भृगूद्वहः।।२।।
च्यवनः कार्तवीर्यश्च कश्यपोऽथ प्रजापतिः।
कीलकस्य प्रसादेन कीलक सर्वैश्वर्यमवाप्नुयुः।।३।।
ॐ कारं तु शिखाप्रान्ते लम्बिका स्थान उत्तमे।
सहस्रारे पङ्कजे तु क्रीं क्रीं क्रीं वाग्विलासिनी।।४।।
कूर्चबीजयुगं भाले नाभौ लज्जायुगं प्रिये।
दक्षिणे कालिका पातु स्वनासापुटयुग्मके।।५।।
हूंकारद्वन्द्वं गण्डे द्वे द्वे माघे श्रवणद्वये।
आद्यातृतीयं विन्यस्य उत्तराधरसम्पुटे।।६।।
स्वाहा दशनर्मध्ये तु सर्ववर्णन्यसेत् क्रमात्।
मुण्डमाला असिकरा काली सर्वार्थसिद्धिदा।।७।।
चतुरक्षरी महाविद्या क्रीं क्रीं हृदयपङ्कजे।
ॐ हूं ह्रीं क्रीं ततो हूं फट् स्वाहा च कण्ठकूपके।।८।।
अष्टांक्षरी कालिका या नाभौ विन्यस्य पार्वति।
क्रीं दक्षिणे कालिके क्रीं स्वाहान्ते च दशाक्षरी।।९।।

अब मैं समस्त कामनाओं को देने वाले कालिकाकीलक के बारे में बताता हूँ। यह देवी कालिका का परमतत्त्व है–इसे सत्य, सत्य और सत्य समझना चाहिये। महर्षि दुर्वासा, वसिष्ठ, दत्तात्रेय, बृहस्पति, इन्द्र, कुबेर, अंगिरा, भृगु, च्यवन, कार्तवीर्य, कश्यप तथा प्रजापति आदि ने इसी कीलक की कृपा से समस्त ऐश्वर्यों को प्राप्त किया है।

मम बाहु युगे तिष्ठ मम कुण्डलिकुण्डले।
हूं ह्रीं मे वह्निजाया च हूं विद्या तिष्ठ पृष्ठके।।१०।।
क्रीं हूं ह्रीं वक्षदेशे च दक्षिणे कालिके सदा।
क्रीं हूं ह्रीं वह्निजायाऽन्ते चतुर्दशाक्षरेश्वरी।।११।।
क्रीं हूं ह्रीं गुह्यदेशे मे एकाक्षरी च कालिका।
ह्रीं हूं फट् च महाकाली मूलाधारनिवासिनी।।१२।।
सर्वरोमाणि मे काली कराङ्गुल्यङ्कपालिनी।
कुल्ला कटिं कुरुकुल्ला तिष्ठ तिष्ठ सदा मम।।१३।।
विरोधिनी जानुयुग्मे विप्रचित्ता पदद्वये।
तिष्ठ मे च तथा चोग्रा पादमूले न्यसेत्क्रमात्।।१४।।
प्रभा तिष्ठतु पादाग्रे दीप्ता पादाङ्गुलीनपि।
नीली न्यसेद्विन्दुदेशे घना नादे च तिष्ठ मे।।१५।।
वलाका विन्दुमार्गे च न्यसेत्सर्वाङ्गसुन्दरी।
मम पातालके मात्रा तिष्ठ स्वकुलकायिके।।१६।।
मुद्रा तिष्ठ स्वमर्त्येमां मितास्वङ्गाकुलेषु च।
एता नृमुण्डमालास्त्रग्धारिण्यः खड्गपाणयः।।१७।।
तिष्ठन्तु मम गात्राणि सन्धिकूपानि सर्वशः।
ब्राह्मी च ब्रह्मरन्ध्रे तु तिष्ठस्व घटिका परा।।१८।।
नारायणी नेत्रयुगे मुखे माहेश्वरी तथा।
चामुण्डा श्रवणद्वन्द्वे कौमारी चिबुके शुभे।।१९।।
तथामुदरमध्ये तु तिष्ठ मे चापराजिता।
वाराही चास्थिसन्धौ च नारसिंही नृसिंहके।।२०।।
आयुधानि गृहीतानि तिष्ठस्वेतानि मे सदा।

फलश्रुति

इति ते कीलकं दिव्यं नित्यं यः कीलयेत्स्वकम्।।२१।।
कवचादौ महेशानि तस्य सिद्धिर्न संशयः।
श्मशाने प्रेतयोर्वापि प्रेतदर्शनतत्परः।।२२।।
यः पठेत्पाठयेद्वापि सर्वसिद्धीश्वरो भवेत्।

स वाग्मी धनवान्दक्षः सर्वाध्यक्षः कुलेश्वरः।।२३।।
पुत्रबान्धवसम्पन्नः समीरसदृशो बले।
न रोगवान् सदा धीरस्तापत्रयनिषूदनः।।२४।।
मुच्यते कालिका पायात् तृणराशिमिवानल।
न शत्रुभ्यो भयं तस्य दुर्गमेभ्यो न बाध्यते।।२५।।
यस्य देशे कीलकं तु धारणं सर्वदाम्बिके।
तस्य सर्वार्थसिद्धिः स्यात्सत्यं सत्यं वरानने।।२६।।
मन्त्राच्छतगुणं देवि कवचं यन्मयोदितम्।
तस्माच्छतगुणं चैव कीलकं सर्वकामदम्।।२७।।
तथा चाप्यसिता मन्त्रं नीलसारस्वते मनौ।
न सिध्यति वरारोहे कीलकार्गलके विना।।२८।।
विहीने कीलकार्गलके कालीकवचं यः पठेत्।
तस्य सर्वाणि मन्त्राणि स्तोत्राण्यसिद्धये प्रिये।।२९।।

।।इति श्रीकालिकाकीलकं समाप्तम्।।

कर्पूरस्तोत्रम्

ॐ अस्य श्रीकर्पूरस्तवराजस्य महाकाल ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीदक्षिणकालिका देवता, हलो बीजानि, स्वराः शक्तयः, अव्यक्तं कीलकं, श्रीदक्षिणकालिका-देवताप्रसादसिद्ध्यर्थं तत्तत्कामनासिद्धये वा विनियोगः।

कर्पूरं मध्यमा-ऽन्त्य-स्वर-पररहितं सेन्दुवामाक्षियुक्तं
बीजं ते मातरेतत्त्रिपुरहरवधु! त्रिष्कृतं ये जपन्ति।
तेषां गद्यानि पद्यानि च मुखकुहरादुल्लसन्त्येव वाचः
स्वच्छन्दं ध्वान्त-धाराधर-रुचिरुचिरे सर्वसिद्धिं गतानाम्।।१।।
ईशानः सेन्दुवाम-श्रवणपरिगतो बीजमन्यन् महेशि!
द्वन्द्वं ते मन्दचेता यदि जपति जनो वारमेकं कदाचित्।
जित्वा वाचामधीशं धनदमपि चिरं मोहयन्नंबुजाक्षी-
वृन्दं चन्द्रार्धचूडे प्रभवति स महाघोरशावावतंसे।।२।।

विनियोग—अपने दाहिने हाथ में जल लेकर ॐ अस्य से विनियोगः तक का उच्चारण करके उपरोक्त विनियोग को करके भूमि में जल छोड़ें।

हे माते! हे त्रिपुर हरवधु! हे काले मेघ के तुल्य काले वर्णवाली भगवति 'कपूर' शब्द के मध्य और अन्त्य व्यंजन (प और र) एवं उसमें लगे हुए स्वर-पकार के अकार और र के अकार से अलग करके अर्थात् 'क्र' शब्द के आगे अनुस्वार, वामाक्षी दीर्घ ईकार से युक्त कर 'क्रीं' इस मंत्र को जो (साधक) तीन बार जपते हैं, उनके मुख से अनायास ही गद्य और पद्य स्वयं निकलने लगता है, ऐसे (साधक) को अणिमादि सभी प्रकार की सिद्धि प्राप्त हो जाती है॥१॥ हे महेशि! हे चन्द्रार्धचूडे! हे अतिभयानक! बालक के शव का अपने कानों में कर्णभूषण धारण करने वाली, हे भगवति! ईशान-हकार उसमें बिन्दु और वाम श्रवण या ॐ लगाकर अथवा 'हूं हूं' इसका दो बार उच्चारण कर या 'हूं हूं' इस मंत्र को यदि मूर्ख भी एक बार जपता है, तो वह शास्त्रार्थ करने में बृहस्पति के तुल्य होता है। वह धन में कुबेर को भी जीतने में सक्षम हो जाता है। ऐसा साधक समस्त सुन्दरियों को आकर्षित कर लेने में पूर्णतः समर्थवान् होता है॥२॥

ईशो वैश्वानरस्थः शशधरविलसद् वामनेत्रेण युक्तो
बीजं ते द्वन्द्वमन्यद् विगलित-चिकुरे कालिके ये जपन्ति।
द्वेष्टारं घ्नन्ति ते च त्रिभुवनमभितो वश्यभावं नयन्ति
सृक्क-द्वन्द्वास्त्र-धाराद्वयधर-वदने दक्षिणं कालिकेति।।३।।
ऊर्ध्वं वामे कृपाणं करकमलतले छिन्नमुण्डं ततोऽधः
सव्येऽभीतिं वरं च त्रिजगदघहरे दक्षिणे कालिके च।
जप्त्वैतन् नाम ये वा तव विमलतनुं भावयन्त्येतदम्ब!
तेषामष्टौ करस्थाः प्रकिटतरदने सिद्धयस्त्र्यम्बकस्य।।४।।
वर्गाद्यं वह्निसंस्थं विधुरतिललितं तत् त्रयं कूर्चयुग्मं
लज्जाद्वन्द्वं च पश्चात् स्मितमुखि तदधरोष्ठद्वयं योजयित्वा।

'ह्रीं ह्रीं' इस बीज मंत्र का दो बार अर्थात् 'ह्रीं ह्रीं' का जो (साधक) जप कर लेते हैं, वे शत्रु का वध कर सकते हैं तथा विस्त्रस्त केशों से युक्त! हे ओष्ठ प्रान्तों में निरवच्छिन्न खून की दो धाराओं को धारण करने वाले मुख से युक्त हे दक्षिणकालिके माते! अधिक क्या कहें, 'ह्रीं' इस मंत्र का जप करने वाले पुरुष सम्पूर्ण त्रिलोकी को अपने वशीभूत कर लेने में समर्थ होते हैं।।३।।

हे विशाल मुखवाली! हे तीनों लोकों के पाप को नष्ट करनेवाली! हे माते! ऊपर के बायें हाथ में कृपाण और नीचे के बायें हाथ में छिन्न मुण्ड और ऊपर के दायें हाथ में अभय तथा नीचे के दायें हाथ में वरमुद्रा धारण किये हुए, आपके इस रूप का जो साधक ध्यान करके 'दक्षिणकालिके' इस मंत्ररूपी जप को करते हैं, वे भगवान् शंकर की आठों अणिमादि सिद्धियों को प्राप्त करने में (पूर्णतः) समर्थवान् हो जाते हैं।।४।।

हे मन्द-मन्द हँसनेवाली! हे शिवप्रिये! वर्ग का आदि अक्षर 'ककार' उसे वह्नि 'रेफ' से युक्त कर, उस पर विधुरतिललितं 'ईकार' और 'अनुस्वार' की मात्रा लगाकर 'क्रीं' इस मंत्र का तीन बार उच्चारण करने के पश्चात् कूर्चयुग्म 'हूंकारद्वय' और लज्जाद्वन्द्व 'ह्रींकार' के उपरान्त दो 'ठ' उसके उपरान्त स्वाहा का समावेश कर अर्थात् 'क्री क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं ठम् ठम् स्वाहा'।

मातर्ये त्वां जपन्ति स्मरहरमहिले भावयन्तः स्वरूपं
ते लक्ष्मी-लास्यलीला-कमलदलदृशः कामरूपा भवन्ति।।५।।
प्रत्येकं वा द्वयं वा त्रयमपि च परं बीजमत्यन्तगुह्यं
त्वन्नाम्ना योजयित्वा सकलमपि सदा भावयन्तो जपन्ति।
तेषां नेत्रारविन्दे विहरति कमला वक्त्रशुभ्रांशुविम्बे
वाग्देवी देवि! मुण्ड-स्रगतिशय-लसत्-कण्ठि पीनस्तनाढ्ये।।६।।
गतासूनां बाहु - प्रकरकृतकाञ्ची - परिलसन्
नितम्बां दिग्वस्त्रां त्रिभुवनविधात्रीं त्रिनयनाम्।
श्मशानस्थे तल्पे शवहृदि महाकालसुरत-
प्रसक्तां त्वां ध्यायन् जननि जडचेता अपि कविः।।७।।

इस मंत्र का जो (साधक) जप करते हुए आपका ध्यान करते हैं, वे अपनी दृष्टि के देखने मात्र से लक्ष्मी को जिस स्थान पर चाहें नृत्य करवा सकते हैं। ज्यादा क्या कहें ऐसे साधक इच्छानुसार रूप धारण करने में पूर्णतः समर्थवान् हो जाते हैं।।५।।

हे (शव) मुण्डमाला से विभूषित कण्ठवाली! हे पीन स्तनों से युक्त भगवति कालिके! उपरोक्त कहे गए 'ॐ क्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं' इन सात अक्षर वाले बीज मंत्र के प्रथम भाग मात्र 'ॐ क्रीं क्रीं क्रीं' या दो भाग 'क्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूँ' या तीन भाग ॐ क्रीं क्रीं क्रीं हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं इन तीनों भागों के साथ आपके नाम (दक्षिणकालिके स्वाहा) लगाकर जो साधक इस परम गुह्य मंत्र का जप करते हैं, उनके नेत्रों के अन्दर सदैव लक्ष्मी निवास करती है और चन्द्रमा के मण्डल के तुल्य उनके मुख में वाग्देवी (सरस्वती) सदैव निवास करती है।।६।।

हे माते! यदि श्मशान के शय्या पर मुर्दे के हाथों की बनी हुई कांची को नितम्ब-स्थल पर धारण करनेवाली बिना वस्त्र के, तीनों लोकों की सृष्टि करने में समर्थ, तीन नेत्रों से युक्त एवं शव के हृदय पर महाकाल (शिव) के साथ आपके इस रूप का जड़ प्रकृति का अतिमूर्ख (प्राणी) भी ध्यान करे तो वह (निःसन्देह) महाकवि हो जाता है।।७।।

शिवाभिर्घोराभिः शवनिवह-मुण्डास्थिनिकरैः
परं सङ्कीर्णायां प्रकटितचितायां हरवधूम्।
प्रविष्टां सन्तुष्टामुपरिसुरतेनातियुवतीं
सदा त्वां ध्यायन्ति क्वचिदपि न तेषां परिभवः।। ८ ।।
वदामस्ते किं वा जननि! वयमुच्चैर्जडधियो
न धाता नापीशो हरिरपि न ते वेत्ति परमम्।
तथापि त्वद्भक्तिर्मुखरयति चास्माननमिते
तदेतत् क्षन्तव्यं न खलु पशुरोषः समुचितः।। ९ ।।
समन्तादापीन - स्तन - जघन - दृग्यौवनवती-
रतासक्तो नक्तं यदि जपति भक्तस्तव मनुम्।
विवासास्त्वां ध्यायन् गलित-चिकुरस्तस्य वशगाः
समस्ताः सिद्धौघा भुवि चिरतरं जीवति कविः।।१०।।

हे माते! अति भयंकर श्रृगालियों से युक्त एवं शवों के मुण्ड तथा हड्डियों से युक्त, श्मशान में जलती हुई चिता के बीच में प्रविष्ट हुई शान्त हृदय वाली, विपरीत रति से सन्तुष्ट होने वाली, युवति रूप से सम्पन्न आपके रूप का जो लोग (निरन्तर) ध्यान करते हैं, उनका पराभव कभी नहीं होता है।।८।।

हे माते! चतुर्मुख ब्रह्मा, भगवान् विष्णु और शंकर भी आपके जिस परम तत्त्व को नहीं जानते हैं, फिर आपके उस तत्त्व को मुझ-जैसा महामन्द बुद्धिवाला कैसे जान सकता है? अतः हे भगवति! आपकी भक्ति ही मुझे आपकी प्रार्थना के लिये विवश करती है, इसलिए मेरे इस अपराध को क्षमा प्रदत्त करें, क्योंकि मेरे जैसे (मूर्ख) मानव पर आपका क्रोध करना ठीक नहीं है।।९।।

हे भगवति! रात्रि के समय बिना वस्त्र के और केशों को बिखेर कर जो भक्त पीनस्तन और पीनजघनयुक्त युवती (स्त्री) से रति क्रिया करता हुआ, आपका ध्यान कर आपके मंत्र का जप करता है तो उसके वश में सभी सिद्धियाँ हो जाती हैं, वह कवि और दीर्घ आयु वाला होता है।।१०।।

समाः स्वस्थीभूतां जपति विपरीतां यदि सदा
विचिन्त्य त्वां व्यायन्नतिशय-महाकाल-सुरताम्।
तदा तस्य क्षोणीतल-विहरमाणस्य विदुषः
कराम्भोजे वश्या हरवधु महासिद्धिनिवहाः।।११।।
प्रसूते संसारं जननि! जगतीं पालयति च
समस्तं क्षित्यादि प्रलयसमये संहरति च।
अतस्त्वां धाताऽपि त्रिभुवनपतिः श्रीपतिरपि
महेशोऽपि प्रायः सकलमपि किं स्तौमि भवतीम्।।१२।।
अनेके सेवन्ते भवदधिकगीर्वाणनिवहान्
विमूढास्ते मातः! किमपि नहि जानन्ति परमम्।
समाराध्यामाद्यां हरि-हर-विरञ्च्यादिविबुधैः
प्रपन्नोऽस्मि स्वैरं रतिरस-महानन्द-निरताम्।।१३।।

हे शिवप्रिये! महाकाल से विपरीत रति में युक्त आपके रूप का ध्यान करता हुआ, जो भक्त आपके मंत्र का सदैव जप करता है, सम्पूर्ण पृथ्वीलोक में विहार करनेवाले होते हैं। उस विद्वान् भक्त के हाथ में सम्पूर्ण महासिद्धियाँ वशीभूत हो जाती हैं। इससे अधिक और क्या कहा जाय?।।११।।

हे माते! सम्पूर्ण संसार को आप उत्पन्न करती हैं, पालन और संहार भी करती हैं। अतः ब्रह्मा तीनों लोक के पति, विष्णु और शिव भी सदैव आपकी ही प्रार्थना करते हैं। जब ये तीनों देव आपके एक-एक अंश की प्रार्थना करते हैं, फिर मैं सर्वशक्ति सम्पन्न आपकी किस प्रकार से प्रार्थना करने में समर्थ हो सकता हूँ।।१२।।

हे माते! बहुत से लोग देवताओं को आपसे अधिक बलशाली जानकर उनकी सेवा करते हैं, ऐसे लोग अति मूर्ख हैं। क्योंकि वे कुछ नहीं जानते, वे दुर्बुद्धि भी हैं। किन्तु मैं तो ब्रह्मा, विष्णु और शिव आदि देवताओं से समाराधन के योग्य आदि और रति रसरूप अति आनन्द में युक्त हो आपकी शरण में अपनी इच्छा से आया हूँ।।१३।।

धरित्री कीलालं शुचिरपि समीरोऽपि गगनं
त्वमेका कल्याणी गिरिशरमणी कालि! सकलम्।
स्तुतिः का ते मातर्निजकरुणया मामगतिकं
प्रसन्ना त्वं भूया भवमनु न भूयान्मम जनुः।। १४।।

श्मशानस्थः स्वस्थो गलितचिकुरो दिक्पटधरः
सहस्त्रं त्वर्काणां निजगलितवीर्येण कुसुमम्।
जपंस्तत् प्रत्येकं मनुमपि तव ध्याननिरतो
महाकलि! स्वैरं स भवति धरित्री परिवृढः।।१५।।

गृहे संमार्जन्या परिगलितवीर्यं हि चिकुरं
समूलं मध्याह्ने वितरति चितायां कुजदिने।
समुच्चार्य प्रेम्णा मनुमपि सकृत् कालि! सततं
गजारूढो याति क्षितिपरिवृढः सत्कविवरः।।१६।।

हे माते! आप पृथ्वी, जल, अग्नि, पवन और आकाशरूप वाली हैं। अत: हे गिरिशरमणि! हे कालि! संसार के सभी पदार्थों में आपका समावेश है। मैं आपकी स्तुति करने में कैसे समर्थ हो सकता हूँ? हे माते! अत: मुझपर कृपा करके आप प्रसन्न हो जायँ। जिससे मेरा इस संसार में फिर से जन्म न हो॥१४॥

हे माते! श्मशान भूमि में निवास करता हुआ, बिना वस्त्र के और अपने बालों को बिखेर कर जो भक्त शुद्ध हृदय से अपने वीर्य से युक्त मदार पुष्पों से आपका ध्यान करता हुआ, आपके लिए प्रत्येक पुष्प मन्त्र द्वारा एक हजार आहुति अग्नि में प्रदत्त करता है, वह इस पृथ्वीलोक का राजा बन जाता है॥१५॥

हे कालि! मंगलवार के दिन जो साधक जड़ से अपने केशों को उखाड़कर सम्मार्जनीय (झाड़ू) के साथ अपने वीर्य से उसे मिश्रित कर चिता में आपके मन्त्र का उच्चारण करता हुआ प्रेम के साथ एक बार भी हवन कर देता है, तो ऐसा साधक मदमस्त हाथी पर सवार हो जाता है। इसके साथ ही साथ वह राजा होते हुए अच्छा कवि भी बन जाता है॥१६॥

स्वपुष्पैराकीर्णं कुसुम-धनुषो मन्दिरमहो
पुरो ध्यायन् ध्यायन् यदि जपति भक्तस्तव मनुम्।
स गन्धर्वश्रेणीपतिरपि कवित्वामृतनदी-
नदीनः पर्यन्ते परमपदलीनः प्रभवति।।१७।।
त्रिपञ्चारे पीठे शवशिवहृदि स्मेरवदनां
महाकालेनोच्चैर्मदनरस - लावण्य - निरताम्।
समासक्तो नक्तं स्वयमपि रतानन्दनिरतो
जनो यो ध्यायेत् त्वामपि जननि! स स्यात् स्मरहरः।।१८।।
सलोमास्थि स्वैरं पललमपि मार्जारमसिते!
परञ्चौष्ट्र मेषं नरमहिषयोश्छागमपि वा।
बलिं ते पूजायामपि वितरतां मर्त्यवसतां
सतां सिद्धिः सर्वा प्रतिपदमपूर्वा प्रभवति।।१९।।
वशी लक्षं मन्त्रं प्रजपति हविष्याशनरतो
दिवा मातर्युष्मच्चरण-कमलध्याननिरतः।

जो साधक ऋतु से युक्त योनि का ध्यान करता हुआ भक्तिभाव से आपके मन्त्र का जप करता है, वह गायन कला में गन्धर्वों का स्वामी हो जाता है और कविता रूप अमृत नदियों का वह सागर के तुल्य पति बन जाता है। इसके साथ ही साथ मृत्यु के समय वह भगवती महाकाली के अत्यन्त परमपद को प्राप्त करता है।।१७।।

हे माते! पन्द्रह कोण के पीठ में शवरूपी शिव के हृदय पर महाकाल के साथ रतिक्रिया में युक्त एवं मन्द मन्द हँसी से युक्त मुखवाली आपके रूप का ध्यान स्वयं एकाग्रचित्त से जो भक्त रात्रि में स्वयं रतिक्रिया में आसक्त होकर करते हैं, ऐसे भक्त साक्षात् शिव हो जाते हैं।।१८।।

हे असिते! आपकी पूजा में मार्जार, ऊँट, भेंड़ा, मनुष्य, महिष और छाग के लोम और हड्डियों के साथ मांस की बलि, अपनी इच्छा से प्रदत्त करनेवाले मनुष्यों को प्रत्येक दिन अपूर्व सिद्धियों की प्राप्ति होती रहती है।।१९।।

हे माते! जो साधक खीर का भोजन कर दिन में आपके चरण-कमलों का ध्यान करता हुआ आपके मंत्र का एक लाख जप करता है और

परं नक्तं नग्नो निधुवनविनोदेन च मनुं
जपेल्लक्षं स स्यात् स्मरहरसमानः क्षितितले।।२०।।
इदं स्तोत्रं मातस्तव मनुसमुद्धारणमनुः
स्वरूपाख्यं पादाम्बुज-युगल-पूजाविधियुतम्।
निशार्धे वा पूजासमयमधि वा यस्तु पठति
प्रलापस्तस्याऽपि प्रसरति कवित्वामृतरसः।।२१।।
कुरङ्गाक्षीवृन्दं तमनुसरति प्रेमतरलं
वशस्तस्य क्षोणीपतिरपि कुबेरप्रतिनिधिः।
रिपुः कारागारं कलयति च तं केलिकलया
चिरं जीवन्मुक्तः प्रभवति स भक्तः प्रतिजनुः।।२२।।

।। महाकालप्रणीतं कर्पूरस्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

रात्रि के समय वस्त्ररहित हो रतिक्रीड़ा में आसक्त रहते हुए आपके मंत्र का एक लाख जप करता है, ऐसा साधक इस पृथ्वीलोक में निश्चय ही भगवान् शिव के तुल्य योगीश्वर हो जाता है।।२०।।

हे माते! जो साधक मन्त्रोद्धार पूर्वक आपके पवित्र चरणों की सविधि पूजा एवं ध्यान करते हुए इस स्वरूपाख्य नामक स्तोत्र का पाठ अर्द्धरात्रि में या पूजा करते समय करते हैं, उनके मुखारविन्द से निकला हुआ अनर्थक प्रलाप भी कविता के रूप में अमृतरस से परिपूर्ण होता है।।२१।।

हे माते! इस स्तोत्र का पाठ करनेवाले साधक के पीछे-पीछे तरुणी वृन्दों का समूह प्रेमरस से उन्मत्त होकर चलता है। कुबेर के सदृश धनी राजा भी उसके वशीभूत हो जाते हैं एवं उसके शत्रु भी कारागार में अश्रुपात करते हैं। ऐसा साधक केलिकला से परिपूर्ण होकर बहुत कालपर्यन्त जीवित रहता है और जीता हुआ भी वह जीवनमुक्त हो जाता है।।२२।।

।। महाकालप्रणीत हिन्दी टीका युक्त कर्पूरस्तोत्र पूर्ण हुआ।।

काली-स्तोत्रम्

प्राग्-देहस्थो यदाऽहं तव चरणयुगं नाश्रितो नाऽर्चितोऽहं
तेनाद्याकीर्तिवर्गै-र्जठरजदहनैर्बाध्यमानो बलिष्ठैः।
क्षिप्त्वा जन्मान्तरान्नः पुनरिह भविता क्वाश्रयः क्वाऽपि सेवा
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले।।१।।
बाल्ये बालाऽभिलाषै-र्जडित-जडमति-र्बाललीलाप्रसक्तो
न त्वां जानामि मातः! कलिकलुषहरां भोग-मोक्षप्रदात्रीम्।
नाचारो नैव पूजा न च यजनकथा न स्मृतिर्नैव सेवा
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले।।२।।
प्राप्तोऽहं यौवनं चेद् विषधरसदृशैरिन्द्रियैर्दृष्टगात्रो
नष्टप्रज्ञः परस्त्री-परधन-हरणे सर्वदा साऽभिलाषः।
त्वत्पादाम्भोजयुग्मं क्षणमपि मनसा न स्मृतोऽहं कदापि
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले।।३।।

हे माते! इसके पहले जब मैं पूर्वजन्म में था, तब मैंने आपके दोनों चरण-कमलों का आश्रय प्राप्त नहीं किया, और आपका पूजनादि भी नहीं किया, इसी कारणवश मैं नौ मास पर्यन्त माता के पेट की भयंकर अग्नि में दग्ध हुआ था। फिर अन्य जन्म धारण करने पर फिर आपकी सेवा, अर्चना आदि मैं कर सकता हूँ अथवा नहीं। इसलिए प्रकटितवदन, कामरूप, भयंकरकालिके! मेरे इस अपराध को आप क्षमा करें।।१।। बाल्यकाल में बालस्वभाव से युक्त होने के कारण मैं मूर्ख सदैव बालकों की क्रीड़ा में लगा रहा। हे माते! मैंने कलियुग के पाप को नष्ट करनेवाली भोग एवं मोक्ष प्रदत्त करनेवाली आपके स्वरूप को पहचाना नहीं। इसलिए विधि-विधान से पूजन, यज्ञ और कथा तथा आपका स्मरण और सेवा भी कभी नहीं की। इसलिए हे माते! प्रकटितवदन, कामरूप, विकरालकालिके! मेरे इस अपराध को आप क्षमा प्रदान करें।।२।। हे माते! जब मैंने युवावस्था में प्रवेश किया, तब भयंकर सर्प के तुल्य इन्द्रियादिकों के द्वारा स्वयं अपना शरीर डँसा दिया; क्योंकि मेरी मति नष्ट हो गई थी और मैं अन्य की स्त्री एवं दूसरे के धन को प्राप्त करने में सदैव लगा रहता था। यही कारण है कि मैंने आपके दोनों चरण-कमलों का एकक्षण भी हृदय से स्मरण नहीं किया। इसलिए हे जननि! प्रकटितवदन, कामरूप, भयंकरकालिके! आप मेरे इस अपराध को क्षमा प्रदान करें।।३।।

प्रौढा भिक्षाभिलाषी सुत-दुहितृ-कलत्रार्थमन्नादिचेष्टः
क्व प्राप्स्ये कुत्र यामीत्यनुदिनमनिशं चिन्तया भग्नदेहः।
नो ते ध्यानं न चास्था न च भजनविधिर्नामसंकीर्तनं वा
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले।।४।।
वृद्धत्वे बुद्धिहीनः कृशविवशतनुः श्वास-कासातिसारैः
कर्मानर्होऽक्षिहीनः प्रगलितदशनः क्षुत्पिपासाभिभूतः।
पश्चात्तापेन दग्धो मरणमनुदिनं ध्येयमात्रं न चाऽन्यत्
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले।।५।।
कृत्वा स्नानं दिनादौ क्वचिदपि सलिलं नो कृतं नैव पुष्पं
ते नैवेद्यादिकं च क्वचिदपि न कृतं नाऽपि भावो न भक्तिः।
न न्यासो नैव पूजा न च गुणकथनं नाऽपि चाऽर्चा कृता ते
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले।।६।।

जिस समय मैंने प्रौढ़ावस्था में प्रवेश किया, उस समय पुत्र, कन्या और पत्नी के लिये अन्न, द्रव्यादि को प्राप्त करने में लगा रहा। कैसे धन प्राप्त करूँ और कहाँ जाऊँ? इस प्रकार के प्रतिदिन की चिन्ता से मेरा शरीर क्षीण हो गया। इतना कष्ट पाने पर भी मैंने न तो आपका ध्यान किया, न आपमें आस्था रक्खी और न ही आपका भजन-कीर्तन किया। इसलिए हे माता कालिके! मेरे इस अपराध को आप क्षमा प्रदान करें॥४॥ जिस समय मुझे वृद्धावस्था प्राप्त हुई, उस समय मैं बुद्धिहीन, शक्तिहीन और कृश तनु, श्वास कास रोग से ग्रसित होकर शुभकर्म करने में अयोग्य हो गया, मैं नेत्रहीन, दन्तहीन, सदैव भूख-प्यास से पीड़ित पश्चात्ताप से दुःखी हमेशा अपनी मृत्यु की कामना करने वाला हुआ। इसलिए अतिभयंकररूप को धारण करनेवाली माता कालिके आप मेरे इस अपराध को क्षमा प्रदान करें॥५॥ प्रातःकाल स्नानादि क्रिया से निवृत्त होने के पश्चात् भी मैंने कभी भी आपको स्नान, पुष्प, नैवेद्य आदि से आपकी भाव-भक्ति नहीं की, न ही मैंने हृदयादिन्यास, पूजन, अर्चन और आपका गुणानुवाद भी नहीं किया। इसलिए हे माता कालिके! मेरे इस अपराध को आप क्षमा प्रदान करें॥६॥

जानामि त्वां न चाऽहं भव-भयहरणीं सर्वसिद्धिप्रदात्रीं
नित्यानन्दोदयाढ्यां त्रितयगुणमयीं नित्यशुद्धोदयाढ्याम्।
मिथ्याकर्माभिलाषैरनुदिनमभितः पीडितो दुःखसङ्घैः
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले।।७।।
कालाभ्रां श्यामलाङ्गीं विगलितचिकुरां खड्गमुण्डाभिरामां
त्रासत्राणेष्टदात्रीं कुणपगणशिरोमालिनीं दीर्घनेत्राम्।
संसारस्यैकसारं भवजननहरां भावितो भावनाभिः
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले।।८।।
ब्रह्मा विष्णुस्तथेशः परिणमति सदा त्वत्पदाम्भोजयुग्मं
भाग्याभावान्न चाऽहं भवजननि भवत्पादयुग्मं भजामि।
नित्यं लोभ-प्रलोभैः कृतवशमतिः कामुकस्त्वा प्रयाचे
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले।।९।।

प्रत्येक दिन चारों ओर अनेक दु:खों में पीड़ित, झूठे कर्म में प्रवृत्त, मैंने संसार के भयपूर्ण नष्ट करनेवाली, सभी अणिमादि सिद्धि को प्रदान करने वाली, नित्य आनंद देनेवाली, सत्त्व, रज, तमगुणरूपा, त्रिगुणात्मिका मैंने आपको नहीं जाना। अत: हे माताकालिके! मेरे इस अपराध को क्षमा प्रदान करें।।७।। काले रंग के बादलों के तुल्य, श्यामाङ्गी, बिखरे केशोंवाली खड्ग मुण्ड से सुशोभित, भयंकर कष्ट से रक्षा करनेवाली, अपने माथे पर कुणप धारण करनेवाली, लम्बे नेत्रों से युक्त, संसार की एकमात्र सारभूता, मोक्ष प्रदत्त करनेवाली, केवल भावनामात्र से ही प्रसन्न होनेवाली, हे माता कालि! आप मेरे इस अपराध को क्षमा प्रदान करें।।८।। ब्रह्मा, विष्णु, शिव (ये तीनों देवता) आपके दोनों चरण-कमल की निरन्तर सेवा करते रहते हैं। हे भवजननि! भाग्यहीन होने के कारण मैं आपके चरण-कमल की सेवा भी न कर सका। क्योंकि मैं अति कामुक और काम, क्रोध, लोभादि के वश में रहनेवाला था। इसलिए मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि हे माते! आप मेरे इस अपराध को क्षमा प्रदान करें।।९।।

रागद्वेषैः प्रमत्तः कलुषयुततनुः कामनाभोगलुब्धः
कार्याऽकार्याविचारी कुलमतिरहितः कौलसङ्घैर्विहीनः।
क्व ध्यानं ते क्व चाऽर्चा क्व च मनु जपन्नैव किञ्चित् कृतोऽहं
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले।।१०।।
रोगी दुःखी दरिद्रः परवशकृपणः पांशुलः पापचेता
निद्रालस्यप्रसक्तः सुजठरभरणे व्याकुलः कल्पितात्मा।
किं ते पूजाविधानं त्वयि क्व च नुमतिः क्वानुरागः क्व चास्था
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले।।११।।
मिथ्याव्यामोहरागैः परिवृतमनसः क्लेशसङ्घान्वितस्य
क्षुन्निद्रौघान्वितस्य स्मरणविरहिणः पापकर्मप्रवृत्तेः।
दारिद्रस्य क्व धर्मः क्व च जननि रुचिः क्व स्थितिः साधुसङ्गैः
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले।।१२।।

मैं राग-द्वेष के वशीभूत, पापी, सदैव कामना के भोग से ग्रसित, अनभिज्ञ, अकुलीन, अपने कुटुम्ब वर्ग से रहित हूँ। इसलिए मैंने आपका ध्यान, पूजन, जप आदि नहीं किया। अतः हे माते! आप मेरे इस अपराध को क्षमा प्रदान करें।।१०।।

मैं रोगों से ग्रसित, दुःखी, दरिद्र, पराधीन, व्यभिचार में आसक्त, पापकर्म को करनेवाला, निद्रा एवं आलस्य से युक्त था। एकमात्र अपना पेट भरने में ही लगा रहा। इसलिए मेरी बुद्धि आपके पूजन में आसक्त नहीं हुई, न ही आपके प्रति प्रेम, अनुराग एवं आस्था ही रही। इसलिए हे माता कालिके! मेरे इस अपराध को क्षमा प्रदान करें।।११।।

झूठ बोलना, व्यामोहादि राग से युक्त चित्तवाले, क्लेशसमूह से ग्रसित, भूख, निद्रा से पीड़ित, आपके स्मरण में हीन, पापकर्म में निरन्तर प्रवृत्त, हे जननि! ऐसे मुझ दरिद्र का न तो कोई धर्म है, न ही आपमें प्रेम और न ही अच्छे व्यक्तियों की संगति प्राप्त हुई है। इसलिए हे माता कालिके! आप मेरे इस अपराध को क्षमा करें।।१२।।

मातस्तातस्य देहाज्जननि जठरगः संस्थितस्त्वद्वशेऽहं
त्वं हर्त्री कारयित्री करणगुणमयी कर्महेतुस्वरूपा।
त्वं बुद्धिश्चित्तसंस्थाऽप्यहमतिभवती सर्वमेतत् क्षमस्व
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले।।१३।।
त्वं भूमिस्त्वं जलं च त्वमसि हुतवहस्त्वं जगद्वायुरूपा
त्वं चाऽऽकाशं मनश्च प्रकृतिरसि महत्पूर्विका पूर्वपूर्वा।
आत्मा त्वं चाऽसि मातः! परमसि भवती त्वत्परं नैव किञ्चित्
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले।।१४।।
त्वं काली त्वं च तारा त्वमसि गिरिसुता सुन्दरी भैरवी त्वं
त्वं दुर्गा छिन्नमस्ता त्वमसि च भुवना त्वं लक्ष्मीः शिवा त्वम्।
धूमा मातङ्गिनी त्वं त्वमसि च बगला मङ्गलादिस्तवाख्या
क्षन्तव्यो मेऽपराधः प्रकटितवदने कामरूपे कराले।।१५।।

हे माते! पिता के देह द्वारा माताश्री के गर्भ में स्थित होने के कारण मैं आपके अधीन हूँ; क्योंकि आप ही संसार की हर्ता, उत्पादयित्री, त्रिगुणात्मिका, कर्महेतु रूपा हैं। क्योंकि आपही मेरी बुद्धि एवं हृदय में व्याप्त हैं। फिर भी मैं आपको पहचान न सका। इसलिए हे माता कालिके! आप मेरे इस अपराध को क्षमा प्रदान करें।।१३।।

आप ही पृथ्वी, जल, अग्नि, संसार, पवन, आकाश, मन, महाप्रकृतिरूप, भूमि आदि प्रकृतिपर्यन्त पूर्व-पूर्वक कर्मानुसार हैं। हे माते! आप ही इस सम्पूर्ण चराचर की आत्मा हैं और सबसे अलग हैं, अर्थात् आपसे कुछ भी परे नहीं है। इसलिए हे महाकालि! आप मेरे इस अपराध को क्षमा प्रदान करें।।१४।।

हे माता कालि! काली, तारा, पार्वती, सुंदरी, भैरवी, दुर्गा, छिन्नमस्ता, भुवनेश्वरी, कमलात्मिका (लक्ष्मी), शिवा, धूमा, मातंगी, कमला और मंगला आदि के नामों से (आप) विख्यात हैं। इस प्रकार की हे माता! आप मेरे सम्पूर्ण अपराधों को क्षमा प्रदान करें।। १५।।

फलश्रुतिः

स्तोत्रेणाऽनेन देवीं परिणमति जनो यः सदा भक्तियुक्तो
दुष्कृत्या दुर्गसङ्घं परितरति शतं विघ्नता नाशमेति।
नाधिर्व्याधिः कदाचिद् भवति यदि पुनः सर्वदा सापराधः
सर्वं तत्कामरूपे त्रिभुवनजननि क्षामये पुत्रबुद्ध्या।।१६।।
ज्ञाता वक्ता कवीशो भवति धनपतिर्दानशीलो दयात्मा
निःपापी निःकलङ्की कुलपतिकुशलः सत्यवाग् धार्मिकश्च।
नित्यानन्दो दयाढ्यः पशुगणविमुखः सत्पथाचारशीलः
संसाराब्धिं सुखेन प्रतरति गिरिजापाद-युग्मावलम्बात्।।१७।।

।। काली-स्तोत्रं समाप्तम्।।

फलश्रुति—जो साधक श्रद्धा एवं भक्तिपूर्वक काली के इस स्तोत्र का सदैव पाठ करते हैं, उनके सम्पूर्ण दुष्कर्म और सैकड़ों विघ्न अपने-आप नष्ट हो जाते हैं। इसका पाठ करनेवाले साधक को आधि-व्याधि कभी नहीं आती है। वह साधक सदैव अपराधी होने पर भी हे कामरूपे! हे तीनों लोकों को जन्म देनेवाली माते! इसे अपना पुत्र जानकर उस साधक के सभी त्रिविध ताप-पाप आदि को नष्ट करें।।१६।।

इस स्तोत्र के जानने वाले साधक, ज्ञानी, बोलने में कुशल, कविता करने में कुशल, दयालु, दानी, धन के स्वामी, पाप और कलंक से रहित, सत्य बोलनेवाले, धर्म पर चलनेवाले, अपने कुल की रक्षा करने में कुशल, नित्यानंदरूप, दयालु, पशु-बुद्धि से रहित, अच्छे मार्ग का आश्रय लेने वाले होते हैं। जो साधकगण पार्वती के चरण-कमल का सेवन करते हैं, वे इस संसाररूपी सागर को सहसा ही सुखपूर्वक पार कर लेते हैं।।१७।।

।। हिन्दी टीकायुक्त कालीस्तोत्र समाप्त हुआ।।

कालिका-कवचम्

कैलास-शिखरासीनं देव-देवं जगद्गुरुम्।
शङ्करं परिपप्रच्छ पार्वती परमेश्वरम्।।१।।

पार्वती उवाच

भगवन् देवदेवेश! देवानां भोगद प्रभो!।
प्रब्रूहि मे महादेव! गोप्यं चेद् यदि हे प्रभो!।।२।।
शत्रूणां येन नाशः स्यादात्मनो रक्षणं भवेत्।
परमैश्वर्यमातुलं लभेद् येन हि तद् वद?।।३।।

भैरव उवाच

वक्ष्यामि ते महादेवि! सर्वधर्मविदां वरे।
अद्भुतं कवचं देव्याः सर्वकामप्रसाधकम्।।४।।
विशेषतः शत्रुनाशं सर्वरक्षाकरं नृणाम्।
सर्वारिष्टप्रशमनं सर्वाभद्रविनाशनम्।।५।।

एक समय कैलास पर्वत के शिखर पर देवाधिदेव संसार के गुरु महादेवजी विराजमान थे। उस समय पार्वती ने उनसे (यह) प्रश्न किया।।१।।

पार्वती बोलीं—हे देवताओं के देवता! सम्पूर्ण देवताओं के भोग को प्रदान करनेवाले प्रभु! हे महादेवजी! यदि वह प्रश्न सम्पूर्ण देवताओं के लिए गोप्य हो, तो मुझे बतलाइए।।२।।

ऐसा कोई उपाय बताइए जिससे शत्रुओं का नाश और साथ ही साथ अपनी रक्षा एवं अतुल ऐश्वर्य की प्राप्ति हो।।३।।

भैरवजी बोले—हे महादेवि! आप तो सम्पूर्ण धर्मों की जानकार हैं, इसलिए अब मैं सम्पूर्ण कामनाओं को पूर्ण करनेवाले कालिकादेवी के अदभुत कवच का वर्णन करता हूँ।।४।।

यह (कालिका) कवच प्राणिमात्र की रक्षा करता है और सभी अरिष्ट नाशक, आधि-व्याधि का नाश करता है और विशेष रूप से शत्रुओं का मर्दन करनेवाला है।।५।।

सुखदं भोगदं चैव वशीकरणमुत्तमम्।
शत्रुसङ्घाः क्षयं यान्ति भवन्ति व्याधिपीडिताः।।६।।
दुःखिनो ज्वरिणश्चैव स्वाभीष्ट-द्रोहिणस्तथा।
भोग-मोक्षप्रदं चैव कालिकाकवचं पठेत्।। ७ ।।

विनियोगः–**ॐ अस्य श्रीकालिकाकवचस्य भैरव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीकालिका देवता, शत्रुसंहारार्थं जपे विनियोगः।**

ध्यानम्

ध्यायेत् कालीं महामायां त्रिनेत्रां बहुरूपिणीम्।
चतुर्भुजां ललज्जिह्वां पूर्णचन्द्रनिभाननाम्।। ८ ।।
नीलोत्पलदलश्यामां शत्रुसङ्घ-विदारिणीम्।
नरमुण्डं तथा खड्गं कमलं च वरं तथा।। ९ ।।
निर्भयां रक्तवदनां दंष्ट्रालीघोररूपिणीम्।
साट्टहासाननां देवीं सर्वदा च दिगम्बरीम्।।१०।।

यह कालिका कवच सुख एवं ऐश्वर्य को प्रदान करनेवाला वशीकरणकारक और शत्रुओं को नष्ट करनेवाला और शत्रुओं को (नाना प्रकार) की व्याधि से पीड़ित करने-वाला है।।६।।

(इस) कालिका कवच का पाठ करनेवाले साधक के लिए सभी सुख और मोक्ष प्रदायक है। क्योंकि यह (कालिका कवच) शत्रुओं को दुःख तथा ज्वर से कष्ट प्रदत्त करनेवाला है।।७।।

विनियोग–कर्ता को चाहिए कि अपने दायें हाथ में जल लेकर 'ॐ अस्य श्रीकालिकाकवचस्य' से 'जपे विनियोगः' तक का उच्चारण करके पृथ्वी पर जल छोड़ दें।

ध्यान–तीन नेत्रों से युक्त, विविंध रूप धारण करनेवाली, चार भुजाओं से युक्त, चन्द्रमा के समान मुखवाली, लपलपाती जिसकी जिह्वा है। ऐसी महामाया काली का ध्यान करें।।८।।

नीले रंग के कमल के तुल्य, कृष्ण वर्णवाली, शत्रुओं का विनाश करनेवाली, नरमुण्ड धारण करनेवाली, एवं खड्ग, कमल और मुद्रा धारण करनेवाली, निर्भय, रक्त से लिप्त मुखवाली, बड़े-बड़े दाँतोंवाली, सदैव हँसनेवाली, नग्नस्वरूपिणी,

शवासनस्थितां कालीं मुण्ड-मालाविभूषिताम्।
इति ध्यात्वा महाकालीं ततस्तु कवचं पठेत्।।११।।

कवचम्

ॐ कालिका घोररूपा सर्वकामप्रदा शुभा।
सर्वदेवस्तुता देवी शत्रुनाशं करोतु मे।।१२।।
ॐ ह्रींह्रींरूपिणीं चैव ह्रांह्रींह्रांरूपिणीं तथा।
ह्रां ह्रीं क्षों क्षौंस्वरूपा सा सदा शत्रून् विदारयेत्।।१३।।
श्रीं ह्रीं ऐंरूपिणी देवी भवबन्ध-विमोचनी।
हुँ रूपिणी महाकाली रक्षाऽस्मान् देवि! सर्वदा।।१४।।
यया शुम्भो हतो दैत्यो निशुम्भश्च महासुरः।
वैरिनाशाय वन्दे तां कालिकां शङ्करप्रियाम्।।१५।।
ब्राह्मी शैवी वैष्णवी च वाराही नारसिंहिका।
कौमार्यैन्द्री च चामुण्डा खादन्तु मम विद्विषः।।१६।।

शव के आसन पर बैठनेवाली, मुण्ड-मालाओं से सुशोभित ऐसी महाकाली का ध्यान साधक को करना चाहिए। उसके पश्चात् कवच का पाठ करें॥९-११॥

कवच—घनघोर रूपवाली, सम्पूर्ण ऐश्वर्य को प्रदत्त करनेवाली एवं सभी देवों से स्तुत्य कालिकादेवी आप मेरे शत्रुओं का मर्दन करें॥१२॥

ह्रीं ह्रीं और ह्रां, ह्रीं, ह्रां एवं ह्रां, ह्रीं, क्षों, क्षौं बीजरूपिणी कालिकादेवी आप सदैव मेरे शत्रुओं का संहार (विनाश) करें॥ १३॥

उसी प्रकार श्रीं, ह्रीं, ऐं, बीजरूपिणी, भवबन्धविनाशिता तथा हुं बीजवाली महाकाली आप मेरी निरन्तर रक्षा करें॥१४॥

आपने ही शुम्भ नामक दैत्य और महा असुर निशुम्भ का वध किया था। इस प्रकार की भगवान् शिव की प्रिया कालिका को अपने शत्रुओं का विनाश करने के लिए मैं प्रणाम करता हूँ॥१५॥

(क्योंकि) आप ही ब्राह्मी, शैवी, वैष्णवी, वाराही, नारसिंही, कौमारी, ऐन्द्री और चामुण्डारूपिणी हैं, इसलिए आप मेरे शत्रुओं का भक्षण कर लीजिए॥१६॥

सुरेश्वरी घोररूपा चण्ड-मुण्ड-विनाशिनी।
मुण्डमालावृताङ्गी च सर्वतः पातु मां सदा।।१७।।
ह्रीं ह्रीं ह्रीं कालिके घोरे दंष्ट्रे व रुधिरप्रिये!।
रुधिरापूर्णवक्त्रे च रुधिरेणावृतस्तनि।।१८।।

'मम शत्रून् खादय खादय हिंस हिंस मारय मारय भिन्धि भिन्धि छिन्धि छिन्धि उच्चाटय उच्चाटय द्रावय द्रावय शोषय शोषय स्वाहा। ह्रां ह्रीं कालिकायै मदीयशत्रून् समर्पयामि स्वाहा। ॐ जय जय किरि किरि किटि किटि कट कट मर्द मर्द मोहय मोहय हर हर मम रिपून् ध्वंस ध्वंस भक्षय भक्षय त्रोटय त्रोटय जातुधानान् चामुण्डे सर्वजनान् राज्ञो राजपुरुषान् स्त्रियो मम वश्यान् कुरु कुरु तनु तनु धान्यं धनं मेऽश्वान् गजान् रत्नानि दिव्यकामिनीः पुत्रान् राजश्रियं देहि यच्छ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः स्वाहा।'

इत्येतत् कवचं दिव्यं कथितं शम्भुना पुरा।
ये पठन्ति सदा तेषां ध्रुवं नश्यन्ति शत्रवः।।१९।।
वैरिणः प्रलयं यान्ति व्याधिता वा भवन्ति हि।
बलहीनाः पुत्रहीनाः शत्रवस्तस्य सर्वदा।।२०।।

आप सुरेश्वरी, घनघोर रूपधारिणी, चण्ड-मुण्ड का विनाश करनेवाली और नरमुण्ड की माला धारण करनेवाली हैं। इसलिए (हे माता) आप सम्पूर्ण विपत्तियों से मेरी (निरन्तर) रक्षा करें॥१७॥

हे ह्रीं ह्रीं ह्रीं रूपिणी कालिके! घनघोर रूपवाली, रक्त से जिनका दाँत, मुख और स्तन सना हुआ है, ऐसी हे कालिके! मैं अपने शत्रुओं को आपके (भक्षण) के लिए समर्पित करता हूँ॥१८॥

मन्त्र—मम शत्रून् खादय खादय हिंस हिंस' से 'क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः स्वाहा' पर्यन्त कालिका मन्त्र का स्वरूप है।

जो भी मनुष्य इस दिव्य कवच का (प्रतिदिन) पाठ करते हैं, बिना किसी संदेह के उनके शत्रु स्वयं नष्ट हो जाते हैं, क्योंकि इस दिव्य कवच का निरुपण महादेवजी ने पूर्व में ही किया था॥१९॥

(इस स्तोत्र का पाठ करने से) पाठकर्ता के शत्रु रोगी होते हैं, उनका बल अनायास ही समाप्त हो जाता है, वे इस पृथ्वीलोक में पुत्रहीन होते हैं और अपने-आप नष्ट हो जाते हैं॥२०॥

सहस्रपठनात् सिद्धिः कवचस्य भवेत्तदा।
तत् कार्याणि च सिद्ध्यन्ति यथा शङ्करभाषितम्।।२१।।
श्मशानाङ्गारमादाय चूर्णां कृत्वा प्रयत्नतः।
पादोदकेन पिष्ट्वा तल्लिखेल्लोहशलाकया।।२२।।
भूमौ शत्रून् हीनरूपानुत्तराशिरसस्तथा।
हस्तं दत्त्वा तु हृदये कवचं तु स्वयं पठेत्।।२३।।
शत्रोः प्राणप्रतिष्ठां तु कुर्यान् मन्त्रेण मन्त्रवित्।
हन्यादस्त्रं प्रहारेण शत्रो! गच्छ यमक्षयम्।।२४।।
ज्वलदङ्गारतापेन भवन्ति ज्वरिता भृशम्।
प्रोञ्छनैर्वामपादेन दरिद्रो भवति ध्रुवम्।।२५।।

फलश्रुतिः

वैरिनाशकरं प्रोक्तं कवचं वश्यकारकम्।
परमैश्वर्यदं चैव पुत्र-पौत्रादिवृद्धिदम्।।२६।।

भगवान् शिव के कथन के अनुसार जो साधक एक हजार बार इस (काली) कवच का पाठ करता है, उसके सम्पूर्ण कार्य अनायास अर्थात् अपने आप पूर्ण हो जाते हैं।।२१।।

श्मशान के चिता की जलती हुई अग्नि लेकर उसका चूरा बना लें, फिर अपने पैर के जल के उसे पीसकर भूमिपर अपने शत्रु के हीन-स्वरूप को, लोहे से निर्मित लेखनी से लिखें। फिर उसका मस्तक उत्तर दिशा की ओर रखकर तथा उस शत्रु के हृदय-स्थल पर अपना हाथ रख, स्वयं इस कालिका कवच का पाठ करें तथा मंत्र द्वारा अपने शत्रु की प्राण-प्रतिष्ठा कर अस्त्र-प्रहार करता हुआ (साधक) यह उच्चारण करे–हे मेरे शत्रु! तुम यम के गृह में जाओ।।२२-२४।।

यदि उस अवस्था में अपने शत्रु को जलती अग्नि में तपाया जाय, तो वह शत्रु (निःसन्देह) रोगी हो जाता है एवं उसका बायाँ पैर पोंछने पर वह शत्रु निःसन्देह दरिद्रता को प्राप्त होता है।।२५।।

फलश्रुति–यह (काली) कवच विशेषरूप से शत्रुओं का नाश करनेवाला और सभी प्राणिमात्र को अपने वशीभूत करनेवाला है। (यह कालीकवच) अति ऐश्वर्य को प्रदत्त करनेवाला और पुत्र-पौत्रादि की वृद्धि करनेवाला है।।२६।।

प्रभातसमये चैव पूजाकाले च यत्नतः।
सायंकाले तथा पाठात् सर्वसिद्धिर्भवेद् ध्रुवम्।।२७।।
शत्रूरुच्चाटनं याति देशाद् वा विच्युतो भवेत्।
पश्चात् किङ्करतामेति सत्यं-सत्यं न संशयः।।२८।।
शत्रुनाशकरे देवि! सर्वसम्पत्करे शुभे!।
सर्वदेवस्तुते देवि कालिके! त्वां नमाम्यहम्।।२९।।

।।कालिका-कवचं सम्पूर्णम्।।

प्रात:काल और पूजन के समय एवं सायंकाल इस कवच का पाठ करने से सम्पूर्ण सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं।।२७।।

इस कालीकवच का पाठ करने से निश्चय ही शत्रु का उच्चाटन अथवा जिस देश वह शत्रु रहता है, उस देश से उसका निष्कासन होता है और वह शत्रु साधक का दास बन जाता है।।२८।।

हे शत्रुविनाशिनी! सम्पूर्ण सौभाग्य को प्रदत्त करनेवाली! सम्पूर्ण देवताओं द्वारा प्रार्थित हे कालिके! आपको मैं अनेकानेक बार प्रणाम करता हूँ।।२९।।

।।हिन्दी टीकासहित कालिकाकवच पूर्ण हुआ।।

भद्रकालीस्तुतिः

ब्रह्मविष्णू ऊचतुः

नमामि त्वां विश्वकर्त्रीं परेशीं
नित्यामाद्यां सत्यविज्ञानरूपाम्।
वाचातीतां निर्गुणां चातिसूक्ष्मां
ज्ञानातीतां शुद्धविज्ञानगम्याम्।।१।।
पूर्णां शुद्धां विश्वरूपां सुरूपां
देवीं वन्द्यां विश्ववन्द्यामपि त्वाम्।
सर्वान्तःस्थामुत्तमस्थानसंस्था-
मीडे कालीं विश्वसम्पालयित्रीम्।।२।।
मायातीतां मायिनीं वापि मायां
भीमां श्यामां भीमनेत्रां सुरेशीम्।
विद्यां सिद्धां सर्वभूताशयस्था-
मीडे कालीं विश्वसंहारकर्त्रीम्।।३।।
नो ते रूपं वेत्ति शीलं न धाम
नो वा ध्यानं नापि मन्त्रं महेशि।
सत्तारूपे त्वां प्रपद्ये शरण्ये
विश्वाराध्ये सर्वलोकैकहेतुम्।।४।।
द्यौस्ते शीर्षं नाभिदेशो नभश्च
चक्षूंषि ते चन्द्रसूर्यानलास्ते।
उन्मेषास्ते सुप्रबोधो दिवा च
रात्रिर्मातश्चक्षुषोस्ते निमेषम्।।५।।
वाक्यं देवा भूमिरेषा नितम्बं
पादौ गुल्फं जानुजङ्घस्त्वधस्ते।
प्रीतिर्धर्मोऽधर्मकार्यं हि कोपः
सृष्टिर्बोधः संहतिस्ते तु निद्रा।।६।।

अग्निर्जिह्वा ब्राह्मणास्ते मुखाब्जं
संध्ये द्वे ते भ्रूयुगं विश्वमूर्तिः।
श्वासो वायुर्बाहवो लोकपालाः
क्रीडा सृष्टिः संस्थितिः संहृतिस्ते।।७।।
एवंभूतां देवि विश्वात्मिकां त्वां
कालीं वन्दे ब्रह्मविद्यास्वरूपाम्।
मातः पूर्णे ब्रह्मविज्ञानगम्ये
दुर्गेऽपारे साररूपे प्रसीद।।८।।

।। इति श्रीमहाभागवते महापुराणे ब्रह्मविष्णुकृता भद्रकालीस्तुतिः सम्पूर्णा।।

काली-पटलम्

सदाशिव उवाच

अथ कालीमनून् वक्ष्ये सद्यो वाक्-सिद्धदायकम्।
आराधितैर्यैः सर्वेष्टं प्राप्नुवन्ति जना भुवि।।१।।
ब्रह्म-रेफौ वामनेत्र-चंद्रारूढौ मनुर्मतः।
एकाक्षरो महाकाल्याः सर्वसिद्धि-प्रदायकः।।२।।
बीजं दीर्घयुतश्चक्री पिनाकी नेत्र-संयुतः।
क्रोधीशो भगवान् स्वाहा खण्डार्णो मंत्र ईरितः।।३।।
काली कूर्चं तथा लज्जा त्रिवर्णो मनुरीरितः।
हुँफट् ततश्च-पंचार्णःस्वाहान्तः सप्तवर्णकः।।४।।
कूर्चद्वयं त्रयं काल्या मायायुग्मं च दक्षिणे।
कालिके पूर्वबीजानि स्वाहामंत्रो वशीकृतः।।५।।
मंत्रराजः पुनः प्रोक्तं बीजसप्तकमुत्सृजेत्।
तिथिवर्णो महामंत्र उपास्तिः पूर्ववन् मता।।६।।

सदाशिव ने कहा—हे भैरव! क्षण मात्र में वाणी को सिद्ध करनेवाला काली मनु का मैं वर्णन करता हूँ। इस मृत्युलोक में जिन साधकों ने दक्षिण कालिका (देवी) की आराधना की है। उन्होंने अपने सम्पूर्ण मनोरथों को पूर्ण किया है। तन्त्रकारों के मतानुसार (कालिका) देवी के चन्द्रमा रूप बायें नेत्र में स्थित ब्रह्म एवं रेफ को मनु संज्ञक माना है। महाकाली का एकाक्षरमंत्र समस्त मनोवांछित सिद्धि को प्रदत्त करनेवाला है॥१-२॥

दक्षिणकाली मन्त्र का बीज (भगवान्) शिव का तीसरा नेत्र और (भगवान्) विष्णु का सुदर्शन चक्र है। और 'क्रोधीशो भगवान् स्वाहा' इस मन्त्र को खण्डार्ण मन्त्र कहा गया है। काली कूर्च और लज्जा ये तीन मनु कहे गये हैं। 'हूँ फट् पंचार्णः स्वाहा' ये सात अक्षरवाले मनु हैं। कूर्चद्वय काली के तीन और दक्षिण कालिका के माया युग्म बीज हैं। एवं 'पूर्वबीजानि स्वाहा' यह दक्षिण कालिका का वशीकरण करनेवाला मन्त्र है॥३-५॥

सात बीज से युक्त दक्षिण कालिका का मंत्र, मंत्रराज संज्ञक कहा गया है। तथा पन्द्रह अक्षर वाले महामंत्र को उपास्ति मंत्र कहा गया है॥६॥

न चाऽत्र सिद्धि-साध्यादि-शोधनं मनसाऽपि वा।
न यत्नातिशयः कश्चित् पुरश्चर्यानिमित्तकः।। ७ ।।
विद्याराज्ञीस्मृतेरेव सिद्ध्यष्टकमवाप्नुयात्।
भैरवोऽस्य ऋषिश्छन्दो उष्णिक्-काली तु देवता।। ८ ।।
बीजं माया दीर्घवर्मशक्तिरुक्ता मनीषिभिः।
षड्दीर्घाढ्याद्यबीजेन विद्याया अंगमीरितम्।। ९ ।।
मातृकान् पंचधा भक्त्वा वर्णान् दश-दशक्रमात्।
हृदये भुजयोः पादद्वये मन्त्री प्रविन्यसेत्।
व्यापकं मनुना कृत्वा ध्यायेच्चेतसि कालिकाम्।।१०।।

ध्यानम्

सद्यश्छिन्नशिरः कृपाणमभयं हस्तैर्वरं बिभ्रतीं,
घोरास्यां शिरसा स्रजा सुरुचिरामुन्मत्तकेशावलीम्।
सृक्का-ऽसृक्-प्रवहां श्मशान-निलयां श्रुत्योः शवालिङ्कृतीं,
श्यामाङ्गी कृतमेखलां शवकरैर्देवीं भजेत् कालिकाम्।।११।।

इस दक्षिण कालिका के उपास्ति मन्त्र के विषय में सिद्धि एवं साध्य का शोधन और पुरश्चरण के निमित्त किसी भी प्रकार का प्रयास नहीं करना चाहिए। इस विषय में मन में कल्पना भी नहीं करनी चाहिए। (इसकी) साधना करनेवाले विद्याराज्ञी के स्मृति से ही अणिमादि आठ सिद्धियों को प्राप्त करते हैं। इस दक्षिण कालिका मन्त्र के भैरव ऋषि, उष्णिक् छन्द एवं काली देवता मायाबीज, दीर्घवर्म शक्ति है एवं श्रेष्ठ षड्दीर्घ बीज विद्या का अंग, तन्त्र के विद्वानों ने कहा है। मन्त्र की सिद्धि करनेवाले साधक को चाहिये, कि वह दस-दस वर्णों के क्रम से मात्रिका को पाँच बार भेदकर, हृदय, दोनों भुजा और दोनों पैरों में न्यास करे और मनु से व्यापक कर (अपने) हृदय में काली का ध्यान करे।।७-१०।।

ध्यान—तत्क्षण छिन्न मस्तकवाली, अपने (दोनों) हाथों में अभय और कृपाण धारण की हुई, भयंकर मुखवाली (नर) मुण्डों की सुंदर माला (गले में) धारण की हुई, (चारों ओर) जिनके केश बिखरे हुए हैं, जिनका सम्पूर्ण शरीर रक्त से सना हुआ है, संसार में रहनेवाली, अपने दोनों कानों में मुण्ड की माला धारण करनेवाली, जिनका रंग श्यामवर्ण का है। जो मेखला धारण की हुई हैं। जिनका हाथ शव पर रक्खा हुआ है, ऐसी महाकाली का (साधक) ध्यान करे।।११।।

एवं ध्यात्वा जपेल्लक्षं जुहुयात्तद्-दशांशतः।
प्रसूनैः करवीरोत्थैः पूजायन्त्रमथोच्यते।।१२।।
आदौ षट्कोणमारच्य त्रिकोण-त्रितयं ततः।
पद्ममष्टदलं बाह्ये भूपुरं तत्र पूजयेत्।।१३।।
जयाख्या विजया पश्चादजिता चापराजिता।
नित्या विलासिनी चाऽपि दोग्ध्रा घोरा च मंगला।।१४।।
पीठशक्तय एताः स्युः कालिकायोगपीठतः।
आत्मनो हृदयान्तोऽयं मयादिपीठमंत्रकः।।१५।।
अस्मिन् पीठे यजेद्देवीं शवरूप-शिवस्थिताम्।
महाकालरताशक्तां शिवाभिर्दिक्षु वेष्टिताम्।।१६।।
अंगानि पूर्वमाराध्य षट्पत्रेषु समर्चयेत्।
कालीं कपालिनीं कुल्वां कुरुकुल्वां विरोधिनीम्।।१७।।
विप्रचित्तां तु संपूज्य नवकोणेषु पूजयेत्।
उग्रामुग्रप्रभा दीप्तां नीलां घनां बलाकिकाम्।।१८।।

इस प्रकार महाकाली का ध्यान कर कालिका के मन्त्र का एक लाख जप एवं उसका दस हजार हवन करे। हवन के पश्चात् कनैल के फूल से पूजन कर यंत्र का निर्माण करे। यन्त्र-निर्माण का क्रम इस प्रकार से है–सर्वप्रथम षट्कोण बनाये–उसके बीच में तीन त्रिकोण का निर्माण करें। उस त्रिकोण के बाहर अष्टदल कमल का निर्माण कर उसमें भूपूर की पूजा करें॥१२-१३॥

जया, विजया, अजिता, अपराजिता, नित्या, विलासिनी, दोग्धा, घोरा एवं मंगला ये सब देवियाँ कालिका योग पीठ से पीठशक्ति के रूप में बताई गई हैं। अपने पैर से लेकर हृदय तक मायादि पीठ मन्त्र है। इस पीठ में–शवरूप शिवपर स्थित, महाकाल से क्रीड़ा करने में आसक्त, सभी दिशाओं में शिवा आदि योगिनियों से घिरी हुई महाकाली की पूजा (साधक) करें॥१४-१६॥

सर्वप्रथम काली के (सम्पूर्ण) अंगों की पूजाकर कमल में छह पत्रों में काली, कपालिनी, कुल्वा, कुरुकुल्वा, विरोधिनी, विप्रचित्ता–इन छः देवियों की पूजाकर तीनों त्रिकोणों के नौ कोण में उग्रा, उग्रप्रभा, दीप्ता, नीला, बलाकिका,

मात्रां मुद्रां तथाऽमित्रां पूज्याः पत्रेषु मातरः।
पद्मस्याऽष्टसु नेत्रेषु ब्राह्मीं नारायणी तथा।।१९।।
माहेश्वरी च चामुण्डा कौमारी चाऽपराजिता।
वाराही नारसिंही च पुनरेताश्च भूपुरे।।२०।।
भैरवीं महदाद्यन्तां सिंहाद्यां धूम्रपूर्विकाम्।
भीमोन्मत्तादिकां चाऽपि वशीकरणभैरवीम्।।२१।।
मोहनाद्यां समाराध्य शक्रादीन्यायुधान्यपि।
एवमाराधिता काली सिद्धा भवति मंत्रिणाम्।।२२।।
ततः प्रयोगान् कुर्वीत महाभैरवभाषितान्।
आत्मनोऽर्थं परस्यार्थं क्षिप्रसिद्धि-प्रदायकान्।।२३।।
स्त्रीणां प्रहारं निन्दां च कौटिल्यं चाऽप्रियं वचः।
आत्मनो हितमन्विच्छन् कालीभक्तो विवर्जयेत्।।२४।।
सुदृशो मदनावासं तस्या यः प्रजपेन् मनुम्।
अयुतं सोऽचिरादेव वाक्पतेः समतामियात्।।२५।।
दिगम्बरो मुक्तकेशः श्मशानस्थो जितेन्द्रियः।
जपेदयुतमेतस्य भवेयुः सर्वकामनाः।।२६।।

मात्रा, मुद्रा एवं अमित्रा देवी की पूजा करे। कमल के आठ दलों में (क्रमशः) ब्राह्मी, नारायणी, माहेश्वरी, चामुण्डा, कौमारी, अपराजिता, वाराही और नारसिंही इन देवियों की पूजा करे। उसी कमलदल में महादाद्यन्त, सिंहाद्या, धूमावती, भीमा, उन्मत्ता, वशीकरण भैरवीरूप, मोहन और इन्द्रादि के शस्त्रों की आराधना एवं पूजा करने से साधकों को काली की सिद्धि प्राप्त होती है।।१७-२२।।

इसके पश्चात् महाभैरव के द्वारा बताये गये प्रयोगों को करना चाहिये। उक्त प्रयोग अपने एवं अन्य लोगों के लिये अतिशीघ्र सिद्धि प्रदत्त करनेवाले होते हैं। अपने शुभ की इच्छा करनेवाले काली के सेवकगण स्त्रियों पर प्रहार, निन्दा, कुटिलता और अप्रिय वचन बोलना छोड़ दें।।२३-२४।।

जो साधना करनेवाला मनुष्य इस काली मन्त्र का एक लाख जप करता है, वह मदन अर्थात् कामदेव के तुल्य हो जाता है तथा यथाशीघ्र वह साधक बृहस्पति देवता के तुल्य हो जाता है। जो साधक नग्न होकर, बालों को बिखेरकर, संसार में निवास करते हुए जितेन्द्रिय होकर, इस काली मन्त्र का एक लाख बार जप करता है तो ऐसे साधक की सम्पूर्ण कामनाएँ पूर्ण होती हैं।।२५-२६।।

एवं ध्यात्वा जपेल्लक्षं जुहुयात्तद्-दशांशतः।
प्रसूनैः करवीरोत्थैः पूजायन्त्रमथोच्यते।।१२।।
आदौ षट्कोणमारच्य त्रिकोण-त्रितयं ततः।
पद्ममष्टदलं बाह्ये भूपुरं तत्र पूजयेत्।।१३।।
जयाख्या विजया पश्चादजिता चापराजिता।
नित्या विलासिनी चाऽपि दोग्ध्रा घोरा च मंगला।।१४।।
पीठशक्तय एताः स्युः कालिकायोगपीठतः।
आत्मनो हृदयान्तोऽयं मयादिपीठमंत्रकः।।१५।।
अस्मिन् पीठे यजेद्देवीं शवरूप-शिवस्थिताम्।
महाकालरताशक्तां शिवाभिर्दिक्षु वेष्टिताम्।।१६।।
अंगानि पूर्वमाराध्य षट्पत्रेषु समर्चयेत्।
कालीं कपालिनीं कुल्वां कुरुकुल्वां विरोधिनीम्।।१७।।
विप्रचित्तां तु संपूज्य नवकोणेषु पूजयेत्।
उग्रामुग्रप्रभा दीप्तां नीलां घनां बलाकिकाम्।।१८।।

इस प्रकार महाकाली का ध्यान कर कालिका के मन्त्र का एक लाख जप एवं उसका दस हजार हवन करे। हवन के पश्चात् कनैल के फूल से पूजन कर यंत्र का निर्माण करे। यन्त्र-निर्माण का क्रम इस प्रकार से है–सर्वप्रथम षट्कोण बनाये–उसके बीच में तीन त्रिकोण का निर्माण करें। उस त्रिकोण के बाहर अष्टदल कमल का निर्माण कर उसमें भूपूर की पूजा करें।।१२-१३।।

जया, विजया, अजिता, अपराजिता, नित्या, विलासिनी, दोग्धा, घोरा एवं मंगला ये सब देवियाँ कालिका योग पीठ से पीठशक्ति के रूप में बताई गई हैं। अपने पैर से लेकर हृदय तक मायादि पीठ मन्त्र है। इस पीठ में–शवरूप शिवपर स्थित, महाकाल से क्रीड़ा करने में आसक्त, सभी दिशाओं में शिवा आदि योगिनियों से घिरी हुई महाकाली की पूजा (साधक) करें।।१४-१६।।

सर्वप्रथम काली के (सम्पूर्ण) अंगों की पूजाकर कमल में छह पत्रों में काली, कपालिनी, कुल्वा, कुरुकुल्वा, विरोधिनी, विप्रचित्ता–इन छः देवियों की पूजाकर तीनों त्रिकोणों के नौ कोण में उग्रा, उग्रप्रभा, दीप्ता, नीला, बलाकिका,

मात्रां मुद्रां तथाऽमित्रां पूज्याः पत्रेषु मातरः।
पद्मस्याऽष्टसु नेत्रेषु ब्राह्मीं नारायणी तथा।।१९।।
माहेश्वरी च चामुण्डा कौमारी चाऽपराजिता।
वाराही नारसिंही च पुनरेताश्च भूपुरे।।२०।।
भैरवीं महदाद्यन्तां सिंहाद्यां धूम्रपूर्विकाम्।
भीमोन्मत्तादिकां चाऽपि वशीकरणभैरवीम्।।२१।।
मोहनाद्यां समाराध्य शक्रादीन्यायुधान्यपि।
एवमाराधिता काली सिद्धा भवति मंत्रिणाम्।।२२।।
ततः प्रयोगान् कुर्वीत महाभैरवभाषितान्।
आत्मनोऽर्थं परस्यार्थं क्षिप्रसिद्धि-प्रदायकान्।।२३।।
स्त्रीणां प्रहारं निन्दां च कौटिल्यं चाऽप्रियं वचः।
आत्मनो हितमन्विच्छन् कालीभक्तो विवर्जयेत्।।२४।।
सुदृशो मदनावासं तस्या यः प्रजपेन् मनुम्।
अयुतं सोऽचिरादेव वाक्पतेः समतामियात्।।२५।।
दिगम्बरो मुक्तकेशः श्मशानस्थो जितेन्द्रियः।
जपेदयुतमेतस्य भवेयुः सर्वकामनाः।।२६।।

मात्रा, मुद्रा एवं अमित्रा देवी की पूजा करे। कमल के आठ दलों में (क्रमशः) ब्राह्मी, नारायणी, माहेश्वरी, चामुण्डा, कौमारी, अपराजिता, वाराही और नारसिंही इन देवियों की पूजा करे। उसी कमलदल में महादाद्यन्त, सिंहाद्या, धूमावती, भीमा, उन्मत्ता, वशीकरण भैरवीरूप, मोहन और इन्द्रादि के शस्त्रों की आराधना एवं पूजा करने से साधकों को काली की सिद्धि प्राप्त होती है।।१७-२२।।

इसके पश्चात् महाभैरव के द्वारा बताये गये प्रयोगों को करना चाहिये। उक्त प्रयोग अपने एवं अन्य लोगों के लिये अतिशीघ्र सिद्धि प्रदत्त करनेवाले होते हैं। अपने शुभ की इच्छा करनेवाले काली के सेवकगण स्त्रियों पर प्रहार, निन्दा, कुटिलता और अप्रिय वचन बोलना छोड़ दें।।२३-२४।।

जो साधना करनेवाला मनुष्य इस काली मन्त्र का एक लाख जप करता है, वह मदन अर्थात् कामदेव के तुल्य हो जाता है तथा यथाशीघ्र वह साधक बृहस्पति देवता के तुल्य हो जाता है। जो साधक नग्न होकर, बालों को बिखेरकर, संसार में निवास करते हुए जितेन्द्रिय होकर, इस काली मन्त्र का एक लाख बार जप करता है तो ऐसे साधक की सम्पूर्ण कामनाएँ पूर्ण होती हैं।।२५-२६।।

शवहृदयमारुह्य निर्वासाः प्रेतभूगतः।
अर्क-पुष्पसहस्रेणाभ्यक्तेन स्वीयरेतसा।।२७।।
देवीं यः पूजयेद् भक्त्या जपन्नेकैकशो मनुम्।
सोऽचिरेणैव कालेन धरणी-प्रभुतां व्रजेत्।।२८।।
रजःकीर्णं भगं नार्या ध्यायन् योऽयुतमाजपेत्।
स कवित्वेन रम्येण जनान् मोहयति ध्रुवम्।।२९।।
त्रिपञ्चारे महापीठे शवस्य हृदि संस्थिताम्।
महाकालेन देवेन नारयुद्धं प्रकुर्वतीम्।।३०।।
तां ध्यायन् स्मेरवदनां विद्धत् सुरतं स्वयम्।
जपेत् सहस्रमपि यः स शङ्करसमो भवेत्।।३१।।
अस्थि-लोम-त्वचायुक्तं मान्सं मार्जार-मेषयोः।
उष्ट्रस्य महिषस्यापि बलिं यस्तु समर्पयेत्।।३२।।

शव अर्थात् मुर्दे के हृदय पर बैठकर श्मशान में रहनेवाला नंगा होकर अपने वीर्य के द्वारा मदार के हजार पुष्पों को सिंचन करनेवाला, कालीमंत्र की साधना करनेवाला, श्रद्धा एवं भक्ति से युक्त एक-एक मनु का जाप करता हुआ, यदि कालीदेवी की पूजा करता है, तो वह अल्प समय में ही राजा बन जाता है।।२७-२८।।

जो साधक रजस्वला स्त्री की योनि का ध्यान करता हुआ काली मंत्र का एक लाख जाप करता है, वह निःसन्देह ही सुन्दर कविताओं द्वारा मनुष्यों के मन को मोहित कर लेता है।।२९।।

पन्द्रह कमलदल वाले महापीठ और शव के हृदय पर विराजित हुई, महाकाल देव अर्थात् शिव के साथ (काली) कामवासना से पीड़ित हो मानों युद्ध करती हुई, (कामदेव) के काम के वशीभूत हो शवरूप शिव के साथ सम्भोग करती हुई, ऐसी काली का ध्यान करता हुआ जो साधक काली मंत्र का एक हजार बार जप करता है, वह शिव के तुल्य बन जाता है।।३०-३१।।

जो साधना करनेवाला साधक बिल्ली, भेंड़, ऊँट, भैंसे की हड्डी, रोवाँ, चमड़ीयुक्त मांस की बलि काली देवी को अर्पित करता है।।३२।।

भूताष्टभ्यो मध्यरात्रे वश्याः स्युः सर्वजन्तवः।
विद्या-लक्ष्मी-यशः-पुत्रैः सुचिरं सुखमेधते।।३३।।
यो हविष्याशनरतो दिवा देवीं स्मरन् जपेत्।
नक्तं निधुवनासक्तो लक्षं स स्याद् धरापतिः।।३४।।
रक्तां भोजैर्भवेन् मैत्री धनैर्जयति वित्तपम्।
बिल्वपत्रैर्भवेद्राज्यं रक्त-पुष्पै-र्वशीकृतिः।।३५।।
असृजा महिषादीनां कालिकां यस्तु तर्पयेत्।
तस्य स्युरचिरादेव करस्थाः सर्वसिद्धयः।।३६।।
यो लक्षं प्रजपेन् मन्त्रं शवमारुह्य मन्त्रवित्।
तस्य सिद्धो मनुः सद्यः सर्वेप्सित-फलप्रदः।।३७।।

ऐसे साधक के सभी प्राणी और आठ भूत मध्य रात्रि में उसके दास हो जाते हैं और वह साधक सरस्वती, लक्ष्मी, यश और अपने पुत्रों के साथ बहुत काल तक पृथ्वीलोक का सुख प्राप्त करते हुए रहता है।।३३।।

जो साधक मात्र हविष्यान्न का भक्षणकर दिन में काली देवी का स्मरण करता है एवं रात्रि के समय मदिरा का पानकर नशे में चूर होकर काली देवी के मंत्र का एक लाख जप करता है, ऐसा साधक राजा बन जाता है।।३४।।

जो साधना करनेवाला साधक लाल कमल से कालिका देवी की पूजा करता है, उसके शत्रु भी मित्र बन जाते हैं और वह अपने धन से (धन के स्वामी) कुबेर पर विजय प्राप्त कर लेता है, जो साधक बिल्वपत्र के द्वारा भगवती काली की पूजा करता है, वह राज्य सुख प्राप्त करता है। अड़हुल, कनैल आदि के पुष्पों से जो साधक भगवती काली का पूजन करता है, वह सम्पूर्ण संसार को अपने वशीभूत कर लेता है। जो साधक भैंस, भेंड़ आदि के खून से काली का तर्पण करता है, उस साधक को समस्त सिद्धियाँ तत्काल प्राप्त होती हैं।।३५-३६।।

जो मन्त्रों के जानकार साधक हैं, यदि वे मुर्दे पर बैठकर काली के मंत्र का एक लाख बार जप करते हैं, तो उनके सभी मनोरथ पूर्ण करनेवाले मन्त्र उसी क्षण सिद्ध हो जाते हैं।।३७।।

फलश्रुति

तेनाऽश्वमेधप्रमुखैर्यागैरिष्टवा सुजन्मना।
दत्तं दानं तपस्तप्तं पूजेत् यस्तु कालिकाम्।।३८।।
ब्रह्मा विष्णुः शिवो गौरी लक्ष्मी-गणपती-रविः।
पूजिताः सकला देवा यः कालीं पूजयेत् सदा।।३९।।

।। कालीपटलं सम्पूर्णम्।।

फलश्रुति-जो साधक अपने पूर्वजन्म के अच्छे संस्कारों से एवं अश्वमेध यज्ञ आदि प्रमुख यज्ञों द्वारा कालिका का पूजन करते हैं, ऐसे साधक दान-प्रदान और सभी कठिन तपस्या आदि को पूर्ण कर लेते हैं। जिन साधकों ने सदैव माता काली का पूजन किया, उन्होंने मानों ब्रह्मा, विष्णु, शिव, अम्बा, लक्ष्मी, गणपति एवं आदित्य (सूर्य) आदि सभी देवताओं का पूजन कर लिया।।३८-३९।।

।।हिन्दी टीका सहित कालीपटल पूर्ण हुआ।।

काली-हृदयम्

श्रीमहाकाल उवाच

महाकौतूहल-स्तोत्रं हृदयाख्यं महोत्तमम्।
शृणु प्रिये! महागोप्यं दक्षिणायाः सुगोपितम्।।१।।
अवाच्यमपि वक्ष्यामि तव प्रीत्या प्रकाशितम्।
अन्येभ्यः कुरु गोप्यं च सत्यं सत्यं च शैलजे।।२।।

श्रीदेवी उवाच

कस्मिन् युगे समुत्पन्नं केन स्तोत्रं कृतं पुरा।
तत्सर्वं कथ्यतां शम्भो! महेश्वर दयानिधे!।।३।।

श्रीमहाकाल उवाच

पुरा प्रजापतेः शीर्षश्छेदनं कृतवानहम्।
ब्रह्म-हत्याकृतैः पापैर्भैरवत्वं ममागतम्।।४।।

श्रीमहाकाल ने कहा—हे प्रिये! अत्यन्त चमत्कार पैदा करनेवाला सभी में श्रेष्ठ 'कालीहृदय' नामक स्तोत्र को (मेरे मुखारविन्द से) श्रवण करो। यह स्तोत्र अति गोपनीय है, इसे यत्नपूर्वक दक्षिणा ने गोपनीय रक्खा था। हे देवि! वैसे तो यह स्तोत्र किसी से नहीं बताना चाहिए, फिर भी तुम्हारे प्रेम के वश में होकर मैं इसे बता रहा हूँ। हे शैलजे! मैं यह यथार्थ कह रहा हूँ, मैं यह यथार्थ कह रहा हूँ, तुम अन्य लोगों से इसे हमेशा गोपनीय रखना॥१-२॥

श्रीदेवी ने कहा—हे महादेव! इस स्तोत्र की रचना (चारो युगों में से) किस युग में हुई है? और सबसे पहले इस स्तोत्र का (पाठ) किसने किया था? हे दया के स्वामि! हे महेश्वर! इन सभी बातों को आप मुझसे (विस्तार) से कहिए?॥३॥

(ऐसा सुनकर) **श्रीमहाकाल ने कहा**—हे प्रिये! जगत् के आदि में जब मैंने ब्रह्माजी का मस्तक काट दिया, उस समय मुझे ब्रह्महत्या लग गई और मैं शिव न होकर अति भयंकर भैरव बन गया॥४॥

ब्रह्महत्या-विनाशाय कृतं स्तोत्रं मया प्रिये!।
कृत्या-विनाशकं स्तोत्रं ब्रह्महत्यापहारकम्।।५।।

विनियोग:

ॐ अस्य श्रीदक्षिणकालिका-हृदयस्तोत्रमन्त्रस्य श्रीमहाकालऋषिः, उष्णिक्छन्दः, श्रीदक्षिणकालिका देवता, क्रीं बीजं, ह्रीं शक्तिः, नमः कीलकम्, सर्वत्र सर्वदा जपे विनियोगः।

हृदयादिन्यास:

ॐ क्रां हृदयाय नमः, ॐ क्रीं शिरसे स्वाहाः, ॐ क्रूं शिखायै वषट्, ॐ क्रैं कवचाय हुम्, ॐ क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ क्रः अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

ध्यायेत् कालीं महामायां त्रिनेत्रां बहुरूपिणीम्।
चतुर्भुजां लल्लज्जिह्वां पूर्णचन्द्रनिभाननाम्।।१।।

उस समय (जो पूर्व में मेरे द्वारा ब्रह्माजी का सिर काट डाला गया था) उस ब्रह्महत्या की निर्वृत्ति के लिये मैंने स्वयं इस महास्तोत्र का पाठ किया था। क्योंकि यह महास्तोत्र कृत्या को नष्ट करनेवाला एवं ब्रह्महत्या को भी नष्ट करनेवाला है।।५।।

विनियोग—कर्ता को चाहिए कि वह अपने दायें हाथ में जल लेकर 'ॐ अस्य दक्षिणकालिका' से 'जपे विनियोग:' तक के वाक्य का उच्चारण कर भूमि पर जल छोड़ दें।

हृदयादिन्यास—'ॐ क्रां हृदयाय नम:' इसका उच्चारण करके हृदय का। 'ॐ क्रीं शिरसे स्वाहा' इसका उच्चारण करके सिर का। 'ॐ क्रूं शिखायै वषट्' इसका उच्चारण करके शिखा का। 'ॐ क्रैं कवचाय हुम्' इसका उच्चारण करके दोनों भुजाओं का। 'ॐ क्रौं नेत्रत्रयाय वौषट्' इसका उच्चारण करके दोनों नेत्रों का, एवं 'ॐ क्रः अस्त्रांय फट्' इसका उच्चारण करके पूरे शरीर का स्पर्श करें।

ध्यान—महामाया तीन नेत्रों से युक्त, अनेकानेक रूपों से जगत् में व्याप्त, चार भुजाओं से युक्त, अपनी जिह्वा को लपलपाती हुई, पूर्ण चन्द्रमा के तुल्य मुखारविन्द वाली महाकाली का ध्यान करें।।१।।

नीलोत्पलदलप्रख्यां शत्रुसङ्घ-विदारिणीम्।
नरमुण्डं तथा खड्गं कमलं वरदं तथा।।२।।
बिभ्राणां रक्तवदनां दंष्ट्रालीं घोररूपिणीम्।
अट्टाट्टहासनिरतां सर्वदा च दिगम्बराम्।।३।।
शवासनस्थितां देवीं मुण्ड-माला-विभूषिताम्।
इति ध्यात्वा महादेवीं ततस्तु हृदयं पठेत्।।४।।

स्तोत्र

ॐ कालिका घोररूपाद्यां सर्वकामफलप्रदा।
सर्व-देवस्तुता देवी शत्रुनाशं करोतु मे।।५।।
ह्रीं-ह्रीं स्वरूपिणी श्रेष्ठा त्रिषु लोकेषु दुर्लभा।
तव स्नेहान्मयाख्यातं न देयं यस्य कस्यचित्।।६।।
अथ ध्यानं प्रवक्ष्यामि निशामय परात्मिके।
यस्य विज्ञानमात्रेण जीवन्मुक्तो भविष्यति।।७।।

नीले कमल के पत्ते के तुल्य नीले रंग वाली, शत्रुओं का विनाश करनेवाली, नरमुण्ड, खड्ग, कमल और वरमुद्रा को धारण करनेवाली।।२।। खून की धारा को (अपने) मुख में धारण करनेवाली, ऊँचे एवं भयंकर दाँतों से युक्त, अति भयंकर रूपवाली, (भयंकर) रूप से हँसनेवाली, जिसके शरीर पर कोई वस्त्र नहीं है अर्थात् पूर्णरूपेण नग्न है।।३।। जो सदैव शव के आसन पर विराजित हैं, (नर) मुण्ड की माला, जिनके गले में है, ऐसी महादेवी का ध्यान करके फिर काली हृदय स्तोत्र का पाठ करना चाहिए।।४।। घनघोर रूपों को धारण करनेवाली एवं समस्त मनोवांछित जिज्ञासाओं को पूर्ण करनेवाली तथा समस्त देवताओं द्वारा प्रार्थित भगवती महाकाली हमारे शत्रुओं का मर्दन करें।।५।। (ऐसी) वह महाकाली 'ह्रीं ह्रीं' रूपा है, सभी में सर्वश्रेष्ठ हैं और तीनों लोकों में परिश्रम एवं कष्ट से प्राप्त होने योग्य है। उन्हीं का यह स्तोत्र है। हे देवि पार्वती! प्रेमवश मैं इस स्तोत्र को तुम्हें बता रहा हूँ, किन्तु तुम इस परम दुर्लभ स्तोत्र को किसी अन्य को मत बताना।।६।। हे परात्मिके! मैं उस महाकाली के ध्यान का वर्णन तुमसे कर रहा हूँ, तुम उसे (एकाग्रचित्त) होकर श्रवण करो। (क्योंकि) इसके जान लेनेमात्र से ही मानव जीवन से मुक्त हो जाता है।।७।।

नाग-यज्ञोपवीतां च चन्द्रार्द्धकृतशेखराम्।
जटा-जूटां च सञ्चिन्त्य महाकालसमीपगाम्।। ८ ।।
एवं न्यासादयः सर्वे ये प्रकुर्वन्ति मानवाः।
प्राप्नुवन्ति च ते मोक्षं सत्यं-सत्ये वरानने!।। ९ ।।
यन्त्रं शृणु परं देव्याः सर्वार्थ-सिद्धिदायकम्।
गोप्याद् गोप्यतरं गोप्यं गोप्याद् गोप्यतरं महत्।।१०।।
त्रिकोणं पञ्चकं चाऽष्टकमलं भूपुरान्वितम्।
मुण्डपङ्क्तिं च ज्वालां च कालीयन्त्रं सुसिद्धिदम्।।११।।
मन्त्रं तु पूर्वकथितं धारयस्व सदा प्रिये!।
देव्या दक्षिणकाल्यास्तु नाममालां निशामय।।१२।।
काली दक्षिणकाली च कृष्णरूपा परात्मिका।
मुण्डमाली विशालाक्षी सृष्टिसंहारकारिका।।१३।।
स्थितिरूपा महामाया योगनिद्रा भगात्मिका।
भगसर्पिः पानरता भगोद्योता भगाङ्गजा।।१४।।

वह महाकाली सर्पों का यज्ञोपवीत धारण की हुई हैं, उनके मस्तक पर द्वितीया का अर्द्धचन्द्र विराजित हैं, वे जटाजूट से युक्त हैं और महाकाल के निकट निवास करनेवाली हैं॥८॥ जो मनुष्य ऊपर कहे गये भगवती महाकाली के न्यास और ध्यान को (विधिवत्) करते हैं। हे वरानने! वे निश्चय ही मोक्ष की प्राप्ति करते हैं। यह बात सत्य है, यह बात सत्य है॥९॥ हे पार्वती! समस्त सिद्धियों को प्रदत्त करनेवाले, उस महादेवी के यन्त्र का वर्णन तुम मुझसे श्रवण करो। वह यन्त्र अत्यन्त गोपनीय है अर्थात् गोपनीय से भी गोपनीय है॥१०॥ उस यन्त्र में पन्द्रह कोण होते हैं, फिर अष्टदलकमल एवं भूपुर होते हैं। उसके पश्चात् मुण्ड की पंक्ति एवं ज्वाला होती है। (समस्त) सिद्धि को देनेवाला यह महाकाली का यन्त्र है॥११॥ मैंने पूर्व में ही तुमसे महाकाली के मन्त्र का वर्णन कर दिया था। अब तुम उसे धारण करो। अब (एकाग्रचित्त) होकर दक्षिणकाली देवी की नामावली को तुम श्रवण करो॥१२॥

१. काली, २. दक्षिणकाली, ३. कृष्णरूपा, ४. परात्मिका, ५. मुण्डमाली, ६. विशालाक्षी, ७. इष्टसंहारकारिका, ८. स्थितिरूपा, ९. महामाया, १०. योगनिद्रा, ११. भगात्मिका, १२. भगसर्पि, १३. पानरता, १४. भगोद्योता, १५. भगाङ्गजा,

आद्या सदा नवा घोरा महातेजाः करालिका।
प्रेतवाहा सिद्धिलक्ष्मीरनिरुद्धा सरस्वती।।१५।।
एतानि नाममाल्यानि ये पठन्ति दिने दिने।
तेषां दासस्य दासोऽहं सत्यं सत्यं महेश्वरि!।।१६।।
कालीं कालहरां देवीं कङ्कालबीजरूपिणीम्।
काकरूपां कलातीतां कालिकां दक्षिणां भजे।।१७।।
कुण्डगोलप्रियां देवीं स्वयंभूकुसुमेरताम्।
रतिप्रियां महारौद्रीं कालिकां प्रणमाम्यहम्।।१८।।
दूतीप्रियां महादूतीं दूतीं योगेश्वरीं पराम्।
दूतीयोगोद्भवरतां दूतीरूपां नमाम्यहम्।।१९।।
क्रीं मन्त्रेण जलं जप्त्वा सप्तधा सेचनेन तु।
सर्वे रोगा विनश्यन्ति नाऽत्र कार्या विचारणा।।२०।।
क्रीं स्वाहान्तैर्महामन्त्रैश्चन्दनं साधयेत्ततः।
तिलकं क्रियते प्राज्ञैर्लोको वश्यो भवेत् सदा।।२१।।

---

१६. आद्या, १७. सदा नवा, १८. घोरा, १९. महातेजा, २०. करालिका, २१. प्रेतवाहा, २२. सिद्धिलक्ष्मी, २३. अनिरुद्धा, २४. सरस्वती। भगवती महाकाली की इस नाममाला को जो मनुष्य प्रतिदिन पढ़ते हैं, (इस विषय में) शिवजी का कथन है कि हे पार्वती! मैं उनके सेवक का भी सेवक हो जाता हूँ। यह मैं यथार्थ कह रहा हूँ।।१४-१६।।

काली, कालहरा, देवी, कङ्कालबीजरूपिणी, कृष्णवर्णवाली, कलातीता, दक्षिणा तथा काली के नाम से प्रसिद्ध देवी का मैं भजन करता हूँ। कुण्डगोलप्रिया, ऋतुमती, रति-प्रिया, महारौद्री एवं कालिका को मैं प्रणाम करता हूँ। दूतीप्रिया, महादूती, दूती, योगेश्वरी, पराम्बा, दूतीयोगोद्भवरता एवं दूतीरूपा महाकाली को मैं प्रणाम करता हूँ।।१८-१९।।

'क्रीं' इस मन्त्र से जल को अभिमंत्रित करके सात बार रोगी के ऊपर छिड़कने से उसके समस्त रोग समाप्त हो जाते हैं, इसमें संदेह नहीं है। 'क्रीं स्वाहा' इस मन्त्र का उच्चारण करके चन्दन को घिसें, फिर अपने मस्तक पर उस चन्दन का तिलक करें, तो ऐसे मनुष्य के वश में सभी लोग हो जाते हैं।।२०-२१।।

क्रीं-हूं-ह्रीं मन्त्रजप्तैश्च ह्यक्षतैः सप्तभिः प्रिये!।
महाभयविनाशश्च जायते नाऽत्र संशयः।।२२।।
क्रीं-ह्रीं-हूं-स्वाहामन्त्रेण श्मशानाऽग्निं च मन्त्रयेत्।
शत्रोर्गृहे प्रतिक्षिप्त्वा शत्रोर्मृत्युर्भविष्यति।।२३।।
हूं-ह्रीं-क्रीं चैव उच्चाटे पुष्पं संशोध्य सप्तधा।
रिपूणां चैव चोच्चीं नयत्येव न संशयः।।२४।।
आकर्षणे च क्रीं-क्रीं-क्रीं जप्त्वाऽक्षतं प्रतिक्षिपेत्।
सहस्त्रयोजनस्था च शीघ्रमागच्छति प्रिये!।।२५।।
क्रीं-क्रीं-क्रीं-हूं-हूं-ह्रीं-ह्रीं च कज्जलं शोधितं तथा।
तिलकेन जगन्मोहं सप्तधा मन्त्रमाचरेत्।।२६।।
हृदयं परमेशानि सर्वपापहरं परम्।
अश्वमेधादियज्ञानां कोटि कोटि गुणोत्तरम्।।२७।।
कन्यादानादिदानानां कोटि कोटि गुणं फलम्।
दूतीयागादियागानां कोटि कोटि फलं स्मृतम्।।२८।।

'क्रीं हूँ ह्रीं' इस मन्त्र का जप करके सात दानें अक्षत अर्थात् चावल फेंकने से महाभय का विनाश हो जाता है, इसमें लेशमात्र संदेह नहीं है। 'क्रीं ह्रीं हूँ स्वाहा' इस मन्त्र द्वारा श्मशान की अग्नि को अभिमंत्रित करके जलायें, फिर उसे शत्रु के गृह की ओर फेंक दें। ऐसा करने से शत्रु की मृत्यु हो जाती है। 'हूँ ह्रीं क्रीं' इस मन्त्र से सात बार फूल को अभिमंत्रित करके शत्रु के ऊपर फेंक देने से शत्रु का उच्चाटन हो जाता है। 'क्रीं क्रीं क्रीं' इस मन्त्र का जपकर चावल के दानों को सभी दिशाओं में फेंकने से हजार योजन दूर रहनेवाला भी आकृष्ट होकर यथाशीघ्र ही चला आता है। 'क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं' इस मन्त्र से सात बार काजल को पारित कर उसका तिलक करने मात्र से सम्पूर्ण संसार मोहग्रस्त हो जाता है॥२२-२६॥

हे परमेशानि! यह काली-हृदय नामक स्तोत्र समस्त पापों को विनष्ट करता है एवं अश्वमेधादि यज्ञों और समस्त दानों से करोड़ों गुना श्रेष्ठ है। कन्यादानादि से भी करोड़ों गुना उत्तम है तथा देवीयज्ञों से भी श्रेष्ठ है॥२७-२८॥

गङ्गादिसर्वतीर्थाणां फलं कोटि गुणं स्मृतम्।
एकधा पाठमात्रेण सत्यंसत्यं मयोदितम्।।२९।।
कौमारी स्वेष्टरूपेण पूजां कृत्वा विधानतः।
पठेत् स्तोत्रं महेशानि! जीवन् मुक्तः स उच्यते।।३०।।
रजस्वलाभगं दृष्टवा पठेदेकाग्रमानसः।
लभते परमं स्थानं देवीलोकं वरानने!।।३१।।
महादुःखे महारोगे महासङ्कटके दिने।
महाभये महाघोरे पठेत् स्तोत्रं महोत्तमम्।
सत्यं-सत्यं पुनः सत्यं गोपयेन् मातृजारवत्।।३२।।

।। काली-हृदयं सम्पूर्णम्।।

इस कालीहृदय का एक बार पाठ करने से गंगादि सभी तीर्थों से भी उत्तम फल प्राप्त होते हैं, यह यथार्थ है। हे महेशानि! कौमारी को जो अपना इष्टदेवता मानकर विधि-विधान से उनकी पूजा करते हैं और पूजा के उपरान्त इस (काली-हृदय) का पाठ करते हैं, वे निःसन्देह जीवन से मुक्त हो जाते हैं।।२९-३०।।

हे वरानने! (जो साधक) रजस्वला स्त्री की योनि का दर्शन कर शुद्धहृदय हो, अपने मन को एकाग्र कर इस काली-हृदय का पाठ करते हैं। ऐसे साधक (काली) देवी के उत्तम लोक में परमपद को प्राप्त करते हैं।।३१।।

अत्यन्त दुःख के आने पर, असाध्य रोग अर्थात् जिस रोग की दवा न हो सके, घनघोर संकट में, महाभय में एवं अनिष्ट काल में इस उत्तम (काली-हृदय स्तोत्र) का पाठ करना चाहिए। यह हम यथार्थ कहते हैं, यह हम यथार्थ कहते हैं, यह हम यथार्थ कहते हैं। जैसे कि (अपनी) माता के साथ व्यभिचार करनेवाले पुरुष एवं मातृयोनिवत् जिस प्रकार से गुप्त रखा जाता है, उसी प्रकार इस (स्तोत्र) को भी गोपनीय रखना चाहिए।।३२।।

।।हिन्दी टीका सहित काली-हृदय पूर्ण हुआ।।

कालिकाष्टकम्

गलद् - रक्तमुण्डावली - कण्ठमाला
महाघोररावा सुदंष्ट्रा कराला।
विवस्त्रा श्मशानालया मुक्तकेशी
महाकाल - कामाकुला कालिकेयम्।।१।।
भुजे वामयुग्मे शिरोऽसिं दधाना
वरं दक्षयुग्मेऽभयं वै तथैव।
सुमध्याऽपि तुङ्गस्तनाभारनम्रा
लसद्रक्तसृक्कद्वया सुस्मितास्या।।२।।
शवद्वन्द्वकर्णावतंसा सुकेशी
लसत् प्रेतपाणिं प्रयुक्तैक - काञ्ची।
शवाकार - मञ्चाधिरूढा शिवाभि-
श्चतुर्दिक्षु शब्दायमानाऽभिरेजे।।३।।

जिन (काली) के गले में रहनेवाली नरमुण्डों की माला से सदैव खून बह रहा है, जो अत्यन्त महाघोर शब्द करनेवाली, एवं बड़े-बड़े दाँतों से अत्यधिक भीषण हैं, जो बिना वस्त्र के हैं अर्थात् नंगी हैं। जो संसार में रहनेवाली हैं, जिनके केश सदैव बिखरे रहते हैं तथा महाकाल से रतिक्रिया के लिये जो सदैव व्यग्र रहती हैं, वही कालिका के नाम से (इस संसार में) विख्यात हैं।।१।। जो अपनी बायीं ओर की दो भुजाओं में नरमुण्ड और खड्ग तथा दायीं ओर की भुजाओं में वर एवं अभय मुद्रा धारण की हुई हैं। जिन (काली) का कटितट अत्यधिक मन को हरण करनेवाला है तथा उभरे हुए स्तनों के भार से कुछ आगे की ओर झुकी हुई हैं। जिन (काली) के मुख के दोनों प्रान्त खून से शोभायमान हो रहे हैं, जो धीमी-धीमी गति से हँस रही हैं। यह वही महाकालिका हैं।।२।। जिनके दोनों कानों में दो शवों के कर्णफूल लटक रहे हैं, जिनके बाल अत्यधिक मन को हरण करनेवाले हैं, जो शवों के हाथों की कर्धनी से युक्त हो शव के ऊपर बैठी हुई हैं। जिनके चारों ओर शृगालियों की आवाज आ रही है। यह वही संसार में विख्यात महाकालिका हैं।।३।।

विरञ्च्यादिदेवास्त्रयस्ते गुणांस्त्रीन्
समाराध्य कालीं! प्रधाना बभूवः।
अनादिं सुरादिं मखादिं भवादिं
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः।।४।।
जगन् मोहनीयं तु वाग्वादिनीयं
सुहृत् पोषिणीं शत्रुसंहारणीयम्।
वचः स्तम्भनीयं किमुच्चाटनीयं
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः।।५।।
इयं स्वर्गदात्री पुनः कल्पवल्ली
मनोजांस्तु कामान् यथार्थं प्रकुर्यात्।
तथा ते कृतार्था भवन्तीति नित्यं
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः।। ६।।

हे माते! (चतुर्मुख) ब्रह्माजी, शिवजी और (भगवान्) विष्णु ये तीन देव आपके तीन गुणों में से एक-एक की उपासना करने के कारण ही महान् हो गये हैं, क्योंकि हे माते! आपके अनादि, सुरादि, मखादि एवं सृष्टि के आदि स्वरूप को देवता भी पाने में समर्थ नहीं हैं।।४।। हे माते! आप इस संसार को मोहग्रस्त करनेवाली महाकाली हो या सरस्वती हो? क्या आप (अपने) भक्तों का पालन करनेवाली हैं अथवा शत्रुओं का वध करनेवाली हैं? या वाणी को स्तम्भित करनेवाली अथवा पुरुषों का उच्चाटन करनेवाली इनमें से आप कौन हैं? क्योंकि आपके (वास्तविक) स्वरूप को देवता भी जानने में समर्थ नहीं हैं।। ५।। हे माते! यह आपकी स्तुति स्वर्ग को देनेवाली तथा कल्पलता वृक्ष के तुल्य है। इसलिए यह (आपके) उपासकों एवं भक्तों की समस्त इच्छाओं को पूर्ण करें। क्योंकि वे उपासक आपकी प्रार्थना करके ही संसार में सदैव कृतार्थ रहते हैं। (हे माते!) आपके (वास्तविक) स्वरूप को प्राप्त करने में देवता भी समर्थ नहीं हो सकते।।६।।

सुरापानमत्ते! सुभक्तानुरक्ते!
लसत् पूतचित्ते! सदाविर्भवत्ते।
जप - ध्यान - पूजा - सुधाधौतपङ्का
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः।।७।।

चिदानन्दकन्दं हसन् मन्द-मन्दं
शरच्चन्द्रकोटि - प्रभापुञ्ज - बिम्बम्।
मुनीनां कवीनां हृदि द्योतमानं
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः।। ८।।

महामेघ-काली सुरक्ताऽपि शुभ्रा
कदाचिद् विचित्राकृतिर्योगमाया।
न बाला न वृद्धा न कामातुराऽपि
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः।।९।।

हे मदिरापान में प्रमत्त रहनेवाली, (अपने) भक्तों पर अनुकम्पा करनेवाली, हे माते! पवित्र हृदय में आपका आविर्भाव होता ही रहता है। क्योंकि जब ध्यान एवं पूजारूपी सुधा से हृदय की मलिनता को समाप्त करनेवाले देवगण भी आपके (वास्तविक) स्वरूप को प्राप्त करने में समर्थ नहीं हैं।।७।।

हे माते! चिदानन्द का कन्द, मन्द-मन्द हास्ययुक्त करोड़ों शरत्कालीन चन्द्रमा के चन्द्रिका समूह का विम्ब एवं मुनियों एवं कवियों के हृदय में प्रकाशित होनेवाले आपके स्वरूप को देवता भी नहीं जानते।।८।।

हे माते! कभी आप अति भयंकर बादलों के तुल्य महाकाली, कभी सुन्दर, लाल रंगवाली महालक्ष्मी तथा कभी शुभ्र स्वरूपा सरस्वती एवं कदाचित् विचित्र आकृति से युक्त योगमाया बन जाती हैं। वैसे तो न ही आप बाला हैं, न ही आप वृद्धा हैं, न ही आप युवती ही हैं। आपके वास्तविक रूप को देवता भी नहीं जान सकते।।९।।

क्षमस्वापराधं महागुप्तभावं
मया लोकमध्ये प्रकाशीकृतं यत्।
तव ध्यानपूतेन चापल्यभावात्
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः।।१०।।

फलश्रुतिः

यदि ध्यानयुक्तः पठेद् यो मनुष्य-
स्तदा सर्वलोके विशालो भवेच्च।
गृहे चाऽष्टसिद्धिर्मृते चापि मुक्तिः
स्वरूपं त्वदीयं न विन्दन्ति देवाः।।११।।

।। कालिकाष्टकं सम्पूर्णम्।।

हे माते! मैंने आपके ध्यान में निमग्न होकर चञ्चलतावश इस संसार में आपके जिस गोपनीय स्वरूप को प्रकट किया है, मेरे इस अपराध को आप क्षमा प्रदान करें। क्योंकि आपके (वास्तविक) स्वरूप को देवता भी प्राप्त करने में समर्थ नहीं हैं।।१०।।

फलश्रुति—महाकाली का ध्यान करते हुए जो मनुष्य इस (कालिकाष्टक) स्तोत्र का पाठ करता है, वह सम्पूर्ण संसार में महान् हो जाता है। उसके गृह में आठों सिद्धियाँ निवास करती हैं एवं मृत्यु के पश्चात् उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है। (हे माते) इस प्रकार के आपके स्वरूप को देवगण भी जानने में समर्थ नहीं हैं।।११।।

।। हिन्दी टीका सहित कालिकाष्टक पूर्ण हुआ।।

कालीस्तवः

नमामि कृष्णरूपिणीं कृशाङ्ग-यष्टि-धारिणीम्।
समग्रतत्त्व - सागरामपार-पार - गह्वराम्।।१।।
शिवां प्रभासमुज्ज्वलां स्फुरच्छशाङ्कशेखराम्।
ललाटरत्नभास्वरां जगत् प्रदीप्ति - भास्कराम्।।२।।
महेन्द्रकश्यपार्चितां सनत्कुमार - संस्तुताम्।
सुराऽसुरेन्द्र - वन्दितां यदार्थनिर्मलाद्भुताम्।।३।।
अतर्क्यरोचिरूर्जितां विकार-दोषवर्जिताम्।
मुमुक्षुभिर्विचिन्तितां विकार-दोषवर्जिताम्।।४।।
मृतास्थिनिर्मितस्रजां मृगेन्द्रवाहनाग्रजाम्।
सुशुद्धतत्त्वतोषणां त्रिवेदसारभूषणाम्।।५।।

जिनका रूप (बादलों के समान) काला एवं जिनका शरीर कृश है, जो सम्पूर्ण तत्त्वों की सागर हैं। जिनका पार पाना कदापि सम्भव नहीं हैं और जो गहन हैं, ऐसी काली को मैं प्रणाम करता हूँ॥१॥ (अपने) भक्तों का कल्याण करनेवाली, प्रकाश से उज्ज्वल, जिन महाकाली के मस्तक में चन्द्रमा स्फुरित हो रहा है। जिनके ललाट में रत्नों की ज्योति जो स्वयं जगमगा रही हैं। जो अपने दिव्य प्रकाश से सूर्य के तुल्य शोभायमान हो रही हैं। ऐसी भगवती काली को मैं प्रणाम करता हूँ॥२॥ महेन्द्र (इन्द्र) तथा कश्यप ऋषि के द्वारा अर्चना की जानेवाली, सनत्कुमार के द्वारा प्रार्थित देवताओं एवं राक्षसों के द्वारा वन्दना की जानेवाली, सत्य, स्वच्छ एवं अद्भुत रूप को (ग्रहण करनेवाली) काली को मैं प्रणाम करता हूँ। मन, कर्म, वाणी से अत्यधिक तेजयुक्ता, अत्यन्त पराक्रमशील, विकार एवं दोषरहित, मुमुक्षुओं से ध्यान की जानेवाली एवं विशेष तत्त्व से जानने योग्य, काली को मैं प्रणाम करता हूँ॥४॥ शव की हड्डी की माला को गले में धारण करनेवाली, जिनका वाहन (सिंह है) अर्थात् जो सिंह पर सवारी करती हैं। सबसे पहले (इस संसार में) उत्पन्न होनेवाली, परब्रह्म, परमात्मा को प्रसन्न करनेवाली तथा तीनों वेदों के साररूपी भूषण को धारण की हुई भगवती महाकाली को मैं प्रणाम करता हूँ॥५॥

भुजङ्गहारहारिणीं कपालषण्ड-धारिणीम्।
सुधार्मिकोपकारिणीं सुरेन्द्रवैरिघातिनीम्।। ६ ।।
कुठारपाशचापिनीं कृतान्तकाममेदिनीम्।
शुभां कपालमालिनीं सुवर्णकल्प-शाखिनीम्।। ७ ।।
श्मशानभूमिवासिनीं द्विजेन्द्रमौलिभाविनीम्।
तमोऽन्धकारयामिनीं शिवस्वभावकामिनीम्।। ८ ।।
सहस्रसूर्यराजिकां धनञ्जयोपकारिकाम्।
सुशुद्धकाल-कन्दलां सुभृङ्गवृन्दमञ्जुलाम्।। ९ ।।
प्रजायिनीं प्रजावतीं नमामि मातरं सतीम्।
स्वकर्मकारणो गतिं हरप्रियां च पार्वतीम्।।१०।।

(भयंकर) सर्पों की माला एवं कपाल समूहों को (गले में) धारण करनेवाली, अत्यधिक धार्मिकोपकारिणी तथा (अदितिपुत्र) इन्द्र के शत्रुओं का नाश करनेवाली महाकाली को मैं प्रणाम करता हूँ।।६।।

(अपने हाथों में) कुठार, पाश और धनुष धारण करनेवाली, काल की इच्छा को भी व्यक्त करनेवाली, सभी का कल्याण करनेवाली, गले में कपाल की माला धारण करनेवाली एवं सुवर्ण प्रदान करने हेतु कल्पवृक्ष के तुल्य महाकाली को मैं प्रणाम करता हूँ।। ७।।

श्मशान भूमि जिनका निवास-स्थल है, जो चन्द्रमा को अपने मस्तक में धारण करती हैं। जो तम मोहरूप पंचपर्वा अविद्या की रात्रिस्वरूपा हैं। जो महाकाली स्वभाव से ही शिव की इच्छा करनेवाली हैं, उन महाकाली को मैं प्रणाम करता हूँ।।८।।

हजारों सूर्य के तुल्य शोभायमान होनेवाली, समर में अर्जुन को विजय प्रदत्त करवा के उनका उपकार करनेवाली, विशुद्ध कालतत्त्व की अंकुरस्वरूपा, भृङ्गमाला के तुल्य अत्यधिक मनोहर स्वरूपवाली, उन महाकाली को मैं प्रणाम करता हूँ।।९।।

सम्पूर्ण संसार को पैदा करनेवाली, संसाररूपी संतानवाली, मनुष्यों के अपने कर्मों के अनुसार उनको फल प्रदान करनेवाली, शिव की प्रिया सती पार्वती को मैं प्रणाम करता हूँ।।१०।।

अनन्तशक्ति-कान्तिदां यशोऽर्थ-भुक्ति-मुक्तिदाम्।
पुनः पुनर्जगद्धितां नमाम्यहं सुरार्चिताम्।।११।।
जयेश्वरि! त्रिलोचने! प्रसीद देवि! पाहि माम्।
जयन्ति ते स्तुवन्ति ये शुभं लभन्त्यभीक्ष्णशः।।१२।।
सदैव ते हतद्विषः परं भवन्ति सज्जुषः।
ज्वरापहे शिवेऽधुना प्रशाधि मां करोमि किम्।।१३।।
अतीव मोहितात् मनो वृथा विचेष्टितस्य मे।
तथा भवन्तु तावका यथैव चोषितालकाः।।१४।।

फलश्रुतिः

इमां स्तुतिं मयेरितां पठन्ति कालिसाधकाः।
न ते पुनः सुदुस्तरे पतन्ति मोहगह्वरे।।१५।।

।।कालीस्तवः सम्पूर्णः।।

अनन्त शक्ति, अनन्त कान्ति, यश, अर्थ, भोग एवं मोक्ष को प्रदत्त करनेवाली, अनेकानेक बार संसार का कल्याण करनेवाली और देवगणों के द्वारा सदैव अर्चना की जानेवाली श्रीमहाकाली को मैं प्रणाम कता हूँ।। ११।। हे ईश्वरि! आपकी जय हो, हे त्रिलोचने! आप मेरे ऊपर प्रसन्न होकर मेरी रक्षा करो। हे माते! जो आपकी स्तुति करते हैं, वे सदैव विजय को प्राप्त करते हैं तथा उनका सदैव कल्याण होता है।। १२।। ऐसे (भक्तों) के शत्रुगण स्वयं नष्ट हो जाते हैं तथा वे अच्छे लोगों से सदैव सेवित होते हैं, हे तीनों तापों को हरनेवाली माता भगवति! मुझको आज्ञा प्रदान करो कि मैं क्या करूँ?।। १३।। हे माते! (यह जो) मेरी आत्मा है, यह अत्यधिक मोह में पड़ी हुई है, मेरी सम्पूर्ण चेष्टाएँ व्यर्थ हो रही हैं। अब आप मुझ पर प्रसन्न होवें, जिससे कि मैं मुक्ति का पात्र बन जाऊँ।। १४।।

फलश्रुति—ब्रह्मदेव का कथन है कि मेरे द्वारा रची गई इस स्तुति को जो काली के साधक पढ़ते हैं, वे अत्यंत दुस्तर मोहरूपी गड्ढे में नहीं पड़ते।।१५।।

।। हिन्दी टीका सहित कालीस्तव पूर्ण हुआ।।

हिमालयकृता कालीस्तुतिः

मातः सर्वमयि प्रसीद परमे विश्वेशि विश्वाश्रये
त्वं सर्वं नहि किञ्चिदस्ति भुवने तत्त्वं त्वदन्यच्छिवे।
त्वं विष्णुर्गिरिशस्त्वमेव नितरां धातासि शक्तिः परा
किं वर्ण्यं चरितं त्वचिन्त्यचरिते ब्रह्माद्यगम्यं मया।।१।।

त्वं स्वाहाखिलदेवतृप्तिजननी विश्वेशि त्वं वै स्वधा
पितृणामपि तृप्तिकारणमसि त्वं देवदेवात्मिका।
हव्यं कव्यमपि त्वमेव नियमो यज्ञस्तपो दक्षिणा
त्वं स्वर्गादिफलं समस्तफलदे देवेशि तुभ्यं नमः।।२।।

रूपं सूक्ष्मतमं परात्परतरं यद्योगिनो विद्यया
शुद्धं ब्रह्ममयं वदन्ति परमं मातः सुदृप्तं तव।
वाचा दुर्विषयं मनोऽतिगमपि त्रैलोक्यबीजं शिवे
भक्त्याहं प्रणमामि देवि वरदे विश्वेश्वरि त्राहि माम्।।३।।

उद्यत्सूर्यसहस्रभां मम गृहे जातां स्वयं लीलया
देवीमष्टभुजां विशालनयनां बालेन्दुमौलिं शिवाम्।
उद्यत्कोटिशशाङ्ककान्तिनयनां बालां त्रिनेत्रां परां
भक्त्या त्वां प्रणमामि विश्वजननीं देवि प्रसीदाम्बिके।।४।।

रूपं ते रजताद्रिकान्तिविमलं नागेन्द्रभूषोज्ज्वलं
घोरं पञ्चमुखाम्बुजत्रिनयनैर्भीमैः समुद्भासितम्।
चन्द्रार्धाङ्कितमस्तकं धृतजटाजूटं शरण्ये शिवे
भक्त्याहं प्रणमामि विश्वजननि त्वां त्वं प्रसीदाम्बिके।।५।।

रूपं शारदचन्द्रकोटिसदृशं दिव्याम्बरं शोभनं
दिव्यैराभरणैर्विराजितमलं कान्त्या जगन्मोहनम्।
दिव्यैर्बाहुचतुष्टयैर्युतमहं वन्दे शिवे भक्तितः
पादाब्जं जननि प्रसीद निखिलब्रह्मादिदेवस्तुते।।६।।

रूपं ते नवनीरदद्युतिरुचिफुल्लाब्जनेत्रोज्ज्वलं
कान्त्या विश्वविमोहनं स्मितमुखं रत्नाङ्गदैर्भूषितम्।
विभ्राजद्वनमालयाविलसितोरस्कं जगत्तारिणि
भक्त्याहं प्रणतोऽस्मि देवि कृपया दुर्गे प्रसीदाम्बिके।।७।।

मातः कः परिवर्णितुं तव गुणं रूपं च विश्वात्मकं
शक्तो देवि जगत्त्रये बहुगुणैर्देवोऽथवा मानुषः।
तत् किं स्वल्पमतिर्ब्रवीमि करुणां कृत्वा स्वकीयैर्गुणै-
र्नो मां मोहय मायया परमया विश्वेशि तुभ्यं नमः।।८।।

वेदैः कृता कालीस्तुतिः

दुर्गे विश्वमपि प्रसीद परमे सृष्ट्यादिकार्यत्रये
ब्रह्माद्याः पुरुषास्त्रयो निजगुणैस्त्वत्स्वेच्छया कल्पिताः।
नो ते कोऽपि च कल्पकोऽत्र भुवने विद्येत मातर्यतः
कः शक्तः परिवर्णितुं तव गुणाँल्लोके भवेद्दुर्गमान्।।१।।
त्वामाराध्य हरिर्निहत्य समरे दैत्यान् रणे दुर्जयान्
त्रैलोक्यं परिपाति शम्भुरपि ते धृत्वा पदं वक्षसि।
त्रैलोक्यक्षयकारकं समपिबद्यत्कालकूटं विषं
किं ते वा चरितं वयं त्रिजगतां ब्रूमः परित्र्यम्बिके।।२।।
या पुंसः परमस्य देहिन इह स्वीयैर्गुणैर्मायया
देहाख्यापि चिदात्मिकापि च परिस्पन्दादिशक्तिः परा।
त्वन्मायापरिमोहितास्तनुभृतो यामेव देहस्थितां
भेदज्ञानवशाद्वदन्ति पुरुषं तस्यै नमस्तेऽम्बिके।।३।।
स्त्रीपुंस्त्वप्रमुखैरुपाधिनिचयैर्हीनं परं ब्रह्म यत्
त्वत्तो या प्रथमं बभूव जगतां सृष्टौ सिसृक्षा स्वयम्।
सा शक्तिः परमाऽपि यच्च समभून्मूर्तिद्वयं शक्तित-
स्त्वन्मायामयमेव तेन हि परं ब्रह्मापि शक्त्यात्मकम्।।४।।
तोयोत्थं करकादिकं जलमयं दृष्ट्वा यथा निश्चय-
स्तोयत्वेन भवेद्ग्रहोऽप्यभिमतां तथ्यं तथैव ध्रुवम्।
ब्रह्मोत्थं सकलं विलोक्य मनसा शक्त्यात्मकं ब्रह्म त-
च्छक्तित्वेन विनिश्चितः पुरुषधीः पारं परा ब्रह्मणि।।५।।
षट्चक्रेषु लसन्ति ये तनुमतां ब्रह्मादयः षट्शिवा-
स्ते प्रेता भवदाश्रयाच्च परमेशत्वं समायान्ति हि।
तस्मादीश्वरता शिवे नहि शिवे त्वय्येव विश्वाम्बिके
त्वं देवि त्रिदशैकवन्दितपदे दुर्गे प्रसीदस्व नः।।६।।

श्रीकालीसहस्त्राक्षरी

क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं दक्षिणे कालिके क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्वाहा शुचिजाया महापिशाचिनी दुष्टचित्तनिवारिणी क्रीं कामेश्वरी वीं हं वाराहिके ह्रीं महामाये खं खः क्रोधाधिपे श्रीमहालक्ष्म्यै सर्वहृदयरञ्जनि वाग्वादिनीविधे त्रिपुरे हंस्त्रिं हसकहलह्रीं हस्त्रैं ॐ ह्रीं क्लीं मे स्वाहा ॐ ॐ ह्रीं ईं स्वाहा दक्षिणकालिके क्रीं हूं ह्रीं स्वाहा खड्गमुण्डधरे कुरकुल्ले तारे ॐ ह्रीं नमः भयोन्मादिनी भयं मम हन हन पच पच मथ मथ फ्रें विमोहिनी सर्वदुष्टान् मोहय मोहय हयग्रीवे सिंहवाहिनी सिंहस्थे अश्वारूढे अश्वमुखि रिपुविद्राविणी विद्रावय मम शत्रून् मां हिंसितुमुद्यतास्तान् ग्रस ग्रस महानीले वलाकिनी नीलपताके क्रें क्रीं क्रें कामे संक्षोभिणी उच्छिष्टचाण्डालिके सर्वजगद्वशमानय वशमानय मातङ्गिनी उच्छिष्टचाण्डालिनी मातङ्गिनी सर्ववशङ्करी नमः स्वाहा विस्फारिणी कपालधरे घोरे घोरनादिनी भूर शत्रून् विनाशिनी उन्मादिनी रों रों रों रों ह्रीं श्रीं हसौः सौं वद वद क्लीं क्ली क्लीं क्रीं क्रीं क्रीं कति कति स्वाहा काहि काहि कालिके शम्बरघातिनि कामेश्वरी कामिके हं हं क्रीं स्वाहा हृदयालये ॐ ह्रीं क्रीं मे स्वाहा ठः ठः ठः क्रीं हं ह्रीं चामुण्डे हृदयजनाभि असूनवग्रस ग्रस दुष्टजनान् अमून् शंखिनी क्षतजचर्चितस्तने उन्नतस्तने विष्टंभकारिणि विद्याधिके श्मशानवासिनी कलय कलय विकलय विकलय कालग्राहिके सिंहे दक्षिणकालिके अनिरुद्धये ब्रूहि ब्रूहि जगच्चित्रिरे चमत्कारिणि हं कालिके करालिके घोरे कह कह तडागे तोये गहने कानने शत्रुपक्षे शरीरे मर्दिनि पाहि पाहि अम्बिके तुभ्यं कल विकलायै बलप्रमथानायै योगमार्गं गच्छ गच्छ निदर्शिके देहिनि दर्शनं देहि देहि मार्देनि महिषमर्दिन्यै स्वाहा रिपून्दर्शने दर्शय दर्शय सिंहपूरप्रवेशिनि वीरकारिणि क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं फट् स्वाहा शक्तिरूपायै रों वा गणपायै रों रों रों व्यामोहिनि यन्त्रनिके महाकायायै प्रकटवदनायै नीलजिह्वायै मुण्डमालिनि महाकालरसिकायै नमो नमः ब्रह्मरन्ध्रमेदिन्यै नमो नमः शत्रुविग्रहकलहान् त्रिपुरभोगिन्यै विषज्वालामालिनी तन्त्रनिके मेघप्रभे शवावतंसे हंसिके कालि कपालिनी कुल्ले कुरुकुल्ले चैतन्यप्रभे प्रज्ञे तु साम्राज्ञि ज्ञान ह्रीं ह्रीं रक्ष रक्ष ज्वालाप्रचण्डचण्डिकेयं

शक्तिमार्तण्डभैरवि विप्रचित्तिके विरोधिनि आकर्णय आकर्णय पिशिते पिशितप्रिये नमो नमः खः खः खः मर्दय मर्दय शत्रून् ठः ठः ठः कालिकायै नमो नमः ब्राह्मं नमो नमः माहेश्वर्यै नमो नमः कौमार्यै नमो नमः वैष्णव्यै नमो नमः वाराह्यै नमो नमः इन्द्राण्यै नमो नमः चामुण्डायै नमो नमः अपराजितायै नमो नमः नारसिंहिकायै नमो नमः कालि महाकालिके अनिरुद्धके सरस्वति फट् स्वाहा पाहि पाहि ललाटं भल्लाटिनी अस्त्रीकले जीववहे वाचं रक्ष रक्ष परविद्यां क्षोभय क्षोभय आकृष्य आकृष्य कट कट महामोहिनिके चीर-सिद्धिके कृष्णरूपिणी अजनसिद्धिके स्तम्भिनि मोहिनि मोक्षमार्गानि दर्शय दर्शय स्वाहा।

~~~

श्रीकालीबीजसहस्राक्षरी

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ
ॐ ॐ ॐ क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं
क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं
हुं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं
ह्रीं ह्रीं
ह्रीं ह्रीं
ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं हुं हुं हुं हुं हुं हुं हुं हुं हुं हुं हुं हुं
हुं हसौं हसौं हसौं हसौं
हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं
हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं
हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं
हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं
हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं
हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं
~~~

हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं हसौं
हसौं ऐं
ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं ऐं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं
ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं
ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं श्मशानकालिकायै घोररूपायै
शवासनायै अभयखड्गमुण्डधारिण्यै दक्षिणकालिके मुण्डमालि चतुर्भुजी
नागयज्ञोपवीते क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं
क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं
क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं
क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं क्षीं प्रीं
प्रीं प्रीं
प्रीं प्रीं
प्रीं प्रीं
प्रीं प्रीं
प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं प्रीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं
क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं
क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं
क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं
क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं
क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं
क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं
क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं क्लीं
क्लीं क्लीं क्लीं क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों
क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों
क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों
क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों
क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों

क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों क्रों तुं तुं तुं तुं तुं तुं
तुं तुं
तुं तुं
तुं तुं
तुं तुं तुं तुं तुं तुं तुं तुं तुं तुं तुं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं
ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं
ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं
ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं
ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं
ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं
ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं ग्लौं
ग्लौं फट् फट् फट् फट् फट् फट् फट् फट् फट् फट् फट् फट् फट् फट्
फट् फट् फट् स्वाहा स्वाहा स्वाहा स्वाहा स्वाहा स्वाहा स्वाहा।

~~~

कालिकोपनिषत्

अथ ह्यैनां ब्रह्मरन्ध्रे ब्रह्मस्वरूपिणीमाप्नोति सुभगां कामरेफेन्दिरां समष्टि-रूपिणीमादौ तदन्वकर्तुर्बीजद्वयकूर्चबीजं तद्धोमषष्ठस्वरबिन्दुमेलनं रूपं तदनु-भुवना द्वयभुवना तु व्योमज्वलनेन्दिराशून्यमेलनरूपा दक्षिणे कालिके वेत्यभि-मुखं गता तदनुबीजसप्तकमुच्चार्य बृहद्भानुजायामुच्चरेत्।

अयं सर्वमन्त्रोत्तमोत्तम इमं सकृज्जपन् स तु विश्वेश्वरः स तु नारीखरः स तु वेदेश्वरः स सर्वगुरुः सर्वनमस्यः सर्वेषु वेदेष्वधिश्रितो भवति स सर्वेषु तीर्थेषु स्नातो भवति सर्वेषु यज्ञेषु दीक्षितो भवति स स्वयं सदाशिव त्रिकोणं त्रिकोणं त्रिकोणं पुनश्चैव त्रिकोणं त्रिकोणं ततो वसुदलं सार्द्धचन्द्रकेसरं युग्मशो विलिख्य सम्भृतं भूपुरैकेन युतं सर्वज्ञेनाभ्यर्च्य तस्मिन् देवीदले रेखायां विन्यस्य ध्येया, अभिनव-जलदवदना घनस्तनी कुटिलदंष्ट्रा शवासना वराभय-खड्ग-मुण्ड-मण्डितहस्ता कालिका ध्येया, काली कपालिनी कुल्ला
~~~

कुरुकुल्ला विरोधिनी विप्रचित्तेति षट्कोणगाः। उग्रा उग्रप्रभा दीप्ता नीला घना बलाका मात्रा मुद्रा मितेति नवकोणगाः, इत्थं पञ्चदशकोणगाः।

ब्राह्मी नारायणी माहेश्वरी चामुण्डा कौमारी अपराजिता वाराही नारसिंहीत्यष्टपत्रगाः। चतुष्कोणगाश्चत्वारो देवाः माधव-रुद्र-विनायक-सौराः। चतुर्दिक्षु इन्द्र-यम-वरुण-कुबेराः। देवीं सर्वाङ्गेनादौ सम्पूज्य, भगोदकेन तर्पणं पञ्चमकारेण पूजनमेतस्याः सपर्यायाः किमधिकं नो शक्यं ब्रह्मादिपदं हेयं हेलया प्राप्नोति एतस्या एक-द्वि-त्रिक्रमेण मनवो भवन्ति नारिमित्रादिलक्षणमत्र वर्तते अमुष्यमन्त्रपाठकस्य गतिरस्ति नान्यस्येह गतिरस्ति एतस्यास्तारा मनोर्दुर्गा मनोर्वा सिद्धिः इदानीं तु सर्वाः स्वप्नभूता असितैव जागर्ति इमामसिताज्ञामुपनिषदं यो वाऽधीते सोऽपुत्रः पुत्रीभवति निर्द्धनो धनायति धर्माऽर्थ-काम-मोक्षाणां पात्रीयत्यन्यस्य वरदः दृष्ट्वा जगन्मोहयति क्रोधस्तं जहाति गङ्गादितीर्थ-क्षेत्राणामग्निष्टोमादियज्ञानां फलभागीयति।

श्रीदेव्यथर्वशीर्षम्

ॐ सर्वे वै देवा देवीमुपतस्थुः कासि त्वं महादेवीति।।१।।

साब्रवीत्–अहं ब्रह्मस्वरूपिणी। मत्तः प्रकृतिपुरुषात्मकं जगत्। शून्यं चाशून्यं च।।२।।

अहमानन्दानानन्दौ। अहं विज्ञानाविज्ञाने। अहं ब्रह्माब्रह्मणी वेदितव्ये। अहं पञ्चभूतान्यपञ्चभूतानि। अहमखिलं जगत्।।३।।

वेदोऽहमवेदोऽहम्। विद्याहमविद्याहम्। अजाहमनजाहम्। अधश्चोर्ध्वं च तिर्यक्चाहम्।।४।।

अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चरामि। अहमादित्यैरुत विश्वदेवैः। अहं मित्रावरुणावुभौ बिभर्मि। अहमिन्द्राग्नी अहमश्विनावुभौ।।५।।

अहं सोमं त्वष्टारं पूषणं भगं दधामि। अहं विष्णुमुरुक्रमं ब्रह्माणमुत प्रजापतिं दधामि।।६।।

अहं दधामि द्रविणं हविष्मते सुप्राव्ये यजमानाय सुन्वते। अहं राष्ट्री

सङ्गमनी वसूनां चिकितुषी प्रथमा यज्ञियानाम्। अहं सुवे पितरमस्य मूर्धन्मम योनिरप्स्वन्तः समुद्रे। य एवं वेद। स दैवीं सम्पदमाप्नोति।। ७।।

ते देवा अब्रुवन्–

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।। ८ ।।
तामग्निवर्णां तपसा ज्वलन्तीं वैरोचनीं कर्मफलेषु जुष्टाम्।
दुर्गां देवीं शरणं प्रपद्यामहेऽसुरान्नाशयित्र्यै ते नमः।। ९ ।।
देवीं वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति।
सा नो मन्द्रेषमूर्जं दुहाना धेनुर्वागस्मानुप सुष्टुतैतु।।१०।।
कालरात्रीं ब्रह्मस्तुतां वैष्णवीं स्कन्दमातरम्।
सरस्वतीमदितिं दक्षुदुहितरं नमामः पावनां शिवाम्।।११।।
महालक्ष्म्यै च विद्महे सर्वशक्त्यै च धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्।।१२।।
अदितिर्ह्यजनिष्ट दक्ष या दुहिता तव।
तां देवा अन्वजायन्त भद्रा अमृतबन्धवः।।१३।।
कामो योनिः कमला वज्रपाणिर्गुहा हसा मातरिश्वाभ्रमिन्द्रः।
पुनर्गुहा सकला मायया च पुरूच्यैषा विश्वमातादिविद्योम्।।१४।।

एषात्मशक्तिः एषा विश्वमोहिनी। पाशाङ्कुशधनुर्बाणधरा। एषा श्रीमहाविद्या। य एवं वेद स शोकं तरति।।१५।।

नमस्ते अस्तु भगवति मातरस्मान् पाहि सर्वतः।।१६।।

सैषाष्टौ वसवः। सैषैकादश रुद्राः। सैषा द्वादशादित्याः। सैषा विश्वेदेवाः। सोमपा असोमपाश्च। सैषा यातुधाना असुरा रक्षांसि पिशाचा यक्षाः सिद्धाः। सैषा सत्त्वरजस्तमांसि। सैषा ब्रह्म-विष्णु-रुद्ररूपिणी। सैषा प्रजापतीन्द्रमनवः। सैषा ग्रह-नक्षत्रज्योतींषि। कलाकाष्ठादिकालरूपिणी। तामहं प्रणौमि नित्यम्।।१७।।

पापापहारिणीं देवीं भुक्ति-मुक्ति-प्रदायिनीम्।
अनन्तां विजयां शुद्धां शरण्यां शिवदां शिवाम्।।
वियदीकारसंयुक्तं वीतिहोत्रसमन्वितम्।
अर्धेन्दुलसितं देव्या बीजं सर्वार्थसाधकम्।।१८।।

एवमेकाक्षरं ब्रह्म यतयः शुद्धचेतसः।
ध्यायन्ति परमानन्दमया ज्ञानाम्बुराशयः।।१९।।
वाङ्माया ब्रह्मसूस्तस्मात् षष्ठं वक्त्रसमन्वितम्।
सूर्योऽवामश्रोत्रबिन्दु - संयुक्तष्टात्तृतीयकः।।
नारायणेन संमिश्रो वायुश्चाधरयुक् ततः।
विच्चे नवार्णकोऽर्णः स्यान्महदानन्ददायकः।।२०।।
हृत्पुण्डरीकमध्यस्थां प्रातःसूर्यसमप्रभाम्।
पाशाङ्कुशधरां सौम्यां वरदाभयहस्तकाम्।
त्रिनेत्रां रक्तवसनां भक्तकामदुघां भजे।।२१।।
नमामि त्वां महादेवीं महाभयविनाशिनीम्।
महादुर्गप्रशमनीं महाकारुण्यरूपिणीम्।।२२।।

यस्याः स्वरूपं ब्रह्मादयो न जानन्ति तस्मादुच्यते अज्ञेया। यस्या अन्तो न लभ्यते तस्मादुच्यते अनन्ता। यस्या लक्ष्यं नोपलक्ष्यते तस्मादुच्यते अलक्ष्या। यस्या जननं नोपलभ्यते तस्मादुच्यते अजा। एकैव सर्वत्र वर्तते तस्मादुच्यते एका। एकैव विश्वरूपिणी तस्मादुच्यते नैका। अत एवोच्यते अज्ञेयानन्तालक्ष्याजैका नैकेति।।२३।।

मन्त्राणां मातृका देवी शब्दानां ज्ञानरूपिणी।
ज्ञानानां चिन्मयातीता शून्यानां शून्यसाक्षिणी।
यस्याः परतरं नास्ति सैषा दुर्गा प्रकीर्तिता।।२४।।
तां दुर्गां दुर्गमां देवीं दुराचारविघातिनीम्।
नमामि भवभीतोऽहं संसारार्णवतारिणीम्।।२५।।

इदमथर्वशीर्षं योऽधीते स पञ्चाथर्वशीर्षजपफलमाप्नोति। इदमथर्वशीर्षमज्ञात्वा योऽर्चां स्थापयति—शतलक्षं प्रजप्त्वापि सोऽर्चासिद्धिं न विन्दति। शतमष्टोत्तरं चास्य पुरश्चर्याविधिः स्मृतः।।२६।।

दशवारं पठेद्यस्तु सद्यः पापैः प्रमुच्यते।
महादुर्गाणि तरति महादेव्याः प्रसादतः।।२७।।

देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुति-कथाः।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं
परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरणम्।।१।।

विधेरज्ञानेन द्रविण-विरहेणा-ऽलसतया
विधेयाऽशक्यत्वात् तव चरणयोर्या च्युतिरभूत्।
तदेतत् क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।।२।।

पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः
परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः।
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।।३।।

जगन्मातर्मातस्तव चरणसेवा न रचिता
न वा दत्तं देवि ! द्रविणमपि भूयस्तव मया।
तथाऽपि त्वं स्नेहं मयि निरुपमं यत् प्रकुरुषे
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।।४।।

परित्यक्ता देवा विविध-विध-सेवाकुलतया
मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि।
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नाऽपि भविता
निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम्।।५।।

श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा
निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटि-कनकैः।
तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं
जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ।।६।।

चिताभस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो
जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः।

कपाली-भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं
भवानि त्वत्पाणि-ग्रहण-परिपाटी-फलमिदम्।। ७ ।।
न मोक्षस्याऽऽकांक्षा भव-विभव-वाञ्छाऽपि च न मे
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखिसुखेच्छाऽपि न पुनः।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै
मृडानी रुद्राणी शिव शिव भवानीति जपतः।। ८ ।।
नाऽऽराधिताऽसि विधिना विविधोपचारैः
किं रुक्ष-चिन्तन-परैर्न कृतं वचोभिः।
श्यामे त्वमेव यदि किञ्चन् मय्यनाथे
धत्से कृपामुचितमम्ब ! परं तवैव।। ९ ।।
आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं करोमि दुर्गे करुणार्णवेशि।
नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः क्षुधा-तृषार्ता जननीं स्मरन्ति।।१०।।
जगदम्ब! विचित्रमत्र किं परिपूर्णा करुणाऽस्ति चेन्मयि।
अपराध-परम्परापरं न हि माता समुपेक्षते सुतम्।।११।।
मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा न हि।
एवं ज्ञात्वा महादेवि! यथायोग्यं तथा कुरु।।१२।।

श्रीसूक्तम्

हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।। १ ।।
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।। २ ।।
अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्।
श्रियं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम्।। ३ ।।
कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्।
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम्।। ४ ।।

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मिमीं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे।। ५ ।।
आदित्यवर्णे तपसोऽधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा याश्च बाह्या अलक्ष्मीः।। ६ ।।
उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।। ७ ।।
क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात्।। ८ ।।
गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।। ९ ।।
मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः।।१०।।
कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम्।।११।।
आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।।१२।।
आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।।१३।।
आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम्।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आ वह।।१४।।
तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्।।१५।।
यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम्।
सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्।।१६।।

देवी नीराजनम्

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवजी।। १ ।। जय अम्बे०
माँग सिन्दूर विराजत, टीको मृगमद को।
उज्ज्वल से दोऊ नैना, चन्द्रवदन नीको।। २ ।। जय अम्बे०
कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजै।
रक्त पुष्प गल-माला, कण्ठन पर साजै।। ३ ।। जय अम्बे०
केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी।
सुर नर मुनि जन सेवत, तिनके दुःख हारी।। ४ ।। जय अम्बे०
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर, राजत सम ज्योती।। ५ ।। जय अम्बे०
शुम्भ-निशुम्भ बिदारे महिषासुर घाती।
धूम्र विलोचन नैना, निशिदिन मदमाती।। ६ ।। जय अम्बे०
चण्ड-मुण्ड संहारे, शोणितबीजहरे।
मधु-कैटभ दोऊ मारे, सुर भयहीन करे।। ७ ।। जय अम्बे०
ब्रह्माणी रुद्राणी, तुम कमला रानी।
आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी।। ८ ।। जय अम्बे०
चौंसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरो।
बाजत ताल मृदंगा, और बाजे डमरू।। ९ ।। जय अम्बे०
तुम ही जग की माता तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुःख हरता, सुख-सम्पत्ति करता।।१०।। जय अम्बे०
भुजा चार अति शोभित, वर-मुद्राधारी।
मनवांछित फल पावत, सेवत नर-नारी।।११।। जय अम्बे०
कंचन थाल विराजत, अगर कपुर बाती।
श्री मालकेतु में राजत, कोटिरत्न ज्योती।।१२।। जय अम्बे०
श्री अम्बेजी की आरति, जो कोई नर गावै।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख-सम्पति पावै।।१३।। जय अम्बे०

परिशिष्ट

कालीध्यान के विविध क्रम

हमारे धर्मग्रंथों में माता काली के ध्यान के अनेक क्रम बताये गये हैं, किन्तु मन्त्रों के आधार पर ही ध्यान के क्रमों का वर्गीकरण किया गया है। उनके नाम क्रमशः इस प्रकार से हैं–

१. कादि क्रम–जिन मन्त्रों का आद्यक्षर ककार है एवं जो 'क्रीं' से आरम्भ होता हो, उन्हें कादि कहते हैं।

'कादि' क्रम का ध्यान

करालवदनां घोरां मुक्तकेशीं चतुर्भुजाम्।
कालिकां दक्षिणां दिव्यां मुण्डमालाविभूषिताम्।।
सद्यः छिन्नशिरः खड्गवामाधोर्ध्व कराम्बुजाम्।
अभयं वरदञ्चैव दक्षिणोर्ध्वाधिःपाणिकाम्।।
महामेघप्रभां श्यामां तथा चैव दिगम्बरीम्।
कण्ठावसक्तमुण्डाली गलद्रुधिरचर्चिताम्।।
कर्णावतंसतानीतशवयुग्मभयानकाम् ।
घोरदंष्ट्रा करालास्यां पीनोन्नतपयोधराम्।।
शवानां करसंघांतैः कृतकाञ्चीहसन्मुखीम्।
सृक्कद्वयगलद्रक्तधारां विस्फुरिताननाम्।।
घोररावां महारौद्रीं श्मशानालयवासिनीम्।
बालर्कमण्डलाकारं लोचनत्रितयान्विताम्।।
दन्तुरां दक्षिणव्यापि मुक्तालम्बिकचोच्चयाम्।
शवरूपमहादेवहृदयोपरिसंस्थिताम् ।।
शिवाभिर्घोरं राजाभिश्चतुर्दिक्षु समन्विताम्।
महाकालेन च समं विपरीतरतातुराम्।।
सुख प्रसन्नावदनां स्मेराननसरोरुहाम्।
एवं सञ्चिन्तयेत् कालीं सर्वकामसमृद्धिदाम्।।

२. हादि–जिन मन्त्रों में प्रथम वर्ण 'हकार' है तथा जो 'ह्रीं' से प्रारम्भ होता है, उन्हें हादिक्रम कहते हैं।

'हादि' क्रम का ध्यान

देव्याध्यानमयो वक्ष्ये सर्वदेवोऽपशोभितम्।
अञ्जनाद्रिनिभां देवीं करालवदनां शिवाम्।।
मुण्डमालावलीकीर्णां मुक्तकेशीं स्मिताननाम्।
महाकालहृदम्भोजस्थितां पीनपयोधराम्।।
विपरीतरतासक्तां घोरदंष्ट्रां शिवेन वै।
नागयज्ञोपवीताञ्च चन्द्रार्द्धकृतशेखराम्।।
सर्वालङ्कारसंयुक्तां मुक्तामणिविभूषिताम्।
मृतहस्तसहस्रैस्तु बद्धकाञ्चीं दिगम्बराम्।।
शिवाकोटिसहस्रैस्तु योगिनीभिर्विराजिताम्।
रक्तपूर्णमुखाम्बोजां मद्यपानप्रमत्तिकाम्।।
सद्यश्छिन्नं शिरः खड्गवामोर्ध्वाधः कराम्बुजाम्।
अभयो वरदक्षीर्ध्वाधः करां परमेश्वरीम्।।
वहन्यर्कशशिनेत्रां च रक्तविस्फुरिताननाम्।
विगतासु किशोराभ्यां कृत कर्णावतंसिनीम्।।
कण्ठावसक्तं मुण्डाली गलद्रुधिरचर्चिताम्।
श्मशानवह्निमध्यस्थां ब्रह्मकेशववन्दिताम्।।

३. **क्रोधादि**–जिन मन्त्रों का प्रथम अक्षर क्रोध बीज 'हूं' से प्रारम्भ हो, उन्हें क्रोधादि कहते हैं।

'क्रोधादि' क्रम का ध्यान

दीपं त्रिकोणं विपुलं सर्वतः सुमनोहरम्।
कूजत् कोकिलनादाढ्यं मन्दमारुतसेवितम्।।
भृंगपुष्पलताकीर्णमुद्यच्चन्द्रदिवाकरम् ।
स्मृत्वा सुधाब्धिमध्यस्थं तस्मिन्माणिक्यमण्डपे।।

रत्नसिंहासने पद्मे त्रिकोणोज्ज्वलकर्णिके।
पीठे सञ्चिन्तयेत् देवीं साक्षात् त्रैलोक्यसुन्दरीम्।।
नीलनीरजसंकाशा प्रत्यालीढपदस्थिताम्।
चतुर्भुजां त्रिनयनां खण्डेन्दुकृतशेखराम्।।
लम्बोदरीं विशालाक्षीं श्वेतप्रेतासनस्थिताम्।
दक्षिणोर्ध्वेन निस्तृंशं वामोर्ध्वनीलनीरजम्।।
कपालं दधतीञ्चैव दक्षिणाधश्च कर्तृकाम्।
नागाष्टकेन सम्बद्ध जटाजूटां सुरार्चिताम्।।
रक्तवर्तुलनेत्रांश्च प्रव्यक्त दशनोज्ज्वलाम्।
व्याघ्रचर्मपरीधानां गन्धाष्टकप्रलेपिताम्।।
ताम्बूलपूर्णवदनां सुरासुरनमस्कृताम्।
एवं सञ्चिन्तयेत् कालीं सर्वाभीष्टप्रदां शिवाम्।।

४. वागादि–जिन मन्त्रों का पहला अक्षर वाग्-बीज 'श्री' से प्रारम्भ होता हो, उन्हें वागादि कहते हैं।

'वागादि' क्रम का ध्यान

चतुर्भुजां कृष्णवर्णां मुण्डमालाविभूषिताम्।
खड्गञ्च दक्षिणे पाणौ विभ्रतीं सशरं धनुः।।
मुण्डञ्च खर्परञ्चैव क्रमाद्वामेन विभ्रतीम्।
द्यो लिखन्ती जटामेकां विभ्रती शिरसा स्वयं।।
मुण्डमालाधरां शीर्षे ग्रीवायामपि सर्वदा।
वक्षसा नागहारं तु विभ्रतीं रक्तलोचनाम्।।
कृष्णवस्त्रधरां कट्यां व्याघ्राजिनसमन्विताम्।
वामपादं शवहृदि संस्थाप्य दक्षिणं पदम्।।
विन्यस्य सिंह पृष्ठे च लेलिहानां शवं स्वयं।
साट्टहासां महाघोररावयुक्ता सुभीषणाम्।।

५. नादि–जिन मन्त्रों के प्रारम्भ में 'नम:' शब्द हो, उन्हें 'नादि' कहते हैं।

'नादि' क्रम का ध्यान

खड्गञ्च दक्षिणे पाणौ विभ्रतीन्दीवरद्वयम्।
कर्तृकां खर्परञ्चैव क्रमाद् वामेन विभ्रतीं।।

(इसके आगे का ध्यान वागादि क्रम के अनुसार करें)

६. दादि–जिन मन्त्रों के प्रथम अक्षर 'द' से प्रारम्भ हों, जैसे–'दक्षिणे कालिके'। उन्हें 'दादि' क्रम वाला कहते हैं।

'दादि' क्रम का ध्यान

सद्यः कृन्तशिरः खड्गमूर्ध्वद्वयं कराम्बुजाम्।
अभयं वरदं चैव तयोद्वय करान्विताम्।।

(इसके आगे का ध्यान कादि क्रम के अनुसार करें)

७. प्रणवादि–जिन मन्त्रों में पहले प्रणव या 'ॐ' बीज हो, उन्हें 'प्रणवादि' नाम से सम्बोधित करते हैं।

'प्रणवादि' क्रम का ध्यान

यहाँ पर भी कादि क्रम के अनुसार ही ध्यान करे। इस क्रम का ध्यान 'कादि-क्रम' के अनुसार बताया गया है।

भगवती दक्षिणकाली के कुछ मन्त्र

ॐ क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रूं दक्षिणकालिके क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रूं स्वाहा।।१।।

क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं दक्षिणकालिके क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं ह्रीं हूं हूं स्वाहा।।२।।

ॐ ह्रीं ह्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं दक्षिणकालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।।३।।

ह्रीं ह्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं दक्षिणकालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।।४।।

ह्रीं ह्रीं हूं हूं क्रीं क्रीं क्रीं दक्षिणकालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।।५।।

ऐं नमः क्रीं क्रीं कालिकायै स्वाहा।। ६।।

क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं क्रीं स्वाहा।। ७।।

क्रीं हूं ह्रीं क्रीं हूं ह्रीं स्वाहा।। ८।।

क्रीं क्रीं क्रीं फट् स्वाहा।। ९।।

क्रीं क्रीं क्रीं स्वाहा।।१०।।

क्रीं ह्रीं ह्रीं दक्षिणकालिके स्वाहा।।११।।

क्रीं हूं ह्रीं दक्षिणकालिके फट्।।१२।।

ॐ नमः आं क्रों आं क्रों फट् स्वाहा कालि कालिके हूं।।१३।।

क्रीं दक्षिणकालिके क्रीं स्वाहा।।१४।।

क्रीं क्रीं क्रीं ह्रीं दक्षिणकालिके स्वाहा।।१५।।

नमः ऐं क्रीं क्रीं कालिकायै स्वाहा।।१६।।

नमः आं आं क्रों क्रों फट् स्वाहा कालिके हूं।।१७।।

गुह्यकाली के विविध मन्त्र

क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं गुह्ये कालिके क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।।१।।

हूं हूं ह्रीं ह्रीं गुह्ये कालिके क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।।२।।

क्रीं हूं ह्रीं गुह्ये कालिके क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।।३।।

हूं ह्रीं गुह्ये कालिके क्रीं क्रीं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।।४।।

भद्रकाली के विविध मन्त्र

ॐ हौं कालि महाकालि किलि किलि फट् स्वाहा।।१।।

क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं भद्रकाल्यै क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।।२।।

भद्रकालि महाकालि किलि किलि फट् स्वाहा।।३।।

महाकाली के विविध मन्त्र

क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं महाकालि क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।।१।।

क्रें क्रें क्रों क्रों पशून् गृहाण हुं हुं फट् स्वाहा।।२।।

क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं महाकालि क्रीं क्रीं क्रीं हूं हूं ह्रीं ह्रीं स्वाहा।।३।।

महत्त्वपूर्ण देवियों के गायत्री मन्त्र

दुर्गा गायत्री–**कात्यायन्यै च विद्महे कन्यकुमारि च धीमहि। तन्नो दुर्गिः प्रचोदयात्।।**

आदिशक्ति दुर्गा गायत्री–**कात्यायन्यै विद्महे कन्याकुमार्यै धीमहि। तन्नो दुर्गाः प्रचोदयात्।।**

शक्ति गायत्री–**सर्वमोहिन्यै विद्महे विश्वजनन्यै धीमहि। तन्नः शक्तिः प्रचोदयात्।।**

लक्ष्मी गायत्री–**महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि। तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्।।**

अन्नपूर्णा गायत्री–**भगवत्यै विद्महे माहेश्वर्यै च धीमहि। तन्नः अन्नपूर्णा प्रचोदयात्।।**

पार्वती गायत्री–**गणाम्बिकायै विद्महे कर्मसिद्ध्यै च धीमहि। तन्नो गौरी प्रचोदयात्।।**

सरस्वती गायत्री–**वाग्देव्यै विद्महे कामराजाय धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्।।**

भुवनेश्वरी गायत्री–**भुवनेश्वर्यै विद्महे आद्यायै धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्।।**

भैरवी गायत्री–**त्रिपुरायै विद्महे भैरव्यै धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्।।**

कालिका गायत्री–**कालिकायै विद्महे श्मशानवासिन्यै धीमहि। तन्नोऽघोरा प्रचोदयात्।।क।।**

कालिकायै विद्महे श्मशानवासिन्यै धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्।।ख।।

बगलामुखी गायत्री–**बगलामुख्यै विद्महे स्तम्भिन्यै धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्।।**

तुलसी गायत्री–**तुलसीपत्राय विद्महे विष्णुप्रियाय धीमहि। तन्नो वृन्दा प्रचोदयात्।।**

पृथ्वी गायत्री–**वसुन्धरायै विद्महे भूतधात्राय धीमहि। तन्नो भूमिः प्रचोदयात्।।**

श्यामा गायत्री–**कालिकायै विद्महे श्मशानवासिन्यै धीमहि। तन्नः कामकला-काली प्रचोदयात्।।**

मातङ्गी गायत्री–**शुकप्रियायै विद्महे श्रीकामेश्वर्यै धीमहि। तन्नः श्यामा प्रचोदयात्।।**

तारा गायत्री–**एकजटायै विद्महे विकटदंष्ट्रायै धीमहि। तन्नस्तारा प्रचोदयात्।।**

सिद्धकाली चालीसा

जय काली कंकालमालिनी, जय मंगला महाकपालिनी।
रक्तबीज वध कारिणी माता, सदा भक्तन को सुखदाता।
शिरो मालिका भूषित अंगे, जय काली मधु मध्य मतंगे।
हर हृदयारविंद सुविलासिनि, जय जगदम्ब सकल दुःखनाशिनि।
ह्रीं काली श्री महाकाली, क्रीं कल्याणी दक्षिण काली।
जय कलावती जय विद्यावती, जय तारा सुन्दरी जय महामती।
देहु सुबुद्धि हरहु सब संकट, होहु भक्त के आगे परगट।
जय ओंकारे जय हूं कारे, महाशक्ति जय अपरम्पारे।
कमला कलियुग दर्प विनाशिनि, सदा भक्तजन के भयनाशिनि।
अब जगदम्ब न देर लगावहु, दुःख दरिद्रता मोर हटावहु।
जयति कराल काल की माता, कालानल समान द्युतिगाता।
जय शंकरी सुरेशि सनातनि, कोटि सिद्धि कवि मातु पुरातन।
कपर्दिनी कलिकल्मषमोचिनि, जयविकसित नवनलिनविलोचनि।
आनन्दा आनन्दनिधाना, देहु मातु मोहिं निर्मल ज्ञाना।
करुणामृत सागर कृपामयी, होहु दुष्टजन पर अब निर्दयी।
सकल जीव तोहिं समान प्यारा, सकल विश्व तोरे सहारा।
प्रलयकाल में नर्तनकारिणि, जगज्जननि सब जग की पालिनि।
महोदरी माहेश्वरी माया, हिमगिरि सुता विश्व की छाया।
जय स्वच्छन्द मराद धुनि माहीं, गर्जत तूहिं और कोउ नाहीं।
स्फुरति मणि गणकार प्रताने, तारागण तू व्योम विताने।
श्रीराधा संतन हितकारी, अग्निसमान अतिदुष्ट विदारणि।
धूम्रविलोचन प्राणविमोचनि, शुम्भनिशुम्भ मद निबर लोचनि।
सहस्त्रभुजी सरोरुहमालिनी, चामुण्डे मरघट की वासिनी।
खप्पर मध्य सुशोणित साजी, मारेउ मां महिषासुर पाजी।
अम्ब अम्बिका चण्डि चण्डिका, सब एके तुम आदिकालिका।

अजा एकरूपा बहुरूपा, अकथ चरित्र औ शक्ति अनूपा।
कलकत्ते के दक्षिण द्वारे, मूरति तोर महेश अगारे।
कादम्बरी पानरत श्यामा, जय मातंगि काम के धामा।
कमलासनवासिनि कमलायनि, जय श्यामा जय जय श्यामायनि।
रासरते नवरसे प्रकृति हे, जयति भक्त उर कुमति सुमति हे।
कोटि ब्रह्म-शिव-विष्णु कर्मदा, जयति अहिंसा धर्म जन्मदा।
जल-थल-नभ मंडल में व्यापिनी, सौदामिनी मध्य अलापिनी।
झननन तच्छुमरनि रिननादिन, जय सरस्वती वीणावादिनि।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै, कलित गले कोमल रुण्डायै।
जय ब्रह्माण्ड सिद्धकवि माता, कामाख्या औ काली माता।
हिंगलाज विन्ध्याचलवासिनि, अट्टहासिनि सब अघनाशिनि।
कितनी स्तुति करो अखण्डे, तू ब्रह्माण्ड शक्ति जितखण्डे।
यह चालीसा जो जब गावे, मातु भक्त वांछित फल पावे।
केला और फल फूल चढ़ावे, मांस खून कछु नहीं छुवावे।
सबकी तुम समान महतारी, काहे कोई बकरा को मारी।

दोहा

सब जीवों के जीव में, व्यापक तू ही अम्ब।
कहत भक्त सब जगत में, तोरे सुत जगदम्ब।।

पुस्तक प्राप्ति का स्थान :
प्रकाशक : **रुपेश ठाकुर प्रसाद प्रकाशन**
कचौड़ीगली, वाराणसी-221001

मुद्रक- भारत प्रेस, कचौड़ीगली, वाराणसी

काली सिद्धि